



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 57]

नई दिल्ली, बुधवार, मार्च 4, 2015/फाल्गुन 13, 1936

No. 57]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 4, 2015/PHALGUNA 13, 1936

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 4 मार्च, 2015

अंतिम जांच परिणाम

विषय: चीन जन.गण. के मूल के या वहां से निर्यातित इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच—अंतिम जांच परिणाम

सं. 14/11/2013—डीजीएडी.—समय—समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय—समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए :

क. प्रक्रिया

1. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- क. निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे "प्राधिकारी" कहा गया है) को उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत संबद्ध वस्तु के घरेलू उद्योग के रूप में आदित्य बिड़ला नूवो लि. ("आदित्य बिड़ला") भारत हैवी इलैक्ट्रिकल लि. ("बीएचईएल"), इंसुलेटर्स एंड इलैक्ट्रिकल कं0 ("आईईसी"), मॉडर्न इंसुलेटर्स लि. ("मॉडर्न") और डब्ल्यूएस इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि. ("डब्ल्यू एस आई") (जिन्हें आगे "आवेदक" कहा गया है) से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ जिसमें चीन जन.गण. (जिसे आगे "संबद्ध देश" कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों के पाटन का आरोप लगाया गया है।
- ख. आवेदन की प्रारंभिक जांच से कुछ कमियों का पता चला जिन्हें बाद में आवेदकों ने सुधार दिया था। आवेदकों ने एक अद्यतित याचिका दायर की, जिस पर प्राधिकारी ने जांच की शुरुआत हेतु विचार किया। अतः आवेदन को समुचित ढंग से प्रलेखित माना गया था।
- ग. जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर संबद्ध देश में संबद्ध वस्तु के आयातों के खिलाफ जांच शुरू करने का निर्णय लिया।
- घ. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के उपनियम 5(5) के अनुसार, जांच शुरू करने से पूर्व आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत स्थित चीन जन. गण. के दूतावास को अधिसूचित किया।
- ड. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए दिनांक 5 सितंबर, 2013 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया।
- च. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार सार्वजनिक सूचना की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके ब्यौरे आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) और उद्योग एसोसिएशनों को भेजी और उनसे लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया।
- छ. प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात आयातकों को भी भेजी और उन्हें पत्र की तारीख से चालीस दिन के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने की सलाह दी।

- ज. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (3) के अनुसार आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रति ज्ञात निर्यातकों तथा भारत स्थित चीन जन.गण. के दूतावास को उपलब्ध कराई। आवेदन की एक प्रति अनुरोध करने पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी उपलब्ध कराई गई थी।
- झ. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना मांगने के लिए सम्बद्ध देश में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजीं।

हुनान लिनिंग हुआक्सिन पोर्सिलेन इंसुलेटर एंड इलैक्ट्रिक एपरेट्स कं. लि., पुकोऊ इंडस्ट्रियल पार्क, लिनिंग, हुनान, चीन जन.गण.	डेलियन इंसुलेटर कं. लि., 88, ईस्ट लिआओहे रोड, डीडी पोर्ट, डेलियन-116600, चीन जन.गण.
एन जी के इंसुलेटर्स तांगशान कं. लि. तांगशान न्यू एंड हाई टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट जोन 3, हुआजु रोड, 188, हेबेई-063020, चीन जन.गण.	जियान एक्सडी हाई वोल्टेज पोर्सिलेन इंसुलेटर कं. लि., डेकिंग रोड, जियान, शांक्सी-710077 चीन जन.गण.
एनकेजी सिरमिक्स सुझोऊ कं. लि. एवं एनजी के टेक्नोसेरा सुझोऊ न्यू डिस्ट्रिक्ट जियांग्सु-215129 चीन जन.गण.	एनकेजी इंसुलेटर्स सुझोऊ कं. लि. 401, जियानलिन रोड, सुझोऊ न्यू डिस्ट्रिक्ट, जियांग्सु-215151 चीन जन.गण.
चाइना इलैक्ट्रो-सिरमिक इंप. एंड एक्स., 3/एफ यूनिट 05 सं. 333, हांगवू रोड, ननजिंग '21000 चीन जन.गण.	एमडब्ल्यूबी (शंघाई) कं. लि. (ट्रेंच चाइना) सं. 3658, जियानचेंग रोड, इकनॉमिक एंड टेक्नोलॉजिकल डेवलपिंग जोन, मिनहांग/शंघाई, चीन जन.गण.
ट्रेंच हाईवोल्टेज प्रोडक्ट्स लि., शेनयांग (टीएचवीएस) सं. 2, झेजिलियांग ईआर रोड जिंग शेन xi सान स्ट्रीट, डाओयी इकनॉमिक डेवलपमेंट जोन-110135, शेनयांग, चीन जन.गण.	हुनान लिनिंग गुआओलियान पोर्सिलेन इंसुलेटर, 13/एफ तियानजिन हाउंटिंग बिल्डिंग, 48, काई रोड-410005, चेंगशा, हुनान, चीन जन.गण.
ननजिंग इलैक्ट्रिक ग्रुप कं. लि. 63, ताइक्सिन रोड, नानजिंग सिटी, जियांग्सु प्रोविंस, चीन-210038	सेवेस सेडिवर इंसुलेटर (बीजिंग) कं. लि. , 7वां तल नं. 2, बिल्डिंग, चाइना सेंट्रल प्लेस, 79 जियांगुओ रोड, चओयांग डिस्ट्रिक्ट, बीजिंग-100025-चीन
जिगोंग सेडिवर टफंग ग्ला इंसुलेटर कं. लि. 162, हुतोऊ एसटी, गांगजिंग डिस्ट्रिक्ट, थजगोंग-643020 चीन	यीबिन ग्लोबल ग्रुप कं. लि. ग्लास इंडस्ट्रियल पार्क, यीबिन बुलांगयी ग्रुप, सिचुआन-6444007, चीन

- ट. जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में चीन के निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने उत्तर दिया है :-
- क. नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं. लि.
- ख. जिगांग सेडिवर टफंड (शंघाई) कं. लि.
- ग. सेडिवट इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि.
- घ. डेलियन इंसुलेटर ग्रुप कं. लि.
- ड. लिनिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नालॉजी कं. लि.
- च. लिनिंग हुआचेंग इंसुलेटर्स कं. लि.
- छ. सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कं. लि.
- ज. चेंगदु ग्लोबल स्पेशल -ग्लास मैनुफैक्चरिंग कं. लि.
- झ. सेडिवर एस.ए. (फ्रांस)

मै. क्राम्पटन ग्रीव्स लि. ए-3, एमआईडीसी, एम्बाद, बीनासिक-422 01 महाराष्ट्र	मै. अरेवा टी एंड डी इंडिया लि., सं. 142, वंडालुर-वलजहाबाद रोड, सलामगलम (गांव) पडप्पाई (पोस्ट), श्रीपेरुम्बदूर (तालुक) जिला कांचीपुरम-601301 तमिलनाडु
---	---

मै. ए बी बी लि. पीपीएचवी-सी केटी ब्रेकर्स, बड़ोदरा टी एच एस-लि. (लाइव टैंक ब्रेकर), मनेजावर्क्स, बड़ोदरा-390013, गुजरात	मै. सीमेंस लि. ब्रेकर प्रभाग ई-76, वालुज, एमआईडीसी, औरंगाबाद-431136 महाराष्ट्र
पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लि., सौदामिनी, प्लाट सं. 2, सैक्टर-29, गुडगांव-122 001	मै. अडानी पावर लि. शिखर, 9वां तल, मीठाखाली सिक्स रोड्स, नवरंगपुरा, अहमदाबाद-380009 (गुजरात), भारत
मै. टाटा प्रोजेक्ट्स लि. "मिथोना टावर्स-1" 1-7-80 से 87, वेस्ले को-एड जूनि. कॉलेज के सामने, पेंडरघास्ट रोड, सिकंदराबाद-500003 (आंध्र प्रदेश), भारत	मै. कल्पतरु पावर ट्रांसमिशन लि., 101, पार्ट-III, जीआईडीसी इस्टेट, सेक्टर-28, गांधीनगर-382028 (गुजरात), भारत
मै. केईसी इंटरनेशनल लि. डीएलएफ इनफिनिटी टॉवर्स, 7वां तल, टावर-बी, डीएलएफ सिटी, फेस-II, गुडगांव-122002 (हरियाणा), भारत	मै. रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर लि. धीरूभाई अम्बानी नॉलेज सिटी, विंग-6, भूतल, डी-ब्लॉक, महाराष्ट्र, भारत

- ट. संबद्ध वस्तु के किसी भी आयातक/प्रयोक्ता ने न तो प्रश्नावली के उत्तर के रूप में कोई उत्तर दिया है और न ही जांच की शुरुआत पर टिप्पणियां उपलब्ध कराई हैं ।
- ड जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रति विचाराधीन उत्पाद के निम्नलिखित भारतीय उत्पादकों/एसोसिएशन को भी भेजी गई थीं :

इंडियन इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, रिस्यामोक बिल्डिंग, प्रथम तल, 85 ए, पंचकुइयां रोड, नई दिल्ली-110001	पी आर इंडस्ट्रीज सी-4, इंडस्ट्रियल इस्टेट एन एच 91, जी.टी. रोड, खुर्जा-203131
एलाइड सेरेमिक्स प्रा. लि. 91, लेनिन सरनी, कोलकाता-7000013	तरुना डेकहोम प्रा. लि. एफ-51, बिचवाल इंडस्ट्रियल एरिया फेज-II, बीकानेर-33006
भटिंडा सेरेमिक्स प्रा. लि. गांव-जोधपुर रोमाना, डाबवाली रोड, भटिंडा, पंजाब-151001	बीकानेर सेरेमिक्स प्रा. लि. रानी बाजार इंडस्ट्रियल एरिया, बीकानेर-334001
बीकानेर पोरसीलेन प्रा. लि. एफ-179/180, बिचवाल इंडस्ट्रियल एरिया, बीकानेर-334 006	सीजेआई पोर्सिलेन (प्रा.) लि., एम-17, धोहिल हाऊस, चौथी मंजिल, एम ब्लॉक मेन मार्किट, ग्रेटर कैलास-II, नई दिल्ली-110048
डेक्कन इंटरप्राइजेज प्रा. लि. बी-58.59 एवं 60 एपीआईई, बालननगर, हैदाबाद-500037	गोल्डस्टोन टेलीसर्विसेज लि., अमरचंद शर्मा कॉम्प्लैक्स, एस डी रोड, सिकंदराबाद-500037
मयूर इलेक्ट्रो सेरेमिक्स प्रा. लि. पो.आ. प्रतापगढ़, रायरंगपुर, जिला-मयूरभंज, मयूरभंज-757 050	सरवाना ग्लोबल एनर्जी लि. विरूद्धाचलम रोड, पी.एन. कुप्पम, कुरिजीपाडी पोस्ट-कुड्डालोरेन जिला-607 302
प्रेसगेल इंसुलेशन प्रा. लि. डी-52, सरदार इंडस्ट्रियल इस्टेट अजवा रोड, रोड नं. 5, वदोदरा-390019	श्रीजी पावर एंड इंसुलेटर्स प्रा. लि., सर्वे नं. 321 नानी चिराई जिला, भचारु, गुजरात

रविकिरन सेरेमिक्स प्रा. लि. स्टेशन रोड, करनी-387325	ए के इंडिया सेरेमिक्स (प्रा0) लि. एनएच 15, 15 केएम स्टोन, जयपुर रोड, गांव रायसाई, बीकानेर
---	---

ढ. इसके प्रत्युत्तर में निम्नलिखित ने याचिका का समर्थन करते हुए अपने पत्र दायर किए हैं :-

- क. इंडियन इलैक्ट्रिकल एंड इलैक्ट्रॉनिक्स मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन
- ख. श्रीजी पावर एंड इंसुलेटर्स प्रा. लि.
- ग. बीकानेर सेरामिक्स प्रा. लि.
- घ. ए.के. सेरामिक्स प्रा. लि.
- ड. बीकानेर पोरसीलिन प्रा. लि.
- च. एलाइड सेरेमिक्स प्रा. लि.
- छ. तरुणा डिकोप प्रा. लि.
प्राइम इंसुलेटर्स
- झ. सर्वाना ग्लोबन एनर्जी लि.
- ट. जयपुरिया ब्रदर्स
- ठ. जर्नल पावर कंपनी प्रा. लि.
- ड. हिंदुस्तान कैमिकल्स
- ढ. राष्ट्रीय इलैक्ट्रिकल एंड इंजीनियरिंग कार्पोरेशन

ण. प्राधिकारी ने विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण इच्छुक पार्टियों द्वारा निरीक्षण के लिए खुली रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराई। सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण कई बार कई हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों ने सार्वजनिक फाइल से दस्तावेजों की प्रतियों का अनुरोध किया था जो भी इन हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध करा दी गई थी। सभी इच्छुक पक्षकारों द्वारा की गई प्रस्तुति को वर्तमान निष्कर्षों में ध्यान में रखा गया है।

त. गोपनीय आधार पर इच्छुक पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई। संतुष्ट होने पर जहां भी आवश्यक था, गोपनीयता के दावों को प्राधिकारी ने स्वीकार कर लिया है और वह सूचना गोपनीय मानी गई है तथा दूसरे इच्छुक पक्षकारों को नहीं बताई गई है। जब भी संभव होता है गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को गोपनीय आधार पर फाइल की गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराए जाने के निर्देश दिए गए थे।

थ. आवेदक से और अन्य इच्छुक पक्षकारों से आवश्यक समझी जाने वाली और भी सूचना मांगी गई थी। वर्तमान जांच के प्रयोजन से आवश्यक समझे जाने वाले घरेलू उद्योग का सत्यापन किया गया था।

द. सामान्य रूप से स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर भारत में उत्पादन लागत तथा निर्माण लागत और विषयगत सामान को बेचने की लागत के आधार पर गैर हानिकारक (इसके बाद “एनआईपी” लिखा गया है) निकाली गई है ताकि घरेलू उद्योग को होने वाला नुकसान हटाने के लिए यह सुनिश्चित किया जा सके कि पाटनरोधी शुल्क पाटन मार्जिन से कम है। चूंकि ग्लास इंसुलेटर्स भारत में उत्पादित नहीं किए जाते अतः पोर्सलेन इंसुलेटर की एनआईपी मानी गई है। साथ ही विभिन्न उत्पाद किस्मों के लिए अलग एनआईपी निर्धारित की गई है।

ध. 1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च, 2013 (12 माह) की अवधि के लिए जांच की गई (इसके बाद इसे “जांच की अवधि” अथवा पीओआई) कहा गया है। हाल ही के विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्ति की जांच में 2009–10, 2010–11, 2011–12 तथा पीओआई शामिल है।

न. प्राधिकारी ने अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हुए 1 जुलाई, 2014 को प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जिसकी प्रति भारत स्थित संबद्ध देश के दूतावासों सहित सभी हितबद्ध पक्षकारों को भेजी गयी थी। सभी हितबद्ध पक्षकारों से कहा गया था कि वे प्रारंभिक जांच परिणामों पर अपनी टिप्पणियां दायर करें। चीन जन.गण. के मूल के या वहां से निर्यातित ग्लास अथवा सेरेमिक्स/पोर्सलेन के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों, चाहे वे संयोजित हों अथवा असंयोजित, के आयात पर दिनांक 16.9.2014 की सीमा-शुल्क अधिसूचना 40/2014-सी.शु. (एडीडी) के तहत अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

प. नियम 6(6) के अनुसार, मौखिक रूप से संगत सूचना प्रस्तुत करने हेतु हितबद्ध पक्षकारों को एक अवसर प्रदान करने के लिए प्राधिकारी ने 17 अक्टूबर, 2014 को मौखिक सुनवाई आयोजित की। निम्नलिखित जिन पक्षकारों ने मौखिक सुनवाई में भाग लिया, उन्हें मौखिक रूप से प्रस्तुत सूचना के लिखित अनुरोध दायर करने की सलाह दी गई थी। हितबद्ध पक्षकारों को अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विचारों/सूचना पर खंडनात्मक तर्क/उत्तर प्रस्तुत करने की अनुमति दी गई थी। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त अनुरोधों पर समुचित रूप से विचार किया है :

- क. घरेलू उद्योग
 ख. चायना चैम्बर ऑफ कॉमर्स और इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट ऑफ मशीनरी एंड इलैक्ट्रॉनिक प्रोडक्ट्स (सी सी सी एम ई) और मै. नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कंपनी लि.
 ग. सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कंपनी लि. और चेंगडू ग्लोबल स्पेशल ग्लास मैन्यु0 कंपनी लि.
 घ. मै. सैडीवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कंपनी लि., मै. जिगोंग सैडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि. तथा मै. सैडीवर एसए
 ड. पावरग्रिड कॉर्पोरेशन लि.
 च. ए बी बी इंडिया लि.

फ. जांच के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों और प्रदत्त सूचना पर साक्ष्य के साथ समर्थित होने और वर्तमान जांच में संगत समझी जाने वाली सीमा तक प्राधिकारी द्वारा समुचित ढंग से विचार किया गया है ।

ब. उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार, प्राधिकारी द्वारा आवश्यक तथ्यों का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर प्राधिकारी द्वारा संगत समझी गई सीमा तक इस अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है ।

भ. अमरीकी डॉलर को रूपए में बदलने के लिए विनिमय दर सीमा-शुल्क के आंकड़ों के अनुसार 54.65 रूपए के रूप में पीओआई के लिए मानी गई है ।

य. *** गोपनीय आधार पर आवेदकों द्वारा दी गई सूचना इस अनंतिम निष्कर्ष को दर्शाती है और इसीलिए नियमों के अधीन प्राधिकारी ने इसे माना है ।

र. केन्द्र सरकार द्वारा अंतिम जांच परिणाम जारी करने का अंतिम दिन बढ़ाकर 4 मार्च, 2015 कर दिया गया था ।

ख. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

2. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद ग्लास के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स, अथवा सिरामिक्स/पोर्सलेन है, वह चाहे असेंबल किया हुआ हो अथवा असेम्बल न किया हुआ हो जिसमें (क) टेलीफोन अथवा 1 केवी तक की वोल्टेज के टेलीग्राफ इंसुलेटर्स, (ख) 1 केवी तक की वोल्टेज के इलैक्ट्रिकल या इलैक्ट्रॉनिक उपकरण/डिवाइस इंसुलेटर्स तथा (ग) कंपोजिट इंसुलेटर्स (जिन्हें इसके बाद "इलैक्ट्रिक इंसुलेटर्स" अथवा "विचाराधीन उत्पाद" कहा गया है) शामिल नहीं है ।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य इच्छुक पक्षकारों के विचार

3. इच्छुक पक्षकारों ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं :

क. याचिका के भाग 2 में डी आई द्वारा उत्पादित विषयगत सामान के आकार, किस्म, रेंज, मॉडल के संबंध में सूचना उपलब्ध नहीं है । डीआई की वेबसाइट पर उपलब्ध सूचना विश्वसनीय नहीं है क्योंकि इसे डीआई द्वारा किसी भी समय बदला जा सकता है, क्योंकि इस पर नियंत्रण अथवा मानीटरिंग के लिए कोई तंत्र नहीं है । डीआई की वेबसाइट अविश्वसनीय है क्योंकि उनकी वेबसाइट पर उनकी क्षमताओं के संबंध में बढ़ाने-चढ़ाने के लिए कंपनियों के लिए बहुत सामान्य बात है ।

ख. भाग 2 के पैरा 5 में उत्पाद सूची बिना किसी सहायक साक्ष्य के दी गई है जिस पर डी आई वास्तव में इन उत्पादों का उत्पादन करता है । प्राधिकारी पाटनरोधी नियमों के नियम 5 (3) (ख) के अनुसार डीआई द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्य की पर्याप्तता और शुद्धता पर विचार करने के लिए बाध्य है ।

ग. आवेदक को जांच के तहत शामिल किए गए सामानों के आयात का विश्लेषण करने के लिए विषयगत उत्पाद के 8 अंक तक के स्तर तक आंकड़े वर्गीकृत करते हुए पंक्ति दर पंक्ति निर्यात के आंकड़े प्रदान करने चाहिए ताकि प्राधिकारी और इच्छुक पक्षकारों को विषयगत उत्पाद की स्पष्ट और समुचित समझ हो ।

घ. याचिकाकर्ता ने याचिका के पृष्ठ 67 पर एच एस कोड 854610 और 854620 के लिए चीनी सीमा-शुल्क से निर्यात आंकड़ों का विवरण प्रदान किया है तथा बाद में एच एस कोड 854620 1000, 854620 9001 और 854620 9090 भी दिया है जिसमें पारेषण और वितरण दोनों के लिए तथा प्रत्येक किस्म के ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर्स के लिए इलैक्ट्रिक इंसुलेटर्स शामिल हैं और उन निर्यात आंकड़ों का विश्लेषण करना अत्यधिक कठिन है जो सारांश रूप में प्रदान किए गए हैं ।

ड. अलग किए गए उत्पादों के आंकड़े अधूरे हैं, क्योंकि वे पीओआई के अनुसार भी नहीं हैं । अतः इन अधूरे आंकड़ों पर विश्वास नहीं किया जा सकता । यूएन कामट्रेड के आंकड़े दर्शाते हैं कि ग्लास इंसुलेटर्स भारत से पुनः निर्यात किए जा रहे हैं जबकि यह एक स्वीकृत तथ्य है कि घरेलू उद्योग उनका विनिर्माण नहीं करता । यह अनुरोध किया जाता है कि चीन से आयात और भारत का बाजार आकार ऐसे आयातित सामानों के पुनः निर्यात के लिए केवल समायोजन करने के बाद ही निर्धारित किया जाए ।

च. मै. नानजिंग इलैक्ट्रिकल (ग्रुप) कंपनी लि. (चीन में उत्पादक और निर्यातक) और सीसीसीएमई का दावा है कि इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर समान नहीं हैं क्योंकि सभी इंसुलेटर्स का भिन्न-भिन्न अंतिम प्रयोग है और भौतिक विशेषताएं हैं। यथा आकार, क्षमता आदि। तथा प्रत्येक प्रकार के इंसुलेटर के लिए व्यापक रूप से भिन्न हैं। इंसुलेटर निम्नलिखित में इस्तेमाल होते हैं :

- i. विद्युत पारेषण एवं वितरण लाइनें
- ii. विद्युत उप पारेषण लाइनें
- iii. सर्किट ब्रेकर
- iv. डिस्कनेक्टर
- v. पावर सब-स्टेशन
- vi. इंसुलैटर्स एवं ट्रांसफार्मर
- vii. रेलवे

छ. पाटन, क्षति एवं आकस्मिक संपर्क की वस्तुपरक जांच में, जो कि घरेलू कानूनों के तहत तथा डब्ल्यू टी ओ पाटनरोधी करार के तहत अनिवार्य है, उत्पादों के एक समूह की दूसरे समूह के साथ तुलना के बजाए एक मद की दूसरे मद के साथ तुलना किए जाने की आवश्यकता है। यह तर्क दिया जाता है कि क्षमता में महत्वपूर्ण अंतरों तथा विषयगत उत्पाद के अन्य अभिलक्षणों की दृष्टि से एक पीयूसी के रूप में सभी क्षमताओं के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स को एक साथ इकट्ठा करना अनुचित और गलत है।

ज. उनके तर्कों का आधार बनाने के लिए इच्छुक पक्षकार ई यू तथा यूएसए जैसे अन्य देशों में चल रही परिपाटियों पर विश्वास करते हैं जहां विशेष रूप से इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स से संबंधित पाटनरोधी जांचें की जाती हैं, पीयूसी उत्पाद की भौतिक, तकनीकी तथा रासायनिक विशेषताओं पर आधारित थीं, उनका मुख्य उपयोग तथा अनुप्रयोग एक-दूसरे के स्थान पर लाए जाने की मात्रा तथा उपभोक्ता की संकल्पना पर आधारित थी। उदाहरण के लिए इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स के संबंध में अमरीकी पाटनरोधी जांच संख्या 731-टीए-1023 में उत्पाद क्षेत्र "उच्च एवं अतिरिक्त उच्च वोल्टेज सिरामिक स्टेशन पोस्ट इंसुलेटर्स" तक सीमित थी। रिलायंस भी ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री को प्रभावित करने वाले इंडोनेशिया के कतिनस उपायों में डीएस 54/55/59/64 में डब्ल्यूटीओ पैनल रिपोर्ट में रखा गया है जहां डब्ल्यू टी ओ पैनल ने यह मानते हुए सभी छोटे-मोटों को मिलाकर एक जगह रखने से इंकार किया है कि यद्यपि, ये छोटे-मोटे उत्पाद आधारभूत भौतिक विशेषताओं और अंतिम प्रयोग में हिस्सा ले सकते हैं। तथापि, वे बहुत भिन्न प्रकार के उत्पाद हैं जो आकार, वजन, ईंधन पावर, प्रौद्योगिकी और अभिलक्षणों की दृष्टि से अत्यधिक भिन्न हो सकते हैं।

झ. सभी इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स को एक ही छत के नीचे इकट्ठा करना अनुचित है क्योंकि वस्तु निर्धारण, सामान्य मूल्य का भारित औसत लेते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण तथा निर्यात लागत, क्षति दावों का समाधान आदि जैसी घरेलू उद्योग की स्थिति पर इच्छुक पक्षकारों के लिए अपनी बात रखना संभव नहीं है। यहां तक कि घरेलू उद्योग विभिन्न इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स को अपने ब्रॉशरों में और अपनी वेबसाइटों पर भिन्न बताते हैं। निर्यातक और इच्छुक पक्षकारों ने भी विभिन्न इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों के संबंध में विस्तृत लेख दिए हैं।

ट. इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स समान नहीं हैं क्योंकि सभी इंसुलेटरों का अलग-अलग अंतिम प्रयोग, भौतिक विशेषताएं—जैसे आकार क्षमता आदि और प्रत्येक प्रकार के इंसुलेटर व्यापक रूप से भिन्न हैं। वे तकनीकी रूप से और वाणिज्यिक रूप से एक-दूसरे का स्थान लेने योग्य भी नहीं हैं।

ड. 765 केवी की क्षमता के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स और एचवीडीसी लाइनों के लिए इंसुलेटर्स को जांच के क्षेत्र से अलग कर दिया जाए क्योंकि घरेलू उद्योग के कुछ ही घटक उपर्युक्त इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर का उत्पादन करते हैं। मै. मॉर्डन इंसुलेटर्स और मै. आईईसी ने उपर्युक्त इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स के उत्पादन के संबंध में अपनी योग्यता की पुष्टि करने के लिए कोई विश्वसनीय साक्ष्य नहीं दिया है।

ढ. प्राधिकारी ने उत्पादों की किस्म, अंतिम प्रयोगों, भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, उपभोक्ता अवधारणा आदि जैसे कारकों पर आधारित एकल जांच में उत्पादों को पृथक रूप से परिभाषित करने की निरंतर अच्छी परिपाटी अपनाई है और यही परिपाटी इस मामले में भी अपनाई जाए। रिलायंस को निम्नलिखित जांचों में रखा गया है जिनमें पीयूसी में विभिन्न सामान पूर्णतः भिन्न थे और तकनीकी अथवा वाणिज्यिक रूप से परस्पर परिवर्तनीय नहीं थे। उदाहरण निम्नलिखित हैं :

- i. चीन जन.गण. तथा यूरोपियन यूनियन से निर्यातित अथवा वहां से आने वाले रासायनिक मिश्रणों पर आधारित कतिपय फॉस्फोरस के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।
- ii. चीन से एमबीटी, सीबीएस, टीडीक्यू, पीवीआई और टीएमटी जैसे रबड़ रसायन तथा चीन और कोरिया जन.गण. से पीएक्स-13 के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच
- iii. डेनमार्क से उत्प्रेरकों के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

ण. इन जांचों में पीयूसी का क्षेत्र विभिन्न उत्पादों में अलग कर दिया गया था और पाटन, क्षति तथा उत्पादों के आयात तथा घरेलू उद्योग को क्षति के बीच आकस्मिक संपर्क की पृथक जांच की गई।

त. मै. ट्रेंच हाइवोल्टेज प्रोडक्ट्स लि. (टीएचवीएस), शेनयांग, चीन बशिंग का उत्पादक है और मै. एमडब्ल्यूबी (शंघाई) कं. लि., शंघाई, चीन (एमडब्ल्यूबी) चीन जन.गण. से गैस इंसुलेटेड स्विच गियर्स के लिए एसएफ 6 इंसुलेटेड वोल्टेज ट्रांसफार्मर का उत्पादक है। टीएचवीएस और

एमडब्ल्यूबी याचिका में विषयगत उत्पादों के प्रसिद्ध उत्पादक/निर्यातक के रूप में सूचीबद्ध किए गए थे। दोनों कंपनियों ने विषयगत जांच के संबंध में प्राधिकारी से 9 सितंबर, 2013 का पत्र प्राप्त किया।

थ. प्राधिकारी से पत्र प्राप्त होने पर दोनों कंपनियों ने पीओआई के दौरान भारत को निर्यातित अपनी उत्पादों की बारीकी से समीक्षा की और निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुंचे :

- i. टीएचवीएस ने भारत को कोई इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर निर्यात नहीं किए परंतु पीओआई के दौरान भारत को केवल बुशिंग का निर्यात किया। टीएचवीएस ने अपनी वह उत्पाद सूची दी है जो पीओआई के दौरान भारत को निर्यात की गई।
- ii. एमडब्ल्यूबी ने भारत को कोई इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर निर्यात नहीं किया परंतु पीओआई के दौरान भारत को केवल वोल्टेज ट्रांसफार्मर निर्यात किए। एमडब्ल्यूबी ने अपनी वह निर्यात सूची दी है जो पीओआई के दौरान उसने भारत में निर्यात की।

द. टीएचवीएस और एमडब्ल्यूबी ने सामूहिक रूप से 15 जनवरी, 2014 की अपनी बात रखते हुए विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र से उनके उत्पादों को खास तौर पर हटाए जाने तथा विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र के संबंध में स्पष्टीकरण मांगा है।

ध. इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर बुशिंग के विनिर्माण के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले घटक हैं। जिस तथ्य को भी घरेलू उद्योग द्वारा दायर की गई याचिका में स्वीकार किया जाता है। दूसरी ओर वोल्टेज ट्रांसफार्मर इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स से पूरी तरह भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त वोल्टेज ट्रांसफार्मरों में प्रयुक्त किए जाने वाले इंसुलेटर खोखले संयुक्त इंसुलेटर हैं जिन्हें प्राधिकृत अधिकारी द्वारा विचाराधीन उत्पाद से पहले ही अलग कर दिया गया है।

न. विषयगत उत्पाद, बुशिंग और एसएफ-6 वोल्टेज ट्रांसफार्मरों के बीच विस्तृत अंतर टीएचवीएस और एमडब्ल्यूबी द्वारा दे दिए गए हैं। चर्चा से यह स्पष्ट है कि इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों का प्रयोग बुशिंग्स और वोल्टेज ट्रांसफार्मरों के विनिर्माण के लिए आवश्यक घटक के रूप में किया जाता है तथा उनके बिना बुशिंग्स तथा वोल्टेज ट्रांसफार्मरों का विनिर्माण करना संभव नहीं है।

प. प्रयोग, अंतिम उपभोक्ता, निवेश, उत्पादन प्रक्रिया आदि में महत्वपूर्ण अंतरों के आलोच में यह स्पष्ट है कि बुशिंग्स और वोल्टेज ट्रांसफार्मर इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों से भिन्न हैं और तकनीकी या वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्पर्धी नहीं हैं। टीएचवीएस और एमडब्ल्यूबी का अनुमान है कि सीमा-शुल्क प्राधिकारियों ने उस समय उनके उपर्युक्त उत्पादों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया है जब वे भारत को निर्यात किए गए थे। अतः उन्होंने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वे विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र से बुशिंग्स और वोल्टेज ट्रांसफार्मरों को विशेष रूप से अलग कर दें।

फ. साथ ही पक्षकारों ने तर्क दिया है कि प्राधिकारी पीयूसी में संशोधन करने अथवा स्पष्ट करने के लिए एक शुद्धिपत्र जारी करे। पिछले जिन उदाहरणों में पीयूसी कार्यक्षेत्र को स्पष्ट करने के लिए शुद्धिपत्र जारी किए गए थे, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

- i. चीन जन.गण. से फॉस्फोरिक एसिड के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच
- ii. रूस, चीन जन.गण. और यूक्रेन से कतिपय ग्रेड की मिश्र धातु तथा गैर-मिश्र धातु इस्पात बिलेट्स, छड़ें और राउंड के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।
- iii. पोलैंड, साउथ कोरिया, इंडोनेशिया, सउदी अरब, रूस, ईरान, अमरीका तथा यूरोपियन यूनियन से ऑक्सोअल्कोहल के आयात से संबंधित पाटनरोधी समीक्षा जांच।
- iv. रूस और चीन जन.गण. से कतिपय किस्म/ग्रेड की मिश्र धातु तथा गैर मिश्र धातु इस्पात बिलेट, छड़ें तथा राउंड के आयात से संबंधित मध्यावधि समीक्षा पाटनरोधी जांच

ब. गोल्ड स्टोन इन्फ्राटेक लि. ने दावा किया कि पॉलीमर/कंपोजिट इंसुलेटर का कार्य एक समान है और ग्लास तथा पार्सलेन इंसुलेटर का प्रयोग करते हैं तथा इसीलिए बाजार में उपभोक्ताओं द्वारा एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग में लाए जा रहे हैं। कंपोजिट/पॉलीमर इंसुलेटर्स के घरेलू विनिर्माता चीन से इस प्रकार के आयातों के कारण भी पीड़ित हैं। अतः चाहे पार्सलिन हो अथवा ग्लास हो अथवा कंपोजिट/पॉलीमर हो, चीन से सभी इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगना चाहिए।

भ. सिलेमिक और ग्लास इंसुलेटर्स कच्ची सामग्री, उत्पादन प्रक्रिया, इंसुलेटर का उत्पादन करने में लिए जाने वाले समय, कच्ची सामग्री की लागत (ग्लास इंसुलेटर के लिए लगभग 600 आरएमबी/टन है, जबकि पार्सलेन इंसुलेटर की लागत लगभग 910-1160 आरएमबी/टन है), भार, निष्पादन, टनेज, जीवनकाल, सीमा-शुल्क वर्गीकरण, आदि में अंतरों के कारण समान वस्तु नहीं है।। सिरामिक और ग्लास इंसुलेटर निम्नलिखित कारणों से डब्ल्यूटीओ पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2.6 में दी गई परिभाषा के अर्थ के अंतर्गत "समान वस्तु" नहीं हैं :

- (i) प्रयोग में लाई गई कच्ची सामग्री भिन्न है।
- (ii) उत्पादन प्रक्रिया भिन्न है। पार्सलेन इंसुलेटर्स का उत्पादन शेपिंग-ड्राइंग-ग्लेसिंग-सिटरिंग प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। कच्ची सामग्री को 14 दिन तक 850 डिग्री सेल्सियस पर गर्म किया जाता है, पिघलाया नहीं जाता और इसकी विनिर्माण प्रक्रिया में 45 दिन लगते हैं।
ग्लास इंसुलेटर्स : कच्ची सामग्री को 1450 डिग्री सेल्सियस पर पिघलाया जाता है, फ्यूजन मोल्ड प्रेसिंग, टफनिंग और उच्च दाब की वायु शीतलन में रखा जाता है। कोई क्योरिंग प्रक्रिया नहीं होती। एक दिन में उत्पादन किया जा सकता है। भौतिक रूप से देखने पर दो भिन्न उत्पादक प्रक्रियाओं के कारण क्रिस्टल रूप में अंतर साफ हो जाता है।

- (iii) लागत, तुलना तथा तकनीकी विशेषताओं की तुलना अंतर बता देती है ।
- (iv) सीमा-शुल्क वर्गीकरण ग्लास : एचएस कोड 854610: सिरामिक: एचएस कोड 854620
- (v) ग्लास इंसुलेटर्स का विनिर्माण भारत में नहीं किया जाता ।
- (vi) अतः उत्पाद तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं ।

य. कतिपय उत्पादों को अलग करने के लिए प्राधिकार चीन, जापान, कोरिया, ईयू, साउथ अफ्रीका, ताइवान, थाइलैंड और यूएसए के स्टेनलैस स्टील के कोल्ड रोल्ल्ड फ्लैट स्टील प्रोडक्ट्स में पाया जाता है जहां निम्नलिखित व्यापक सिद्धांत अपनाए जाते हैं :

- i. जहां इच्छुक पक्षकारों द्वारा पेश की गई उत्पादन प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भिन्न उत्पाद होते हैं जहां स्पष्टता और पूर्व निर्धारण से भिन्नता स्थापित की जा सकती है।
- ii. चाहे डीआई पीओआई के दौरान ऐसी विशिष्ट मदों के विनिर्माण/आपूर्ति कर रहा है।
- iii. चाहे पीओआई के लिए डीआई द्वारा विनिर्मित ग्रेड अलग किए जाने के लिए माने गए ग्रेडों के समान हों ।
- iv. इस मामले में इन सिद्धांतों को अपनाकर यह स्पष्ट है कि ग्लास एवं सिरामिक इंसुलेटर समान वस्तुएं नहीं हैं ।

र. डीआई द्वारा उत्पादित न किए गए ग्रेडों को बाहर करने के संबंध में न्यायिक घोषणाएं :

- i. बिडला पेरिक्लेस बनाम डीए (2000 116 ईएलटी 336 ट्रिब्युनल):
“सिस्टर्ड मैनेशिया के साथ अपरिवर्तनीय फ्यूज्ड मैनेशिया, अतः समान उत्पाद नहीं”
- ii. इंडियन रिफ्रेक्टरी मेकर्स एसोसिएशन बनाम डीए (2000 119 ईएलटी 319 (ट्रिब्युनल):
“यदि पाटित आयात घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने की क्षमता नहीं रखता तो पाटनरोधी शुल्क लगाना जरूरी नहीं है”
- iii. ऑक्सो एल्कोहल इंडस्ट्रीज एसो. बनाम डी ए (2001 130 ईएलटी 58 ट्रिब्युनल दिल्ली) :
“सामान्य हैक्सानल घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित या विनिर्मित नहीं किया जाता । अतः इसके आयात से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती । ”
- iv. मैग्नेट यूजर्स एसो0 बनाम डीए (2003 157 ईएलटी 150 ट्रिब्युनल दिल्ली) :
“ पाटनरोधी शुल्क लगाने के उद्देश्य से रिंग मैग्नेट के ग्रेडों को शामिल करने का कोई औचित्य नहीं है जो कि भारत में उत्पादित नहीं किए जाते हैं ।”
- v. वीडियोकॉन नर्मदा ग्लास बनाम डीए (2003 151 ईएलटी 80 ट्रिब्युनल दिल्ली) :
“हम यह नहीं मान सकते कि ग्रेन्युलर रूप में आयातित स्ट्रॉनटीएम कार्बोनेट पावडर के रूप में घरेलू तौर पर उत्पादित स्ट्रॉनटीएम कार्बोनेट से वाणिज्यिक प्रतिस्पर्धा में है..... अतः स्पष्ट है कि आयातित वस्तु घरेलू उद्योग को क्षति नहीं पहुंचा सकती ।”

व. प्राधिकारी ने अपने दिनांक 11 फरवरी, 2014 के पत्र द्वारा सभी इच्छुक पक्षकारों से अनुरोध किया था कि वे 21 फरवरी, 2014 तक पूरक सूचना प्रस्तुत करें । यह पूरक सूचना की आवश्यकता घरेलू उद्योग के साथ विचार-विमर्श के बाद प्राप्त हुई । मै. नैनजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कंपनी लि. ने प्राधिकारी के इस अनुरोध पर आपत्ति व्यक्त की और अपना आंकड़ा नियम तारीख तक प्रस्तुत किया जिसमें यह विरोध किया कि वे उसको चुनौती देने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं । मै. नैनजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं. लि. ने निम्नलिखित आधार पर विरोध किया :

- i. 10 दिन के कम समय में नए प्रारूप के अनुसार आंकड़े का प्रावधान एक जल्दबाजी की प्रक्रिया है और इससे इच्छुक पक्षकारों पर दुस्सह भार पड़ता है ।
- ii. घरेलू उद्योग ने अब यह स्वीकार कर लिया है कि इसमें शामिल विभिन्न उत्पाद किस्मों के कारण भारित औसतों के आधार पर पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन निर्धारित करना उपयुक्त नहीं है । घरेलू उद्योग को अपनी याचिका दायर करते समय इस प्रक्रिया को आदर्श रूप से अपनाना चाहिए था ।
- iii. घरेलू उद्योग के आंकड़े पर आधारित जांच की शुरुआत पर ही प्रश्न लग सकता है क्योंकि प्राधिकारी ने अब यह पाया है कि आंकड़े समुचित नहीं हैं और सभी पक्षकारों से नए सिरे से आंकड़े प्रस्तुत करने का अनुरोध किया है । इन अनुपयुक्त साक्ष्य के आधार पर पहल में डब्ल्यूटीओ पाटनरोधी करार के तहत पर्याप्तता और शुद्धता की आवश्यकताएं कम पड़ती हैं ।
- iv. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की संशोधित याचिका नहीं दी है जो आंकड़ों के लिए प्राधिकारी के उपर्युक्त अनुरोध के आधार पर प्राधिकारी को पहले ही दायर कर दी गई होती । मै. नैनजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप कंपनी लि.) संशोधित याचिका का अवलोकन किए बिना अपने आंकड़े देने में असमर्थ हैं क्योंकि उसे समान उत्पाद और प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्थापनीय उत्पाद के लिए विश्लेषण करने हेतु संशोधित याचिका की आवश्यकता है ।
- v. प्राधिकारी को विभिन्न विशेषताओं के अनुसार उत्पादों की पहचान करने के लिए एक पीसीएन प्रणाली तैयार करनी चाहिए थी क्योंकि इस जांच में कई विभिन्न प्रकार के उत्पाद शामिल हैं । इस स्तर तक प्राधिकारी ने वह सब नहीं किया है ।
- vi. नए सिरे से आंकड़े दिए जाने के लिए प्राधिकारी का अनुरोध नई प्रश्नावली के उत्तर तैयार करने संबंधी है जिसके लिए 40 दिन का समय दिया जाना चाहिए था क्योंकि इसके लिए प्रश्नावली के सभी परिशिष्टों में संशोधन करने और उसे पुनः भरने की आवश्यकता होती है ।
- vii. जांच के इस स्तर पर नई एवं दुस्सह प्रक्रियागत आवश्यकताएं शुरू करना स्वाभाविक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन है । और मै. नैनजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कंपनी लि. को उचित प्रक्रिया से वंचित करता है ।

- viii. वैकल्पिक रूप से प्राधिकारी इस जांच को निरस्त कर सकते हैं और उपयुक्त एवं पर्याप्त तरीके से सही उत्पाद क्षेत्र का पता लगाने के बाद नई जांच शुरू कर सकते हैं ।
- कक. 11 फरवरी, 2014 के पत्र के उत्तर में मै. जिगोंग सेदिवर टफंड कंपनी लि., मै. सिदिवर (शंघाई) कंपनी लि. और सेदिवर एसए (फ्रांस) ने निम्नलिखित रूप में उल्लेख किया है ।
- i. निर्यातकों ने बिक्री और लागत संबंधी आंकड़े के भाग के रूप में उत्पाद की किस्म के संबंध में पूरे आंकड़े दायर कर दिए हैं । साथ ही आधारभूत उत्पाद कोड का विस्तृत विवरण भी दे दिया गया है क्योंकि आरंभिक नोटिफिकेशन अथवा निर्दिष्ट प्राधिकारी के पत्र में किसी विशिष्ट पीसीएन का उल्लेख नहीं है ।
 - ii. जब तक अनुरोध किए गए मानदंडों पर आधारित आयात आंकड़ों, सामान्य मूल्य, लागत, पाटन मार्जिन, क्षति मार्जिन और आकस्मिक संपर्क की लेन-देन वार प्रविष्टियां जैसी सूचना घरेलू उद्योग द्वारा नहीं दी जाती, यह उपयुक्त नहीं होगा कि विरोधी पक्षकारों को यह जटिल प्रक्रिया करने के लिए कहा जा रहा है ।
- खख. याचिकाकर्ता इंसुलेटर ≥ 420 केएन का उत्पादन नहीं कर रहे हैं, फिर भी ऐसे सामानों की मांग भारतीय बाजार में बनी हुई है । याचिकाकर्ताओं को इंसुलेटर ≥ 420 केएन का उत्पादन करने की क्षमता वाले उत्पादकों के रूप में नहीं जाना जाता है । वे सामान्य रूप से 70 केएन से 300 केएन की श्रृंखला के इंसुलेटर की आपूर्ति करते हैं । इंसुलेटर ≥ 420 केएन की उपलब्धता न होने के कारण प्रयोक्ताओं को उनका आयात करना होता है ।
- गग. चूंकि घरेलू उद्योग में इंसुलेटर ≥ 420 केएन की आपूर्ति घरेलू बाजार में करने की क्षमता नहीं है, अतः घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई इंसुलेटर ≥ 420 केएन के संबंध में हुई क्षति कहां है ।
- घघ. कीमतें इंसुलेटर की वास्तविक विशिष्टि पर निर्भर करते हुए बहुत ज्यादा भिन्न हैं । प्रत्येक इंसुलेटर का आदेश बहुत ही खास समारोह के लिए दिया जाता है और एक इंसुलेटर को दूसरे इंसुलेटर के स्थान पर नहीं बदला जा सकता जो कि वास्तव में सभी माइनों में समान नहीं होते जैसे कि ईएंडएम फेलिंग लोड ।
- ड.ड. निर्दिष्ट उत्पाद की किस्म के रूप में, यह कि क्या मशीन का आयात किया गया है अथवा उसे घरेलू तौर पर खरीदा गया है, सबसे महत्वपूर्ण बात खरीद के लिए “तकनीकी योग्यता” है । इस प्रकार पावरग्रिड कॉर्पोरेशन जैसे क्रेता उस कंपनी को अपनी अपेक्षित तकनीकी विशिष्टियां देंगे जो आदेश में दी गई तकनीकी विशिष्टि के अनुसार इंसुलेटर का विनिर्माण कर सके । गुणवत्ता, सुर्पुदगी कार्यक्रम के अनुसार विनिर्माण की योग्यता तथा अपेक्षित विशिष्टि इंसुलेटर विनिर्माण करने की उसकी योग्यता महत्वपूर्ण निर्णायक कारक हैं जो खरीददारी के निर्णयों में प्रमुख भूमिका निभाते हैं ।
- चच. जब हम इंसुलेटर ≥ 420 केएन की तुलना विचाराधीन उत्पाद से करते हैं तो यह “समान उत्पाद” नहीं है क्योंकि इसमें कई अंतर हैं । वास्तव में कोई भी यह नहीं कह सकता कि इंसुलेटर ≥ 420 केएन, 210 केएन के रेटेड ईएंडएम फेलिंग लोड के समान है । अतः इंसुलेटर ≥ 420 केएन को जांच के कार्य क्षेत्र से निकाल देना चाहिए ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

4. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद विचाराधीन उत्पाद के बारे में हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अतिरिक्त मुद्दे उठाए हैं :
- क. यह निष्कर्ष निकालने में भारी त्रुटियां हैं कि सभी इंसुलेटरों में समान उत्पाद के रूप में एकल उत्पाद, ग्लास और पोर्सिलेन तथा सभी प्रकार के इंसुलेटरों की क्लबिंग शामिल है ।
- ख. निम्नलिखित के बारे में विरोधाभासी विवरण हैं:
- i. इस आशय का कोई संकेत नहीं है कि ग्लास और पोर्सिलेन को समान वस्तु मानने के लिए कौन सा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानक प्रयोग में लाया गया है ।
 - ii. यदि भारत में ग्लास इंसुलेटरों का उत्पादन नहीं होता है तो उत्पादन प्रक्रिया का विश्लेषण किस प्रकार किया गया है । किसी साहित्य अथवा स्रोत का हवाला नहीं दिया गया है ।
 - iii. उत्पादन प्रौद्योगिकी, अंतिम प्रयोक्ता की जरूरतों के बारे में अलग-अलग निष्कर्ष ।
- ग. वैबसाइट पर भरोसे की अनदेखी की जानी चाहिए और उत्पादन के बारे में वास्तविक साक्ष्य लिया जाना चाहिए ।
- घ. सभी इंसुलेटरों का समूहन गलत है । इंसुलेटरों पर अमरीकी मामले का संदर्भ लें ।
- ड. इंसुलेटर सजातीय नहीं होते हैं ।
- च. यदि लागत और कीमत अलग-अलग है और वह उसी रेंज के भीतर नहीं हैं तो तुलना करते समय उचित समायोजनों की जरूरत है ।

- छ. पीसीएम के निर्धारण के समय निर्दिष्ट प्राधिकारी को स्वतंत्र ढंग से मस्तिष्क के प्रयोग का प्रदर्शन करना होता है । पीसीएम पर टिप्पणी करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को कोई अवसर प्रदान नहीं किया गया था ।
- ज. यह विवरण झूठा है कि किसी भी पक्षकार ने पीसीएम पर टिप्पणियां प्रदान नहीं कीं ।
- झ. आंकड़ों को मात्र दायर किए गए से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि निर्यातकों को पीसीएम पर कोई आपत्ति नहीं है । यदि दोनों उत्पादों के बीच कीमत और लागत में ऐसा अंतर है जो काफी अधिक है और उसी रेंज के भीतर नहीं है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी को इनकी तुलना करते समय कीमतों के उचित समायोजन पर विचार करना चाहिए ।
- ट. इंसुलेटरों के दोनों प्रकारों के उत्पादन के अनुभव के आधार पर निर्यातकों का अनुरोध है कि पोरसिलेन और ग्लास इंसुलेटरों से जुड़ी लागत और प्रचालन व्यय में भारी अंतर होता है ।
- ठ. ग्लास इंसुलेटर दोषपूर्ण सामग्री के रूप में प्रयोग किए जाने के लिए अत्यंत कम उपयुक्त होते हैं क्योंकि इंसुलेटरों में छोटी सी भी क्षति से इंसुलेटर ग्लास शैल स्वतः विखंडित हो जाती है । दोषपूर्ण इंसुलेटरों को किसी स्थापना में प्रयोग किए जाने की संभावना नितांत कम है ।
- ड. व्यावहारिक रूप से ग्लास इंसुलेटरों के लिए डिक्पिंग की कोई घटना नहीं है । पोरसिलेन इंसुलेटरों में नियमित आधार पर अपेक्षित कई डिक्पिंग होती हैं । इससे न केवल रख-रखाव लागत में भारी वृद्धि होती है अपितु, विद्युत आपूर्ति अवसंरचना के कार्यचालन में भी बाधा आती है ।
- ढ. ग्रेफाइट इलैक्ट्रोड्स में प्राधिकारी ने गुणवत्ता पर समायोजन की अनुमति दी है । यद्यपि, विचाराधीन उत्पाद की कच्ची सामग्री, उत्पादन प्रक्रिया और भौतिक विशेषताएं समान थीं । ई यू में भी यह एक सामान्य परंपरा है । किसी समायोजन को तभी स्वीकार किया जाता है जब यह प्रदर्शित किया जाता है कि अंतर से ग्राहकों अथवा उत्पाद के प्रयोग पर प्रभावित कीमत प्रभावित होती है ।
- ण. प्रयोक्ताओं के लिए प्रचालन एवं रख-रखाव लागत में अंतर के कारण सिरैमिक इंसुलेटरों की तुलना में ग्लास इंसुलेटर लगाना सस्ता है ।
- त. वर्तमान मामले में अंतर कम प्रचालन एवं रख-रखाव लागत के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ है । ग्लास इंसुलेटरों के लिए क्षति मार्जिन और पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य और क्षति रहित कीमत को तुलना करते समय इन दोनों इंसुलेटर के प्रकारों के बीच इस अंतर की सीमा तक घटा दिया जाना चाहिए ।
- थ. पीसीएम की गणना करने में प्रयुक्त कार्य प्रणाली त्रुटिपूर्ण है और इससे अर्ध न्याय स्थिति का उल्लंघन होता है । जांच परिणाम में प्रयुक्त भाषा से ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग से इन मापदंडों को स्वीकार करते समय इन मापदंडों के प्रयोग का निर्णय लेने से पूर्व स्वतः कोई विश्लेषण अथवा निर्धारण किया है । स्वतंत्र रूप से मस्तिष्क लगाने का अनुरोध किया गया ।
- द. घरेलू उद्योग ने तुलना की कार्यप्रणाली हेतु तीन मापदंड सुझाए थे जिसे प्राधिकारी ने इस बात की कोई वास्तविक जांच किए बिना तुरंत स्वीकार कर लिया गया था कि क्या ये मापदंड स्वीकार्य हैं । प्राधिकारी एक जांच प्राधिकारी हैं और वह हितबद्ध पक्षकारों के विचार लेकर और परिणामतः पक्षकारों के दावों के समर्थन में प्रदत्त साक्ष्य की जांच कर कर्तव्य के निर्वहन हेतु एक अर्ध-न्यायिक निकाय है ।
- ध. उपर्युक्त पत्र अथवा माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के किसी अन्य पत्र की विषय वस्तु में कहीं भी हितबद्ध पक्षकारों से तुलना संबंधी कार्य प्रणाली के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहा गया है । टिप्पणी करने के लिए अवसर की मनाही से न केवल प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन होता है अपितु यह विगत परंपरा के भी अनुकूल है ।
- न. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों की आपत्तियों की अनदेखी की गई । इसके अलावा निर्यातकों के पास जांच में सहयोगी बने रहने के लिए सूचना दायर करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था । तथापि, केवल इस तथ्य के आधार पर कि ऐसे आंकड़े दायर किए गए थे, माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि हितबद्ध पक्षकारों का चुने गए मापदंडों और मापदंडों के चयन में प्रयुक्त कार्यप्रणाली के बारे में कोई विरोध नहीं है ।
- प. इस आशय का कोई समर्थनकारी साक्ष्य नहीं है कि घरेलू उद्योग वास्तव में याचिका में सूचीबद्ध और आकार (ऊंचाई, चौड़ाई, वनज आदि), प्रकार (कम वोल्टेज, उच्च वोल्टेज, अत्यंत उच्च वोल्टेज आदि), रेंज (वोल्टेज रेंज, अनुप्रयोग रेंज), मॉडल आदि जैसे संपूर्ण ब्यौरे वाले उत्पादों का उत्पादन करता है । उत्पाद क्षेत्र को रेखांकित करते हुए साक्ष्य द्वारा समर्थित पूर्ण सूचना प्रदान करने का दायित्व याचिकाकर्ताओं का है कि घरेलू उद्योग का प्रत्येक घटक विनिर्माण करने में सक्षम है । वैबसाइट में उपलब्ध सूचना न तो पूर्ण है और न ही प्रामाणिक ।
- फ. सभी क्षमताओं के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों का एक ही उत्पाद में समूहन क्षमताओं और अन्य विशेषताओं में भारी अंतर के मद्देनजर गलत है । इंसुलेटरों पर अमरीकी मामले का हवाला दिया ।
- ब. पोरसिलेन/सिरामिक और ग्लास को एक ही विचाराधीन उत्पाद में समूहन किए जाने से गलत निष्कर्ष निकलेगा ।
- भ. इंसुलेटर सजातीय उत्पाद नहीं होते हैं । अलग-अलग इंसुलेटर अलग-अलग अंतिम प्रयोग की जरूरतों को पूरा करते हैं । वे तकनीकी अथवा वाणिज्यिक रूप से एक-दूसरे के साथ प्रतिस्थापनीय नहीं हैं । प्राधिकारी बीएचईएल जो एक सार्वजनिक क्षेत्र है, से सूचना मांग

सकते हैं । यह पता चलेगा कि मशीनरी, प्रौद्योगिकी, उत्पादन प्रक्रिया आदि में अंतर है । वस्तुतः बीएचईएल अलग-अलग परिसरों में हॉलों और डिस्क इंसुलेटरों का विनिर्माण करती है ।

- म. ग्लास और सिरैमिक इंसुलेटरों की उत्पादन प्रक्रिया में अंतर है । जहां पोर्सिलेन की उत्पादन प्रक्रिया में 45 दिन लगते हैं वहीं ग्लास इंसुलेटरों का विनिर्माण मात्र एक दिन में किया जा सकता है । प्राधिकारी से अनुरोध किया गया कि वह उत्पादन प्रक्रिया में अंतर का निर्धारण करने के लिए निर्यातकों के कारखाने का दौरा करें ।
- य. सुनवाई के दौरान पी जी सी आई एल ने यह बताया कि वह ग्लास और पोर्सिलेन इंसुलेटरों को दो अलग उत्पाद मानते हैं और पोर्सिलेन की तुलना में ग्लास को तरजीह देते हैं । घरेलू उत्पादकों को मात्र अवसर प्रदान करने के लिए वे पोर्सिलेन इंसुलेटरों की आपूर्ति की विकल्प के साथ निविदाएं जारी करते हैं ।
- र. चूंकि भारतीय विनिर्माताओं के पास सीमित विनिर्माण क्षमता और प्रचालनात्मक अनुभव है तथा पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से क्षमता सीमित हो सकती है । इसलिए 765 के.वी. ए सी, 800 के.वी. एचवीडीसी और उसे अधिक के वोल्टेज वर्ग तथा 420 के.एन. और उससे अधिक की इलैक्ट्रोमैग्नेटिक क्षमता के इंसुलेटरों को अलग रखा जाए ।
- ल. ग्लास और पोर्सिलेन को समान वस्तु मानना उचित नहीं होगा और इन पर अलग से विचार किया जाना चाहिए ।
- व. ग्लास इंसुलेटरों की कच्ची सामग्री की लागत लगभग 600 आरएमबी/टन है जबकि पोर्सिलेन इंसुलेटरों की लागत लगभग 910-1160 आरएमबी/टन है ।
- श. ग्लास इंसुलेटर की लागत और कीमत पोर्सिलेन से काफी कम है और इस प्रकार ग्लास के साथ पोर्सिलेन के सामान्य मूल्य की गणना से पाटन मार्जिन में वृद्धि हुई है ।
- ष. बिड़ला पैरीक्लास बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (पाटनरोधी) (2000 (116) ईएलटी 336 ट्रिब्यूनल), इंडियन रिफ्रेक्टरी मेकर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (2000 (116) ईएलटी 319), ऑक्सो एल्कोहल इंडस्ट्री एसो. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (2001 (130) ईएलटी 58 (ट्रिब्यूनल-डैल.), मैग्नेट यूजर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (2003 (157) ईएलटी 150 (ट्रिब्यूनल- डैल0), वीडियोकॉन नर्मदा ग्लास बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (2003 (151) ईएलटी 80 (ट्रिब्यूनल- डैल0), जैसे मामलों को उद्धृत किया गया है जिनमें सेस्टेट ने जांच के दायरे से कुछेक उत्पादों को बाहर रखे जाने के आधार पर निर्णय दिए थे क्योंकि उनका विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया गया था । इस प्रकार ग्लास इंसुलेटर पोर्सिलेन इंसुलेटरों के समान वस्तुएं नहीं हैं ।
- स. इंस्ट्रुमेंट ट्रांसफार्मरों हेतु 800 के.वी. हॉलो इंसुलेटर परंतु दोषपूर्ण इंसुलेटर तथा इंसुलेटरों को उपयोग योग्य नहीं पाया गया था । सितंबर, 2013 से सही डिजाइन तैयार करने के लिए कार्य किया जा रहा है परंतु यह सफल नहीं रहा है । अतः चीन से वस्तु को प्राप्त करने के अलावा, कोई विकल्प नहीं है ।
- ह. 800 के.वी. एचवीडीसी परियोजना में एसी फिल्टर केपेसिटर के साथ उपयोग हेतु उच्च गुणवत्ता वाले पोस्ट इंसुलेटर की हाल की जरूरत के लिए भारतीय आपूर्तिकर्ताओं ने कीमत उद्धृत करने में अपनी क्षमता के प्रति खेद व्यक्त किया है । हमारे पास भारत से बाहर अथवा चीन से कीमत उद्धृत करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है ।
- क्ष. ए बी बी द्वारा (1) इंसुलेटर के ऐसे कुछेक वोल्टेज ग्रेड, जो घरेलू रूप से उपलब्ध नहीं हैं, को प्राप्त करने (2) सीमित प्राप्ति के विकल्प हेतु जोखिम को कम करने के कारणों से अल्प मात्राओं में आयात किया जाता है क्योंकि हमारी नीति कई स्रोतों को रखने की है ।
- त्र. आयात सॉलिड कोर टाइप और डिस्क टाइप के हुए हैं न कि हॉलो टाइप के इंसुलेटरों के । अतः हॉलो टाइप के इंसुलेटरों पर कोई पाटनरोधी शुल्क न लगाया जाए ।
- ज्ञ. याचिका में विचाराधीन उत्पाद के आकार, प्रकार, मॉडल और रेंज के बारे में सूचना गायब है । याचिकाकर्ताओं ने वैबसाइट का हवाला दिया है परंतु वैबसाइट में केवल वस्तु का सामान्य विवरण ही उपलब्ध है और संबद्ध वस्तु के आकार, मॉडल, प्रकार के बारे में सूचना उपलब्ध नहीं है ।
- कक. एचएस कोड 854620 में विचाराधीन उत्पाद के अलावा, विभिन्न उत्पाद शामिल हैं, इसलिए यह जरूरी है कि लाइन दर लाइन निर्यात आंकड़ों का विश्लेषण किया जाए । निर्यात आंकड़ों का सारांश भ्रामक होगा । प्राधिकारी से अनुरोध किया कि वह लाइन दर लाइन निर्यात आंकड़े उपलब्ध कराएं । जांच अवधि के दौरान 87 प्रतिशत आयात ग्लास इंसुलेटरों के हुए हैं जिनका भारत में उत्पादन नहीं होता है ।
- खख. आंकड़ों में विसंगति है क्योंकि याचिकाकर्ता ने आयात आंकड़ों के लिए चीन के सीमा-शुल्क और अपवर्जित उत्पादों के लिए डीजीसीआईएंडएस पर भरोसा किया है । यह तथ्य कि इस आंकड़े पर रक्षोपाय जांच परिणाम में भरोसा किया गया था, में कोई औचित्य नहीं है और इससे भी अधिक इस आंकड़े का जो उपयोग किया गया था वह जांच अवधि का नहीं था ।

गग. पावरग्रिड के हाथ में इस समय कुछ बड़ी निर्माण परियोजनाएं हैं जिन्हें शीघ्र पूरा करना देश की पारेषण अवसंरचना की जरूरत की पूर्ति हेतु अपेक्षित है। इसके लिए पावरग्रिड विविध संविदाएं देती है। भविष्य में इंसुलेटरों की जरूरत में आगे और लगभग 50 लाख की वृद्धि होने की आशा है। जिनमें से अधिकांश भाग का उपयोग 765 के0वी0 पारेषण लाइन में किया जाना है।

घघ. भारतीय उत्पादकों के पास पावरग्रिड की उच्च जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक क्षमता नहीं है। इसके अलावा, इंसुलेटर खरीद निविदा संविदाओं को सौंपने के लिए पावरग्रिड द्वारा आयोजित बोली में भारतीय उत्पादकों की भागीदारी भी सीमित है।

ड.ड. इस वर्ष जुलाई में लगभग 40 लाख इंसुलेटरों के लिए आयोजित बोली के दौरान केवल दो भारतीय उत्पादकों अर्थात् आदित्य नूवो और बीएचईएल ने भाग लिया था। इन दो में से भी बीएचईएल क्षमता संबंधी अड़चन का सामना कर रही है और उसकी स्वीकारोक्ति के अनुसार वह उसे प्रदत्त ऑर्डर को पूरा करने में समर्थ नहीं रही है। बीएचईएल को दिए गए ऑर्डर के एक भाग की पूर्ति अन्य स्थानों से की गई थी। इससे आदित्य नूवो एकमात्र प्रतिस्पर्धी बोलीदाता रह जाती है और इसे पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद सभी ऑर्डर दे दिए गए हैं। ऑर्डरों का कुल मूल्य पाटनरोधी शुल्क के कारण 50 करोड़ रु. तक के अतिरिक्त वित्तीय प्रभाव के साथ 120 करोड़ रु. से अधिक का है।

चच. एक ही पक्षकार द्वारा सभी ऑर्डर लिए जाने से न केवल प्रतिस्पर्धा के अभाव का पता चलता है अपितु यह अत्यंत जोखिम भरा भी है। यदि यह एकमात्र आपूर्तिकर्ता तकनीकी दोषों अथवा किसी अन्य कारण से प्रचालन बंद कर देता है तो सभी चल रही पारेषण अवसंरचना परियोजनाएं ठप पड़ जाएंगी। यह जोखिम उबरने के विकल्प के बिना आसन्नवर्ती है।

छछ. जिन घरेलू विनिर्माताओं ने पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए वर्तमान याचिका दायर की है, उन्होंने आज तक किसी बोली में भाग नहीं लिया है। अतः इस याचिका पर शुल्क लगाए जाने से केवल एक या दो पक्षकारों को लाभ मिलेगा। सबसे अधिक नुकसान जनता को होगा जो अतिरिक्त टैरिफ के बोझ को सहन करेगी।

जज. प्रारंभिक जांच परिणाम में भारतीय उत्पादकों के लिए क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु वोल्टेज वर्ग पर ध्यान दिए बिना यूनिट दर (प्रति मी.ट.) की गणना हेतु एक केएन से 420 केएन तक के इंसुलेटरों का समूहन तकनीकी रूप से सही कार्यप्रणाली नहीं है। प्रारंभिक जांच परिणाम में दिए गए आंकड़ों से जहां तक उच्चतर रेटिंग हेतु इंसुलेटरों का संबंध है, वास्तविक स्थिति का पता नहीं चलता है। इसके अलावा, वास्तविक लागत प्रारंभिक जांच परिणाम में विचारित लागत से 1.5 गुना अधिक है। एक अधिक उपयुक्त कार्यप्रणाली उच्चतर तथा न्यूनतर वोल्टेज के इंसुलेटरों के श्रेणीकरण और पृथक निर्धारण और इसके बाद एक तुलनात्मक विश्लेषण की होगी। चूंकि उच्च यांत्रिक क्षमता और उच्च वोल्टेज स्तर के इंसुलेटरों, जिनके लिए जांच, गुणवत्ता और निष्पादन के उच्च मानकों की जरूरत होती है, और अधिक महंगे बन जाएंगे यदि यूनिट कीमत की गणना प्रति मीट्रिक टन के आधार पर की जाती है।

झझ. पाटनरोधी शुल्क के उद्ग्रहण से पूर्व प्रदान की गई संविदाओं के मामले में डिलीवरी पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद होगी, वहां पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग के लिए संरक्षणात्मक उपाय के रूप में कार्य नहीं करेगा, इसके बजाए यह पावरग्रिड के लिए आयात की लागत को बढ़ाएगा और बाद में इसका प्रभाव जनता पर पड़ेगा जो सर्वोर्ध्व टैरिफ के कारण प्रभावित होंगे। इस बात को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट अधिकारी द्वारा छूट प्रमाण पत्र जारी कर पावरग्रिड को इस पाटनरोधी शुल्क से छूट प्रदान की जानी चाहिए।

टट. घरेलू उद्योग के संरक्षण और विकास हेतु तरीके तैयार करते समय निम्नलिखित पर जोर दिया जाना चाहिए :

- i. किसी विशेष प्रकार (वोल्टेज) के इंसुलेटरों की मांग को पूरा करने के लिए घरेलू उद्योग की क्षमता संबंधी सीमाएं
- ii. पाटनरोधी शुल्क की मात्रा का निर्धारण करते समय इंसुलेटरों का पृथक श्रेणीकरण
- iii. क्षति मार्जिन का उचित मूल्य

ठठ. इसके अलावा, घरेलू उद्योग को क्षमता वृद्धि करनी चाहिए और सभी संविदाएं एक ही आपूर्तिकर्ता द्वारा लिए जाने की स्थिति के बजाए और अधिक घरेलू उत्पादकों को पावरग्रिड द्वारा आयोजित बोली में भाग लेना चाहिए।

डड. यद्यपि, इंसुलेटरों के विभिन्न प्रकारों को उत्पादों की एक व्यापक श्रेणी के अंतर्गत पाया जाता है तथापि, तकनीकी एवं वाणिज्यिक अंतरों और लागत अंतरों को ध्यान में रखते हुए तुलना की कार्य प्रणाली पर विचार किया जाना चाहिए तथा समान वस्तु की जांच के प्रयोजनार्थ उन्हें तुलनीय बनाने के लिए उचित समायोजन किये जाने चाहिए।

ढढ. याचिकाकर्ताओं के इन दावों की पुष्टि करने के लिए किसी मजबूत साक्ष्य द्वारा समर्थन नहीं किया गया है कि उनके पास विचाराधीन वस्तु के सभी प्रकारों का उत्पादन करने और उनकी बिक्री करने की क्षमता है। इस प्रकार, घरेलू उद्योग के याचिकाकर्ता को इस दावे की सत्यता की पुष्टि करने के लिए संगत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराने का निर्देश दिया जाना चाहिए।

णण. घरेलू उद्योग स्पष्ट तौर पर भारतीय उपभोक्ता उद्योग की मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है।

तत. सीमित क्षमताओं के कारण घरेलू उद्योग के सदस्य (बीएचईएल को छोड़कर) सीमा तक 765 के.वी. और उसके अधिक के वोल्टेज के उच्च के.वी. इंसुलेटरों अर्थात् 420 के.एन और उससे अधिक की इलैक्ट्रो मेकेनिकल क्षमता का उत्पादन करने में असमर्थ हैं। यद्यपि, 420 के.एन.

और उससे अधिक के इंसुलेटरों का उत्पादन करने की क्षमता है। तथापि, यह देश की मांग को पूरा करने के लिए किसी दृष्टि से पर्याप्त नहीं है।

थथ. घरेलू उद्योग के इन दावों कि ग्लास इंसुलेटर और सिरमिक इंसुलेटर समान उत्पाद हैं, के प्रतिकूल सुनवाई के लिए उपस्थित दोनों प्रयोक्ताओं ने स्पष्ट तौर पर यह बताया कि सिरमिक और ग्लास इंसुलेटर पूर्णतः भिन्न हैं। वस्तुतः भारत में सबसे बड़े प्रयोक्ता पीजीसीआईएल ने यह स्पष्ट किया कि वह ग्लास इंसुलेटरों की खरीद को तरजीह देगा क्योंकि उनकी प्रचालन और रख-रखाव लागत कम होती है। तथापि, घरेलू उद्योग के लाभार्थ प्रयोक्ता अपनी निविदा अपेक्षाओं में सिरमिक इंसुलेटर को भी शामिल कर लेते हैं।

दद. पॉर्सिलेन और ग्लास इंसुलेटरों से संबद्ध लागत और प्रचालन व्यय में भारी अंतर है। उदाहरणार्थ ग्लास इंसुलेटर दोषपूर्ण सामग्री के रूप में प्रयोग किए जाने के लिए अत्यंत कम उपयुक्त होते हैं क्योंकि इंसुलेटरों में छोटी सी भी क्षति से इंसुलेटर ग्लास शैल स्वतः विखंडित हो जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि दोषपूर्ण इंसुलेटरों को किसी स्थापना में प्रयोग किए जाने की संभावना नितांत कम है। इसके अलावा, ग्लास इंसुलेटरों में पॉर्सिलेन इंसुलेटरों की तुलना में लाभ निहित होता है क्योंकि व्यवहारिक रूप से ग्लास इंसुलेटरों के लिए डिक्पिंग की कोई घटना नहीं होती है। तुलनात्मक रूप से पॉर्सिलेन इंसुलेटरों में नियमित आधार पर अपेक्षित कई डिक्पिंग होती हैं। इससे न केवल रख-रखाव की लागत में भारी वृद्धि होती है अपितु विद्युत आपूर्ति अवसंरचना के कार्यचालन में भी बाधा आती है। इसके अलावा, यह प्रचालन एवं रख-रखाव लागत में अंतर के कारण सिरमिक इंसुलेटरों की तुलना में ग्लास इंसुलेटर लगाने के लिए प्रयोक्ताओं हेतु सस्ता है।

धध. एक कोर्ड के वर्गीकरण में उत्पाद क्षेत्र के पृथक्करण की जरूरत नहीं हो सकती है अपितु, उपभोक्ता अवधारणा और प्रचालन लागत में अंतर को जोड़ा जा सकता है, एच एस वर्गीकरण में अंतर इतना पर्याप्त होना चाहिए जिससे यह पता चल सके कि पाटन और क्षति हेतु सिरमिक तथा ग्लास इंसुलेटरों की तुलना करते समय आवश्यक समायोजन किया जाना चाहिए।

नन. याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया है कि कंपोजिट इंसुलेटरों को अलग रखा जाए। वर्तमान मामले में निर्यातकों ने प्रश्नावली दायर करते समय और माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्देश दिए जाने पर पीसीएन से संबंधित बिक्री और लागत के लिए समस्त संगत सूचना उपलब्ध कराई है। अतः निर्यातकों के पास किसी सूचना उपलब्ध न होने से मना करने अथवा उसे उपलब्ध न कराने का कोई बहाना नहीं है और न ही उन्होंने सूचना रोककर जांच में बाधा डाली है।

पप. याचिकाकर्ताओं का तर्क कच्ची सामग्री, उत्पादन लागत, बिक्री कीमत आदि जैसे विभिन्न कारकों पर आधारित है; तथापि, ग्लास और सिरमिक इंसुलेटरों में भी अलग-अलग कच्ची सामग्री और उत्पादन प्रक्रिया/बिक्री कीमत आदि शामिल होती है परंतु याचिकाकर्ताओं ने अपनी सुविधानुसार यह पाया है कि वे तुलनीय हैं जबकि कंपोजिट इंसुलेटर तुलनीय नहीं हैं।

फफ. याचिकाकर्ताओं के लिए यह दावा करना गलत और अप्रतिनिधिक है कि निर्यातकों द्वारा कोई उचित उत्पाद कोडिंग सूचना प्रदान नहीं की गई थी। निर्यातकों ने उत्पाद प्रकारों, उत्पाद कोडों और विशेषताओं से संबंधित पूर्ण सूचना के साथ परिशिष्ट-1, 2, 8, 8क और 8ख दायर की थी। इसके अतिरिक्त निर्यातकों ने निर्यातकों की आंतरिक कोडिंग प्रणाली के अनुसार विभिन्न उत्पाद कोडों को स्पष्ट करते हुए एक विस्तृत शीट भी दायर की थी।

बब. याचिकाकर्ता ने यह तर्क दिया है कि निर्यातकों ने संगत सूचना प्रदान करने में कोताही बरती है। वर्तमान मामले में निर्यातकों ने प्रश्नावलियों के उत्तर दायर करते समय और पीसीएन से जुड़ी बिक्री और लागत हेतु समस्त संगत सूचना प्रदान की है। निर्यातकों ने केवल वर्तमान जांच में अपनाई गई प्रक्रिया और प्रोसेस पर ही आपत्तियां उठाई हैं जिनमें भारी खामियां अभी भी विद्यमान हैं।

भभ. लगभग 87 प्रतिशत आयात ग्लास इंसुलेटर का होता है जिसका विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा भी नहीं किया जाता। घरेलू उद्योग द्वारा एक ऐसे उत्पाद के आयातों के खिलाफ सुरक्षा मांगने का प्रयास किया जा रहा है जिसका वह स्वयं उत्पादन नहीं करता है।

मम. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा आयात किए जा रहे ग्लास इंसुलेटर अपेक्षित कच्ची सामग्री, उत्पादन प्रक्रिया और समय आदि जैसे विभिन्न मापदंडों के संबंध में पॉर्सिलेन इंसुलेटरों से पूर्णतः भिन्न हैं। आयातों के घरेलू प्रयोक्ताओं पावरग्रिड तथा एबीबी लि. ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है कि दोनों अलग-अलग हैं लेकिन घरेलू उद्योग को समर्थन देने के लिए दोनों प्रयोक्ताओं ने ग्लास और पॉर्सिलेन इंसुलेटरों को एक ही निविदा में रखा है। दोनों प्रमुख घरेलू प्रयोक्ताओं ने आगे यह स्पष्ट किया है कि आयातित ग्लास इंसुलेटर घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु की तुलना में बेहतर गुणवत्ता का है और घरेलू उद्योग ने ग्लास इंसुलेटर के विनिर्माण में सक्षम बनने के लिए अपनी विनिर्माण सुविधाओं का उन्नयन नहीं किया है।

यय. घरेलू उद्योग में से केवल एक उत्पादक, बीएचईएल द्वारा 765 के.वी. एच वी ए सी और 800 के.वी. एच वी डी सी इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों और 420 के.एन. तथा उससे अधिक की यांत्रिक क्षमता के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों का विनिर्माण किया जाता है। परंतु बीएचईएल के पास भारतीय बाजार की समूची मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता नहीं है। बीएचईएल उपर्युक्त विनिर्देशनों वाले इंसुलेटरों से संबंधित बोली में भाग लेती है जबकि शेष घरेलू उद्योग इस तथ्य की वजह से निविदा बोली में भाग नहीं लेता है कि संबद्ध वस्तु का उत्पादन शेष घरेलू उद्योग (बीएचईएल को छोड़कर) द्वारा नहीं किया जाता है। इस प्रकार बीएचईएल, जिसे एक निविदा प्रदान की जा चुकी है और जो पावर ग्रिड को उसकी आपूर्ति करने के चरण में है, को छोड़कर घरेलू उद्योग द्वारा ऐसे उत्पाद के आयात हेतु क्षति का दावा किया जा रहा है जिसका वह उत्पादन ही नहीं करता है। अतः यदि बीएचईएल को पाटन से कोई शिकायत नहीं है और वह संबद्ध वस्तु की आपूर्ति करने में सक्षम है, तो शेष घरेलू उद्योग इस पर आपूर्ति का दावा नहीं कर सकता।

रर. ऐसे मामलों में, जहां (i) इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर अलग-अलग प्रकार के होते हैं (ii) इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर का विनिर्माण अलग-अलग कच्ची सामग्री और अलग-अलग उत्पादन प्रक्रिया से किया जाता है; यह एक स्वीकृत तथ्य है कि विभिन्न मुद्दों की तुलना और उनकी जांच तथ्यपरक ढंग से नहीं की जा सकती। इंसुलेटरों के विभिन्न प्रकारों के संयोजन पर कड़ी आपत्ति प्रकट की।

लल. ग्लास इंसुलेटर, जिनका उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जा रहा है और 400 के वी तक के इंसुलेटर, जिनकी घरेलू उद्योग द्वारा और प्रयोक्ताओं द्वारा अनन्य रूप से अपेक्षा की जाती है, को वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद से बाहर रखा जाना चाहिए।

वव. पॉलीमर इंसुलेटर घरेलू उद्योग के दावे के अनुसार पॉर्सिलेन इंसुलेटरों से भिन्न हैं। घरेलू उद्योग का यह मत कुछेक मापदंडों पर आधारित है। तथापि, घरेलू उद्योग ने ग्लास और इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों की तुलना करते समय इन्हीं मापदंडों की अनदेखी की है। अंतर्राष्ट्रीय मानकों, जांच और निष्पादन आदि के अनुसार दोनों भिन्न हैं।

शश. यदि जांच जारी रहती है तो (i) ग्लास इंसुलेटर (ii) 400 के.वी. तक के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर (iii) 765 के.वी. एचवीएसी, 800 के.वी. एचवीडीसी और उससे उच्च वोल्टेज जैसे उच्च वोल्टेज वाले इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर (iv) 220 के.एन और उससे अधिक की उच्च इलैक्ट्रो मेकेनिकल क्षमता के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर को अलग रखा जाना चाहिए।

षष. जहां तक सभी प्रकार के इंसुलेटरों को एक वस्तु मानने का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा उल्लिखित अमरीकी/ईयू जांचों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं है। उल्लिखित जांचों के उत्पाद और तथ्य पूर्णतः अलग हैं; उनका वर्तमान जांच में कोई खास महत्व नहीं है और यह भी कि घरेलू उद्योग ने एक धुंधली तस्वीर पेश करते हुए इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों के सभी प्रकारों को शामिल कर लिया है।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी करने से पूर्व घरेलू उद्योग के विचार

5. घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पादों के मुद्दे के संबंध में निम्नलिखित बातें रखी हैं :

क. इंसुलेटर या तो पॉर्सिलेन/सिरामिक या ग्लास का हो सकता है। पॉर्सिलेन इंसुलेटर का उत्पादन मिट्टी, सिलिका, एल्युमिना, फ्रेड्सपार और धातु के पुर्जों का प्रयोग कर किया जाता है। जबकि ग्लास इंसुलेटर का उत्पादन सिलिका और धातु के पुर्जों का प्रयोग कर किया जाता है। दोनों एक ही वस्तु हैं यदि इन दोनों किस्मों की विशेषताओं पर विचार किया जाए, इनकी विनिर्माण प्रक्रिया देखा जाए, इनके प्रयोग देखे जाएं या इनकी कीमतें देखी जाएं। वस्तुतः ये उत्पाद प्रौद्योगिकी निष्क्रिय उत्पाद हैं। पावरग्रिड कार्पोरेशन ने ऐसे इंसुलेटरों की खरीद के लिए निविदाएं जारी की हैं जो ग्लास या पॉर्सिलेन के हों। कार्पोरेशन ने ग्लास और पॉर्सिलेन इंसुलेटर्स के बीच कोई भेद नहीं रखा है और पूर्णतः कीमतों में अंतर के आधार पर आदेश दिया है। कार्पोरेशन ने दोनों उत्पादों के बीच कोई तकनीकी भिन्नता नहीं की है। साथ ही कभी-कभी उत्पाद ग्लास या पॉर्सिलेन के संदर्भ के बिना आपूर्तिकर्ता द्वारा सूची में दिया जाता है। ग्लास इंसुलेटर के विनिर्माताओं के संबंध में उपलब्ध वाणिज्यिक सूची में ग्लास नहीं होता है। विचाराधीन उत्पाद के आत आंकड़ों में भी कई बार ग्लास नहीं लिखा होता।

ख. पॉर्सिलेन/सिरामिक तथा ग्लास इंसुलेटर दोनों में निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

- i. आयाम/परीक्षण के लिए राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय मानक समान हैं।
- ii. आयाम समान हैं।
- iii. कैप तथा बॉलपिन सामग्री समान है।
- iv. उत्पादों की शेप, सत्यापन और एसेम्बली जैसे विनिर्माण के प्रमुख कदम समान हैं।
- v. असेम्बली के लिए प्रयुक्त सीमेंट समान है।
- vi. एसेम्बली प्रक्रिया समान है।
- vii. क्योरिंग प्रक्रिया समान है।
- viii. सभी प्रकार/स्वीकार्यता और नेमी परीक्षण प्रयुक्त कच्ची सामग्री की विशेषता को छोड़कर समान हैं।
- ix. पैकिंग किस्म भी समान है।
- x. इलैक्ट्रिकल/मेकेनिकल/थर्मल स्ट्रेस संबंधी आवश्यकताएं समान हैं।
- xi. निष्पादन संबंधी आवश्यकताएं समान हैं।

ग. ग्लास/पॉर्सिलेन की विनिर्माण प्रक्रिया में शामिल प्रमुख कदम हैं : कच्ची सामग्री को मिलाना, स्लरी की तैयारी (सिरामिक और पॉर्सिलेन में) तथा पिघलाना (ग्लास के मामले में), शेप देना, सुखाना, मेटल असेम्बली तथा परीक्षण। ग्लास इंसुलेटर के संबंध में उत्पादन प्रक्रिया पॉर्सिलेन इंसुलेटर के संबंध में उत्पादन प्रक्रिया के समान है। तथापि, इसमें शामिल प्रौद्योगिकी कच्ची सामग्री में अंतर की दृष्टि से कुछ हद तक भिन्न है।

घ. चीन से निर्यातित विषयगत सामान में और याचिकाकर्ता कंपनियों द्वारा उत्पादित सामान में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पॉर्सिलेन/सिरामिक इंसुलेटर्स तथा चीन से आयातित यही इंसुलेटर समान वस्तुएं हैं तथा भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, प्रकार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विशिष्टियां, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा सामान का किराया वर्गीकरण जैसी

अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से समान वस्तुएं एवं तुलनीय हैं । उपभोक्ता इनका इस्तेमाल कर सकते हैं और दोनों को आपस में बदलकर इस्तेमाल कर रहे हैं । दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं ।

- ड. जहां तक 765 केवी और एचवीडीसी इंसुलेटर को निकालने का दावा है, यह तथ्य कि घरेलू उद्योग के किसी एक घटक द्वारा किसी विशेष उत्पाद किस्म का उत्पादन नहीं किया जाता, नियमों के तहत पूर्णतः अवास्तविक है । यह उद्योग तब तक संरक्षण का हकदार है, जब तक घरेलू उद्योग के किसी घटक द्वारा इस उत्पाद का उत्पादन किया गया है और आपूर्ति की गई है । घरेलू उद्योग के घटकों में पर्याप्त क्षमता है और देश की मांग को 1200 के.वी. तक पूरा कर सकते हैं । जहां तक 420 के.एन. को हटाने का संबंध है, इन इंसुलेटरों की आपूर्ति घरेलू उद्योग के सभी प्रमुख व्यापारियों द्वारा की गई है ।
- च. याचिकाकर्ताओं ने 854620 के लिए आयात आंकड़ों पर पंक्ति दर पंक्ति विचार किया है और उन सभी प्रविष्टियों को अलग कर दिया है जो विचाराधीन उत्पाद में नहीं हैं । याचिकाकर्ताओं ने विचाराधीन गैर उत्पाद को हटाए बिना समरी आंकड़ों को नहीं अपनाया है ।
- छ. याचिकाकर्ता ने इस वजह से उत्पाद के लिए 6 अंकीय वर्गीकरण विनिर्दिष्ट किया है कि याचिकाकर्ता ने उस विचाराधीन उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क का अनुरोध किया है जो 6 अंकों के तहत नहीं आते । कई देशों ने अपनी एच एस कोड प्रणालियों में वोल्टेज डेटिंग के आधार पर अलग-अलग उत्पादों को विशिष्ट बनाया है । इस प्रकार भारतीय सीमा-शुल्क वर्गीकरण ने वोल्टेज रेटिंग में अंतर का अर्थ यह नहीं है कि अलग-अलग 8 अंकीय एच एस कोड वाले उत्पाद किस्म अलग-अलग उत्पाद हैं ।
- ज. निर्यातकों के रूप में सूचीबद्ध किए जा रहे टीवीएस और एम डब्ल्यू वी के संबंध में क्रमशः कंडेन्सर बूशिंग और वोल्टेज ट्रांसफार्मर निर्यात करने के बावजूद तथा बीएचईएल एकमात्र घरेलू उत्पादक होने के नाते जो कि उनका विनिर्माणकर्ता है, कंडेन्सर बूशिंग और ट्रांसफार्मर्स वर्तमान याचिका और जांचों के कार्यक्षेत्र से बाहर हैं ।
- झ. खाली कंपोजिट इंसुलेटर्स होने के नाते वोल्टेज ट्रांसफार्मर में प्रयुक्त इंसुलेटर्स के संबंध में यह स्वीकार किया जाता है कि कंपोजिट इंसुलेटर्स विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र से बाहर हैं ।
- ट. शुद्धि पत्र जारी करने वाले प्राधिकारी के संबंध में विचाराधीन उत्पाद का कार्यक्षेत्र निष्कर्षों में स्पष्ट किया जा सकता है ।
- ठ. कंपोजिट इंसुलेटर्स निम्नलिखित कारणों से विशिष्ट रूप से भिन्न वस्तु है :-
- आईईसी (इंटरनेशनल इलैक्ट्रोटेक्निकल कमीशन) के अनुसार कंपोजिट इंसुलेटर्स ग्लास/पोर्सलेन इंसुलेटर्स से भिन्न श्रेणी में आते हैं तथा पृथक आईईसी मानकों के अधधीन हैं ।
 - कंपोजिट इंसुलेटर्स के लिए कच्ची सामग्री, संघटन, विनिर्माण प्रक्रिया प्रति किलो उत्पाद लागत, बिक्री कीमत महत्वपूर्ण रूप से भिन्न हैं ।
 - पॉलीमर/कंपोजिट इंसुलेटर प्रौद्योगिकी सापेक्ष रूप से नई है और जहां तक प्रयोग का संबंध है, इन इंसुलेटर्स की कतिपय सीमाएं हैं । पालीमर/कंपोजिट इंसुलेटर्स उच्चतर झुकाव वाली शक्ति की अपेक्षा रखने वाले सब-स्टेशन पोस्ट इंसुलेटर्स अनुप्रयोगों के लिए अभी तक विकसित नहीं किए गए हैं । कुछ देशों में पालीमर/कंपोजिट इंसुलेटरों को 230 के वी की वोल्टता और उससे अधिक अथवा उच्च यांत्रिक शक्ति के अनुप्रयोगों के लिए सामान्यतः प्राथमिकता नहीं दी जाती है ।
 - पावर ग्रिड कार्पोरेशन जैसे उपभोक्ताओं ने निविदाएं जारी की हैं जिनमें उन्होंने परस्पर परिवर्तनीय ग्लास एवं पोर्सलेन इंसुलेटर्स की खरीद की मांग की है परंतु कंपोजिट इंसुलेटर्स के लिए अलग टेंडर जारी किए हैं ।
 - राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड जैसे उपभोक्ताओं ने एक निविदा जारी की है जिसमें ग्लास पोर्सलेन और कंपोजिट इंसुलेटर्स शामिल हैं । कंपोजिट इंसुलेटर्स के बोलीदाताओं ने संपूर्ण मात्रा के लिए दरें दी हैं और उनकी बोली कीमत सबसे कम थी । तथापि, विद्युत बोर्ड ने अपनी कुल निविदा मात्राओं के केवल 10 प्रतिशत के लिए कंपोजिट इंसुलेटर्स का आदेश दिया । 90 प्रतिशत का आदेश सिरामिक इंसुलेटर आपूर्तिकर्ताओं को दिया गया ।
 - सामान्यतः कंपोजिट इंसुलेटर की कीमत प्रति इंसुलेटर कंपोजिट इंसुलेटर्स की कीमतों की अपेक्षा काफी कम (अधिक से अधिक 30-40 प्रतिशत) है । विरोधाभास से ग्लास इंसुलेटर्स के आपूर्तिकर्ताओं को, यदि आपूर्तिकर्ता आदेश प्राप्त करना चाहें, कंपोजिट इंसुलेटर्स की तुलना में प्रति इंसुलेटर तुलनीय कीमत पेश करनी चाहिए ।
 - कंपोजिट इंसुलेटर्स की तुलना में अत्यधिक सस्ता होने के बावजूद सिरामिक और कंपोजिट इंसुलेटर्स के लिए प्रयोक्ता अधिमानता के कारण भारतीय उत्पादकों ने कंपोजिट इंसुलेटरों की महत्वपूर्ण अनुपयुक्त क्षमताएं हैं । अतः कंपोजिट इंसुलेटर्स वाणिज्यिक रूप से ग्लास/पोर्सलेन इंसुलेटर का स्थान नहीं ले सकते ।
- ड. यद्यपि, विभिन्न प्रकार के ग्लास एवं पोर्सलेन इंसुलेटर एक ही उत्पाद होते हैं, तथापि याचिकाकर्ताओं ने स्वच्छ तुलना के प्रयोजन से अलग-अलग किस्म में विचाराधीन उत्पाद को अलग किए जाने के लिए पहले ही प्रस्ताव कर दिया है । निर्यातकों से अपेक्षा है कि वे अपनी प्रश्नावली के उत्तरों में अलग-अलग उत्पाद किस्म के लिए अलग-अलग सूचना दें ।
- ढ. चीन, जापान, कोरिया, ईयू, साउथ अफ्रीका, ताइवान, थाइलैंड और यूएसए से स्टेनलैस स्टील के कोल्ड रॉल्ल्ड फ्लैट स्टील उत्पादों में उत्तरदाता पक्षकार ने विश्वास किया, घरेलू उद्योग द्वारा पेश की गई समान वस्तु का अभाव था । इस मामले में घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किए

गए उत्पाद की विशिष्टियां समान हैं और उपभोक्ताओं ने किसी भी उत्पाद के लिए किसी भी अंतर वाली कीमत का भुगतान करने से मना कर दिया है ।

- ग. वस्तुतः विरोधी इच्छुक पक्षकार द्वारा उल्लिखित मामलों से घरेलू उद्योग के इस आशय को समर्थन मिलता है कि यदि उत्पाद अंतर परिवर्तनीय रूप से प्रयोग में लाया जाता है और एक-दूसरे के वाणिज्यिक प्रतिस्पर्धा में है तो वह एक ही वस्तु है तथा निर्दिष्ट प्राधिकारी उन दो को एक वस्तु में शामिल करने में औचित्यपूर्ण है ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग के विचार

6. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद के मुद्दे के बारे में निम्नलिखित अतिरिक्त अनुरोध किए हैं:
- क. इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों के सभी प्रकारों में समान मूलभूत भौतिक विशेषताएं हैं और इनके उपयोग समान हैं तथा इनकी बिक्री समान अथवा समानरूप बिक्री माध्यमों के जरिए की जाती है । अतः इंसुलेटरों के सभी प्रकारों को समान उत्पाद माना जाता है ।
- ख. सभी प्रमुख घरेलू प्रतिस्पर्धियों के पास पर्याप्त विनिमय योग्य क्षमता है और वे 1200 के.वी. तक की देश की मांग को पूरा कर सकते हैं । भारतीय उत्पादकों द्वारा भारतीय बाजार में 765 के.वी. इंसुलेटरों की पर्याप्त मात्रा (4 मिलियन से अधिक) की आपूर्ति की जा चुकी है । सभी प्रमुख प्रतिस्पर्धी देश में समूची मांग को पूरा करने के लिए पूर्णतः तैयार हैं ।
- ग. जहां तक विभिन्न एच एस कोडों में उत्पाद के वर्गीकरण का संबंध है, विश्व भर के जांच प्राधिकारियों ने अलग-अलग एच एस वर्गीकरणों की कई संख्या के अंतर्गत आने वाले उत्पादों को शामिल करने के लिए विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र पर विचार किया है ।
- घ. उपर्युक्त प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तरों के अवलोकन से यह पता चलता है कि इन निर्यातकों ने उनके द्वारा निर्यातित उत्पाद के प्रकार को अभिज्ञात नहीं किया है । प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा निर्यातित उत्पाद प्रकार पर विचार करते हुए याचिकाकर्ताओं ने प्रस्ताव किया है कि पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के प्रयोजनार्थ उचित तुलना सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित गुणधर्मों को अभिज्ञात करना और उन्हें पृथक करना पर्याप्त होगा ।
- ङ. जहां तक ग्लास और पोर्सिलेन इंसुलेटर में लागत और कीमत में अंतर के कारण समायोजनों का संबंध है, याचिकाकर्ताओं को इस पर कोई आपत्ति नहीं है । वस्तुतः याचिकाकर्ताओं का यह तर्क है कि यद्यपि, ग्लास और सिरमिक इंसुलेटर एक ही वस्तु हैं, तथापि, ग्लास और सिरमिक इंसुलेटरों के भार में स्वीकृत अंतर है । चीन के उत्पादकों और उनकी एसोसिएशन ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि ग्लास और सिरमिक इंसुलेटर के बीच भार में अंतर कम से कम 27 प्रतिशत है और यह 45 प्रतिशत तक अधिक हो सकता है ।
- च. जहां तक दोषपूर्ण सामग्री के रूप में ग्लास इंसुलेटरों की कम उपयुक्तता का संबंध है, पावरग्रिड के लिए मैंगर जांच कर उनके द्वारा खपत किए जा रहे इंसुलेटरों की 100 प्रतिशत जांच अपेक्षित है । इस जांच से दोषपूर्ण इंसुलेटर का तुरंत पता चल जाएगा कि क्या वह ग्लास है अथवा पोर्सिलेन ।
- छ. जहां तक पोर्सिलेन इंसुलेटरों की डिकैपिंग का संबंध है, ग्लास इंसुलेटरों के उपभोक्ताओं ने इस विशेषता को दोनों उत्पादों के बीच दृष्टव्य पर्याप्त अंतर के रूप में अभिज्ञात नहीं किया है ।
- ज. जहां तक ग्रेफाइट इलैक्ट्रोड मामले के हवाले का संबंध है, हितबद्ध पक्षकारों ने उक्त मामले का सही हवाला दिया है जहां प्राधिकारी ने यह माना है कि यद्यपि, आयातित और घरेलू उत्पाद समान वस्तु हैं । तथापि, आयातित उत्पाद की प्रत्यक्ष तुलना इस बात के मद्देनजर घरेलू उत्पाद के साथ किया। आधार पर नहीं की जा सकती कि आयातित उत्पाद की खपत घरेलू उत्पाद की तुलना में अधिक थी ।
- झ. उत्पाद के उपभोक्ताओं ने सिरमिक इंसुलेटर की तुलना में ग्लास इंसुलेटर के प्रचालन और रख-रखाव की लागत में ऐसे किसी अंतर की पुष्टि नहीं की है । बहरहाल प्रचालन और रख-रखाव लागत में ऐसा अंतर निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए इस वजह से पूर्णतः महत्वहीन है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पाटन मार्जिन के निर्धारण पर निर्यातकों के कारखाना स्तर और क्षति मार्जिन का निर्धारण पत्तन/कारखाना स्तर पर करने पर विचार किया जा रहा है ।
- ट. जहां तक पीसीएन कार्य प्रणाली का संबंध है, किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस बात की पुष्टि नहीं की है कि प्रस्तावित पीसीएन प्रणाली किस प्रकार अनुचित है और न ही किसी हितबद्ध पक्षकार ने किसी वैकल्पिक पीसीएन प्रणाली का सुझाव दिया है । अतः हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अपनाई गई प्रणाली का तात्पर्य जांच में बाधा डालने के प्रयास के रूप में निकाला जाना चाहिए और इस बाबत नियम 6(8) को सीधे लागू किया जाना चाहिए । सत्यापन सर्व प्रथम याचिकाकर्ता की कंपनियों में से एक के परिसर में किया गया था जिसका एकमात्र उद्देश्य यह था कि उत्पाद की जानकारी ली जा सके और तुलना कार्यप्रणाली के बारे में निर्णय लिया जा सके ।
- ठ. इंसुलेटरों के दो प्रकारों के प्रकारों के उत्पादन हेतु प्रयुक्त उत्पादन प्रक्रिया प्रौद्योगिकी में कुछ अंतरों के साथ समान है । इस बारे में यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि कि सूक्ष्म स्तर पर किन्हीं दो उत्पादों द्वारा प्रयुक्त उत्पादन प्रक्रिया हमेशा अलग होगी ।
- ड. पीजीसीआईएल द्वारा जारी निविदाओं में स्पष्ट रूप से दोनों उत्पादों की तुलनात्मक कीमत पर निर्भर रहते हुए पोर्सिलेन अथवा ग्लास इंसुलेटरों की अदल-बदल कर खरीद करने के लिए उन्हें विकल्प दिया जाता है । निविदा की निबंधन और शर्तों के अनुसार यदि पोर्सिलेन इंसुलेटर

निविदा का मूल्य कम है तो पीजीसीआईएल पोर्सलेन इंसुलेटर की खरीद करेगी; और यदि ग्लास इंसुलेटर का मूल्य कम है तो पीजीसीआईएल ग्लास इंसुलेटर की खरीद करेगी। अतः इस बात की निस्संदेह पुष्टि की जाती है कि पीजीसीआईएल द्वारा समान अनुप्रयोग हेतु ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटरों की अदल-बदलकर खरीद की जाती है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

7. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद ग्लास अथवा पोर्सलेन/सिरामिक का इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर है वह चाहे एसेंबल किया हुआ हो या असेंबल न किया हुआ हो। तथापि, (क) 1 के वी तक की वोल्टेज डेटिंग के टेलीफोन अथवा टेलीग्राफ इंसुलेटर, (ख) 1 के वी तक की वोल्टेज डेटिंग के इलैक्ट्रिकल अथवा इलैक्ट्रॉनिक उपकरण/डिवाइस इंसुलेटर्स, (ग) कंपोजिट इंसुलेटर्स वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र से हटाए जाते हैं।

8. याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि पोर्सलेन/सिरामिक इंसुलेटर्स (सीमा-शुल्क टैरिफ उप शीर्ष 8546.20 के अधीन वर्गीकृत तथा ग्लास इंसुलेटर्स उप शीर्ष 8546.10 के अधीन वर्गीकृत) हैं। वर्तमान जांच के उद्देश्य से एक ही वस्तु मानी जाती है। उन्होंने यह दावा ग्लास इंसुलेटर्स और पोर्सलेन/सिरामिक इंसुलेटर्स की अनिवार्य विशेषताओं, कार्यों तथा प्रयोगों, कीमत, वितरण एवं विपणन, तथा तकनीकी एवं वाणिज्यिक अंतर परिवर्तनीयता के आधार पर किया है।

9. "समान वस्तु" की परिभाषा से संबंधित नियम 2(घ) में विनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु का अभिप्राय उस वस्तु से है जो जांचाधीन वस्तु के संबंध में हर प्रकार से समान अथवा उसी तरह की है अथवा किसी वस्तु के अभाव में दूसरी वस्तु जो जांच के अधीन आने वाली उस वस्तु से बारीकी से समानता वाली विशेषताएं रखती हो।

10. "समान वस्तु" शब्द की उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट है कि समान वस्तु को जांच के अधीन आने वाली वस्तु के हर प्रकार से समान अथवा उसी तरह का होना चाहिए। समान वस्तु शब्द के कार्यक्षेत्र में वे वस्तुएं शामिल होंगी जो समान वस्तुओं अथवा हर प्रकार से उसी तरह की वस्तुओं के अभाव में जांच के अधीन आने वाली वस्तुओं से बारीकी से मिलती-जुलती विशेषताओं वाली हों। अतः "के अभाव में" शब्दों का प्रयोग संविधि के तहत समान वस्तु शब्द के निर्वचन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसमें कोई विवाद नहीं है कि "के अभाव में" शब्दों को केवल घरेलू उद्योग के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। चाहे "समान वस्तु" का उत्पादन करने वाला "घरेलू उद्योग" विद्यमान हो या न हो। दूसरे शब्दों में यदि समान वस्तु का उत्पादन करने वाला घरेलू उद्योग नहीं है तो कानून इस शब्द के कार्यक्षेत्र में उन वस्तुओं को भी शामिल करने के लिए प्राधिकारियों को अनुमति देता है जो बारीकी से मिलती-जुलती विशेषताओं वाली हों।

11. जहां तक विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत ग्लास इंसुलेटर्स को शामिल करने और ग्लास तथा पोर्सलेन इंसुलेटर्स को एक वस्तु के रूप में मान्य का संबंध है, प्राधिकारी ने कई मानदंडों पर विचार किया है। यह विवादरहित स्थिति है कि ग्लास से बने इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स भारत में उत्पादित नहीं किए जाते। घरेलू उद्योग ने यह बात रखी है कि ग्लास और पोर्सलेन दोनों से बने इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स सिरामिक इंसुलेटर्स की श्रेणी में आते हैं। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि केवल इस तथ्य कि ग्लास से बने इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स भारत में उत्पादित नहीं किए जाते, का मतलब यह नहीं होता कि उसे विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र में शामिल नहीं किया जा सकता। प्राधिकारी को यह विचार करने की अपेक्षा है कि कि क्या घरेलू उद्योग आयातित उत्पाद के समान वस्तु पेश कर रहा है। अतः प्राधिकारी ने यह विचार किया कि क्या घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पोर्सलेन के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर ग्लास के आयातित इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर के समान वस्तु है। अतः प्राधिकारी ने जांच की कि ग्लास और पोर्सलेन, दोनों के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स समान वस्तु हैं।

12 (क). यह नोट किया जाता है कि ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर्स से संबंधित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानक ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर्स के संबंध में विनिर्दिष्ट उत्पाद विशेषताओं में कोई अंतर नहीं दर्शाते। उत्पाद के क्रेताओं के निविदा दस्तावेज घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं जो यह दर्शाते हैं कि उपभोक्ता ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर्स में कोई अंतर नहीं देखते। उपभोक्ताओं द्वारा विनिर्दिष्ट ग्लास एवं पोर्सलेन इंसुलेटरों के लिए तकनीकी मानदंड समान हैं। प्राधिकारी ने पोर्सलेन और ग्लास इंसुलेटर के उत्पादन में शामिल उत्पादन प्रक्रिया की जांच की और यह पाया कि यद्यपि, कुछ उत्पादन प्रक्रियाएं भिन्न हैं, तथापि, कुछ प्रक्रियाएं समान हैं। दोनों उत्पादों के बीच सामान प्रक्रियाओं में आकार निर्माण प्रक्रिया, सत्यापन प्रक्रिया, असेम्बली प्रक्रिया, क्योरिंग प्रक्रिया, परीक्षण प्रक्रिया और पैकिंग पद्धति शामिल हैं। तथापि, यह नोट किया जाता है कि कई कच्ची सामग्रियों में और उत्पादन प्रौद्योगिकी के कुछ भाग में अंतर है। ग्लास इंसुलेटर्स के उत्पादन में प्रारंभिक रूप से आकार में मोल्डिंग मोल्डन सिलिका और उसके बाद धातु के हिस्से-पुर्जे जोड़ना शामिल है। पोर्सलेन इंसुलेटर्स के मामले में या तो मिट्टी का मिश्रण अपेक्षित आकार में दबाकर अथवा अपेक्षित आकार में औजारों का प्रयोग करके उसे आकार देकर अपेक्षित आकार में मिट्टी को ढाला जाता है। उसके बाद धातु के पुर्जे जोड़े जाते हैं। तथापि, इन अंतरों के बावजूद उत्पाद गुणधर्मों की दृष्टि से परिणामी उत्पाद समान होता है। प्राधिकारी यह पाते हैं कि उपभोक्ता उत्पाद को एक प्रौद्योगिकी निष्क्रिय उत्पाद के रूप में मानते हैं। घरेलू उद्योग ने यह दर्शाते हुए साक्ष्य दिए कि पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ने ऐसे इंसुलेटर की खरीद के लिए निविदाएं जारी कीं जो ग्लास अथवा पोर्सलेन के हो सकते हैं और दोनों में कोई अंतर नहीं रखा तथा आदेश देने के लिए पूरा मानदंड कीमत को रखा। अभिलेख में मौजूद सूचना यह दर्शाती है कि ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर समान कार्य करते हैं। उपभोक्ताओं ने इस तथ्य पर कोई विवाद नहीं किया है कि ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर्स परस्पर परिवर्तनीय रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं। यह भी नोट किया जाता है कि दोनों इंसुलेटर्स की कीमतों में कोई अंतर नहीं है। वस्तुतः पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ने कीमतों के पूर्ण मानदंड पर आदेश दिया है और ग्लास तथा पोर्सलेन इंसुलेटरों के बीच कोई अंतर नहीं किया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि दोनों उत्पाद समान कार्य करते हैं तथा परस्पर परिवर्तनीय रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं। पावर ग्रिड ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर्स के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से एक है और उसने घरेलू उद्योग के इस दावे पर कोई विवाद नहीं किया है कि पोर्सलेन और ग्लास इंसुलेटर्स तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और कंपनी ने इन दोनों का उपयोग परस्पर परिवर्तनीय रूप से किया है।

(ख) निम्नलिखित तालिका से यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान ग्लास इंसुलेटर के आयातों में भारी वृद्धि हुई है। तथापि, आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान पोर्सलेन इंसुलेटर के आयात में गिरावट आई है। इससे ग्लास इंसुलेटरों और पोर्सलेन

इंसुलेटरों के बीच प्रतिस्थापनीयता की स्पष्ट तौर पर पुष्टि होती है। अतः प्राधिकारी अनंतिम रूप से निर्धारित करते हैं कि ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर समान वस्तु हैं और शुल्क की सिफारिश समग्र इंसुलेटर पर की जाएगी।

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2010-11	जांच अवधि
ग्लास इंसुलेटर					
मात्रा	मी.ट.	6,738	12,782	20,063	55,028
पोर्सलिन इंसुलेटर					
मात्रा	मी.ट.	9,544	13,594	15,718	7,416

13. जहां तक विभिन्न प्रकार के लपिंग इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स का संबंध एक उत्पाद के रूप में है, प्राधिकारी निम्नलिखित रूप में नोट करते हैं :
- क. विभिन्न प्रकार के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स भौतिक उत्पादन टेक्नोलॉजी, विनिर्माण प्रक्रिया, संयंत्र एवं उपस्कर, प्रकार्य एवं प्रयोग आदि सहित अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय हैं।
- ख. विभिन्न उत्पाद किस्मों, दूसरी कंडेक्टिंग बॉडी से एक कंडेक्टिंग बॉडी में इंसुलेशन का समान सामान्य कार्य करती हैं।
- ग. यद्यपि, अलग-अलग इंसुलेटर्स के भिन्न-भिन्न विशिष्ट अंतिम अनुप्रयोग हैं, तथापि, यह नोट किया जाता है कि सभी इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स अनिवार्य रूप से समान कार्य करते हैं। विभिन्न श्रेणियां/किस्मों विभिन्न अंतिम प्रयोग संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। इंसुलेटर्स का डिजाइन और आकार अंतिम प्रयोग संबंधी आवश्यकताओं के अनुसार अलग-अलग होता है। उदाहरण के लिए डिस्क इंसुलेटर का प्रयोग पारेषण एवं वितरण लाइन में होता है जबकि खोखले और ठोस कोर का प्रयोग सब स्टेशन में होता है। तथापि, विनिर्माण के लिए प्रचालन एवं आवश्यक मशीनरी सभी प्रकार के इंसुलेटरों के लिए अनिवार्य रूप से समान हैं।
- घ. उत्पादक प्रायः उत्पादन, वितरण अथवा लेखा-जोखा की दृष्टि से विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स के बीच भेद नहीं करते। घरेलू उद्योग और चीनी उत्पादकों, दोनों की उनकी सभी विभिन्न प्रकार के श्रेणियों/किस्मों के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स के लिए समान विनिर्माण प्रक्रिया है। साथ ही सभी प्रकार की श्रेणियों/किस्मों के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स के लिए समान वितरण चैनल प्रयोग में लाए जाते हैं।
- ड. प्राधिकारी द्वारा निर्धारित प्रश्नावली में निर्यातकों से यह अपेक्षा है कि वह प्रत्येक किस्म के उत्पाद के लिए अलग-अलग सूचना दें। तथापि, यह नोट किया जाता है कि विभिन्न प्रकार के इंसुलेटर्स के भारत औसत के साथ याचिका आगे बढ़ाने में घरेलू उद्योग के दावे पर विवाद करते हुए किसी भी निर्यातक ने अपने आरंभिक प्रश्नावली के उत्तरों में विभिन्न प्रकार के इंसुलेटर्स के लिए अलग से सूचना नहीं दी है, फिर भी निर्धारित प्रश्नावली में निर्यातकों से अपेक्षा है कि वे प्रत्येक उत्पाद के लिए अलग से सूचना दें। तथापि, बाद में यह सूचना उत्तरदाता निर्यातकों द्वारा प्राधिकारी के अनुरोध पर प्रदान की गई।
14. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि उत्पाद किस्म, आकार, रेंज, मॉडल आदि के संबंध में सूचना याचिका में उपलब्ध नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने उनके द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद की विभिन्न किस्मों के विवरण प्रदान किए हैं। साथ ही याचिकाकर्ताओं ने अपनी वेबसाइटों का भी उल्लेख किया है। यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि इस संबंध में इन कंपनियों की वेबसाइट पर दी गई सूचना उस प्रयोजन के लिए पर्याप्त नहीं है जिसके लिए प्राधिकारी ने आवेदन प्रपत्र में यह सूचना मांगी है। इच्छुक पक्षकारों ने ये बात भी रखी है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विभिन्न उत्पाद किस्मों से संबंधित सूचना याचिका में उपलब्ध नहीं कराई गई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि साक्ष्य की गुणवत्ता और मात्रा में जांच की प्रगति होने से सुधार आया है।
15. जहां तक इस बात का संबंध है कि याचिकाकर्ताओं को चीनी सीमा-शुल्क के अनुसार निर्यात का व्यापार दर व्यापार विवरण देना चाहिए ताकि उत्पाद की समुचित समझ बनाई जा सके, प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीनी सीमा-शुल्क के अनुसार निर्यात का व्यापार दर व्यापार विस्तृत विवरण हर हालत में सीमा-शुल्क टैरिफ में दिए गए अनुसार विवरण में है। इसके अतिरिक्त निर्यातकों द्वारा प्रश्नावली में दिए गए उत्तरों से यह स्पष्ट होता है कि उत्पाद की कुछ किस्में ही पीओआई के दौरान निर्यात की गई हैं।
16. जहां तक इस बात का संबंध है, कि याचिकाकर्ताओं द्वारा अपनाए गए सीमा-शुल्क आंकड़ों में प्रत्येक किस्म के ग्लास अथवा पोर्सलेन इंसुलेटर शामिल हैं, यह नोट किया जाता है कि भारतीय सीमा-शुल्क आंकड़ों से प्राप्त की गई आयात सूचना के आधार पर जांचों के भाग में न आने वाले उत्पादों के आयात को अलग कर दिया है। जहां तक इस बात का संबंध है कि अलग किए गए उत्पाद का आंकड़ा पूरा नहीं है, प्राधिकारी ने इस निर्धारण में पीओआई के लिए आंकड़े स्वीकार कर लिए हैं। यह भी नोट किया जाता है कि उत्पाद की अलग की गई श्रेणी के आयात की मात्रा पीओआई के दौरान आयात की गई कुल आयात की मात्रा को देखते हुए ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है।
17. प्राधिकारी यह मानते हैं कि सभी श्रेणियों/किस्मों के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स की समानताएं उनकी तकनीकी और भौतिक विशेषताओं तथा उनके अनुप्रयोग और अंतिम उपयोग के संदर्भ में इन प्रक्रियाओं, किन्हीं अंतरों के प्रयोजन से उपयुक्त हैं और इसलिए वे समान वस्तुएं हैं। तथापि, पाटन मार्जिन, कीमत कम करने तथा क्षति मार्जिन विश्लेषण और इच्छुक पक्षकारों द्वारा दी गई दलील की दृष्टि से के प्रयोजन से प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को निर्देश दिया कि वे अलग-अलग प्रकार के इंसुलेटर्स के लिए अलग-अलग सूचना दें। घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित मानदंडों पर विचार करते हुए विभिन्न किस्मों में विचाराधीन उत्पाद के श्रेणीकरण का सुझाव दिया।

क. इंसुलेटर का प्रकार – इंसुलेटर डिस्क, खोखला, लंबी रॉड, ठोस कोर, पिन तथा एल टी इंसुलेटर

ख. मेकेनिकल स्ट्रेंथ – इंसुलेटर में मेकेनिकल स्ट्रेंथ 4 केएन से 420 केएन के बीच कहीं भी हो सकती है । 420 केएन से अधिक के इंसुलेटर्स का अब तक भारत में उपयोग नहीं किया गया है। साथ ही मेकेनिकल स्ट्रेंथ के लिए इंसुलेटर्स को निम्नलिखित समूह में रखा जा सकता है ।

डिस्क इंसुलेटर	क. 90 kN तक ख. 120 kN–160 kN ग. 210 kN घ. 320 kN–420 kN
खोखला इंसुलेटर	क. 5 kNm तक ख. 5.1–10 kNm ग. 10.1–20 kNm घ. 20.1 kNm–30 kNm ड. 30.1 kNm–50 kNm च. 50.1 kNm तथा उससे अधिक
लंबी रॉड	क. 90 kN तक ख. 120 kN–160 kN ग. 210 kN घ. 320 kN–420 kN
ठोस कोर	क. Upto 4 kN ख. 6 kN ग. 8 kN घ. 10 kN ड. 12.5 kN च. 15 kN तथा उससे अधिक
पिन एवं कम तनाव वाले इंसुलेटर	सभी मेकेनिकल स्ट्रेंथ

ग. ध्रुवता – इंसुलेटरों का प्रयोग एसी अथवा डी सी करंट में किया जा सकता है ।

घरेलू उद्योग ने यह बात रखी कि यदि आंकड़े इनसुलेटर, मेकेनिकल स्ट्रेंथ और ध्रुवता की किस्म पर विचार करते हुए अलग किए जाते हैं तो सही तुलना के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के इंसुलेटरों में अंतर करना तथा उन्हें विशिष्ट रूप से दर्शाना पर्याप्त होगा ।

18. प्राधिकारी ने उत्तरदाता निर्यातकों से अनुरोध किया कि वे पूरक सूचना दें तथा अन्य इच्छुक पक्षकारों को उद्योग द्वारा बताई गई बातों की एक प्रति उपलब्ध कराएं । यह सूचना उपलब्ध कराते समय, यद्यपि कुछ इच्छुक पक्षकारों ने पूरक सूचना प्रदान करने के लिए उन्हें दी गई अल्पकालिक अवधि का उल्लेख किया तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी इच्छुक पक्षकार ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित उत्पाद को अलग करने के संबंध में कोई आपत्ति नहीं उठाई । इस प्रकार, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इच्छुक पक्षकारों ने एक तरह से घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित श्रेणीकरण को स्वीकार कर लिया और संबंधित सूचना दे दी ।

19. जहां तक इच्छुक पक्षकारों के इस तर्क का संबंध है कि प्राधिकारी ने प्रश्नावली के उत्तर दायर किए जाने के बाद यह सूचना मांगी, सूचना दिए जाने के लिए बहुत कम समय दिया गया, घरेलू उद्योग द्वारा दायर की गई संशोधित याचिका सभी इच्छुक पक्षकारों को उपलब्ध कराई जानी चाहिए तथा जांच रद्द की जानी चाहिए क्योंकि यह प्रक्रिया प्रारंभिक स्तर पर नहीं की गई थी, प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्धारित प्रश्नावली में निर्यातकों से अपेक्षा की जाती है कि वे प्रत्येक उत्पाद किस्म के लिए अलग से सूचना दें तथा इस प्रकार निर्यातकों को प्रश्नावली के उत्तर दायर करते समय यह सूचना प्रदान करने का अवसर दिया गया था । इसके अतिरिक्त, इच्छुक पक्षकार मांगा गया अतिरिक्त समय प्रदान करने के लिए अतिरिक्त समय की मांग कर सकते थे जिस पर प्राधिकारी समुचित रूप से विचार कर सकते थे । किसी भी उत्तरदाता निर्यातक ने अपेक्षित सूचना प्रदान करने के लिए अतिरिक्त समय नहीं मांगा और वस्तुतः सभी उत्तरदाता निर्यातकों ने प्राधिकारी द्वारा दिए गए समय के भीतर अपेक्षित सूचना प्रदान की । यह स्पष्ट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने कोई संशोधित याचिका दायर नहीं की है । घरेलू उद्योग ने अपने दिनांक 8 फरवरी, 2014 के पत्र द्वारा उत्पाद श्रेणीकरण का सुझाव दिया है जिसकी एक प्रति इच्छुक पक्षकारों को तुरंत उपलब्ध करा दी गई । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि साक्ष्य की गुणवत्ता और मात्रा में जांच की प्रगति के रूप में सुधार आया है । प्राधिकारी ने इच्छुक पक्षकारों के इस तर्क को विधिवत ध्यान में रखा है कि विभिन्न प्रकार के इंसुलेटर्स का भारित औसत विश्लेषण समुचित नहीं है और तदनुसार, इच्छुक पक्षकारों से संगत सूचना मांगी है ।

20. जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित और प्राधिकारी द्वारा उसे स्वीकार किए जाने से पूर्व पीसीएन की सत्यता के मूल्यांकन और विश्लेषण के तर्क का संबंध है, यह स्पष्ट किया जाता है कि डीजीएडी के अधिकारियों ने घरेलू उद्योग का मौके पर सत्यापित किया है जिसमें उत्पाद का सत्यापन भी शामिल था। सत्यता के बारे में स्वयं को संतुष्ट कर लेने के उपरांत प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित पीसीएन को स्वीकार किया है।

21. जहां तक ईयू और यूएसए द्वारा माने गए उत्पाद क्षेत्र का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किए गए विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र जरूरी नहीं कि समान हो क्योंकि विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र अन्य प्राधिकारियों द्वारा वैश्विक रूप से माना गया है।

22. जहां तक विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए इस तर्क का संबंध है कि उत्पाद के अलग-अलग प्रकार असमान वस्तुएं हैं और जांच अलग-अलग उत्पादों पर अलग से विचार करते हुए करनी होगी। यह नोट किया जाता है कि वर्तमान मामले में प्राधिकारी ने विभिन्न प्रकार के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स को समान वस्तु माना है और इसलिए समूची जांच समग्र इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स के लिए की जानी चाहिए।

23. जहां तक मै. गोल्ड स्टोन इन्फ्राटेक लि. के उनके द्वारा विनिर्मित किए जा रहे ग्लास फाइबर सिलिकोन रबड, इंसुलेटर्स उत्पाद को इस आधार पर इस वर्तमान जांच में शामिल किए जाने का संबंध है, कि उनका उत्पाद समान है अथवा सिरामिक/पोर्सलेन इंसुलेटर्स के समान है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस उत्पाद किस्म को शामिल करने के लिए विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को बढ़ाना उपयुक्त नहीं होगा। यद्यपि, मै. गोल्ड स्टोन इन्फ्राटेक लि. ने यह बात रखी है कि कंपोजिट इंसुलेटर्स और ग्लास/पोर्सलेन इंसुलेटर समान वस्तुएं हैं, तथापि घरेलू उद्योग ने स्वयं कहा है कि ये इंसुलेटर्स विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तुएं नहीं हैं। घरेलू उद्योग ने यह बात भी रखी है कि कंपोजिट इंसुलेटर पोर्सलेन या ग्लास इंसुलेटर्स से बिल्कुल भिन्न हैं तथा कच्ची सामग्री, संगठन, विनिर्माण प्रक्रिया, उत्पादन लागत, बिक्री कीमत जैसे विभिन्न मानदंडों के आधार पर पूर्णतः भिन्न वस्तुएं हैं। दोनों तकनीकी रूप से और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं। कंपोजिट इंसुलेटर ग्लास/पोर्सलेन इंसुलेटरों का स्थान नहीं ले सकते और ग्लास/पोर्सलेन इंसुलेटर्स कंपोजिट इंसुलेटर्स का स्थान नहीं ले सकते। दोनों में कीमतों में भारी अंतर है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद चीन जन.गण. से "ग्लास/पोर्सलेन इंसुलेटर्स" है तथा विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को बढ़ाने का कोई औचित्य नहीं है। अतः कंपोजिट इंसुलेटर्स को शामिल करने के लिए वर्तमान जांचों का क्षेत्र बढ़ाना उपयुक्त नहीं होगा।

24. ग्लास एवं पोर्सलेन इंसुलेटर्स को सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 85 के तहत सीमा-शुल्क शीर्ष 8546 के अधीन वर्गीकृत किया गया है।

25. हटाने का अनुरोध : कुछ इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स को हटाने के संबंध में इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है जिनकी निम्नलिखित रूप में नीचे जांच की गई है :

क. जहां तक 765 के वी इंसुलेटर और एचबीडीसी को इस आधार पर हटाए जाने का तर्क है कि घरेलू उद्योग के सभी घटक उसका उत्पादन नहीं करते, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस इंसुलेटर को हटाना औचित्यपूर्ण नहीं है। कानून के तहत ये आवश्यक नहीं है कि घरेलू उद्योग का प्रत्येक घटक विचाराधीन हर प्रकार के उत्पाद का उत्पादन करे। साथ ही घरेलू उद्योग ने वाणिज्यिक बीजक की प्रतियां दी हैं जिनमें घरेलू उद्योग के घटक द्वारा इस इंसुलेटर की बिक्री दर्शायी गई है।

ख. जहां तक "रेटेड ई एंड एम फेलिंग लोड ≥ 420 के एन वाली डी सी पारेषण लाइन के लिए डिस्क इंसुलेटर" को हटाने के अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी मानते हैं कि रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग के घटकों ने 420 के.एन डिस्क इंसुलेटर्स का उत्पादन और बिक्री की है तथा इसीलिए इस उत्पाद किस्म को उत्पाद क्षेत्र से अलग करना उपयुक्त नहीं होगा।

ग. जहां तक कंडेंशनर बुशिंग और ट्रांसफार्मर को हटाने के अनुरोध का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि कंडेंशनर बुशिंग और ट्रांसफार्मर विचाराधीन उत्पाद क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आते। घरेलू उद्योग ने यह भी कहा है कि विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में बुशिंग और ट्रांसफार्मर शामिल नहीं हैं। तथापि, प्राधिकारी एतद्वारा यह स्पष्ट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र और प्रस्तावित उपाय कंडेंशनर बुशिंग और ट्रांसफार्मर को अलग करते हैं। चूंकि प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में बुशिंग को शामिल नहीं किया है, अतः इस संबंध में इच्छुक पक्षकारों के तर्क की विस्तार से जांच नहीं की गई है।

26. जहां तक उत्पाद क्षेत्र को 6 अंकीय स्तर तक सीमित रखने के अनुरोध का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि इस जांच में विचाराधीन उत्पाद ग्लास का इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर, अथवा सिरामिक्स/पोर्सलेन है, चाहे वह असेम्बल किया हुआ हो अथवा असेम्बल न किया हुआ हो। जिसमें (क) 1 केवी तक की वोल्टेज रेटिंग के टेलीफोन या टेलीग्राफ इंसुलेटर, (ख) 1 केवी तक की वोल्टेज रेटिंग के इलैक्ट्रिकल अथवा इलैक्ट्रॉनिक उपकरण/डिवाइस इंसुलेटर, और (ग) कंपोजिट इंसुलेटर शामिल नहीं हैं। विचाराधीन उत्पाद में एक विशिष्ट 6 अथवा 8 अंकीय सीमा-शुल्क वर्गीकरण नहीं है। सीमा-शुल्क वर्गीकरण का प्रयोजन पाटनरोधी शुल्क के लिए वस्तु का पता लगाना है। निर्दिष्ट प्राधिकारी से उत्पाद का विवरण दिए जाने की अपेक्षा है जो सीमा-शुल्क प्रयोजनों के लिए पर्याप्त है। अतः यह आवश्यक है कि 6 अंकीय स्तर पर सीमा-शुल्क वर्गीकरण विनिर्दिष्ट किया गया है। सीमा-शुल्क वर्गीकरण को विनिर्दिष्ट करने का प्रयोजन आयात के समय विचाराधीन उत्पाद का सही पता लगाना है। और इसीलिए यदि विचाराधीन उत्पाद विभिन्न सीमा-शुल्क वर्गीकरणों की संख्या में आता है, तो उसे विनिर्दिष्ट किए जाने की आवश्यकता होती है। तथापि, यह स्पष्ट किया जाता है कि एच एस कोड के तहत सूचित कोई आयात केवल इस कारण पाटनरोधी शुल्क के अधधीन नहीं रखा जाएगा कि एच एस कोड विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में और पाटनरोधी शुल्क तालिका में निर्दिष्ट किया गया है। यह स्पष्ट किया जाता है कि प्रस्तावित किया जा रहा पाटनरोधी शुल्क उत्पाद विवरण पर है और न कि एच एस वर्गीकरण पर। विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र के भीतर न आने

वाले उत्पाद का कोई भी आयात केवल इस कारण पाटनरोधी शुल्क के अधीन न रखा जाए कि एच एस कोड शुल्क तालिका के अधीन निर्दिष्ट किया गया है ।

27. जहां तक इस बात का संबंध है कि प्राधिकारी को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र के संबंध में शुद्धि पत्र जारी करना चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है । प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को न तो बढ़ाया है और न ही सीमित किया है । केवल इस तथ्य से कि प्राधिकारी ने अब इस उत्पाद को विभिन्न किस्मों में श्रेणीकृत कर दिया है, शुद्धि पत्र जारी करने की आवश्यकता नहीं मानी जा सकती ।

28. जहां तक स्टेनलेस स्टील के कोल्ड रोल्ड फ्लैट स्टील के उत्पादों के मामले में प्राधिकारी के निर्णय का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उस मामले में सूचीबद्ध व्यापक सिद्धांतों को इस मामले में भी लागू किया गया है । किसी भी इच्छुक पक्षकार द्वारा यह उल्लेख नहीं किया गया है कि कोई उत्पाद किस्म ऐसी है जो उस तरह की वस्तु हो जिसे घरेलू उद्योग में पेश नहीं किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि इंसुलेटर के गुणधर्म चाहे ग्लास का बना हो अथवा पोर्सलेन का बना हो, समान हैं, जैसा कि पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन द्वारा जारी बोलियों से स्पष्ट स्थापित हो गया है ।

29. जहां तक बिड़ला पेरिक्लेस, इंडियन रिफ़ैक्ट्री मैनुफैक्चर एसो0, ऑक्सो एल्कोहल इंडस्ट्री एसो0, मैग्नेट यूजस एसो0 और वीडियोकॉन नर्मदा ग्लास के मामले में सेस्टेट के निर्णय का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग ने विचाराधीन उत्पाद से बहुत बारीकी से मिलती-जुलती विशेषताओं वाला उत्पाद पेश किया है । वस्तुतः पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ने माना है कि ग्लास और पोर्सलेन से बने इंसुलेटर समान विशिष्टियों वाले होंगे ।

30. रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के आधार पर तथा इच्छुक पक्षकारों द्वारा दी गई दलीलों पर विचार करते हुए प्राधिकारी मानते हैं कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित विषयगत वस्तुओं और विषयगत देश से आयातित वस्तुओं में कोई खास अंतर नहीं है । दोनों वस्तुओं की भौतिक एवं तकनीकी विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, प्रकार्य एवं उपयोग, उत्पाद विशिष्टियों, कीमत, वितरण एवं विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से तुलनीय हैं । दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्पर्धाप्रणीय हैं । उपभोक्ता दोनों का प्रयोग परस्पर परिवर्तनीय रूप से करते हैं । घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि उपभोक्ता विचाराधीन उत्पाद के तकनीकी मानदंडों को विनिर्दिष्ट करने के बाद आदेश देते हैं, जहां आपूर्ति किए गए उत्पाद तकनीकी विशिष्टियों को पूरा करने तक घरेलू उद्योग अथवा चीनी आपूर्तिकर्ताओं द्वारा आपूर्ति की जा सकती है । इस प्रकार आपूर्तिकर्ता क्रेता द्वारा निर्धारित विशिष्टियों के अनुरूप उत्पाद की बिक्री करते हैं । उत्तरदाता निर्यातकों द्वारा दर्ज किए गए प्रश्नावली के उत्तरों से यह बात सामने आती है कि उन्होंने उन्हीं ग्राहकों को आपूर्ति की है जिनको घरेलू उद्योग ने अपना उत्पाद बेचा है ।

31. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आवेदकों द्वारा विनिर्मित उत्पाद विषयगत देश से भारत में आयातित किए जा रहे संबंधित सामान के समान वस्तु हैं ।

32. जहां तक ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटरों में लागत और कीमत अंतर के कारण समायोजनों का संबंध है, यह भी नोट किया जाता है कि उपभोक्ता कीमत के आधार पर ग्लास और पोर्सलेन इंसुलेटर की खरीद कर रहे हैं । ग्लास इंसुलेटरों के किसी भरोसेमंद और सत्यापनीय आंकड़ों की अनुपलब्धता को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने पोर्सलेन और ग्लास इंसुलेटर के सामान्य मूल्य पर समान स्तर पर विचार किया है ।

33. जहां तक डिकेपिंग सहित ग्लास इंसुलेटरों की तुलना में पोर्सलेन इंसुलेटर के प्रचालन और रख-रखाव संबंधी दोषों का प्रश्न है, यह नोट किया जाता है कि पीजीसीआईएल और अन्य उपभोक्ताओं द्वारा इंसुलेटरों के दोनों प्रकारों की अदल-बदल कर खरीद की जा रही है और वे केवल कीमत आधार पर खरीद करते हैं । पीजीसीआईएल द्वारा इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर की खरीद प्रक्रिया में तकनीकी बोली मूल्यांकन और वाणिज्यिक बोली मूल्यांकन दोनों शामिल होते हैं । प्रचालन और रख-रखाव लागत का पहलू वाणिज्यिक बोली मूल्यांकन का एक अनिवार्य संघटक होता है । इसके अलावा, निर्धारित तकनीकी मानकों को पूरा करने के बाद ही कोई कंपनी वाणिज्यिक बोली में भाग ले सकती है ।

34. जहां तक इस्टूमेंट ट्रांसफार्मरों के लिए 800 के.वी. हॉलो इंसुलेटर, 800 के.वी. एचवीडीसी परियोजना में एसी फिल्टर केपेसिटर का संबंध है, घरेलू उद्योग इंसुलेटरों के इन प्रकारों का उत्पादन करने में सक्षम है और उसने उपभोक्ता को आपूर्ति की है । आपूर्ति न किए जाने की एक या दो घटनाओं से उत्पाद के इस प्रकार को बाहर नहीं रखा जा सकता ।

35. जहां तक घरेलू उद्योग की क्षमता संबंधी अड़चन के बारे में पीजीसीआईएल के तर्क का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि यदि निर्यातक भारतीय बाजार में जरूरत को पूरा करने के लिए वस्तु की आपूर्ति करना चाहते थे, तो वह सामान्य मूल्य के समतुल्य कीमत पर जरूरत का निर्यात करके किया जा सकता था न कि बाजार पर कब्जा जमाने के लिए पाटित मूल्य पर ।

36. जहां तक ग्लास इंसुलेटरों की उत्पादन प्रक्रिया के संदर्भ का प्रश्न है, यह नोट किया जाता है कि उत्पादकों और निर्यातकों ने अपनी प्रश्नावलियों के उत्तर प्रस्तुत किए हैं और उत्पादन प्रक्रिया इसका भाग है । ग्लास इंसुलेटरों की उत्पादन प्रक्रिया निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर और घरेलू उद्योगों के अनुरोधों के अनुसार ली गई है ।

37. जहां तक उन ऑर्डरों के अपवर्जन का संबंध है, जिन्हें पीजीसीआईएल द्वारा दिया जा चुका है और जिनकी डिलीवरी लंबित है, यह नोट किया जाता है कि पीजीसीआईएल को जांच की शुरुआत की जानकारी थी । फिर भी पीजीसीआईएल ने निविदा जारी करने में जल्दबाजी की । अतः पीजीसीआईएल इस चरण पर अनदेखी का दावा नहीं कर सकती और जारी निविदाओं के अपवर्जन की मांग नहीं कर सकती । इसके अलावा, ऐसा दृष्टिकोण निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए परंपरा के संगत नहीं है ।

उत्पाद क्षेत्र संबंधी निष्कर्ष

38. इन बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान जांच तथा प्रस्तावित उपायों के प्रयोजन से विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र ग्लास के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स अथवा पोर्सलेन/सिरामिक है, चाहे वे असेम्बल्ड हो या असेम्बल न किए हुए हों । तथापि, (क) 1 केवी तक की वोल्टेज रेटिंग के टेलीफोन अथवा

टेलीग्राफ इंसुलेटर्स, (ख) 1 केवी तक की वोल्टेज रेटिंग के इलैक्ट्रिकल या इलैक्ट्रॉनिक उपकरण/डिवाइस इंसुलेटर्स तथा (ग) कंपोजिट इंसुलेटर्स विचाराधीन जांच के क्षेत्र से हटाए गए हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट किया जाता है कि बुशिंग्स तथा वोल्टेज ट्रांसफार्मर विचाराधीन उत्पाद एवं प्रस्तावित उपायों के क्षेत्र से अलग हैं।

ग. घरेलू उद्योग का क्षेत्र तथा आधार

39. पाटनरोधी नियमावली का नियम 2 (ख) घरेलू उद्योग की परिभाषा निम्नलिखित रूप में करता है :

(ख) "घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से हैं जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" शब्द का अर्थ केवल शेष उत्पादकों के उल्लेख के रूप में निकाला जाएगा।"

40. विषयगत सामानों के घरेलू उद्योग के रूप में आदित्य बिड़ला नोवो लि. (आदित्य बिड़ला), भारत हैवी इलैक्ट्रिक्स लि. (बीएचईएल), इंसेलेटर्स एंड इलैक्ट्रिकल कंपनी (आईईसी), मॉडर्न इंसुलेटर्स लि. (मॉडर्न) और डब्ल्यू एस इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि. (डब्ल्यूएसआई) (इसके बाद जिन्हें "आवेदक" कहा जाएगा, द्वारा आवेदन पत्र दायर किया गया था। शुरुआत के बाद आवेदक को इंडियन इलैक्ट्रिकल एंड इलैक्ट्रॉनिक्स मैनुयु0 एसो0, श्रीजी पावर एंड इंसुलेटर प्रा. लि., बीकानेर कंपनीज प्रा. लि., ए.के. इंडिया सिरामिक्स प्रा. लि., बीकानेर पोर्सलिन प्रा. लि., एलाइड सिरामिक्स प्रा. लि., तरुणा डिकोम प्रा. लि., प्राइम इंसुलेटर्स सरवाना ग्लोबर एनर्जी लि., जयपुरिया ब्रदर्स, जनरल पावर कंपनी प्रा. लि., हिंदुस्तान केमिकल्स, राष्ट्रीय इलैक्ट्रिकल एंड इंजीनियरिंग कार्पो0 (इसके बाद जिन्हें समर्थक कहा जाएगा) का समर्थन मिला है। साथ ही आवेदकों और समर्थकों के अलावा कई अन्य उत्पादक हैं।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने से पूर्व निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य इच्छुक पक्षकारों के विचार

41. घरेलू उद्योग के बारे में इच्छुक पक्षकारों ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित बातें कही :

क. घरेलू उद्योग ने समग्र घरेलू उद्योग की पूरी तस्वीर नहीं दी है। यह तर्क दिया जाता है कि बाजार आसूचना, जिसके आधार पर घरेलू उद्योग ने याचिका में सूचना प्रस्तुत की है, अत्यधिक स्वेच्छाचारी और विषयगत मानदंड वाली है जो कि डब्ल्यूटीओ पाटनरोधी करार के तहत अपेक्षित "सकारात्मक साक्ष्य" की दहलीज पर खरी नहीं उतरती।

ख. आवेदक पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) तथा डब्ल्यू टी ओ करार के तहत घरेलू उद्योग में नहीं आते क्योंकि भारत में विषयगत उत्पादों के कई अन्य उत्पादक हैं जिनका काफी उत्पादन है जिसका याचिका में कोई उल्लेख नहीं है। इच्छुक पक्षकार रिलायंस को चीन जन.गण. से लोहा अथवा स्टील फास्टर संबंधी डीएस 397 –यूरोपियन समुदाय – परिभाषीय पाटनरोधी उपायों में डब्ल्यूटीओ की अपीलीय निकाय रिपोर्ट में रखते हैं, जिसमें समग्र रूप से "घरेलू उद्योग" उप वाक्य का अभिप्राय स्पष्ट किया गया है। अपीलीय निकाय ने यह माना कि :

"413. कुल घरेलू उत्पादन का बड़ा अनुपात यह सुनिश्चित करने के लिए निर्धारित किया जाना चाहिए कि इस आधार पर परिभाषित घरेलू उद्योग ऐसे पूरे आंकड़े प्रदान करने में सक्षम है जो शुद्ध क्षति विश्लेषण सुनिश्चित कर सके।"

419. 'अनुच्छेद 4.1 के तहत "बड़ा अनुपात" शब्द का सही निर्वचन यह अपेक्षा रखता है कि इस आधार पर परिभाषित घरेलू उद्योग उत्पादकों को वहां रखता है जिनका सामूहिक उत्पादन अपेक्षाकृत रूप से अधिक अनुपात में हो। जो कुल घरेलू उत्पादन को पर्याप्त रूप से दर्शाता हो। यह सुनिश्चित करता है कि क्षति निर्धारण घरेलू उत्पादकों के संबंध में व्यापक सूचना पर आधारित है और उसे तोड़ा-मरोड़ा नहीं गया है।

ग. विषयगत उत्पादों के लगभग सभी उत्पादक एसोसिएशन आईईईएमए के सदस्य हैं जो सभी विनिर्माताओं की सूची अपनी वेबसाइट पर देती है। आईईईएमए की वेबसाइट पर उपलब्ध सूची को देखने से ही यह बात सामने आती है कि याचिका में दी गई सूची में दर्शाए गए उत्पादकों की अपेक्षा विषयगत उत्पाद के कई और अधिक उत्पादक हैं। जिन कतिपय घरेलू उत्पादकों के नाम गायब हैं, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

- i. पावर एंड कंट्रोल ट्रांसफार्मर्स इंडिया प्रा. लि.
- ii. रेचेम आरपीजी प्रा. लि.

घ. विषयगत उत्पादों के अन्य प्रमुख विनिर्माता निम्नलिखित हैं :-

- i. राष्ट्रीय इलैक्ट्रिकल एंड इंजीनियरी कॉर्पोरेशन
- ii. प्रणय एसोसिएट्स
- iii. हिंदुस्तान कैमिकल्स
- iv. जनरल पावर कंपनी प्रा. लि.
- v. सतराज सिरामिक्स
- vi. प्राइम इंसुलेटर्स प्रा. लि.
- vii. जयपुरिया ब्रदर्स इलैक्ट्रिकल्स प्रा. लि.

- ड. उपर्युक्त उत्पादकों के पास प्रत्येक आवेदक की तुलना में पर्याप्त उत्पादन क्षमता है । उदाहरण के लिए मै. बीकानेर सिरामिक्स प्रा. लि. के पास 9000 मी. ट. इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स की उत्पादन क्षमता है परंतु इस तथ्य को याचिकाकर्ताओं द्वारा नहीं दर्शाया गया है ।
- च. घरेलू उद्योग का आधार उपर्युक्त सूचना के आलोक में जांचा जाना चाहिए और केवल तभी प्राधिकारी निर्धारित कर सकते हैं कि वे जांच जारी रखें या नहीं ।
- छ. मै. डब्ल्यूएसआई को “घरेलू उद्योग” के कार्य क्षेत्र से अलग किया जाए क्योंकि उन्होंने पीओआई के दौरान विषयगत उत्पाद का आयात किया । डब्ल्यूएसआई को विषयगत उत्पाद से संबंधित पिछली जांच में भी हटाया गया था । वैकल्पिक रूप से यह तर्क दिया जाता है कि यदि डब्ल्यू एस आई को नहीं हटाया गया तो विशाखापट्टनम में एसईजैड के तहत उनकी एक यूनिट से संबंधित उनका आंकड़ा जांच के कार्यक्षेत्र से हटाया जाना चाहिए । रिलायंस को डी जी सेफगार्ड्स के दिनांक 27 सितंबर, 2012 द्वारा जारी अंतिम निष्कर्षों में रखा गया है जिसमें डब्ल्यूएसआई की एसईजैड यूनिट हटा दी गई थी ।
- ज. इसके अतिरिक्त यह तर्क दिया जाता है कि मै. सरवाना ग्लोबल एनर्जी लि. और श्री जी पावर एंड इंसुलेटर्स प्रा. लि. इस याचिका का समर्थन नहीं करते जैसा कि याचिकाकर्ताओं ने उल्लेख किया है क्योंकि उनके प्राधिकार पत्र जिनमें उन्होंने समर्थन दर्शाया है, याचिका में नहीं दिए गए हैं ।
- झ. बड़ा अनुपात पद का अभिप्राय सभी उत्पादकों को संगठित क्षेत्र में तथा लगभग सभी को असंगठित क्षेत्र में शामिल करने से है ।
- ट. पीजीसीआईएल की कीमत बोलियों की समीक्षा यह दर्शाती है कि घरेलू उत्पादक एक दूसरे की कीमतों को काट रहे हैं और उसका प्रभाव आयात पर नहीं पड़ सकता । ऐसी स्थिति में प्राधिकारी अन्य उत्पादकों के आंकड़ों के बिना सार्थक जांच कैसे कर सकता है । इसे यह कहकर नहीं नकारा जा सकता कि अन्य उत्पादक याचिकाकर्ताओं से कम कीमतों पर बिक्री कर रहे हैं फिर उन्हें क्षति सूचना प्रदान करने के लिए पहले स्थान पर होना चाहिए ।
- ठ. “बड़ा अनुपात” शब्द का कोई भी निर्वचन होने का अभिप्राय एक बड़ा अनुपात से अधिक हो सकता है जो कि तर्कसंगत है और निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध किया गया कि वे वित्तीय सूचना प्रदान करने के लिए सभी उत्पादकों को निर्देश दें ।
- ड. डब्ल्यू एस आई द्वारा आयात की कोई गोपनीय समरी याचिका में नहीं दी गई है ।
- ढ. डब्ल्यू एस आई को अपरिष्कृत आयातों तथा भारत में किए गए मूल्यवर्धन और भारत एवं विदेश में इन उत्पादों की बिक्री के संबंध में आंकड़े देने चाहिए ।
- ण. जो घरेलू उत्पादक सूचना नहीं देते, उनका पाटनरोधी जांच में कोई आधार नहीं है ।
- त. मै. डब्ल्यू एस आई इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि., जो घरेलू उद्योग का हिस्सा है, 9 अप्रैल, 2012 को उल्लिखित इसी उत्पाद के संबंध में पिछली जांच से सिद्ध विषयगत उत्पाद के आयातक हैं । इसी प्रकार का निष्कर्ष वर्तमान जांच के आरंभिक नोटिस में निकाला गया है परंतु प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) का उल्लंघन करते हुए वर्तमान जांच में पात्र घरेलू उद्योग के रूप में डब्ल्यूएसआई के संबंध में विचार करने में गलती की ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद निर्यातकों, अयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

42. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग के बारे में हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अतिरिक्त मुद्दे उठाए हैं :
- क. घरेलू उद्योग के दायरे से डब्ल्यू एस इंडस्ट्रीज को अलग रखा जाना चाहिए क्योंकि यह कम ग्रेड के उत्पादों के लिए एक आयातक के रूप में कार्य कर रही है ।
- ख. याचिकाकर्ता ने ऐसे अन्य उत्पादकों के सभी नामों का प्रकटन किया है जो अन्यथा आईईईएमए वैबसाइट पर प्रदर्शित हो रहे हैं जिनमें से याचिकाकर्ता सदस्य हैं । ऐसा आधार गलत और धोखाधड़ीपूर्ण ढंग से पुष्टि करने के लिए किया गया है । (नाम उपलब्ध कराए गए जिन्हें शामिल नहीं किया गया) । इसके अलावा, प्रारंभिक जांच परिणाम में उल्लिखित कंपनियों के समर्थन पत्र उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया ।
- ग. याचिकाकर्ताओं का इतना बड़ा अनुपात नहीं बनता है ताकि वे घरेलू उद्योग बन सकें ।
- घ. डब्ल्यू एस आई को घरेलू उद्योग के घटक के रूप में शामिल नहीं किया जाना चाहिए । डब्ल्यू एस आई को आयातों और भारत में की गई मूल्यवृद्धि तथा भारत और विदेश में इन उत्पादों की बिक्री के बारे में आंकड़े उपलब्ध कराने चाहिए ।
- ड. अविश्लेषित और समुचित ढंग से रिकॉर्ड न किए गए आधार के बारे में तर्क

- i. आवेदकों के पास एक बड़ा अनुपात नहीं है ।
- ii. डब्ल्यू एस आई पर पात्र घरेलू उद्योग के रूप में विचार नहीं किया जा सकता ।
- iii. डब्ल्यू एस आई द्वारा इस आश्वासन को स्वीकार करने का कोई आधार नहीं है कि वह आयात नहीं करेगी ।
- iv. डब्ल्यू एस आई ऐसीजैड के आंकड़ों को बाहर रखा जाना चाहिए ।
- v. बड़े अनुपात का तात्पर्य संगठित क्षेत्र में सभी उत्पादकों और असंगठित क्षेत्र में लगभग सभी से है ।
- vi. समर्थन पत्र सार्वजनिक फाइल में रखे जाएं ।

- च. डब्ल्यू एस आई द्वारा इस बात का स्पष्ट अनुरोध कि उनके द्वारा आयात किए गए हैं, जांच के लिए नहीं अपितु व्यापार के लिए है ।
- छ. आयातित उत्पाद पर डब्ल्यू एस आई द्वारा प्रसंस्करण जांच, पुनर्पैकिंग और फिटिंग तक सीमित है । इसमें कोई वास्तविक विनिर्माण अथवा पर्याप्त मूल्यवर्धन नहीं होता है ।
- ज. डब्ल्यू एस आई द्वारा याचिका के समर्थन से वह पात्र घरेलू उद्योग नहीं बन जाती है ।
- झ. जहां तक डब्ल्यू एस आई के व्यवहार का संबंध है, अन्य उत्पादकों में से किसी भी उत्पादक द्वारा कम अंत्य वाले उत्पादों के लिए डब्ल्यू एस आई के विपरीत आयातों के समान समूची उत्पाद रेंज का प्रतिस्थापन नहीं किया जा रहा है ।
- ट. डब्ल्यू एस आई द्वारा पाटित आयातों का लाभ उठाया जा रहा है और वह पाटन से स्वयं की रक्षा नहीं कर रही है ।
- ठ. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्व में शुरू की गई जांच में डब्ल्यू एस आई को अपात्र पाया था और निर्दिष्ट प्राधिकारी का यह विवरण कैसे सही माना जा सकता है कि कंपनी का फोकस उत्पादन पर जारी है ।
- ड. मात्र क्षति पहुंचने से घरेलू उद्योग के दायरे में आयातकर्ता कंपनी को शामिल करने का कोई औचित्य नहीं बनता है ।
- ढ. जांच अवधि में डब्ल्यू एस आई द्वारा भारी मात्रा में आयात किए गए और इस बात का कोई संकेत नहीं है कि आयात पुनः नहीं किए जाएंगे ।
- ण. डब्ल्यू एस आई को प्रतिवादियों द्वारा अपने लिखित अनुरोधों में दिए गए कारणों और इस कारण से भी घरेलू उद्योग से भी बाहर रखा जाना चाहिए कि घरेलू उद्योग ने यह स्वीकार किया है कि डब्ल्यू एस आई को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखे जाने की स्थिति में आर्थिक मापदंड प्रभावित नहीं होंगे ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने से पूर्व घरेलू उद्योग के विचार

43. घरेलू उद्योग ने आधार के मुद्दे पर निम्नलिखित बातें रखी हैं :
- क. आवेदकों के उत्पादन में कुल भारतीय उत्पादन का बड़ा अनुपात है और इसीलिए इस याचिका को घरेलू उद्योग की ओर से की गई याचिका माना जाए ।
- ख. जो अन्य भारतीय उत्पादक आवेदन पत्र का हिस्सा नहीं हैं, उनका सामूहिक उत्पादन बहुत कम है । चूंकि उनके उत्पादन के संबंध में कोई प्रकाशित सूचना नहीं है, अतः आवेदकों ने आईईईएमए के पत्र पर विश्वास किया है ।
- ग. डब्ल्यू एस आई को छोड़कर किसी भी आवेदक द्वारा जांच अवधि के दौरान चीन से विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं हुआ । डब्ल्यूएसआई ने चीन जन.गण. से अपरिष्कृत उत्पाद का आयात किया और भारतीय बाजार में बेचने के लिए फिर उसका प्रसंस्करण किया ।
- घ. घरेलू उद्योग के क्षेत्र में डब्ल्यू एस आई को शामिल करने का विवेकाधिकार प्राधिकारी को है । यद्यपि, उसी उत्पाद के लिए पिछली जांचें शुरू करते समय इस मामले के संबंध में कुछ अनिश्चितता थी, तथापि, कलकत्ता और मद्रास उच्च न्यायालय में दोनों ने यह स्पष्ट रूप मानते हुए आदेश जारी कर दिए हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को नियम 2(ख) के तहत पूरा विवेकाधिकार है ।

साथ ही निम्नलिखित कारणों से डब्ल्यू एस आई को पात्र घरेलू उद्योग माना जाए :

- i. डब्ल्यू एस आई चीनी उत्पाद की बहुत कम कीमत को देखते हुए विचाराधीन उत्पाद का अंतिम स्तर पर अपरिष्कृत वस्तुओं का आयात कर रहा था । और उच्च स्तर के उत्पाद किस्मों के उत्पादन तक सीमित रहा ।
- ii. डब्ल्यू एस आई ने केवल व्यापारी के रूप में कार्य नहीं किया अपितु आयातित उत्पाद का महत्वपूर्ण प्रसंस्करण भी किया है जिसमें सभी वस्तुओं का 100 प्रतिशत निरीक्षण, ग्राहक अनुमोदित आरेख के अनुसार रिपैकिंग और कुछ मामलों में धातु की फिटिंग की असेम्बली भी शामिल है ।
- iii. डब्ल्यू एस आई का व्यवहार अन्य प्रमुख भारतीय उत्पादकों की तुलना में भिन्न नहीं है । डब्ल्यू एस आई सहित सभी घरेलू उत्पादकों के विभिन्न आर्थिक कारकों की प्रवृत्तियां समान हैं । अतः यह नहीं कहा जा सकता कि डब्ल्यू एस आई विषयगत देश से पाटन के कारण लाभ उठा रहा है ।

- iv. डब्ल्यू एस आई का जोर अपने उत्पादन पर बना हुआ है न कि आयात पर । डब्ल्यू एस आई का उत्पादन काफी महत्वपूर्ण है । डब्ल्यू एस आई की अधिकतर बिक्री उत्पादन से है ।
 - v. प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क संबंधित आपूर्तिकर्ता द्वारा किए गए निर्यात पर लागू होगी । डब्ल्यू एस आई ने इस आपूर्तिकर्ता के लिए उसे हटाए जाने की मांग नहीं की है । एक बार पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने पर डब्ल्यू एस आई द्वारा किया गया कोई भी आयात पाटनरोधी शुल्क के अधीन होगा ।
 - vi. डब्ल्यू एस आई ने चीन से उत्पाद के आयात को पहले ही रोक दिया है ।
 - vii. आयातित उत्पाद डब्ल्यू एस आई द्वारा आगे प्रसंस्कृत किए जाने के बाद बाजार में काफी उच्चतर कीमत पर बेचा गया है । डब्ल्यू एस आई उत्पादों की पुनः बिक्री की कीमत से भारतीय उत्पादकों को कोई क्षति नहीं हुई होती ।
- ड. अन्य किसी भी कंपनी को नियम 2 (ख) के अभिप्राय के अंतर्गत अपात्र समझा जाना चाहिए ।
- च. डब्ल्यू एस आई को पात्र घरेलू उद्योग माना जाए या न माना जाए, आवेदकों का उत्पादन भारतीय उत्पादन का अधिकतम हिस्सा है ।
- छ. डब्ल्यू एस आई द्वारा किए गए आयात से संबंधित सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है । इसमें व्यापार संबंधी संवेदनशील आंकड़े हैं जिनको प्रकटन करना कंपनी के लिए हानिकारक हो सकता है ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग के विचार

44. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग के मुद्दे के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अतिरिक्त अनुरोध किए हैं :-
- क. डब्ल्यू एस आई को आयातों की घटती हुई पद्धति, जो जांच अवधि में रुक गई है और सामग्री के आयात के बारे में कोई भावी योजना नहीं है, को ध्यान में रखते हुए और इस बात पर विचार करते हुए पात्र घरेलू उद्योग मानने की जरूरत है कि कंपनी ने मुख्यतः उस उत्पाद प्रकारों का आयात किया है जिनका उत्पादन कंपनी द्वारा भारी मात्रा में नहीं किया जा रहा था क्योंकि वे विचाराधीन उत्पाद की न्यून अंत्य के थे जबकि कंपनी ने मुख्यतः अपना ध्यान विचाराधीन उत्पाद रेंज के उच्च अंत्य पर केन्द्रित किया था ।
- ख. आईएमएमए के सभी सदस्य विचाराधीन उत्पाद के उत्पादक नहीं हैं । इसके अलावा, याचिका में आधार के प्रयोजनार्थ इन उत्पादकों के उत्पादन की अनदेखी नहीं की गई थी । याचिका में कुल भारतीय उत्पादन की मात्रा में उनके सामूहिक उत्पादन को ध्यान में रखा गया है ।
- ग. पूर्ववर्ती किसी भी जांच से इस बात की पुष्टि नहीं हुई थी कि आधार के बारे में याचिकाकर्ताओं के दावे विश्वसनीय नहीं हैं ।
- घ. डब्ल्यू एस आई की एक ऐसीजैड इकाई को अलग रखने का कोई औचित्य नहीं है । सोलर सेल्स के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्णय पर भरोसा किया जाता है जिसमें इस मुद्दे पर विस्तृत कार्रवाई की गई थी ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

45. विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उद्योग के रूप में आदित्य बिड़ला, बीएचईएल, आईईसी, मॉर्डन और डब्ल्यू एस आई द्वारा आवेदन पत्र जारी किए गए हैं । साथ ही जांच आरंभ करने के बाद इंडियन इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स मैनुफैक्चरिंग एसोसिएशन, श्रीजी पावर एंड इंजिनियरिंग प्रा. लि., बीकानेर सिरामिक्स प्रा. लि., ए० के० इंडिया सिरामिक्स प्रा. लि., बीकानेर पोर्सलेन प्रा. लि., एलाइड सिरामिक्स प्रा. लि., तरुणा डिपॉजि प्रा. लि., प्राइम इंजिनियरिंग सरवाना ग्लोबल एनर्जी लि., जयपुरिया ब्रदर्स, जनरल पावर कंपनी प्रा. लि., हिंदुस्तान कैमिकल्स, राष्ट्रीय इलेक्ट्रिकल एंड इंजीनियरिंग कार्पोरेशन, (इसके बाद जिन्हें "समर्थक" कहा जाएगा) द्वारा आवेदक का समर्थन किया गया है । साथ ही आवेदकों और समर्थकों के अलावा, कई अन्य उत्पादक भी हैं ।
46. प्राधिकारी मानते हैं कि किसी भी आवेदक को घरेलू उद्योग के क्षेत्र से बाहर किए जाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि डब्ल्यूएस इंडस्ट्रीज को छोड़कर उनमें से किसी ने भी जांच की अवधि में विषयगत देश से विषयगत सामान का आयात नहीं किया है और न ही वे विषयगत सामान के किसी निर्यातक या आयातक से संबंध रखते हैं । यह नोट किया जाता है कि डब्ल्यू एस आई ने चीन जन.गण. से विचाराधीन उत्पाद का आयात किया है ।
47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिका प्रस्तुत करते समय डब्ल्यू एस आई ने दावा किया है कि जांच अवधि के दौरान उनके द्वारा किए गए आयात उनके उत्पादन का 15.47% थे और उनका ध्यान उनके खुद के उत्पादन पर था । तथापि, उपलब्ध रिकॉर्डों से यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान डब्ल्यू एस आई द्वारा संबद्ध वस्तु का उत्पादन 6398 मी.ट. (एसईजैड इकाई के उत्पादन सहित) था । यह भी नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से डब्ल्यू एस आई द्वारा किया गया संबद्ध वस्तु का आयात 1733 मी.ट. था । अतः चीन जन.गण. से डब्ल्यू एस आई द्वारा किए गए आयात पाटनरोधी जांच शुरू किए जाने के आवेदन को प्रस्तुत करते समय डब्ल्यू एस आई द्वारा किए गए 15.47% के दावे के मुकाबले लगभग 27% बनता है । डब्ल्यू एस आई का 15.47% का दावा जिस पर प्रारंभिक जांच की गई उसके आंकड़े सही नहीं थे और उन्हें अंतिम जांच के समय सही किया गया । यह भी नोट किया जाता है कि डब्ल्यू एस आई ने घरेलू बाजार में संयोजन के पश्चात आयातित संबद्ध वस्तु को बेचा है । चूंकि जांच अवधि के दौरान चीन जन. गण. से डब्ल्यू एस आई द्वारा संबद्ध वस्तु के आयात काफी अधिक हैं और लगभग समूची आयातित संबद्ध वस्तु को घरेलू बाजार में बेचा गया था इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि डब्ल्यू एस आई को घरेलू उद्योग का घटक माना जाना उचित नहीं होगा ।
48. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में प्राधिकारी को कतिपय स्थितियों में पर्याप्त एवं उचित आधारों पर घरेलू उत्पादक को शामिल करने या निकालने के विवेकाधिकार का प्रावधान है । उपर्युक्त के आलोक में और मामले के तथ्यों की दृष्टि से प्राधिकारी डब्ल्यू एस इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि. को छोड़कर सभी याचिकाकर्ता कंपनियों को पात्र घरेलू उद्योग के रूप में मानना उचित समझते हैं ।
49. मशीनरी तथा इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों के आयात और निर्यात के लिए वाणिज्य मंडल ("सीसीसीएमई") ने तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद के 9 अन्य भारतीय उत्पादक हैं जिनकी याचिकाकर्ताओं ने पहचान नहीं की है । इच्छुक पक्षकारों ने अन्य भारतीय उत्पादकों के नामों के लिए आईईईएमई की वेबसाइट पर विश्वास किया है । प्राधिकारी ने भारी उद्योग विभाग, भारी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय से भारतीय उत्पादकों और उनके उत्पादन आंकड़ों के संबंध में सूचना मांगी । विभाग ने इसके बदले अन्य भारतीय उत्पादकों के नाम और उत्पादन के लिए आईईईएमई की सूचना प्रदान की । अतः आईईईएमई द्वारा दी गई सूचना पर विश्वास करना उचित पाया गया । आईईईएमई ने घरेलू उद्योग के आधार की जांच के लिए सतराज कैमिकल्स को छोड़कर विरोधी इच्छुक पक्षकारों द्वारा उल्लिखित कंपनियों के ब्यौरे उनके उत्पादन, बिक्री आदि सहित प्रदान किए । आईईईएमई ने अन्य

उत्पादकों के उत्पादन के संबंध में इच्छुक पक्षकारों के विरोध में अपना उत्तर दिया और यह उल्लेख किया कि इन उत्पादकों के उत्पादन बहुत कम हैं । पावर एंड कंट्रोल ट्रांसफार्मर इंडिया प्रा. लि. तथा रेचम आरपीजी प्रा0 लि. के संबंध में आईईईएमए ने स्पष्ट किया है कि वे इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स के उत्पादक नहीं हैं ।

50. प्राधिकारी आईईईएमए द्वारा दी गई सूचना के अनुसार नोट करते हैं कि भारत में विचाराधीन उत्पाद के कई लघु उत्पादक हैं । तथापि, इन उत्पादकों का सामूहिक उत्पादन बहुत कम है । आवेदकों का उत्पादन भारतीय उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक है तथा आवेदकों का उत्पादन भारत में समान वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का बड़ा अनुपात है ।

51. जहां तक डब्ल्यूएसआई द्वारा किए गए आयात की मात्रा प्रकटन करने का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि ऐसी सूचना गोपनीय आधार पर दी जाती है तथा इसकी जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की जाती है । संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक था, गोपनीयता संबंधी दावों को स्वीकार किया और यह सूचना गोपनीय मानी गई है तथा अन्य इच्छुक पक्षकारों को नहीं बताई गई है ।

52. यह तर्क दिया गया है कि डब्ल्यू एस आई की एसईजैड इकाई को पात्र घरेलू उद्योग के रूप में न माना जाए । इस संबंध में प्राधिकारी ने डब्ल्यू एस आई को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा है ।

53. उपर्युक्त के आलोक में तथा उचित जांच के बाद प्राधिकारी मानते हैं कि डब्ल्यू एस आई को छोड़कर आवेदक पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं । तदनुसार डब्ल्यू एस आई को छोड़कर आवेदक नियमावली के अधीन आधार की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं । साथ ही, डब्ल्यू एस आई को छोड़कर आवेदक नियम 2(ख) के अभिप्राय के अंतर्गत घरेलू उद्योग में आते हैं ।

अन्य मुद्दे

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य इच्छुक पक्षकारों के विचार

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी होने से पूर्व

54. इच्छुक पक्षकारों ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं :

- क. एक प्रतिनिधि देश के रूप में कनाडा में सामान्य मूल्य गलत है क्योंकि कनाडा एक विकसित देश होने के नाते चीन की तरह विकास के उसी स्तर पर नहीं है । इसके अतिरिक्त, निर्मित सामान्य मूल्य गलत है क्योंकि यू एन कॉमरेड की वैबसाइट विषयगत उत्पाद के लिए 2670 अम.डा. पर प्रति मी. ट. की निर्यात कीमत दर्शाती है जबकि याचिका में निर्मित सामान्य मूल्य कनाडा से निर्यात की कीमत याचिका के पृष्ठ 158 पर 3643 प्रति मी.ट. की दर पर है । निर्मित सामान्य मूल्य में भारी अतिशयोक्ति है । जिसे प्राधिकारी स्वीकार नहीं कर सकते । साथ ही निर्मित सामान्य मूल्य कुछ क्रय आदेशों, बीजकों पर आधारित है जिस पर प्राधिकारी विश्वास नहीं कर सकते क्योंकि इसमें पर्याप्तता और शुद्धता परीक्षण नहीं है । (रिलायंस को मैक्सिको से पोर्टलैंड सीमेंट के संबंध में डी एस 60 ग्वाटेमाला-पाटनरोधी जांच में डब्ल्यूटीओ पैनल रिपोर्ट में रखा गया है) ।
- ख. हटाए गए उत्पादों के आंकड़े अपूर्ण हैं क्योंकि ये पीओआई के अनुकूल भी नहीं हैं । अतः ऐसे अपूर्ण आंकड़ों पर विश्वास नहीं किया जा सकता । यू एन कॉमरेड डाटा यह दर्शाता है कि ग्लास इंसुलेटर्स का भारत से पुनः निर्यात किया जा रहा है जबकि यह एक स्वीकृत तथ्य है कि घरेलू उद्योग उसका विनिर्माण नहीं करता । यह याचना की जाती है कि चीन से आयात और भारत के बाजार आकार को ऐसे आयातित सामानों के पुनः निर्यात के लिए समायोजन करने के बाद ही निर्धारित किया जाए ।
- ग. याचिका में इसके समर्थन में कोई व्यवस्था नहीं है कि 3 प्रतिशत कमीशन, 0.5 प्रतिशत पत्तन व्यय, 1 प्रतिशत अंतरदेशीय भाड़ा, 0.5 प्रतिशत बैंक प्रभार, भाड़े के निमित्त 50 अमरीकी डॉलर प्रति टन तथा बीमा के निमित्त 5 प्रतिशत के रूप में कतिपय मूल्यों के समायोजन के बाद निर्यात कीमत और कुल भारत कीमत कैसे लगाई गई । ये मूल्य किसी साक्ष्य के बिना स्वेच्छाचारी रूप से लगाए गए हैं । ऐसे मूल्यों पर विश्वास नहीं किया जा सकता और प्राधिकारी याचिकाकर्ताओं को निदेश दे सकते हैं कि वे इसका आधार बताएं कि इन मूल्यों का किस आधार पर प्रयोग किया गया है ।
- घ. 1.27 का परिवर्तन कारक अवैज्ञानिक है और याचिकाकर्ताओं ने इसे ग्लास इंसुलेटर्स की निर्यात कीमत को विकृत करने हेतु मनमाने ढंग से प्रयोग किया है जिससे एफओबी कीमत में कमी (याचिका का पृष्ठ 161 और 162) आ गई है । ऐसा परिवर्तन कारक लागू करने के बाद ग्लास इंसुलेटर्स की निर्यात कीमत काफी अधिक घटकर 1039 अम.डा. से 1319 अम.डा. हो गई है । परिवर्तन कारक लागू किए जाने के परिणामस्वरूप कीमत कटौती वर्ष 2011-12 में बढ़कर 20 से 40 प्रतिशत और जांच अवधि में वर्ष 2011-12 में 0-20 प्रतिशत से बढ़कर 30-50 प्रतिशत और जांच अवधि में 20-40 प्रतिशत हो गई है ।
- ड. याचिकाकर्ताओं ने याचिका के खंड 1 के पृष्ठ 15 पर दिए गए प्रश्न 9 में आयातकों को उपभोक्ताओं के साथ बराबर रखा है । उल्लिखित नाम वास्तविक प्रयोक्ता नहीं हैं । संबद्ध वस्तु के प्रयोक्ता राज्य सरकार के निगम/कंपनियां हैं जो विद्युत पारेषण लाइनें बिछाने और विद्युत केन्द्र स्थापित करने का कार्य करती हैं ।
- च. आंकड़ों में विसंगति है क्योंकि याचिकाकर्ता ने आयात के आंकड़ों के लिए चीन के सीमा-शुल्क पर भरोसा किया है और अपवर्जित उत्पादों के लिए उसने डीजीसीआईएंड एस पर भरोसा किया है । यह तथ्य न्यायोचित नहीं है कि इस आंकड़े पर रक्षोपाय संबंधी जांच परिणामों में भरोसा किया गया था और इससे भी अधिक तथ्य यह है कि प्रयुक्त आंकड़े जांच अवधि के आंकड़े नहीं थे ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

55. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अतिरिक्त मुद्दे उठाए हैं :-

- क. जहां तक इस जांच परिणाम का संबंध है कि "साक्ष्य की गुणवत्ता और मात्रा में जांच की प्रगति के साथ-साथ सुधार होता है" अनुरोध किया जाता है कि निर्यातकों से जिस सूचना का अनुरोध किया जाता है, उस सूचना का स्तर सभी पक्षकारों पर लागू किए जाने वाले समान मानक के अनुसार समान प्रगति की होगी । इसके अलावा, सूचना सर्वप्रथम याचिकाकर्ता के पास होनी चाहिए ताकि प्राधिकारी उत्पाद क्षेत्र और पीसीएन तथा पाटन एवं क्षति के प्रभाव के बारे में सही और निर्णायक निर्धारण कर सकें ।

- ख. प्राधिकारी ने चीनी सीमा-शुल्क से प्राप्त सौदेवार आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं जिससे निर्यातक उनकी प्रामाणिकता और विश्वसनीयता पर टिप्पणी करने से वंचित हुए हैं ।
- ग. अन्य देशों के लिए आयात मात्रा के लिए कोई तुलनीय विश्लेषण नहीं किया गया है । आयात हिस्से और कारणात्मक संबंध के विश्लेषण के मद्देनजर अन्य देशों से भरोसेमंद आयात आंकड़े अवश्य प्राप्त किए जाने चाहिए और उनका विश्लेषण किया जाना चाहिए ।
- घ. प्राधिकारी ने इस संभावना की अनुमति नहीं दी है कि अन्य देशों से आयातों के उचित आयात विश्लेषण से यह पता चल सकता है कि कम कीमत पर आयातों में बड़ा हिस्सा रखने वाला कोई अन्य देश नहीं है ।
- ङ. चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों में कमियों के मद्देनजर खास तौर पर विचाराधीन उत्पाद के लिए किस आधार पर आयात आंकड़ों की सत्यता का निर्धारण किया गया है अथवा उसका संचालन किया गया है क्योंकि इसमें केवल एच एस कोड का उल्लेख है न कि विवरण का ।
- च. भरोसा किए जाने के लिए आयात आंकड़ों का एक सामान्य स्रोत और इस मामले के तथ्यों के भीतर वही स्रोत होना चाहिए जहां आंकड़ों के दोनों स्रोतों अर्थात् डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों बनाम चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों में माप के रूप में महत्वपूर्ण इकाई भेद है ।
- छ. गलत वर्गीकरण और आयात आंकड़ों के अत्यंत अविश्वसनीय स्वरूप को ध्यान में रखते हुए निर्यातक पूर्ण और पर्याप्त आंकड़े उपलब्ध किए जाने तक इस मुद्दे पर अपने व्यापक अभिकथन देने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं ।
- ज. याचिका में डब्ल्यू एस आई द्वारा किए गए आयातों का अगोपनीय सारांश उपलब्ध नहीं कराया गया है । इसके अलावा, प्राधिकारी ने डब्ल्यू एस आई को घरेलू उद्योग के भाग के रूप में शामिल करने में त्रुटि की है । इस तथ्य की पुष्टि 9 अप्रैल, 2012 को शुरू की गई पूर्ववर्ती जांच में की गई थी कि डब्ल्यूएसआई एक आयातक है ।
- झ. याचिका 6 अंकीय स्तर तक सीमित है । समान उत्पाद में अध्याय उप-शीर्षों के अंतर्गत आने वाले विभिन्न उत्पादों को शामिल नहीं किया जा सकता । यदि विश्लेषण 8 अंकीय स्तर तक किया जाएगा तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तु के अधिकांश उत्पादों का उत्पादन ही नहीं करते हैं ।
- ट. यू एन कॉमट्रेड वैबसाइट से भारत द्वारा ग्लास इंसुलेटरों के निर्यात का पता चलता है । चूंकि इनका निर्माण भारत में नहीं किया जाता है । तथापि, चीन जन.गण. से हुए आयातों और भारत के बाजार आकार का निर्धारण पुनः निर्यातों के समायोजन के बाद ही किया जाना चाहिए । प्रारंभिक जांच परिणामों में प्राधिकारी ने लाइन दर लाइन निर्यात आंकड़ों पर भरोसा किया है । तथापि, लाइन दर लाइन निर्यात आंकड़ों का ऐसा कोई साक्ष्य सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध नहीं है और संक्षिप्त सीमा-शुल्क आंकड़े भरोसेमंद नहीं हैं ।
- ठ. प्रयोक्ताओं के बारे में सूचना गायब है । याचिकाकर्ता ने प्रयोक्ताओं को आयातकों के बराबर रखा है क्योंकि प्रयोक्ताओं को प्रस्तुतिकरण देने से बाहर रखने के लिए यह एक सुविचारित तरीका है ।
- ड. डब्ल्यू एस आई की ऐसीजैड इकाई से संबंधित आंकड़ों को बाहर रखा जाना चाहिए ।
- ढ. प्रारंभिक जांच परिणामों से यह पता नहीं चलता है कि क्या घरेलू उद्योग ने अनंतिम शुल्क की अपेक्षा की है ।
- ण. सौदेवार चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए गए हैं ।
- त. अन्य देशों के लिए कोई तुलनीय विश्लेषण नहीं किया गया है ।
- थ. चीनी सीमा-शुल्क उत्पाद विवरण प्रदान नहीं करता है और दूसरी ओर निर्दिष्ट प्राधिकारी का यह कहना है कि उत्पाद विवरण का प्रयोग गणना के लिए किया जाता है न कि एच एस कोड का ।
- द. आयातों के एक सामान्य स्रोत पर भरोसा किया जाना चाहिए ।
- ध. जब वित्त मंत्रालय और वाणिज्य मंत्रालय के संक्षिप्त आंकड़ों में इतनी अधिक विसंगतियां हैं तो यह समझा जाता है कि चीनी सीमा-शुल्क के संक्षिप्त आंकड़े किस प्रकार विश्वसनीय बन गए हैं ।
- न. 1.27 के परिवर्तन कारक की गणना के लिए कोई औचित्य अथवा तरीका प्रदान नहीं किया गया है । इस प्रकार के किसी मनमाने आंकड़े से पहुंच मूल्य और कीमत कटौती में वृद्धि हो सकती है । निर्दिष्ट प्राधिकारी को उपर्युक्त परिवर्तन कारक की अनदेखी जारी रखनी चाहिए जैसाकि पूर्ववर्ती जांच परिणामों में किया गया है ।
- प. याचिकाकर्ताओं द्वारा आंकड़ों का चुनिंदा उपयोग निराधार और पुष्टिकरण रहित है । चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों के लिए संक्षिप्त आंकड़ों से इतर कोई वास्तविक सौदेवार आंकड़ा उलब्ध नहीं कराया गया है । यद्यपि, जांच लगभग एक वर्ष से चल रही है । ऐसा प्रतीत होता है कि

याचिकाकर्ताओं द्वारा केवल आयात मात्रा को बढ़ाने और आयात कीमत को कम करने के प्रयोजन से चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों पर भरोसा किया गया है ।

- फ. जिस इकाई में आंकड़े सूचित किए गए हैं उस इकाई से आंकड़ों की विश्वसनीयता संदिग्ध बन जाती है । दूसरे शब्दों में मात्र इस वजह से कि जिस यूनिट में आंकड़े सूचित किए गए हैं वह याचिकाकर्ताओं के लिए असुविधाजनक है, इसका अर्थ यह नहीं निकलता है कि स्वयं आंकड़े अविश्वसनीय हैं । अन्तिम जांच परिणामों में की गई पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन की तुलनाएं नगों के आधार पर की गई प्रतीत होती हैं न कि भार के आधार पर । अतः प्रश्नगत इंसुलेटर के प्रकार को ध्यान में रखते हुए निर्धारित फार्मूला आधार पर नगों के भार में परिवर्तन सर्वथा संभव है ।
- ब. याचिकाकर्ताओं ने केवल इस आशय का विवरणगत दावा किया है कि परियोजना आयातों को आयातों के भारतीय डाटा बेस में शामिल नहीं किया गया है । तथापि, इस दावे की पुष्टि करने के लिए कोई साक्ष्य प्रदान किया गया प्रतीत नहीं होता है ।
- भ. इस बात का सत्यापन करने की वास्तविक संभावना नहीं है कि क्या चीनी सीमा-शुल्क आंकड़ों के शीर्षों के अंतर्गत सूचित सभी उत्पाद इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर हैं क्योंकि कोई उत्पाद विवरण उपलब्ध नहीं है ।
- म. अन्य देशों से हुए आयातों का साक्ष्य अधूरा और गलत बना रहता है । यह आयात के हिस्से और कारणात्मक संबंध के इस विश्लेषण के मद्देनजर खास तौर पर प्रासंगिक है कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करने के लिए बाध्य हैं । अन्य देशों से भरोसेमंद आयात आंकड़े अवश्य प्राप्त किए जाने चाहिए और अपूर्ण एवं त्रुटिपूर्ण आयात तथा क्षति विश्लेषण से बचने के लिए इनका विश्लेषण किया जाना चाहिए । निर्दिष्ट प्राधिकारी कृपया चीनी सरकार (अथवा भारत में उसके प्रतिनिधि) से इस बात की पुष्टि करने का अनुरोध करें कि क्या चीनी सीमा-शुल्क आंकड़े सही हैं और उनमें विचाराधीन उत्पाद क्षेत्र से बाहर के अन्य उत्पाद शामिल हैं ।
- य. चीन के विनिर्माताओं पर याचिकाकर्ताओं द्वारा भरोसा किए गए आंकड़ों के संबंध में कोई स्रोत अथवा साक्ष्य प्रदान किया गया प्रतीत नहीं होता है ।
- र. याचिकाकर्ताओं द्वारा भरोसा किए गए चीनी सीमा-शुल्क आंकड़े अवास्तविक और असत्यापित हैं । जब तक इस आंकड़े की सत्यता की जांच नहीं की जाती है, निर्यातक अभरोसेमंद आंकड़ों पर आधारित विश्लेषण पर टिप्पणी देने में असमर्थ हैं ।
- ल. निविदाओं के बारे में याचिकाकर्ताओं के दावे के समर्थन में कोई साक्ष्य अथवा अंकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया प्रतीत नहीं होता है । इसके बजाए याचिकाकर्ताओं ने इसे सिद्ध करने के लिए औसत आयात कीमत तथा मात्रा का प्रयोग करने का प्रयास किया है । किसी निविदा में दावा की गई बोली कीमत का प्रदर्शन वास्तविक आयात आंकड़ों में कभी नहीं किया जाएगा क्योंकि निविदा संविदा के साथ केवल एक बोली दी गई है जबकि अन्य सभी बोलियां रद्द कर दी गई हैं । अतः यदि विभिन्न आपूर्तिकर्ता किसी निविदा के लिए आवेदन करते हैं तो यह कोई मामला नहीं बनता है कि उनकी कम या अधिक कीमत कितनी है, केवल सफल रहने वाली निविदा में आयात आंकड़ों का वास्तविक उल्लेख किया जाएगा क्योंकि अन्य उत्पादक सर्वप्रथम उक्त आर्डर प्राप्त नहीं करते हैं । अतः याचिकाकर्ताओं के लिए यह उचित नहीं है कि वे सामान्य आयात आंकड़ों, जिनसे औसत कीमत का पता चलता है, के साथ निविदा के बारे में अपने दावे की पुष्टि करें ।
- व. याचिकाकर्ताओं द्वारा भरोसा किए गए चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़े गैर भरोसेमंद और असत्यापित हैं ।
- श. चीनी सीमा-शुल्क के आयात आंकड़ों का प्रयोग करने के बारे में घरेलू उद्योग का औचित्य निराधार है जिसकी जांच की जाने की जरूरत है । समूची याचिका में आयात आंकड़ों को छोड़कर डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर भरोसा किया गया है; इससे घरेलू उद्योग की ओर से हेराफेरी का पता चलता है । इसके अलावा, इस जांच में एवलोन कंसल्टिंग तथा फिडुशिया मैनेजमेंट्स कंसलटेंट्स की भूमिका को स्पष्ट नहीं किया गया है । घरेलू उद्योग ने उनके द्वारा प्रदत्त आयात आंकड़ों पर भरोसा किया है, इस पर तब विचार किया गया होता, यदि एजेंसियां प्रतिष्ठित रही होतीं परंतु इस मामले में ऐसा नहीं है और इस प्रकार ऐसे यादृच्छिक स्रोतों से प्राप्त सूचना की वर्तमान जांच में अनदेखी की जानी चाहिए ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने से पूर्व घरेलू उद्योग के विचार

56. अन्य मुद्दों पर आवेदकों के अनुरोध निम्नानुसार हैं :-

- क. विश्लेषण के प्रयोजनार्थ आयात के आंकड़े निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त किए गए हैं :
- चीन से आयातों के बारे में सूचना चीन के सीमा-शुल्क से प्राप्त की गई है ।
 - अन्य देशों से हुए आयातों के लिए डीजीसीआईएंडएस के प्रकाशित आंकड़े स्वीकार किए गए हैं ।
 - अपवर्जित उत्पादों के लिए डीजीसीआईएंडएस के सौदेवार आंकड़े स्वीकार किए गए हैं ।
- ख. चीन से हुए आयातों के लिए डीजीसीआईएंडएस के आंकड़े निम्नलिखित कारणों से स्वीकार नहीं किए गए हैं :

- i. आयातों की मात्रा और मूल्य के निर्धारण हेतु उपलब्ध विकल्प हैं : (i) भारतीय सीमा-शुल्क के आंकड़े, (ii) चीन के सीमा-शुल्क के आंकड़े, (iii) उपभोक्तावार आयात के आंकड़े । विचाराधीन उत्पाद के आयात 2 श्रेणियों में होते हैं— (i) अध्याय 98 के अंतर्गत परियोजना आयात और (ii) अध्याय 85, शीर्ष 8546 के अंतर्गत परियोजना श्रेणी से इतर ।
- ii. विचाराधीन उत्पाद के सभी आयात आर्डरों पर किए जाते हैं । इनमें से कुछ इंसुलेटरों का निर्माण उपभोक्ताओं की विशिष्ट डिजाइन और ड्राइंग के अनुसार किया जाता है । अतः इन उत्पादों का कोई मानक भार नहीं होता है । इसके अलावा, चीन के उत्पादकों ने भारत में ग्राहकों की विशिष्ट जरूरतों पर वस्तु का उत्पादन किया है और उसकी आपूर्ति की है, चीन से वस्तु का निर्यात भारत में आकस्मिक खपत के लिए किया गया है । तीसरे देशों में आकस्मिक खपत हेतु चीन से भारत को वस्तु का निर्यात नहीं किया गया होगा । इसके अलावा, भारत से हुए निर्यातों से संबंधित सौदेवार आंकड़ों से स्पष्टतः इस बात की पुष्टि होती है कि भारत से निर्यात ग्लास इंसुलेटरों के नहीं हुए हैं । मात्र यह तथ्य कि यू एन कॉमट्रेड के आंकड़ों से सीमा-शुल्क वर्गीकरण के अंतर्गत निर्यातों का पता चलता है, इस अभिप्राय का द्योतक नहीं है कि भारत से ग्लास इंसुलेटरों का निर्यात किया गया है ।
- iii. गौण स्रोतों द्वारा प्रदत्त सूचना इस कारण से अपर्याप्त है कि उसमें मुन्द्रा पत्तन जैसे विभिन्न सीमा-शुल्क पत्तनों पर सूचित आयात के आंकड़े निहित नहीं हैं । मुन्द्रा पत्तन पर विचाराधीन उत्पाद की भारी मात्रा सूचित की गई है ।
- iv. चूंकि यह जांच चीन से हुए आयातों के बारे में है, इसलिए इस बात का कोई कारण नहीं है कि चीन सरकार के आंकड़े अविश्वसनीय क्यों होने चाहिए ।
- v. प्राधिकारी ने विगत में कई जांचों में निर्यातक देश के व्यापार आंकड़ों को स्वीकार किया है ।
- vi. इसी उत्पाद से संबंधित रक्षोपाय जांच में महानिदेशक (रक्षोपाय) ने चीन के सीमा-शुल्क के आंकड़ों को स्वीकार किया है । इसके अलावा, महानिदेशक (रक्षोपाय) द्वारा अधिसूचित अंतिम जांच परिणामों को रक्षोपाय बोर्ड और वित्त मंत्रालय द्वारा स्वीकार किया गया था ।
- vii. जहां तक अपर्याप्त सूचना के तर्क का संबंध है, याचिकाकर्ताओं ने याचिका के अनुबंध 2.3 में घरेलू उद्योग के प्रत्येक घटक द्वारा उत्पादित किए जा रहे विचाराधीन उत्पाद की उत्पाद रेंज और उनके विनिर्देशन मुहैया कराए हैं ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग के विचार

57. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अतिरिक्त अनुरोध किए हैं :-

- क. जहां तक 9 माह बाद प्रश्नावली के उत्तर में कमियों का संबंध है, उल्लिखित अंतर प्रश्नावली के उत्तरों में प्रमुख कमियों के स्वरूप के हैं और इससे यह पता चलता है कि निर्यातक ने जानबूझकर संगत सूचना प्रदान न करने का निर्णय लिया है । अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी प्रश्नावली के उत्तर में इन कमियों का उल्लेख करने के लिए बाध्य नहीं है ।
- ख. जहां तक चीनी सीमा-शुल्क के सौदेवार आंकड़ों के प्रकटन का संबंध है, यह तृतीय पक्षकार की सूचना है और याचिकाकर्ता उसका प्रकटन करने के लिए प्राधिकृत नहीं है ।
- ग. जहां तक अन्य देशों से आयातों के उचित आयात विश्लेषण का संबंध है, कानून में जो अपेक्षित है, वह यह है कि क्या तीसरे देशों से आयातों की मात्रा और कीमत इतनी अधिक है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है । सैडीवर ने किसी देश से आयात की ऐसी कोई घटना प्रदान नहीं की है जिसमें मात्रा घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने के लिए पर्याप्त रही हो ।
- घ. जहां तक चीनी सीमा-शुल्क की यथार्थता का संबंध है, याचिकाकर्ताओं ने संगत अवधि के लिए चीन से हुए आपूर्तिकर्तावार निर्यात आंकड़े उपलब्ध कराए हैं जिससे आगे यह पुष्टि होती है कि अधिकांश निर्यात केवल प्रतिवादी कंपनियों द्वारा किए गए हैं ।
- ङ. यद्यपि, समूचे विचाराधीन उत्पाद को एच एस कोड 854610 और 854620 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है । तथापि, इसमें इंसुलेटरों की अपवर्जित श्रेणी की नगण्य मात्रा शामिल होती है ।
- च. याचिकाकर्ताओं ने प्राधिकारी के पास दायर याचिका के अनुबंध 2.3 में घरेलू उद्योग के प्रत्येक संघटक द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन रेंज और विनिर्देशन उपलब्ध कराए हैं ।
- छ. याचिकाकर्ताओं ने 854620 हेतु लाइन दर लाइन आयात आंकड़ों पर विचार किया है और उन सभी प्रविष्टियों के अलग रखा है जो उत्पाद नहीं हैं ।
- ज. भारत सरकार माप की किसी इकाई को विनिर्दिष्ट कर आयात की अनुमति देती है जबकि चीनी सीमा-शुल्क आंकड़ों में ऐसा नहीं है । इससे इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि यह कठिनाई भारतीय सीमा-शुल्क द्वारा अनुमत परंपरा के कारण उत्पन्न हुई है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

58. जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा दायर किए गए आवेदन में उसके द्वारा प्रदत्त अपर्याप्त सूचना के तर्क का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि आवेदन में जांच की शुरुआत के प्रयोजनार्थ समस्त संगत सूचना निहित थी । प्राधिकारी ने इस बात की संतुष्टि के उपरांत कि जांच की शुरुआत को

न्यायोचित ठहराने के लिए आवेदन में पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध है, वर्तमान जांच शुरू करने का निर्णय लिया। इसके अलावा, जांच की शुरुआत के बाद आवेदक से आवश्यक समझी गई सीमा तक सूचना मांगी गई है और आवेदक ने वर्तमान जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ उसे उपलब्ध कराया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ती है, साक्ष्य की मात्रा और गुणवत्ता में सुधार होता रहता है।

59. यह स्पष्ट किया जाता है कि प्रतिवादी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण उनके आंकड़ों के आधार पर किया गया है और जहां तक पाटन मार्जिन, क्षति मार्जिन और संस्तुत किए जाने के लिए प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क की मात्रा का संबंध है, ये प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रदत्त सूचना और साक्ष्य पर आधारित हैं। प्राधिकारी ने केवल क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ चीन के सीमा-शुल्क के आंकड़ों को स्वीकार किया है।

60. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी के लिए आयात की मात्रा और कीमत में प्रवृत्तियों पर विचार करना अपेक्षित होता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातों की मात्रा और कीमत का निर्धारण करने के लिए प्रतिवादी निर्यातकों ने वर्तमान जांच अवधि हेतु सूचना प्रदान नहीं की है और इसलिए क्षति विश्लेषण चीन के प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रदत्त सूचना का प्रयोग करते हुए किसी भी हालत में नहीं किया जा सकता है।

61. जांच के दौरान घरेलू उद्योग सहित सभी हितबद्ध पक्षकारों के विभिन्न अभिकथनों की जांच करने के बाद प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति के प्रयोजनार्थ वर्तमान मामले में चीनी सीमा-शुल्क आंकड़ों को स्वीकार करना उचित है (बहरहाल प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के संबंध में प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा दायर सूचनाओं को स्वीकार किया है)। सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत माप की निर्धारित इकाई भार है। यह नोट किया जाता है कि वित्त मंत्रालय द्वारा वस्तुतः सीमा-शुल्क पत्तन अधिकारियों को यह लिखा जा रहा है कि वस्तु की निकासी हेतु माप की निर्धारित इकाई को स्वीकार किया जाना चाहिए। तथापि, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि आयातकों ने माप की निर्धारित इकाई की अनदेखी को जारी रखा है और वे माप की अलग इकाई को अपना रहे हैं, डी जी सी आई एंड एस तथा साअबर डाटा में आयातों को माप की दूसरी इकाई अर्थात् किग्रा., एलओटी, मी.ट., सं., नग, सैट आदि में दी गई है। इसके विपरीत चीनी सीमा-शुल्क निर्यात आंकड़ों में आयातों की सूचना केवल भार के रूप में देता है। अतः यह स्पष्ट है कि चीन के निर्यातकों द्वारा भार के आधार पर चीनी सीमा-शुल्क को अपने निर्यातों की सूचना दी जा रही है। तथापि, चीन के ये निर्यातक भारतीय आयातकों पर वाणिज्यिक बीजक जारी कर रहे हैं जहां माप की इकाई भार नहीं है। परिणामतः आयातक माप की अलग-अलग कई इकाइयों का प्रयोग कर वस्तु की निकासी कर रहे हैं। उत्पाद के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए इन आयात सौदों में माप की इकाई भार न होने की स्थिति में भारतीय सीमा-शुल्क आंकड़ों से आयात मात्रा का वास्तविक निर्धारण करना कठिन होगा। यद्यपि, उत्पाद की आकस्मिक खपत संख्या में की जाती है, तथापि, संख्याओं के आधार पर आयात की मात्रा और कीमत का निर्धारण संख्याओं के अनुसार आकलन किए जाने पर उत्पाद के विभिन्न प्रकारों की लागत और कीमत में भारी अंतर को ध्यान में रखते हुए अत्यंत भ्रामक होगा। अतः प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ माप की इकाई के रूप में उत्पाद के भार पर विचार किया है जो सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत निर्धारित इकाई भी है। यह भी नोट किया जाता है कि जिन मामलों में इंसुलेटरों का निर्माण ग्राहकों की अपेक्षाओं के अनुसार किया जाता है, कोई मानक भार नहीं होता है और यदि आयात भार के आधार पर सूचित नहीं किए गए हैं, उन मामलों में उन खेपों के भार का सही निर्धारण नहीं किया जा सकता, चीन के सीमा-शुल्क के मामले में यह नोट किया जाता है कि चीन के सीमा-शुल्क में माप की निर्धारित इकाई भी भार है और चीन से हुए निर्यातों की सूचना चीन के सीमा-शुल्क में केवल भार के आधार पर प्रदान की गई है। प्राधिकारी ने प्रतिवादी चीनी निर्यातकों के प्रश्नावली के उत्तरों की भी जांच की और यह पाया कि प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा किए गए निर्यातों की संचयी मात्रा से पुनः इस बात की पुष्टि होती है कि चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़े उचित नहीं हैं। घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि के दौरान चीनी निर्यातक-वार आंकड़े (मात्रा और कीमत) प्रदान किए हैं और प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा दायर वास्तविक उत्तरों के साथ इस सूचना की तुलना से पुनः यह पुष्टि होती है कि चीनी सीमा-शुल्क आंकड़ों के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना उचित है। प्राधिकारी ने आगे याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रदत्त सूचना की तुलना प्राधिकारी के पास उपलब्ध यू एन कॉमट्रेड आंकड़ों के साथ की है और यह पाया है कि चीनी सीमा-शुल्क आंकड़ों के आधार पर याचिकाकर्ताओं द्वारा दावा किए गए आयातों की कुल मात्रा और मूल्य यू एन कॉमट्रेड से प्राधिकारी के पास उपलब्ध आंकड़ों के साथ मेल खाते हैं। यह भी नोट किया जाता है कि महानिदेशक (रक्षोपाय) ने इस उत्पाद से संबंधित रक्षोपाय जांच में भी चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों को स्वीकार किया था। चूंकि जांच चीन से हुए आयातों के बारे में है, इसलिए चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों पर विचार करना उचित नहीं होगा। पूर्वोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि आयातों की मात्रा और मूल्य का विश्लेषण करने के लिए चीन के सीमा-शुल्क को स्वीकार करना उचित होगा।

62. इसके अलावा, चूंकि यह जांच संबंध देश के रूप में चीन से संबंधित है, इसलिए चीन के सीमा-शुल्क के आंकड़ों को स्वीकार करना उचित नहीं होगा। यह भी नोट किया जाता है कि उत्पाद का उत्पादन मुख्यतः विशिष्ट आर्डरों पर किया जाता है और इसलिए भारत को निर्यात हेतु बीजकबद्ध वस्तु भारत में खपत के लिए नियत थी।

63. हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि भारतीय सीमा-शुल्क आंकड़ों से ग्लास इंसुलेटरों की श्रेणी के अंतर्गत निर्यातों का पता चलता है। तथापि, चूंकि भारत में ग्लास इंसुलेटरों का उत्पादन नहीं होता है, इसलिए इसका आशय भारत में आयातित वस्तु के पुनः निर्यात से है। याचिकाकर्ताओं ने भारतीय सीमा-शुल्क (आईबीआईएस) के अनुसार सौदेवार निर्यात आंकड़े उपलब्ध कराए हैं जिनके विश्लेषण से यह पता चलता है कि इन निर्यातों में उत्पाद विवरण से यह प्रदर्शित नहीं होता है कि ये निर्यात ग्लास इंसुलेटरों के हुए थे।

64. जहां तक अन्य देशों से हुए आयातों का संबंध है, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के मूल्यांकन के प्रयोजनार्थ डी जी सी आई एंड एस से संबंधित वस्तु के आयात आंकड़ों की जांच की है। यह नोट किया जाता है कि तीसरे देशों से हुए आयात नगण्य हैं और इनसे घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति नहीं हो सकती है। इसके अलावा, किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने यह प्रदर्शित करने के लिए कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया है कि तीसरे देशों से हुए आयातों के कारण क्षति हो रही है। इस प्रकार उचित संकेतकों के आयात विश्लेषण हेतु अलग-अलग आंकड़ा स्रोतों का अंगीकरण प्रयोजन मूलक ढंग से तथा तर्कसम्मत रूप से किया गया है न कि मनमाने ढंग से।

65. जहां तक अपवर्जित मदों का संबंध है, इस मुद्दे की जांच प्रारंभिक जांच परिणाम में की गई थी। प्राधिकारी ने पुनः हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों पर विचार किया है और वह निम्नानुसार नोट करते हैं :-

- क. किसी भी प्रतिवादी निर्यातक ने किसी अपवर्जित मद का निर्यात नहीं किया है ।
- ख. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि अपवर्जित मदों के आयात की मात्रा काफी कम रही है ।
- क. चूंकि चीन का सीमा-शुल्क उत्पाद का पूर्ण विवरण निर्दिष्ट नहीं करता है और उसमें संगत एच एस कोड में उल्लिखित विवरण होता है, इसलिए अपवर्जित मद के अभिज्ञान हेतु चीन के सीमा-शुल्क के विस्तृत आंकड़ों का प्रयोग नहीं किया जा सकता ।
- ख. डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों में आयातित उत्पाद का विस्तृत विवरण निहित होता है और डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों में अपवर्जित मदों के आयातों की पहचान करना संभव है ।
- ग. प्रतिवादी पक्षकारों ने चीन से भारत को हुए अपवर्जित उत्पादों के निर्यात के बारे में कोई उचित अथवा पर्याप्त सूचना उपलब्ध नहीं कराई है ।

66. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि अपवर्जित मदों की मात्रा और मूल्य का निर्धारण करने के लिए डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों को स्वीकार करना उचित रहेगा ।

67. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सामग्री की जांच करने के बाद अंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि चीन से हुए आयातों की मात्रा और मूल्य का निर्धारण करने हेतु चीन सीमा-शुल्क तथा अपवर्जित उत्पादों के आयातों की मात्रा और मूल्य का निर्धारण करने के लिए डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों पर विचार करना उचित होगा । यह भी नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों की मात्रा और मूल्य का निर्धारण करने में महानिदेशक (रक्षोपाय) ने भी यही कार्यप्रणाली अपनाई थी ।

68. जहां तक कनाडा पर उचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के रूप में विचार किए जाने का संबंध है, प्राधिकारी ने वर्तमान जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ चीन में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु कनाडा को उचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के रूप में स्वीकार नहीं किया है ।

69. जहां तक याचिका में निवल कारखाना निर्यात कीमत के निर्धारण का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह याचिका सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर आधारित है । प्राधिकारी ने अब प्रत्येक मामले में निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा दायर किए गए प्रश्नावली के उत्तरों को स्वीकार किया है ।

70. जहां तक ग्लास इंसुलेटर्स के सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु याचिका में परिवर्तन कारक को अपनाने का संबंध है, प्राधिकारी मानते हैं कि इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि पोर्सिलीन और ग्लास इंसुलेटर को समान वस्तु माना गया है अतः गैर बाजार अर्थव्यवस्था के लिए प्राधिकारी की सतत परिपाटी के अनुसार सामान्य मूल्य निर्मित किया गया है ।

71. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि याचिकाकर्ताओं ने प्रयोक्ताओं को आयातकों के बराबर रखा है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि चीन से अधिकांश आयात पावर ग्रिड कार्पोरेशन, जो आयातक और उपभोक्ता दोनों हैं, द्वारा किया जाता है । बहरहाल प्राधिकारी ने एक अधिसूचना जारी की है जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया है । भारत में उत्पाद के उपभोक्ताओं से यह उम्मीद की जाती है कि वे वर्तमान कार्रवाई से वाकिफ हैं ।

72. जहां तक आयातों की मात्रा और उनकी कीमत के निर्धारण हेतु सूचना के अलग स्रोत को अपनाने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं ने इस बारे में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना प्रदान की है । कोई भी हितबद्ध पक्षकार सूचना का ऐसा कोई अन्य स्रोत प्रदान करने या उसका संकेत करने में समर्थ नहीं हुआ है जिसे इस प्रयोजनार्थ स्वीकार किया जा सके ।

घ. पाटन मार्जिन

सामान्य मूल्य :

73. धारा 9क(1)(ग) के अधीन, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है :

- (i) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप-नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- (ii) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-
 - (क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा

- (ख) उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

परंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल यानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा ।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

74. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के बारे में हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :
- क. निर्यातक एम ई टी प्रश्नावली दायर करने के बाद 9 माह की अवधि में किसी भी समय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम में अभिज्ञात उपर्युक्त एमईटी मुद्दों के बारे में कोई प्रश्न अथवा कमी नहीं दर्शायी है । यह प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का स्पष्ट उल्लंघन है ।
- ख. सेडिवर को एमईटी का दर्जा प्रदान किया जाना चाहिए ।
- ग. निर्दिष्ट प्राधिकारी इस स्पष्टीकरण के साथ जांच के लिए आवश्यक संगत साक्ष्य और सूचना प्रदान करने में घरेलू उद्योग के विलंब का अनुसमर्थन कर सकते हैं कि साक्ष्य की गुणवत्ता और मात्रा में जांच प्रक्रिया में प्रगति के साथ सुधार होता है । तथापि, दूसरी ओर निर्यातकों को अलग प्रकार का व्यवहार प्रदान किया जाता है और उन्हें उनके आंकड़ों में किसी मान्य कमी, यदि कोई हो, के बारे में कोई अवसर प्रदान नहीं किया जाता है अथवा पूर्व सूचना नहीं दी जाती है ।
- घ. जांच परिणाम में प्रयुक्त पाटन मार्जिन की तुलना और गणनाओं को निर्यातकों के लिए उपलब्ध नहीं कराया गया है । कई बार अनुरोध किए जाने के बावजूद निर्यातकों को आज की तारीख तक इस बारे में उत्तर प्राप्त करना है ।
- ङ. घरेलू उद्योग ग्लास इंसुलेटर का विनिर्माण नहीं करता है और जांच अवधि के दौरान अधिकांश आयात ग्लास इंसुलेटर के हुए हैं । इन तथ्यों के बावजूद निर्दिष्ट प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का परिकलन घरेलू उद्योग के ईष्टतम मानक के आधार पर तब किया है जब ग्लास इंसुलेटरों का उत्पादन भारत में होता ही नहीं है । सामान्य मूल्य, पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के बारे में प्रारंभिक जांच परिणाम निर्धारित स्तर से कम हैं और गलत हैं ।
- च. इस बात का प्रकटन नहीं किया गया है कि क्या चीनी सीमा-शुल्क में मूलभूत मूल्य सीआईएफ है अथवा एफओबी । याचिका में निवल निर्यात कीमत समायोजन के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया गया है । ये अनुमानों पर आधारित हैं । निर्यातक इस समायोजन के बारे में असहाय हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम में निर्यात कीमत निकालते समय इस पर विचार किया है ।
- छ. घरेलू उद्योग और प्रतिवादियों, दोनों के तर्कों के बावजूद निर्दिष्ट प्राधिकारी ने ग्लास और पोर्सिलेन हेतु पृथक सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं किया है ।
- ज. 9 माह में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने एम ई टी के बारे में कोई कमी नहीं बताई है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने एम ई टी दावे का बचाव करने के लिए निर्यातकों को कोई अवसर प्रदान नहीं किया ।
- झ. जहां तक ग्लास इंसुलेटरों के लिए क्षति मार्जिन और पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ लागत और प्रचालन अंतरों का संबंध है, सामान्य मूल्य और क्षति रहित कीमत को तुलना करते समय इंसुलेटर के दोनों प्रकारों के बीच इस अंतर की सीमा तक घटाया जाना चाहिए । यह विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि भारतीय उत्पादक ग्लास इंसुलेटरों का निर्माण अथवा उनकी बिक्री नहीं करते हैं । निर्दिष्ट प्राधिकारी से संगत सूचना का विस्तृत विश्लेषण करने का अनुरोध किया गया क्योंकि पीजीसीआईएल वर्तमान जांच में पूर्ण रूप से सहयोग कर रही है ।
- ट. याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि कुछ कंपनियों को याचिकाकर्ता द्वारा सूचीबद्ध कई तथ्यों के आधार पर एमईटी दर्जा प्रदान नहीं किया जाना चाहिए । याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि निर्यातकों के एमईटी दावे को स्पष्ट करने की अनुमति जांच के इस चरण पर प्रदान नहीं की जानी चाहिए । तथापि, याचिकाकर्ताओं ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी दायर किए गए आंकड़ों के बारे में स्पष्टीकरण मांग सकते हैं । इस बात का निर्धारण याचिकाकर्ताओं को नहीं करना है कि क्या माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास स्पष्टीकरण और पूरक सूचना मांगने का अधिकार है अथवा नहीं । इसके अलावा, जांच में पूर्ण सहयोग करते हुए निर्यातकों के पास सूचना उपलब्ध कराने का अधिकार है ।
- ठ. पाटन और क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ यह बात सुनिश्चित की जानी चाहिए कि संबंधित सभी लागतों और कीमत मापदंडों तथा वास्तविक अंतर हेतु समायोजनों को ध्यान में रखते हुए उचित तुलना की जाती है । अलग-अलग उत्पाद श्रेणियों के बीच किए गए विधिवत समायोजनों के बिना की गई किसी तुलना से पाटन और क्षति का अवास्तविक विश्लेषण होना लाजिमी है ।
- ड. अनंतिम जांच परिणाम में की गई पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन की तुलनाएं नगों पर आधारित प्रतीत होती हैं न कि भार पर आधारित । अतः संदर्भाधीन इंसुलेटर के प्रकार को ध्यान में रखते हुए एक निर्धारित फॉर्मूले के आधार पर नगों का भार में परिवर्तन किए जाने की पूरी

संभावना है । उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए यह कारण कि नगों में सूचित आंकड़े भारतीय आयात आंकड़ों की अनदेखी करने के लिए पर्याप्त हैं, चीनी सीमा-शुल्क आंकड़ों के पक्ष में बन जाता है ।

- द. जहां तक इस तथ्य का संबंध है कि सिरैमिक इंसुलेटर ग्लास इंसुलेटरों की तुलना में बार-बार खराब हो सकते हैं, यह स्पष्ट होता है कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को गुणवत्ता में इस भारी अंतर को ध्यान में रखते हुए ग्लास इंसुलेटरों के न्यून सामान्य मूल्य में समायोजन करने की जरूरत है ।
- ण. याचिकाकर्ताओं ने ग्लास और सिरैमिक इंसुलेटरों के बीच भार में अंतर को समायोजित करने के लिए उत्पाद की निर्यात कीमत में समायोजन के लिए कहा है । इससे पाटन और क्षति मार्जिन को अधिकतम बनाने के प्रयास की पूर्ति करने का पृथक और स्वतः प्रयास प्रतीत होता है ।
- त. कीमत प्रभाव का विश्लेषण करने के एक भाग के रूप में निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह सुनिश्चित करना चाहिए था कि इंसुलेटरों के विभिन्न प्रकारों के बीच कीमत और लागत अंतर (अर्थात् ग्लास और सिरैमिक) को ध्यान में रखा जाना चाहिए ।
- थ. यद्यपि, लागत में घरेलू उद्योग की कीमत की तुलना में मामूली अधिक दर से वृद्धि हुई है । तथापि, कीमत में संबद्ध देशों द्वारा आरोपित कीमत कटौती के बावजूद तुलनीय दर पर भी वृद्धि हुई है ।
- द. जहां तक चीन के इंसुलेटर विनिर्माताओं के बारे में याचिकाकर्ताओं के दावे का संबंध है, निर्यातकों का अनुरोध है कि इस मुद्दे पर भरोसे लायक आंकड़ों के समर्थन में कोई स्रोत अथवा साक्ष्य प्रदान किया गया प्रतीत नहीं होता है ।
- ध. चीन में क्षमताओं का मात्र विस्तार चीन से हुए आयातों पर शुल्क लगाने का कारण नहीं है । पाटनरोधी शुल्क के उद्ग्रहण को न्यायोचित ठहराने के लिए पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की पुष्टि करना जरूरी है । इस बारे में चीन की क्षमता में वृद्धि का वर्तमान जांच के साथ कोई सह संबंध नहीं है ।
- न. जहां तक आदित्य नूवो के पास जमा हुई मालसूची का संबंध है, प्रतिवादी का तर्क है कि उसके द्वारा उत्पादित इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर या तो इतने घटिया हैं कि पिछले तीन वर्षों के दौरान उनकी बिक्री संभव नहीं हुई है अथवा यह कि आदित्य नूवो ने पहले से मौजूद मालसूची के बावजूद और किसी ऑर्डर के बिना उत्पाद का विनिर्माण जारी रखा है । अतः आदित्य नूवो के ऐसे अविवेकपूर्ण निर्णयों का दोष संबद्ध देश से हुए आयातों पर नहीं मढ़ा जा सकता ।
- प. घरेलू उद्योग का यह तर्क असंगत है कि चीन पूर्व में संबद्ध उत्पाद का निवल आयातक था । चीन के उत्पादक अलग-अलग उत्पाद खंडों-ग्लास इंसुलेटरों में संलग्न हैं जिनका पाटन नहीं किया जाता है अथवा जिनसे घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं होती है ।
- फ. निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग के ईष्टतम खपत मानकों के आधार पर ग्लास इंसुलेटरों के सामान्य मूल्य का परिकलन नहीं कर सकते क्योंकि घरेलू उद्योग ग्लास इंसुलेटरों का उत्पादन नहीं करता है । भार में अंतर से संबंधित घरेलू उद्योग के तर्क का समर्थन किसी तकनीकी साहित्य द्वारा नहीं किया गया है और इसलिए यह अवास्तविक है ।
- ब. जहां तक जिगोंग सेडिवर और सेडिवर इंसुलेटर के बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बारे में उचित राय बना सकते हैं ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने से पूर्ण घरेलू उद्योग के विचार

75. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के बारे में घरेलू उद्योग के अनुरोध निम्नानुसार हैं :
- क. प्राधिकारी द्वारा पूर्ववर्ती मामलों में और दूसरे देशों में जांच प्राधिकारियों द्वारा अपनाए गए दृष्टिकोण के अनुरूप चीन को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाना चाहिए । सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु चीन के उत्पादकों की लागत और कीमत पर विश्वास नहीं किया जा सकता ।
- ख. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि निम्नलिखित प्रत्येक शर्त को पूरा नहीं किया जाता है :
- i. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा उस स्थिति में प्रदान नहीं किया जा सकता जिसमें प्रमुख शोयरधारकों में से एक शोयरधारक राज्य की स्वामित्व वाला/नियंत्रित कंपनी है ।
 - ii. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि चीन के प्रतिवादी निर्यातक यह सिद्ध नहीं करते हैं कि प्रमुख निविष्टियों की कीमतों में बाजार मूल्यों का पर्याप्त प्रदर्शन नहीं होता है ।
 - iii. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि प्रतिवादी निर्यातक यह सिद्ध नहीं करता है कि उनकी बहियों की लेखा परीक्षा अंतर्राष्ट्रीय लेखा मानकों के अनुरूप की जाती है ।
 - iv. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा उस स्थिति में प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि

- v. बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे की पुष्टि करने हेतु सिद्ध करने का भार/दायित्व चीन के प्रतिवादी निर्यातकों पर है न कि निर्दिष्ट प्राधिकारी पर ।
- vi. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि प्रतिवादी कंपनी और उसका समग्र समूह यह दावा न करे ।
- vii. ऐसी स्थिति में जहां वर्तमान शोयरधारकों में स्वयं अपनी उत्पादन सुविधाएं स्थापित नहीं की हैं परंतु उन्हें किसी अन्य पक्षकार से प्राप्त किया है, वहां बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि दस्तावेजी साक्ष्य के जरिए रूपांतरण की प्रक्रिया पूर्णतः स्थापित नहीं हो जाती है ।
- ग. उत्पाद के उत्पादन के लिए अपेक्षित प्रमुख निविष्टियां धातु के कलपुर्जे और प्राकृतिक गैस, एलपीजी के रूप में ईंधन अथवा मिट्टी तेल, भट्टी तेल आदि जैसे तरल ईंधन है। चीन में इस्पात की कीमतों में बाजार मूल्य का पर्याप्त प्रदर्शन नहीं होता है । चीन की इस्पात कंपनियों सरकारी सब्सिडी से अत्यधिक लाभान्वित होती हैं । जहां तक ईंधन का संबंध है, इसकी कीमतों में चीन में बाजार मूल्य का प्रदर्शन नहीं होता है ।
- घ. विशिष्ट उद्योग से संबंधित कच्ची सामग्री हेतु सब्सिडी के अलावा, समस्त औद्योगिक राज्य स्वामित्व वाले उद्यमों (एसओई) ने ऊर्जा सब्सिडी प्राप्त की । सरकार के हस्तक्षेप द्वारा आई विकृतियों से अधिक क्षमता का सृजन हुआ है ।
- ङ. आवेदकों ने संबद्ध वस्तु की परिकलित उत्पादन लागत के आधार पर पोर्सीलेन/सिरेमिक इंसुलेटर का सामान्य मूल्य निर्धारित किया है ।
- च. आवेदकों ने पोर्सीलेन/सिरेमिक तथा ग्लास इंसुलेटरों के लिए पृथक सामान्य मूल्य का निर्धारण किया ।
- छ. आवेदकों ने ग्लास इंसुलेटरों के लिए सामान्य मूल्य तीन अलग-अलग तरीकों से निर्धारित किया :
- बजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश (कनाडा) में प्रचलित कीमतें
 - ग्लास इंसुलेटरों की लागत हेतु आवेदकों द्वारा प्राप्त लागत के सर्वोत्तम अनुमान ।
 - भार में अंतर हेतु विधिवत समायोजित पोर्सीलेन इंसुलेटरों के सामान्य मूल्य के आधार पर
- ज. आवेदकों ने आयात आंकड़ों के आधार पर भारित औसत आयात कीमत निर्धारित की । निर्यात कीमतों में कमीशन, पट्टन व्यय, अंतर्देशीय भाड़े और बैंक प्रभारों के लिए समायोजन किया गया है ।
- झ. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए वैब अनुसंधान से यह पता चलता है कि जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि. और सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि. की सभी संबद्ध कंपनियों ने विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन किया परंतु उन्होंने वर्तमान जांच में उत्तर नहीं दिया है ।
- ट. यह सिद्ध करने के लिए निर्यातक ने कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है कि प्राप्त निविष्टियों की कीमतों में बाजार मूल्य का पर्याप्त प्रदर्शन होता है ।
- ठ. जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि. और सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि. द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर में अंतराल प्रश्नावली के उत्तर में प्रमुख दोषों के रूप में है और निर्यातक ने सावधानीपूर्वक संगत सूचना प्रदान न करने का निर्णय लिया है । इस प्रकार निर्दिष्ट प्राधिकारी प्रश्नावली के उत्तरों में इन दोषों को इंगित करने के लिए बाध्य नहीं हैं । प्रश्नावली का पूर्ण उत्तर दायर करने के लिए कमियों को स्पष्ट करने अथवा उनमें सुधार करने के अवसरों का प्रयोग नहीं किया जा सकता ।
- ड. शंघाई सेविस ग्लास कंपनी लि. ग्लास सैलों का निर्माण करती है और जिगोंग सफाम कास्ट आयरन कं. लि. द्वारा जिगोंग सेडीवर एवं सेडीवर शंघाई के लिए इनसुलेटरों के कैप तैयार किए जाते हैं । ग्लास इंसुलेटर के शामिल उत्पादन की मूल प्रक्रिया ग्लास सैलों के निर्माण में निहित है । वस्तुतः ग्लास सैलों का निर्माण किए जाने के बाद जो एकमात्र उत्पादन प्रक्रिया बचती है, वह है धातु के पुर्जों को लगाना, जो एक स्क्रू ड्राइवर प्रौद्योगिकी है । उत्पादन की मूलभूत प्रौद्योगिकी, संयंत्र एवं उपकरण, विनिर्माण प्रक्रिया और निवेश ग्लास सैलों के निर्माण में होता है । ग्लास सैलों के चरण तक की लागत में ग्लास इंसुलेटर की अधिकांश उत्पादन लागत आ जाती है । इस प्रकार के विनिर्माण कार्यकलाप शंघाई सेविस ग्लास कंपनी लि. द्वारा किए जाते हैं । इस प्रकार मूलभूत विनिर्माण कार्यकलाप ऐसी एक कंपनी द्वारा किए जाते हैं जो प्राधिकारी के समक्ष नहीं हैं । ग्लास सैलों और ग्लास इंसुलेटरों के लिए कैपों का निर्माण करने वाली इन कंपनियों से प्रश्नावली के उत्तरों के अभाव में प्राधिकारी के लिए ग्लास इंसुलेटरों के उत्पादन और बिक्री में शामिल उत्पादन एवं उत्पादन लागत का सत्यापन करना संभव नहीं होगा । अतः प्रश्नावली का उत्तर सर्वथा अपूर्ण है और सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अपर्याप्त है । याचिकाकर्ता ने अनुरोध किया है कि जहां तक सामान्य मूल्य के निर्धारण का संबंध है, यह एकमात्र तथ्य समूची प्रक्रिया को रद्द करने के लिए पर्याप्त है ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग के विचार

76. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के बारे में घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अतिरिक्त अनुरोध किए हैं :

- क. जहां तक एम ई टी दावे का संबंध है, प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद भी विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री में शामिल सभी कंपनियों का उत्तर रिकॉर्ड में उपलब्ध नहीं है। निर्यातक ने इस बात की पुष्टि करने के लिए कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया है कि निविष्टियों की कीमत में बाजार मूल्य का पर्याप्त प्रदर्शन होता है।
- ख. जहां तक घरेलू उद्योग के समान त्रुटियों में सुधार करने के लिए निर्यातकों को अवसर दिए जाने का संबंध है, यह घरेलू उद्योग है जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा लिए गए इस अतिरिक्त समय के कारण नुकसान हुआ है। ये निर्यातक नहीं हैं जिन्हें इस प्रक्रिया में नुकसान हुआ है। वस्तुतः ये निर्यातक ही हैं जिन्हें अंतरिम जांच परिणाम में विलंब के कारण भारी लाभ हुआ है, जैसा कि निम्नलिखित निविदाओं द्वारा स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाता है जिन्हें जांच की शुरुआत के बाद पावरग्रिड द्वारा खोला गया था और जहां प्रारंभिक जांच परिणाम की अनदेखी करते हुए ऑर्डर दिए गए थे।
- ग. जहां तक पाटन मार्जिन की तुलना और गणना के प्रकटन का संबंध है, सामान्य मूल्य का परिकलन घरेलू उद्योग की लागत सूचना के आधार पर किया गया है। घरेलू उद्योग की लागत से संबंधित सूचना अत्यंत व्यापार संवेदनशील है जिसका प्रकटन नहीं किया जा सकता।

प्राधिकारी द्वारा जांच

77. प्राधिकारी ने निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रदान करने की सलाह देते हुए संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावलियां भेजी। निम्नलिखित पक्षकारों ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं :

- i. ननजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कंपनी लि.
- ii. जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि.
- iii. सेडीवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कंपनी लि.
- iv. डेलियन इंसुलेटर ग्रुप कंपनी लि.
- v. लिलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टैक्नोलॉजी कंपनी लि.
- vi. लिलिंग हुआचेंग इंसुलेटर्स कंपनी लि.
- vii. सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कंपनी लि.
- viii. चेंगडू ग्लोबल स्पेशन-ग्लास मैनु कंपनी लि.
- ix. सेडीवर एसए (फ्रांस)

78. निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर के अलावा संबद्ध देश की निम्नलिखित कंपनियों ने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं।

- i. जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि.
- ii. सेडीवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कंपनी लि.

बाजार अर्थव्यवस्था के दावों की जांच

79. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों के दौरान डब्ल्यू टी ओ के अन्य सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में चीन जन.गण. को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। अतः पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 (2) के अनुसार चीन जन.गण. को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है जो उपर्युक्त नियमों के अनुसार निर्यातक देश द्वारा अथवा अलग-अलग निर्यातकों द्वारा उपर्युक्त अनुमान के खंडन के अधीन है।

80. यथा संशोधित पाटनरोधी नियमावली के पैरा-8, अनुबंध-1 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन का निर्यातक पैरा 8 के उप पैरा (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करता है और इसके प्रतिकूल सिद्ध करता है। चीन 0 जन 0 गण 0 से संबद्ध वस्तु के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में किए गए उल्लेख के अनुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

- क. कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन गण में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;

- ख. इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बट्टे खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन हैं;
- ग. इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- घ. विनिमय दर का परिवर्तन ब्याज की दर पर किया जाता है ।

81. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. की जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि. और सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि. ने प्राधिकारी द्वारा जारी की गई जांच शुरूआत संबंधी सूचना के बाद बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे से संबंधित प्रश्नावली और निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है तथा गैर बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन किया है । संबद्ध वस्तु के प्रतिवादी उत्पादकों/निर्यातकों के सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रतिवादी उत्पादकों तथा निर्यातकों के प्रश्नावली के उत्तरों तथा बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी उत्तरों की जांच की गई थी ।

82. प्राधिकारी ने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर और निर्यातक प्रश्नावली की विभिन्न परिशिष्टों के संबंध में भी सहयोगी निर्यातक जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि. के अनुरोधों की जांच की है । उत्तरों की जांच करने के बाद प्राधिकारी ने यह पाया है कि जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि. की स्थापना चीन के कानूनों के अंतर्गत वर्ष 1993 में की गई थी । यह एक संयुक्त उद्यम सीमित दायित्व वाली कंपनी है । कंपनी के 98 प्रतिशत शेयर सेविस एसपीए के स्वामित्व में हैं और कंपनी के 2 प्रतिशत शेयर जिगोंग चुआन शेग इलक्ट्रिका पोर्सिलेन इंसुलेटर कंपनी के स्वामित्व में हैं । कंपनी का प्रमुख शेयरधारक सेविस एसपीए द्वारा चीन में कई कंपनियों पर नियंत्रण/स्वामित्व रखा जाता है जो संबद्ध पण्य वस्तु का उत्पादन/निर्यात करती हैं । तथापि, चीन जन.गण. से संबद्ध उत्पाद के इन उत्पादकों में वर्तमान जांच में उत्तर नहीं दिया है । यद्यपि, यह दावा किया जाता है कि इन कंपनियों ने जांच अवधि के दौरान भारत को इंसुलेटरों का निर्यात नहीं किया था ।

83. चूंकि एमईटी मानदंड का अनुरोध और उसकी पूर्ति एक ही समूह की सभी कंपनियों के लिए की जानी चाहिए, इसलिए इस बात की पुष्टि नहीं की गई है कि एमईटी का दावा पूर्ण है। इसके अलावा सेविस ग्रुप मैनुफैक्चर्स पोर्सिलेन इंसुलेटर्स की एक कंपनी पीपीसी वूक्सी इंसुलेटर कं. लि. ने वर्तमान जांच में उत्तर नहीं दिया है । जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि. की ग्लास इंसुलेटरों की घरेलू बिक्री के आधार पर उसके सामान्य मूल्य का निर्धारण पर्याप्त नहीं होगा क्योंकि संबंधित पक्षकार पीपीसी वूक्सी इंसुलेटर कं. लि. जो कि चीन में पोर्सिलेन इंसुलेटरों की एक उत्पादक है, द्वारा भी पोर्सिलेन की घरेलू बिक्री की जाती होगी और इसलिए उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। किसी भी स्थिति में बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार के दावे को तब तक पूर्ण नहीं माना जा सकता जब तक कि विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री में शामिल सभी कंपनियां प्रश्नावली के उत्तर के जरिए प्राधिकारी के समक्ष उपस्थित नहीं होती हैं । घरेलू उद्योग ने भी सेलीवर की वैबसाइट से यह प्रदर्शित करने के लिए साक्ष्य उपलब्ध कराया है कि कुछ संबद्ध कंपनियों द्वारा विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए अपेक्षित निविष्टियों का उत्पादन किया जा रहा है और इस कंपनी समूह ने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया है । कंपनी ने यह भी स्वीकार किया है कि वह संबंधित कंपनियों से निविष्टि की खरीद कर रही है परंतु वह प्राधिकारी के समक्ष उपस्थित नहीं हुई है क्योंकि उसने उत्तर दायर नहीं किया है । तथापि, यह नोट किया जाता है कि इस कंपनी ने संबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदत्त अपनी निविष्टि की पुष्टि बाजार कीमत पर नहीं की है ।

84. इसके अलावा, उत्पाद के उत्पादन के लिए अपेक्षित प्रमुख निविष्टि अर्थात् धातु एवं ईंधन के संदर्भ में निर्यातक ने यह सिद्ध करने के लिए कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है कि इन निविष्टियों की कीमतों में बाजार मूल्यों का पर्याप्त प्रदर्शन होता है ।

85. यह भी नोट किया जाता है कि चीन में ग्लास एवं पोर्सिलेन इंसुलेटरों के ऐसे अन्य निर्यातक हैं जिन्होंने प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है और बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा नहीं किया है । ऐसी स्थिति में जहां चीन में विचाराधीन उत्पाद के अन्य प्रमुख उत्पादकों ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का ही दावा नहीं किया है, इस बात की पुष्टि अपेक्षित है कि चीन में निर्यातक की लागत और कीमत से बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का उसका दावा न्यायोचित ठहरता है ।

86. यह भी नोट किया जाता है कि सेडीवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कंपनी लि. ने भी बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली का उत्तर दिया है । सेडीवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कंपनी लि. ("कंपनी") की स्थापना चीन के कानूनों के अंतर्गत वर्ष 2007 में की गई थी । यह 100 प्रतिशत विदेशी स्वामित्वाधीन सीमित दायित्व वाली कंपनी है । कंपनी ने पिछले तीन वर्षों में कोई ढांचागत परिवर्तन नहीं किया है । यह 162338 मिनले रोड, स्पार्क जोन, शंघाई, चीन-201319 पर पंजीकृत है । कंपनी सेविस एसपीए के 100 प्रतिशत स्वामित्व में है । सेविस एसपीए की चीन में संबंधित कंपनियां हैं जो संबद्ध पण्य वस्तु की बिक्री से जुड़ी हुई हैं । घरेलू उद्योग ने सेलीवर की वैबसाइट से साक्ष्य भी उपलब्ध कराया है ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि कुछ संबद्ध कंपनियां विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए अपेक्षित निविष्टियों का उत्पादन कर रही हैं और इस कंपनी समूह ने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया है । कंपनी ने यह भी स्वीकार किया है कि वह संबंधित कंपनियों से निविष्टि प्राप्त कर रही है परंतु ये प्राधिकारी के समक्ष उपस्थित नहीं हैं क्योंकि उन्होंने उत्तर दायर नहीं किया है । पूर्व में स्पष्ट की गई स्थिति को ध्यान में रखते हुए वर्तमान जांच परिणाम हेतु बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा सेडीवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कंपनी को प्रदान नहीं किया जा सकता क्योंकि जिगोंग सेडीवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लि. तथा सेडीवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि. का स्वामित्व सेविस एसपीए के पास है और इस प्रकार ये संबंधित कंपनियां हैं ।

87. इसके अलावा, दिनांक 11 फरवरी, 2015 के पत्र के तहत जिगांग सेडिवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कंपनी लिमिटेड और सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कंपनी लि. ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार के अपने दावे को वापस ले लिया है ।

88. अतः घरेलू उद्योग द्वारा रिकॉर्ड में रखे गए तथ्यों और चीन जन.गण. के निर्यातक तथा उत्पादक द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार संबंधी दावे की वापसी को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने कंपनी को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान नहीं किया है और उन्होंने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु परिकलित सामान्य मूल्य को स्वीकार किया है ।

89. सेडीवर एस ए फ्रांस ने सेडीवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं० द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद का भारत को निर्यात किया है और उसने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है ।

लीलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं०, लि. तथा लीलिंग हुआचेंग इंसुलेटर कं०, लि.

90. इस प्रश्नावली का उत्तर लीलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं०, लि. ("लीलिंग हुआक्सिन अथवा "कंपनी") और उसकी सहायक कंपनी लीलिंग हुआचेंग इंसुलेटर कं०, लि. ("लीलिंग हुआचेंग") द्वारा प्रदान किया गया है । लीलिंग हुआक्सिन संबद्ध पण्य वस्तु की एक निर्यातक उत्पादक है जो उत्पादन, घरेलू बिक्री और भारत तथा अन्य तीसरे देशों को निर्यात बिक्री का कार्य करती है । इसकी सहायक कंपनी लीलिंग हुआचेंग संबद्ध पण्य वस्तु की एक उत्पादक है जो केवल घरेलू बिक्री करती है । कंपनी और उसकी संबद्ध कंपनी लीलिंग हुआचेंग ने इस जांच में बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार के लिए आवेदन नहीं किया है । दोनों कंपनियों ने एक समेकित प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है । लीलिंग हुआक्सिन के शेयर धारक हैं और लीलिंग हुआचेंग के शेयर धारक हैं । कंपनी ने यह दावा किया है कि जहां तक उसकी जानकारी है, चीन और अन्य देशों में संबद्ध वस्तु के उत्पादन और बिक्री में संलग्न कोई अन्य संबद्ध कंपनी नहीं है । इसके अलावा, उन्होंने दावा किया है कि कंपनी को संबद्ध उत्पाद के लिए सरकार द्वारा किसी भी रूप में ऐसा कोई प्रोत्साहन प्रदान नहीं किया जाता है । हुआचेंग के पास उत्पाद विवरणिका नहीं है और हुआक्सिन के साथ ऐसे ही उत्पाद कोड की हिस्सेदारी नहीं है । कंपनी ने दावा किया है कि घरेलू बाजार में सौदेबाजी और बिक्री प्रक्रिया तथा भारत को निर्यात की प्रक्रिया आम तौर पर समान है । कंपनी दोनों बाजारों में बिक्री हेतु ऐसी कीमत सूचियां जारी नहीं करती है । बिक्री पर बातचीत सौदा आधार पर की जाती है ।

सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कंपनी तथा चेंगडू ग्लोबल स्पेशल ग्लास मैन्युफैक्चरिंग कं०, लि.

91. इस प्रश्नावली का उत्तर सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कंपनी लि. ("यीबिन ग्लोबल" अथवा "कंपनी") और उसकी सहायक कंपनी चेंगडू ग्लोबल स्पेशल-ग्लास मैन्युफैक्चरिंग कं०, लि. ("चेंगडू ग्लोबल") द्वारा प्रदान किया गया है । यीबिन ग्लोबल संबद्ध वस्तु की एक निर्यातक है जो भारत और अन्य तीसरे देशों, दोनों के लिए घरेलू और निर्यात बिक्रियां करती है । इसकी सहायक कंपनी चेंगडू ग्लोबल संबद्ध वस्तु की एक उत्पादक है । चेंगडू ग्लोबल द्वारा विनिर्मित सभी उत्पादों की सर्वप्रथम बिक्री यीबिन ग्लोबल का की जाती है और उसकी आगे बिक्री यीबिन ग्लोबल द्वारा सभी बाजारों में की जाती है । इस कंपनी और इसकी सहायक कंपनी चेंगडू ग्लोबल ने इस जांच में बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार हेतु आवेदन नहीं किया है । दोनों कंपनियों ने एक समेकित प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है । यीबिन ग्लोबल के शेयरधारक हैं : (***) और चेंगडू ग्लोबल के शेयरधारक हैं : (***)। पेपर कंपनी के रूप में तियानवो ट्रेडिंग कंपनी लि. द्वारा चेंगडू ग्लोबल और यीबिन ग्लोबल के बीच संबद्ध वस्तु की बिक्री की जाती है । कोई वास्तविक बिक्री तथा उत्पादन कार्यकलाप नहीं किया जाता है और ऐसा केवल लेखा के प्रयोजन हेतु किया जाता है । कंपनी ने दावा किया है कि जहां तक उसकी जानकारी है, ऐसी कोई अन्य संबंधित कंपनी नहीं है जो चीन और अन्य देशों, दोनों के लिए संबद्ध वस्तु का उत्पादन कर उसकी बिक्री करती है । इसके अलावा, यह दावा किया गया है कि उसे सरकार द्वारा संबंधित उत्पाद के लिए किसी भी रूप में ऐसा कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है और सभी देशों में कोई अन्य सहायक कंपनी अथवा अन्य संबद्ध कंपनी संबद्ध उत्पाद के उत्पादन, बिक्री अथवा कच्ची सामग्री की आपूर्ति में शामिल नहीं है । कंपनी ने दावा किया है कि घरेलू बाजार में और भारत को निर्यात हेतु सौदेबाजी तथा निर्यात प्रक्रिया आम तौर पर समान है । कंपनी द्वारा दोनों बाजारों में बिक्री हेतु ऐसी कीमत सूचियां जारी नहीं की जाती हैं । बिक्रियों पर बातचीत सौदा आधार पर की जाती है ।

डालियान इंसुलेटर ग्रुप कं०, लि.

92. कंपनी की स्थापना *** आर एमबी की पंजीकृत पूंजी के साथ एक सीमित दायित्व वाली कंपनी के रूप में डालियान इंसुलेटर कं०, लि. के नाम से 16 जुलाई, 2003 को की गई थी और उसने उसी वर्ष 15 नवंबर, को व्यापार लाइसेंस प्राप्त किया था । 19 फरवरी, 2009 को कंपनी का नाम बदलकर डालियान इंसुलेटर ग्रुप कं०, लि. कर दिया गया था । 13 अगस्त, 2009 को कंपनी की लेखा परीक्षित निवल परिसंपत्ति को *** शेयरों में तब्दील कर दिया गया था और कंपनी को परिवर्तित कर शेयरों द्वारा सीमित एक कंपनी बना दिया गया था । 5 अगस्त, 2011 को यह कंपनी शेनझेन स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई बोर्ड में व्यापार हेतु सूचीबद्ध किया गया था । उपर्युक्त के अलावा, कंपनी के व्यापार क्षेत्र और पंजीकरण के अन्य विवरण परिवर्तित नहीं हुए थे । कंपनी का निर्यातित उत्पाद चीन की सरकार द्वारा निर्धारित निर्यातों पर मूल्यवर्धित कर आय की नियुक्ति के अंतर्गत है । संबद्ध वस्तु के लिए वैट आय दर 17 प्रतिशत है । कंपनी ने दावा किया है कि उसका कोई वित्तीय अथवा संविदागत संबंध नहीं है और अनुसंधान तथा विकास, उत्पादन, बिक्री, लाइसेंसिंग, संबद्ध उत्पाद हेतु तकनीकी एवं पेटेंट करारों के बारे में किसी अन्य कंपनी के साथ कोई संयुक्त उद्यम नहीं है । कंपनी ने यह दावा किया है कि वह भारतीय और घरेलू ग्राहकों को सीधे बिक्री करती है । डालियान इंसुलेटर और उसके ग्राहक वस्तु की बिक्री की शुरुआत में सामान्य सूचना हेतु एक दूसरे से संपर्क करते हैं और करार होने तक कीमत, गुणवत्ता, डिलीवरी की तारीख तथा भुगतान की शर्त पर बातचीत जारी रखते हैं । संविदा निष्पादित होने के बाद दोनों पक्षकार संविदा के अनुसार अपनी जिम्मेवारियां निभाते हैं । उन्होंने आगे दावा किया है कि उनके पास घरेलू बाजार तथा भारत को निर्यात हेतु बिक्रियों की कोई कीमत सूची नहीं है । बिक्री कीमत का निर्धारण हमारी उत्पादन लागत, एस ए एंड जी तथा उचित लाभ पर विचार करते हुए दोनों पक्षकारों द्वारा बातचीत द्वारा किया जाता है जिसमें बाजार में आपूर्ति और मांग के सिद्धांत का पालन किया जाता है । उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा नहीं किया है ।

नानजिंग इलेक्ट्रिक (ग्रुप) कं०, लि.

93. नानजिंग इलेक्ट्रिक (ग्रुप) कं०, लि. ("उत्पादक/निर्यातक") की स्थापना चीन के कंपनी कानून के अंतर्गत एक सीमित दायित्व वाली कंपनी के रूप में दिसंबर, 1997 में की गई थी और उसे संख्या 63, ताइक्सिन रोड, नानजिंग, 210038, जियांगशु, चीन पर पंजीकृत किया गया था । वर्ष 2004 से नानजिंग इलेक्ट्रिक (ग्रुप) कं०, लि. का 100 प्रतिशत नियंत्रण बैयुन इलैक्ट्रो ग्रुप के पास है । नानजिंग इलेक्ट्रिक (ग्रुप) कं०, लि. के वर्तमान दो शेयरधारक बैयुन इलैक्ट्रिक ग्रुप कंपनी लि. और उसकी सहायक कंपनी गुआंगझू बैयुन इलैक्ट्रिक इन्वेस्टमेंट कंपनी लि. हैं । नानजिंग इलेक्ट्रिक (ग्रुप) कं०, लि. बैयुन ग्रुप के भीतर इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों की एकमात्र उत्पादक है । उत्पादक/निर्यातक द्वारा केवल टफंड ग्लास इंसुलेटरों तथा

कंपोजिट इंसुलेटरों एवं हाई वोल्टेज पार्सिलेन इंसुलेटरों का सीमित मात्रा में उत्पादन किया जाता है। जांच अवधि के दौरान उत्पादक/निर्यातक ने भारत को केवल “कैप और पिन प्रकार के टफंड ग्लास इंसुलेटरों” का निर्यात किया। उत्पादक/निर्यातक द्वारा बोली प्रक्रिया के जरिए भारतीय बाजार में अंतिम प्रयोक्ताओं को सीधी बिक्री की जाती है उत्पादक/निर्यातक की एक ही सहायक कंपनी है जो अभी भी अपनी आरंभिक प्रक्रिया में है और उसका कोई व्यापारिक कार्यकलाप नहीं है। यह सहायक कंपनी विचाराधीन उत्पाद का विनिर्माण नहीं करती है। उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का दावा नहीं किया है।

सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए पद्धति

94. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ अनुबंध-1 के पैरा 7 के मददेनजर किया है। चीन जन.गण. से भारत में आयातित संबद्ध उत्पाद हेतु सामान्य मूल्य का परिकलन घरेलू उद्योग के लिए अनुमत स्तरों पर घरेलू उद्योग की कीमत, परिवर्तन लागत, ब्याज, एस जी ए आदि के अनुसार प्रमुख कच्ची सामग्री, क्वाट्रज की अंतर्राष्ट्रीय कीमत, अन्य कच्ची सामग्री की लागत हेतु घरेलू उद्योग के ईष्टतम खपत मानकों पर विचार करते हुए किया गया है। उचित लाभ हेतु ब्याज को छोड़कर बिक्री लागत के 5 प्रतिशत की अनुमति प्रदान की गई है।

95. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने ग्लास इंसुलेटरों के लिए पृथक् सामान्य मूल्य निर्धारित नहीं किया है। यद्यपि, याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि भार के अनुसार निर्धारित किए जाने पर ग्लास इंसुलेटरों का सामान्य मूल्य पोर्सिलिन इंसुलेटरों के सामान्य मूल्य से काफी अधिक होगा। याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया है कि ग्लास इंसुलेटरों का सामान्य मूल्य काफी अधिक माना जाना चाहिए जो कम से कम ग्लास और पोर्सिलेन इंसुलेटरों के बीच भार में अंतर तक होना चाहिए। ग्लास इंसुलेटरों का सामान्य मूल्य निर्धारित करने के लिए प्राधिकारी के लिए ग्लास इंसुलेटर की निविष्टि की खपत और परिवर्तन लागत संबंधी आंकड़ों की जरूरत है। चूंकि घरेलू उद्योग ग्लास इंसुलेटर का उत्पादन नहीं कर रहा है, इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा ये आंकड़े प्रदान नहीं किए जा सकते। मै. सैडीवर ने ग्लास इंसुलेटर की लागत संबंधी आंकड़े उपलब्ध कराए हैं परंतु उन्हें स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि उन्हें प्रारंभिक जांच परिणाम, सत्यापन लंबित रहने तक एमईटी प्रदान नहीं किया गया है और इसकी वजह संबद्ध पक्षकारों से निविष्टियों की खरीद से जुड़े स्पष्टीकरण भी हैं। यह भी नोट किया जाता है कि ग्राहक कीमत आधार पर ग्लास तथा पोर्सिलेन इंसुलेटर की खरीद कर रहे हैं। ग्लास इंसुलेटरों के किसी भरोसेमंद और सत्यापनीय आंकड़ों की अनुपलब्धता को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने उसी स्तर के पोर्सिलेन तथा ग्लास इंसुलेटर के सामान्य मूल्य पर विचार किया है। यद्यपि, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि भार के अनुसार निर्धारित किए जाने पर ग्लास इंसुलेटरों का सामान्य मूल्य पोर्सिलिन इंसुलेटरों के सामान्य मूल्य से काफी अधिक होगा। चीन जन.गण. के लिए निर्धारित परिकलित सामान्य मूल्य पाटन मार्जिन शीर्ष के अंतर्गत निम्नलिखित पाटन मार्जिन तालिका में दर्शाया गया है।

2. निर्यात कीमत

जिगोंग सेडिवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कं. लि.

96. जिगोंग सेडिवर टफंड ग्लास इंसुलेटर कं. लि. ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने की सूचना दी है। वस्तु की सीधी बिक्री भारत में ग्राहकों को की गई है। जांच अवधि के दौरान कंपनी ने भारत में केवल टफंड ग्लास इंसुलेटरों का निर्यात किया है। इसके अलावा, कंपनी ने जांच अवधि के दौरान यांत्रिक क्षमता 70 के एन, 120 केएन, 160 केएन, 210 केएन और 420 केएन के एसी तथा डी सी इंसुलेटरों का निर्यात किया है। भारतीय ग्राहकों को बिक्री सीआईएफ आधार पर की जाती है। कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक ने विदेशी व्यय, विदेशी बीमा और ऋण लागत हेतु समायोजनों का दावा किया है। उपर्युक्त निर्यातक के लिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत *** अम.डा. प्रति किग्रा. निर्धारित की है।

सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि.

97. सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि. ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने की सूचना दी है। वस्तु की सीधी बिक्री भारत में ग्राहकों को की गई है। जांच अवधि के दौरान कंपनी ने भारत में केवल ग्लास डिस्क इंसुलेटरों का निर्यात किया है। इसके अलावा, कंपनी ने जांच अवधि के दौरान यांत्रिक क्षमता 120 केएन, 160 केएन, 210 केएन के एसी इंसुलेटरों का निर्यात किया है। भारतीय ग्राहकों को बिक्री सीआईएफ आधार पर की जाती है। कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक ने अंतरदेशीय भाड़े, विदेशी भाड़े, विदेशी बीमा और ऋण लागत हेतु समायोजनों का दावा किया है। उपर्युक्त निर्यातक के लिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत *** अम.डा. प्रति किग्रा. निर्धारित की है।

सेडिवर एस.ए (फ्रांस) (निर्यातक) के जरिए सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि. (उत्पादक)

98. सेडिवर एस.ए (फ्रांस) (निर्यातक) के जरिए सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि. (उत्पादक) ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने की सूचना दी है। वस्तु की बिक्री सेडिवर एस ए के जरिए भारत में सीधे ग्राहकों को की गई है। जांच अवधि के दौरान कंपनी ने भारत में केवल ग्लास डिस्क इंसुलेटरों का निर्यात किया है। इसके अलावा, कंपनी ने जांच अवधि के दौरान यांत्रिक क्षमता 120 केएन, 160 केएन, 210 केएन के एसी इंसुलेटरों का निर्यात किया है। भारतीय ग्राहकों को बिक्री सीआईएफ आधार पर की जाती है। कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक ने बीमा, निकासी एवं हैंडलिंग प्रभारों सहित अंतरदेशीय भाड़े, अंतर्राष्ट्रीय भाड़े, अंतर्राष्ट्रीय बीमा, कमीशन तथा बैंक प्रभारों हेतु समायोजनों का दावा किया है। उपर्युक्त निर्यातक के लिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत *** अम.डा. प्रति किग्रा. निर्धारित की है।

लीनिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं०, लि. तथा लीनिंग हुआचेंग इंसुलेटर्स कं० लि.,

99. लीनिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं०, लि. ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने की सूचना दी है। वस्तु की बिक्री भारत में ग्राहकों को सीधे की गई है। जांच अवधि के दौरान कंपनी ने भारत में केवल हॉलो पार्सिलेन इंसुलेटरों का निर्यात किया है। इसके अलावा, जांच अवधि के दौरान कंपनी ने यांत्रिक क्षमता 5.1–10 केएन, 10.1–20 केएन, 20.1–30 केएन, 30.1–50 केएन और 50.1 केएन के एसी इंसुलेटरों का निर्यात किया है। भारतीय ग्राहकों को की गई बिक्री सीआईएफ आधार पर है। कारखाना निर्यात कीमत निकालने के निर्यातक ने अंतरदेशीय परिवहन, पत्तन अनुषंगी शुल्क, विदेशी परिवहन और बीमा तथा ऋण लागत हेतु समायोजनों का दावा किया है। उपर्युक्त निर्यातक के लिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत *** अम.डा. प्रति किग्रा. निर्धारित की है।

चेंगडू ग्लोबल स्पेशल-ग्लास मैन्युफैक्चरिंग कं०, लि. तथा सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कं० लि.

100. सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कं० लि. ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने की सूचना दी है। वस्तु की सीधी बिक्री भारत में ग्राहकों को की गई है। जांच अवधि के दौरान कंपनी ने भारत में केवल ग्लास डिस्क इंसुलेटरों का निर्यात किया है। इसके अलावा, कंपनी ने जांच अवधि के दौरान यांत्रिक क्षमता 120 केएन, 160 केएन और 210 केएन के एसी इंसुलेटरों का निर्यात किया है। भारतीय ग्राहकों को बिक्री सीआईएफ आधार पर की जाती है। कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक ने अंतरदेशीय भाड़े तथा पत्तन व्यय, समुद्री भाड़े एवं समुद्री बीमा हेतु समायोजनों का दावा किया है। उपर्युक्त निर्यातक के लिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत *** अम.डा. प्रति किग्रा. निर्धारित की है।

डालियान इंसुलेटर ग्रुप कं० लि.

101. डालियान इंसुलेटर ग्रुप कं० लि. ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने की सूचना दी है। जांच अवधि के दौरान कंपनी ने भारत में केवल डिस्क और सॉलिड कोर इंसुलेटरों का निर्यात किया है। इसके अलावा, कंपनी ने जांच अवधि के दौरान यांत्रिक क्षमता 120–160 केएन, 210 केएन और 320–420 केएन के एसी तथा डीसी इंसुलेटरों का निर्यात किया है। भारतीय ग्राहकों को बिक्री सीआईएफ तथा सीएफआर आधार पर की जाती है। कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक ने समुद्री भाड़े, बीमा, हैंडलिंग, फ्यूमिगेशन निरीक्षण, सीएचए, सीमा-शुल्क निकासी और बैंक प्रभारों हेतु समायोजनों का दावा किया है। उपर्युक्त निर्यातक के लिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत *** अम.डा. प्रति किग्रा. निर्धारित की है।

नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं० लि.

102. नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं० लि. ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात करने की सूचना दी है। वस्तु की सीधी बिक्री भारत में ग्राहकों को की गई है। जांच अवधि के दौरान कंपनी ने भारत में केवल ग्लास डिस्क इंसुलेटरों का निर्यात किया है। इसके अलावा, कंपनी ने जांच अवधि के दौरान यांत्रिक क्षमता 120 केएन, 160 केएन और 210 केएन के एसी इंसुलेटरों का निर्यात किया है। भारतीय ग्राहकों को बिक्री सीआईएफ आधार पर की जाती है। कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक ने अंतरदेशीय परिवहन, हैंडलिंग एवं लदान प्रभारों, समुद्री भाड़े, बीमा, ऋण लागत, बैंक प्रभारों और निर्यात पैकिंग हेतु समायोजनों का दावा किया है। उपर्युक्त निर्यातक के लिए प्राधिकारी ने निर्यात कीमत *** अम.डा. प्रति किग्रा. निर्धारित की है।

3. पाटन मार्जिन

103. पाटन मार्जिन निर्धारित करने के लिए भारत हेतु निर्यात कीमत (निर्यातक द्वारा दावा किए गए और प्राधिकारी द्वारा अनंतिम रूप से स्वीकार किए गए सभी समायोजनों को छोड़कर) की तुलना सामान्य मूल्य के साथ की गई है। भारत को निर्यातित प्रत्येक प्रकार के इंसुलेटर के लिए सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत निर्धारित की गई है। प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में प्रत्येक सहयोगी निर्यातक की निर्यात कीमत पर समायोजन स्पष्ट दर्शाए थे। घरेलू उद्योग सहित किसी भी इच्छुक पक्षकार ने प्रस्तावित निर्यात कीमत समायोजनों पर कोई विरोध नहीं उठाया, जिन्हें इन परिणामों में अपनाया गया है। जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नलिखित तालिका के अनुसार निर्धारित किया गया है।

क्र.सं.	उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य	निवल निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन
			अम.डा./किग्रा.	अम.डा./किग्रा.	अम.डा./किग्रा.	%	%
1	नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं० लि.	नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं० लि.	***	***	***	***	105-115%
2	जिगोंग सेडिवर थुंगहैंग्ड इंसुलेटर कं० लि.	जिगोंग सेडिवर थुंगहैंग्ड इंसुलेटर कं० लि.	***	***	***	***	40-50%
3	सेडिवार इंसुलेटर्स (शंघाई) कं० लि.	सेडिवार इंसुलेटर्स (शंघाई) कं० लि.	***	***	***	***	40-50%

4	सेडिवार इंसलेटर्स (शंघाई) कं. लि.	सेडिवार एस ए	***	***	***	***	25-35%
	भारत औसत (2+3+4)		***	***	***	***	40-50%
5	डेलियान इंसलेटर ग्रुप कं. लि.	डेलियान इंसलेटर ग्रुप कं. लि.	***	***	***	***	80-90%
6	लीलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं0, लि.	लीलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं0, लि.	***	***	***	***	10-20%
7	चेंगडू ग्लोबल स्पेशल-ग्लास मैनुफैक्चरिंग कं. लि.	सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कं. लि.	***	***	***	***	110-120%

संबद्ध देश के अन्य उत्पादकों तथा निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन

104. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रश्नावली का उत्तर चीन से विचाराधीन उत्पाद के केवल कुछ ही निर्यातकों द्वारा दायर किया गया है। निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से संगत सूचना प्रदान करने में चीन के अन्य निर्यातकों ने प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है। चीन में अन्य उत्पादकों तथा निर्यातकों के संबंध में भारत के लिए सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर किया गया है। इस प्रयोजनार्थ प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रदत्त सूचना को स्वीकार किया गया है। इस प्रकार से निकाला गया पाटन मार्जिन निम्नलिखित तालिका में उल्लिखित है :

विवरण	अम.डा./किग्रा.
सामान्य मूल्य	***
निर्यात कीमत	***
पाटन मार्जिन	***
पाटन मार्जिन %	***
पाटन मार्जिन % रेंज	200-210

105. यह देखा जाता है कि विचाराधीन उत्पाद के चीन के सभी उत्पादकों-निर्यातकों द्वारा किए गए निर्यातों के संबंध में पाटन मार्जिन काफी अधिक है और सह नियमों में निर्धारित सीमा से ज्यादा है।

106. जहां तक पाटन मार्जिन की तुलना और गणनाओं के प्रकटन का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु सामान्य मूल्य का निर्धारण घरेलू उद्योग की लागत पर विचार करते हुए किया गया है जो घरेलू उद्योग की गोपनीय सूचना है और इसलिए इसका प्रकटन नहीं किया जा सकता। पाटन मार्जिन के प्रकटन से सामान्य मूल्य का खुलासा होगा क्योंकि निर्यातकों को उनकी निर्यात कीमत की जानकारी है। तथापि, पाटन मार्जिन रेंज को प्रदान किया गया है।

घ. क्षति

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने से पूर्व आयातकों, निर्यातकों, प्रयोक्ताओं तथा अन्य प्रयोक्ता एसोसिएशनों के अनुरोध

107. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध संक्षेप में निम्नानुसार हैं :

- क. पीजीसीआईएल की कीमत बोलियों की समीक्षा से यह पता चलेगा कि घरेलू उत्पादकों द्वारा एक दूसरे की कीमतों में कटौती की जा रही है और इसका कारण आयातकों को नहीं माना जा सकता।
- ख. डब्ल्यू ओ ओ पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.4 में यह अधिदेश है कि घरेलू उद्योग के लिए बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट को प्रदर्शित करना अपेक्षित है। घरेलू उद्योग न केवल कुछेक कारकों में वास्तविक गिरावट को प्रदर्शित करने में विफल रहा है अपितु उसने किसी भी कारक में संभावित गिरावट भी प्रदर्शित नहीं की है।
- ग. जांच अवधि में घरेलू उद्योग के उत्पादन में केवल मामूली गिरावट आई है। यह गिरावट हाई वोल्टेज रेटिंग इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों के उत्पादन हेतु अपनी क्षमताएं उन्नत करने के लिए घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण आई है। इस मांग की पूर्ति आयातों द्वारा की जाती है।
- घ. डब्ल्यू एस आई को छोड़कर जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है जो एक अस्थायी गिरावट है। डब्ल्यू एस आई को शामिल करते हुए लाभ में गिरावट का पता चलता है जिसका तात्पर्य यह है कि केवल डब्ल्यू एस आई को घाटा हुआ है।

- ड. घरेलू उद्योग ने उस समय लाभ में भारी गिरावट का दावा किया है जब कीमत कटौती की रेंज स्थिर (20-40 प्रतिशत) है ।
- च. घरेलू उद्योग की क्षति का दावा जांच अवधि में उत्पादन तथा लाभप्रदता में अस्थायी गिरावट पर आधारित है जबकि अपनी वार्षिक रिपोर्टों में उन्होंने इसके विपरीत उल्लेख किया है । मै. मॉडर्न इंडस्ट्रीज ने वर्ष 2012-13 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट में लाभ की सूचना दी है और मै. आदित्य बिड़ला नूवोली ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट 2012-13 में आगे यह सूचना दी है कि रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के कारण घरेलू विनिर्माताओं के क्षमता उपयोग तथा उत्पादकता में सुधार होगा ।
- छ. क्षति अवधि में क्षमता उपयोग में एक सतत अनुकूल प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है और जांच अवधि में इसमें केवल 9 प्रतिशत की मामूली गिरावट आई है । इसका वास्तविक कारण यह है कि घरेलू उद्योग हाई वोल्टेज रेटिंग इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों, जिनकी भारतीय प्रयोक्ताओं द्वारा भारी मांग की जाती है, के विनिर्माण हेतु अपनी क्षमताएं बढ़ाने में सक्षम नहीं रहा है ।
- ज. घरेलू उद्योग ने निवेश पर आय की सूचना उसी रेंज (0-20 प्रतिशत) में दी है । चूंकि क्षमता उपयोग में गिरावट आई है और निवेश पर आय सकारात्मक है, इसलिए इससे लाभ मार्जिन में वृद्धि का पता चलता है । इसके अलावा, बिक्री कीमत बढ़ी है जबकि लागत में गिरावट आई है जिससे लाभ मार्जिन में बढ़ोत्तरी हुई है ।
- झ. घरेलू उद्योग उत्पादकता के संबंध में बेहतर निष्पादन कर रहा है । जांच अवधि में कर्मचारियों की संख्या 102 सूचीबद्ध बिन्दुओं पर थी । प्रति कर्मचारी उत्पादकता काफी अधिक रही है । समूची क्षति अवधि में बिक्री अधिक रही है जिससे केवल 10 प्रतिशत की मामूली गिरावट का पता चलता है और इसका कारण आयातों को नहीं माना जा सकता ।
- ट. जांच अवधि में घरेलू उद्योग अत्यंत उच्च कीमत पर अपनी वस्तुओं को बेचने में सफल रहा है । एबीआई की वार्षिक रिपोर्ट में दी गई सूचना के अनुसार बिक्री मात्रा में गिरावट विद्युत क्षेत्र में प्रवृत्ति के कारण आई है । हिन्दुस्तान विद्युत की वार्षिक रिपोर्ट में यह कहा गया है कि उत्पाद की मांग में वृद्धि होने की संभावना है अतः बिक्री में गिरावट अस्थायी है । व्यापार प्रचालनों में 10 प्रतिशत के भीतर घट-बढ़ सामान्य है ।
- ठ. घरेलू उद्योग केवल 89 प्रतिशत मांग को ही पूरा करने में समर्थ होगा । परंतु अपनी अक्षमता के कारण घरेलू उद्योग केवल 52 प्रतिशत मांग को ही पूरा करने में समर्थ है और इसकी वजह आयातों को नहीं माना जा सकता ।
- ड. क्षति और पाटन के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है । निम्नलिखित तथ्य प्रासंगिक हैं :
- i. बिक्री कीमत में वृद्धि के बावजूद लाभप्रदता में गिरावट आई है ।
 - ii. एबीआई ने प्रतिस्पर्धा के समान स्तर को स्वीकार किया है और मॉडर्न ने रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के कारण उत्साहजनक परिस्थितियों का उल्लेख किया है ।
 - iii. हिन्दुस्तान विद्युत ने भी एन टी पी सी तथा पी जी सी आई एल द्वारा निवेश बढ़ाए जाने के कारण बिक्री में वृद्धि होने की सूचना दी है ।
 - iv. हिन्दुस्तान विद्युत के कथनानुसार लाभ में गिरावट उपभोक्ता का अधिमान बदलकर पॉलीमर इंसुलेटर किए जाने के कारण आई है ।
 - v. चूंकि यह उद्योग ऑर्डर आधारित उद्योग है, इसलिए सभी घरेलू उत्पादक अपनी कीमत कम करने में व्यस्त रहते हैं ताकि निविदाएं और ऑर्डर प्राप्त किए जा सकें और न कि आयातों के कारण । बाजार में पारस्परिक प्रतिस्पर्धा क्षति का कारण है क्योंकि यह ऑर्डर आधारित उद्योग है और बल्क क्रेताओं की संख्या बहुत कम है ।
 - vi. क्षमता का कम उपयोग हाई वोल्टेज इंसुलेटरों का उत्पादन करने के लिए अपनी उत्पादन क्षमता का उन्नयन करने हेतु घरेलू उद्योग की अक्षमता ऐसे कारक हैं जो केवल घरेलू उद्योग में ही निहित हैं ।
- ड. सार्वजनिक हित : पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से घरेलू उद्योग को उस स्थिति में कोई लाभ होने वाला नहीं है जब कीमत में कटौती पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण हो रही है न कि आयातों के कारण । पाटनरोधी शुल्क से कीमत में वृद्धि होगी जो उपभोक्ताओं के प्रतिकूल है ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

108. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अतिरिक्त मुद्दे उठाए हैं :-

- क. यद्यपि, प्राधिकारी ने यह संकेत दिया है कि क्षति विश्लेषण में रक्षोपाय शुल्क पर विचार किया गया है । तथापि, इस बात को प्रदर्शित नहीं किया गया है कि पहुंच मूल्य की गणना में रक्षोपाय शुल्क को किस प्रकार शामिल किया गया है ।

- ख. इतना अधिक शुल्क लागू होने के बावजूद घरेलू उद्योग को क्षति क्यों हो रही है । यदि 35 प्रतिशत शुल्क घरेलू उद्योग को हुई किसी क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं है तो कोई पाटनरोधी शुल्क आरोपित क्षति को दूर करने में समर्थ नहीं हो सकता है ।
- ग. मात्रात्मक प्रभाव का विश्लेषण करने से पूर्व निर्दिष्ट प्राधिकारी को आयात आंकड़ों का पुनरावलोकन करना चाहिए था ताकि निर्यातकों को उस पर टिप्पणी करने का अवसर मिल सके ।
- घ. यद्यपि, ग्लास और सेरेमिक विचाराधीन उत्पाद की दो उप श्रेणियां हो सकती हैं, तथापि, दोनों के बीच लागत और कीमत में अंतर हैं जिसके लिए दोनों उत्पादों के बीच पारस्परिक कीमत समायोजन किए जाने की जरूरत है । किसी प्रभावी कीमत समायोजन के बिना किसी कीमत प्रभाव विश्लेषण से क्षति के बारे में गलत निष्कर्ष ही निकलेगा ।
- ड. यद्यपि, घरेलू उद्योग की कीमत में वृद्धि हुई है, तथापि, आयात कीमतों में वही प्रवृत्ति नहीं रही है और वह एक समान रही है जिससे दोनों कीमतों के बीच किसी कारणात्मक संबंध के पूर्ण अभाव की पुष्टि होती है ।
- च. निर्यातक भारतीय विद्युत परियोजनाओं के लिए आयोजित बोलियों में नियमित भागीदारी करते हैं जिससे हाल की बोलियों का एक बड़ा भाग भारतीय उत्पादकों को प्रदान किया गया है । इन बोलियों का निर्धारण मुख्यतः लागत विश्लेषण पर किया जाता है । यह बात अत्यंत असंभव प्रतीत होती है कि इन बोलियों में भाग लेने वाले चीन के उत्पादकों द्वारा भारतीय उत्पादकों की कीमत कटौती की जा रही है और फिर भी बोलियां भारतीय उत्पादकों को प्रदान की जा रही हैं । कीमत प्रभाव संबंधी विश्लेषण बोली के आधार पर किया जाना चाहिए क्योंकि प्रदत्त कीमत की तुलना बोली दर बोली आधार पर ही की जा सकती है ।
- छ. यद्यपि, लागत में घरेलू उद्योग की कीमत की तुलना में मामूली उच्च दर पर वृद्धि हुई है, तथापि संबद्ध देशों द्वारा आरोपित कीमत कटौती के बावजूद कीमत में तुलनीय दर पर वृद्धि हुई है ।
- ज. निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इस बात की पुष्टि करने के लिए स्वीकार्य साक्ष्य उपलब्ध कराएं कि संबंधित निपटान योग्य क्षमताओं को क्षति के खतरे की पुष्टि करने हेतु भारत को निर्यात किए जाने की संभावना है ।
- झ. इस दावे की कोई पुष्टि नहीं की गई है कि आंकड़ों अथवा बाजारी रिपोर्टों के संबंध में चीन की मांग में गिरावट आई है । चीन में मांग के बारे में आशा है कि उसमें अगले 4-5 वर्षों में अच्छी दर पर वृद्धि बनी रहेगी ।
- ट. पाटनरोधी शुल्क का उपयोग चीन के उत्पादकों द्वारा प्राप्त आरोपित सब्सिडी (यदि कोई हो) से घरेलू उद्योग को सुरक्षा प्रदान करने के साधन के रूप में नहीं किया जा सकता । घरेलू उद्योग के लिए एक विशिष्ट व्यापार निवारक उपाय उपलब्ध है ।
- ठ. वर्तमान जांच परिणाम के कारणात्मक संबंध संबंधी विश्लेषण में इस बात की कोई वास्तविक जांच किए बिना औपचारिकता के रूप में उपर्युक्त सूचीबद्ध 5 कारकों की जांच की गई है कि क्या वास्तव में ऐसा कोई अन्य कारक है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है ।
- ड. याचिकाकर्ता निर्यात केन्द्रित कंपनियां हैं और क्षति, यदि कोई हुई है तो वह याचिकाकर्ताओं के निर्यातों में गिरावट के कारण हुई है ।
- ढ. घरेलू उद्योग का कोई भी सदस्य (बीएचईएल को छोड़कर) 765 के.वी. और उससे अधिक के वोल्टेज के उच्च के.वी. इंसुलेटरों अर्थात् 420 के.एन और उससे अधिक की क्षमता इलैक्ट्रोमेकेनिकल क्षमता के इंसुलेटरों का उत्पादन नहीं करता है । इसके अलावा, बीएचईएल को छोड़कर घरेलू उद्योग के सदस्यों के पास 765 के.वी और उससे अधिक की निविदाओं में भागीदारी करने के लिए आवश्यक अनुभव/जानकारी नहीं है । यद्यपि, एक घरेलू उद्योग के पास 420 के.एन और उससे अधिक के इंसुलेटरों का उत्पादन करने की क्षमता है, तथापि, यह देश की मांग को पूरा करने के लिए किसी भी दृष्टि से पर्याप्त नहीं है ।
- ण. भारत सरकार ने पूर्व में उस समय एक प्रतिकूल दृष्टिकोण अपनाया जब व्यापार निवारक उपायों के उद्ग्रहण द्वारा विद्युत क्षेत्र के स्थायित्व और उसकी वृद्धि पर प्रभाव पड़ा है (सोलर सैल) अनुरोध किया गया कि प्राधिकारी को उच्च के एन मूल्य के इंसुलेटरों को सार्वजनिक हित में वर्तमान उत्पाद के दायरे से अलग रखना चाहिए ।
- त. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत सरकार, सार्वजनिक क्षेत्र (पी जी सी आई एल, एस बी बी) और अंतिम प्रयोक्ता, औद्योगिक एवं घरेलू प्रयोक्ताओं के हित पर प्रभाव पड़ेगा ।
- थ. घरेलू उद्योग ने याचिका में कहीं भी संभावित गिरावट की पुष्टि नहीं की है ।
- द. प्रारंभिक जांच परिणाम में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने वर्ष 2014 में पीजीसीआईएल द्वारा प्रदत्त बोलियों पर विचार किया है और जांच अवधि की समाप्ति के बाद 2013 का अंतराल छोड़ दिया है । इसका कारण यह है कि वर्ष 2.013 के दौरान सभी बोलियां बीएचईएल को प्रदान की गई थीं जो इस समय अकेले 100 प्रतिशत उपयोगिता पर प्रचालन कर रही है ।
- ध. जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में मामूली गिरावट आई है । यह गिरावट उच्च वोल्टेज रेटिंग के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों का उत्पादन करने के लिए अपनी क्षमताओं के उन्नयन हेतु घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण आई है । इस मांग की पूर्ति आयातों द्वारा की जाती है ।

- न. डब्ल्यू एस आई को छोड़कर घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में जांच अवधि में गिरावट आई है जो एक अस्थायी गिरावट है । डब्ल्यू एस आई सहित लाभ में गिरावट का पता चलता है जिसका तात्पर्य यह है कि केवल डब्ल्यू एस आई को नुकसान हुआ है ।
- प. कीमत कटौती की रेंज अस्थिर (20-40 प्रतिशत) रहने पर घरेलू उद्योग को भारी घाटे का समाशोधन कठिन है ।
- फ. आधुनिकी इंसुलेटरों ने वार्षिक रिपोर्ट में लाभ दर्ज किया है जबकि एबीआई ने यह रिपोर्ट दी है कि रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने से क्षमता उपयोग और उत्पादकता में सुधार होगा ।
- ब. क्षमता उपयोग में कमी घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण आई है क्योंकि वह उच्च वोल्टेज के इलैक्ट्रिक इंसुलेटरों का उत्पादन करने के लिए अपनी क्षमताओं को उन्नत करने में असमर्थ है क्योंकि ऐसे इंसुलेटरों की मांग बढ़ रही है और कम वोल्टेज की रेटिंग वाले इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों की क्षमता उपयोग में स्पष्ट तौर पर गिरावट आगयी ।
- भ. घरेलू उद्योग ने समान रेंज (0-20 प्रतिशत) में आर ओ आई की सूचना दी है । चूंकि उत्पादन उपयोगिता में गिरावट आई है और आर ओ आई सकारात्मक है, इसलिए लाभ मार्जिन में वृद्धि का पता चलता है । इसके अलावा, बिक्री कीमत में वृद्धि हुई है, लागत घटी है जिससे लाभ मार्जिन में वृद्धि होगी ।
- म. घरेलू उद्योग उत्पादकता में बेहतर निष्पादन कर रहा है । मामूली गिरावट प्रतिकूल नहीं है । क्षति अवधि के अधिकांश भाग के दौरान कर्मचारियों और उत्पादकता की प्रवृत्ति आम तौर पर सकारात्मक रही है ।
- य. बिक्री में सतत वृद्धि प्रदर्शित हुई है। बिक्री में गिरावट ए बी आई की वार्षिक रिपोर्ट में यथासूचित विद्युत क्षेत्र में प्रवृत्ति के कारण आई है। हिंदुस्तान विद्युत की वार्षिक रिपोर्ट में यह उल्लेख है कि उत्पाद की मांग में सुधार होने की संभावना है । अतः बिक्री में गिरावट अस्थायी है। व्यापार प्रचालनों में 10 प्रतिशत के भीतर घट-बढ़ आम है ।
- र. घरेलू उद्योग केवल 89 प्रतिशत मांग को पूरा करने में समर्थ होगा । परंतु उसकी अक्षमता के कारण मांग का कम उपयोग होने की वजह से घरेलू उद्योग केवल 52 प्रतिशत मांग को पूरा करने में समर्थ है और इसकी वजह आयातों को नहीं माना जा सकता ।
- ल. बिक्री कीमत में वृद्धि होने के बावजूद लाभप्रदता में गिरावट आई है ।
- व. ए बी आई ने प्रतिस्पर्धा के समान स्तर को स्वीकार किया है और मॉडन ने रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के कारण उत्साहजनक परिस्थितियों का हवाला दिया है ।
- छ. एन टी पी सी और पी जी सी आई एल द्वारा निवेशों में वृद्धि के कारण हिंदुस्तान विद्युत ने भी बिक्री में बढ़ोत्तरी की सूचना दी ।
- ज. लाभ में गिरावट हिंदुस्तान विद्युत के कथनानुसार, उपभोक्ता की तरजीह पॉलीमर इंसुलेटर के प्रति होने के कारण आई है
- झ. पीजीसीआईएल घरेलू उद्योग को सहायता करने के लिए ही घरेलू उद्योग को संविदाएं प्रदान करती है परंतु वह यह स्वीकार करती है कि ग्लास इंसुलेटर बेहतर है । पी जी सी आई एल ने यह स्पष्ट किया है कि उसी निविदा को प्रदान करने का तात्पर्य यह नहीं है कि ग्लास और पॉर्सिलेन समान वस्तुएं हैं । पीजीसीआईएल ने यह स्पष्ट किया है कि ग्लास इंसुलेटर प्रचालन और तकनीकी कारणों की वजह से पॉर्सिलेन इंसुलेटरों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं ।
- ट. बाजार में पारस्परिक प्रतिस्पर्धा क्योंकि यह एक ऑर्डर आधारित उद्योग है और अधिकांश क्रेता मात्र नए हैं ।
- ठ. क्षमता का कम उपयोग क्योंकि घरेलू उद्योग भारत में बढ़ती हुई मांग को पूरा करने में समर्थ नहीं है अतः उपभोक्ता पॉलीमर इंसुलेटर विनिर्माताओं की ओर अग्रसर हो रहे हैं ।
- ड. सार्वजनिक हित: घरेलू उद्योग को पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से उस स्थिति में कोई लाभ मिलने वाला नहीं है जब कीमत में कटौती पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण हो रही है न कि आयातों के कारण । पाटनरोधी शुल्क से कीमतों में वृद्धि होगी जो उपभोक्ताओं के लिए अहितकर होगी । ऐसे किसी आवश्यक उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लगाना, जिसकी जरूरत भारत में विद्युत ग्रिडों की स्थापना के लिए होती है, भारतीय ग्रिड के विकास में बाधा उत्पन्न करेगा और यह भारतीय उद्योग के दीर्घवधिक हित के प्रतिकूल होगा ।
- ढ. पाटनरोधी शुल्क इस ढंग से लगाया जाना चाहिए ताकि भारतीय विनिर्माताओं को उचित संरक्षण प्रदान करते हुए प्रतिस्पर्धा का बेहतर स्तर बनाए रखा जा सके ।
- ण. चूंकि इंसुलेटरों का वास्तविक वजन केवल वास्तविक विनिर्माण के बाद ही जाना जा सकता है, इसलिए समग्र आधार अम.डा./मी.ट. पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से जटिलताएं उपलब्ध हो सकती हैं । पाटनरोधी शुल्क प्रतिशत के रूप में लगाया जाए । तथापि,

यदि पाटनरोधी शुल्क समग्र रूप में लगाया जाता है तो बोली मूल्यांकन के समय शुल्क के प्रभाव की गणना को सुकर बनाने के लिए अधिसूचना में डिस्क इंसुलेटरों के प्रत्येक प्रकार के सामान्यीकृत भाग का उल्लेख किया जाए ।

- त. पाटनरोधी शुल्क केवल ऐसी संविदाओं पर लागू किया जाए जिन्हें उक्त शुल्क लागू किए जाने के बाद प्रदान किया गया है और पी जी सी आई एल की खरीद लागत पर वृद्धि के मद्देनजर भूतलक्षी प्रभाव से जिसके परिणामस्वरूप पारेषण टैरिफ में वृद्धि होगी और अतिरिक्त लागत का बोझ आम जनता को वहन करना होगा ।
- थ. विश्व बैंक/एडीबी द्वारा वित्तपोषित परियोजना को पाटनरोधी शुल्क से छूट प्रदान की जाए जो सीमा शुल्क से भी छूट प्राप्त हैं ।
- द. पावरग्रिड द्वारा भारतीय फर्मों को इंसुलेटरों के लिए विकास ऑर्डर प्रदान किए जा रहे हैं । तथापि, ये फर्म कार्य की दृष्टि से अर्हता के प्रयोजनार्थ तकनीकी अनुभव से संबंधित नियमित अर्हता संबंधी अपेक्षा को पूरा नहीं कर रही हैं । हाल ही में स्वदेशी बोलीदाताओं के लिए तकनीकी अपेक्षाओं में ढील दी गई है ।
- ध. निविदाओं में विदेशी फर्मों की भागीदारी से बोली प्रक्रिया में प्रतिस्पर्धात्मकता में भी वृद्धि हो रही है क्योंकि घरेलू विनिर्माता भी प्रतिस्पर्धी कीमतों की पेशकश करने की स्थिति में हैं । (चम्पा-कुरुक्षेत्र पारेषण लाइन जहां बी एच ई एल ने निविदा प्राप्त की थी) ।
- न. मांग और क्षमता के बीच सतत अंतराल है घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग वर्ष 2012-13 को छोड़कर संतोषजनक है । पावर ग्रिड की जरूरत केवल 765 के.वी./800 के.वी. पारेषण लाइनों के लिए है जहां भारतीय विनिर्माताओं की क्षमता सीमित है ।
- य. धातु फिटिंग के लिए आपूर्तिकर्ता सीमित है । इसकी वजह से संविदा डिलीवरी अनुसूची के अनुसार इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर की आपूर्ति लगभग सभी मामलों में प्रभावित हुई है । यद्यपि, संविदाएं बी एच ई एल को प्रदान की गई थीं तथापि, वे क्षमता सीमित होने और धातु फिटिंग उपलब्ध न होने के कारण प्रभावित हुई थीं । ऐसा ही मामला अन्य विनिर्माताओं के संबंध है । अतिरिक्त उच्च वोल्टेज के इंसुलेटर पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से भारत में क्षमता अवरोध उत्पन्न हो सकता है ।
- र. जी एफ ए अपनाकर निर्धारित की गई क्षति रहित कीमत काफी अधिक होगी और वह वास्तविक स्थिति पर आधारित नहीं होगी ।
- ल. निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित आर ओ सी को उस स्थिति में स्वीकार किया जाना चाहिए जब पाटन का कोई आरोप नहीं था और उचित लाभ मार्जिन मिल रहा था और इसका निर्धारण 22 प्रतिशत आर ओ सी ई के रूप में नहीं किया जाना चाहिए । 22 प्रतिशत आर ओ सी ई से घरेलू उद्योग को अनुचित लाभ और संरक्षण मिलता है । इक्विटी पर 41 प्रतिशत लाभ मार्जिन किसी भी हालत में उचित नहीं माना जा सकता । ई यू की प्रणाली में इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि लाभ मार्जिन पर उचित आय की गणना के समय विचार किया जाना चाहिए और इसे लाभ के विश्लेषण पर आधारित होना चाहिए जब कोई पाटन न हुआ हो और 22 प्रतिशत के लाभ मार्जिन के एकीकृत उपयोग को कुछ पारंपरिक विचारों पर आधारित करना अतार्किक है और यह तर्क सम्मत नहीं हो सकता है ।
- व. भारत वर्ष 2006 तक निवल निर्यातक था । पर्याप्त नई क्षमता और उत्पादन विदेश से मुख्य धारा में आया जिसने भारतीय विनिर्माताओं के लिए निर्यातों की बड़ी मात्राओं को बनाए रखना कठिन बना दिया ।
- श. भारतीय रूपए की गिरावट से पूर्ववर्ती अवधि की तुलना में चीन से हुए आयातों को महंगा बना दिया । होलो और सॉलिड कोर इंसुलेटरों के चीनी विनिर्माताओं से हाल के प्रस्तावों से भारतीय विनिर्माताओं द्वारा प्रस्तावित कीमतों की तुलना में उच्चतर पहुंच कीमत का पता चलता है अतः चीन से हुआ पाटन अब कोई खतरा नहीं है और पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए ।
- ष. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भारतीय विनिर्माता इंसुलेटरों के सभी प्रकारों के लिए पिछले दो वर्षों से 10-20 प्रतिशत की रेंज में कीमत वृद्धि की मांग कर रहे हैं । समग्र विद्युत उद्योग, उपभोक्ता और घरेलू बाजार, जहां ए बी बी द्वारा निर्यात किए जाते हैं, में भी वृद्धि नहीं हो रही है ।
- स. पिछले 5 वर्षों के दौरान चीनी यूयान के मूल्य में अम. डॉ. की तुलना में वृद्धि हुई है और निर्यात उनके लिए कम लाभदायक बन गए हैं । फिर भी चीन के विनिर्माताओं ने अपने व्यापार को बरकरार रखने की व्यवस्था की है । भारतीय विनिर्माताओं द्वारा अपने दैनिक व्यापार के बारे में की गई अभिनव पहल से उन्हें बने रहने तथा अपने प्रचालनों को व्यवहार्य और सततधारणीय बनाने में मदद मिलेगी ।
- ह. संभावित गिरावट का कोई विश्लेषण नहीं ।
- क्ष. आवेदन और प्रारंभिक जांच परिणाम में मांग, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री और बाजार हिस्से से संबंधित आंकड़ों के बारे में असत्यता ।
- त्र. मांग-आपूर्ति में अंतर के बारे में हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों की उपेक्षा ।
- ज्ञ. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी शुल्क के उद्ग्रहण के रूप में चीन से इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर की प्राप्ति के बारे में पी जी सी आई एल के निर्णय को प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रतिस्पर्धा का असामान्य स्तर उत्पन्न किया है ।

- कक. निर्दिष्ट प्राधिकारी पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के पहलू को समझने में विफल रहे ।
- खख. क्रेता सिरेमिक इंसुलेटर के बजाए पालीमर इंसुलेटर का विकल्प चुन रहे हैं ।
- गग. इन कंपनियों की वार्षिक रिपोर्ट से प्रतिस्पर्धा के समान स्तर की मौजूदगी का पता चलता है ।
- घघ. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस मुद्दे की जांच नहीं की है कि क्या जांच के दौरान क्षति रोकने के लिए ऐसा अनंतिम शुल्क अपेक्षित है । अनुच्छेद-7 का उल्लंघन । 10 माह पहले ही बीत चुके हैं ।
- ङङ. पाटनरोधी शुल्क के परिणामस्वरूप भारतीय उपयोक्ताओं पर अनुचित रूप से अधिक भार पड़ेगा । घरेलू उद्योग को कोई खास लाभ नहीं मिलेगा क्योंकि कीमत में कटौती पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण हुई है न कि पाटित आयातों के कारण ।
- चच. पहुंच मूल्य की गणना कैसे की जाए, यह कार्य प्रणाली रक्षोपाय शुल्क में शामिल की गई है ।
- छछ. यदि 35 प्रतिशत शुल्क पर्याप्त नहीं है तो पाटनरोधी शुल्क आरोपित क्षति को दूर करने में समर्थ नहीं हो सकता ।
- जज. ग्लास इंसुलेटर में उचित समायोजन के बिना कोई कीमत प्रभाव संबंधी विश्लेषण गलत होगा ।
- झझ. आयात कीमत में परिवर्तन नहीं हुआ है बल्कि घरेलू उद्योग की कीमतों में वृद्धि हुई है । कारणात्मक संबंध का अभाव ।
- टट. यद्यपि, लागत में घरेलू उद्योग की कीमत की तुलना में मामूली वृद्धि हुई है । तथापि, कीमत में लागत में हुई वृद्धि की तुलनात्मक दर पर बढ़ोत्तरी हुई है ।
- ठठ. निपटान योग्य क्षमता की मात्र मौजूदगी से क्षति की पुष्टि नहीं होती है । इस आशय का कोई साक्ष्य नहीं कि ऐसी क्षमताओं को अन्यत्र भेजे जाने की संभावना है ।
- डड. चीन की मांग में गिरावट का कोई साक्ष्य नहीं । यह घरेलू उद्योग का मात्र अनुमान है ।
- ढढ. पाटनरोधी शुल्क का उपयोग ढाल के रूप में नहीं किया जा सकता । यह दावा कि क्षति का खतरा है क्योंकि चीन के उत्पादकों को सब्सिडी मिल रही है, पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंतुलनकारी प्रभाव प्राप्त करने हेतु मात्र दिखावटी प्रयास है ।
- णण. कारणात्मक संबंधी मापदंड संपूर्ण नहीं अपितु सांकेतिक हैं । अन्य कारकों की मौजूदगी की जांच किए बिना 5 कारकों की जांच महज औपचारिकता है ।
- तत. याचिकाकर्ता निर्यात केन्द्रित हैं, कोई क्षति निर्यातों में गिरावटों के कारण हुई है । एबीआई, मॉडल, डब्ल्यू एस आई की वार्षिक रिपोर्टों का संदर्भ ।
- थथ. यह तथ्य कि सभी घरेलू उद्योग के उत्पादक वास्तविक ऑर्डरों के प्रतिकूल प्रत्याशित ऑर्डरों के आधार पर उत्पादन करते हैं, यह अर्थ देता है कि यद्यपि, घरेलू उत्पादकों में से एक निविदा बोली प्राप्त करता है, तथापि, शेष घरेलू उत्पादकों का माल का अप्रयुक्त बन जाता है । अतः माल सूची का यह संग्रहण किसी आरोपित पाटन के कारण नहीं होता है ।
- दद. याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान पीजीसीआईएल की अधिकांश निविदाएं चीन के आपूर्तिकर्ताओं को प्रदान की गई है । जिसकी वजह से उन्हें वास्तविक क्षति हुई है । याचिकाकर्ता द्वारा इस हेतु भरोसेमंद आंकड़े जांच अवधि, जो कि 2012-13 की है, के बजाए अपने अनुरोधों में 2007 से 2011-12 तक की है । जांच अवधि के आंकड़ों के अवलोकन से यह पता चलता है कि भारतीय आपूर्तिकर्ताओं ने पीजीसीआईएल के ऑर्डरों का लगातार वृद्धिशील हिस्सा प्राप्त किया है । अतः याचिकाकर्ताओं के दावे अप्रतिनिधिक और पुराने हैं ।
- धध. चीन में क्षमताओं का मात्र विस्तार चीन से आयातों पर शुल्क उदग्रहण का कारण नहीं है । पाटनरोधी शुल्क के उदग्रहण को न्यायोचित ठहराने के लिए पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की पुष्टि करना जरूरी है ।
- नन. इसके अलावा, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि पिछले वर्ष से शुल्क लागू है, माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात की जांच करनी चाहिए कि घरेलू उद्योग को इतना अधिक शुल्क लागू होने के बावजूद क्षति होना क्यों जारी है । यदि 35 प्रतिशत शुल्क घरेलू उद्योग को हो रही किसी क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है तो कोई भी पाटनरोधी शुल्क आरोपित क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है ।
- पप. भारतीय आपूर्तिकर्ताओं ने पीजीसीआईएल के ऑर्डरों में लगातार वृद्धिशील हिस्सा प्राप्त किया है ।

- फफ. किसी निविदा में दावा की गई बोली कीमत का उल्लेख वास्तविक आयात आंकड़ों में कभी नहीं मिलेगा क्योंकि निविदा संविदा के साथ केवल एक बोली प्रदान की जाती है जबकि अन्य बोलियां रद्द कर दी जाती हैं। इसलिए यदि विभिन्न आपूर्तिकर्ता एक निविदा के लिए आवेदन करते हैं तो यह मामला नहीं बनता है कि कीमत कितनी कम या अधिक है, केवल आयात आंकड़ों में जीती गई निविदा का ही वास्तव में उल्लेख होता है क्योंकि अन्य उत्पादक प्रथम चरण में उक्त आदेश को प्राप्त नहीं करते हैं। अतः याचिकाकर्ताओं के लिए यह उचित नहीं है कि वे सामान्य आयात आंकड़ों, जिनमें औसत कीमत प्रदर्शित होती है, के साथ निविदाओं से संबंधित दावे की पुष्टि करें।
- बब. रक्षोपाय संबंधी जांच परिणाम उस समय जारी किया गया था जब बड़ी मात्रा में निविदाएं भारतीय उत्पादकों के बजाए चीनी उत्पादकों को प्रदान की जा रही थीं। अतः यह उचित समझा जाना चाहिए कि माननीय महानिदेशक (रक्षोपाय) ने यह पाया था कि घरेलू उद्योग प्रतिस्पर्धी नहीं है और वह चीन के उत्पादकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में अक्षम है। तथापि, पी जी सी आई एल के अनुरोधों के रिकॉर्ड में रखे गए हाल के निविदा आंकड़ों के अनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि रक्षोपाय शुल्क की समाप्ति के बाद भी भारतीय उत्पादक चीन के उत्पादकों से भी अधिक ऑर्डर प्राप्त कर रहे हैं।
- भभ. याचिकाकर्ताओं की क्षमता देश में मांग की तुलना में कम है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता निविदा बोली प्राप्त करने के बावजूद भी और खासकर तब जब उच्च के एन मूल्य का इंसुलेटर हो, ऑर्डर पर डिलीवरी करने में असमर्थ रहने के लिए विख्यात नहीं हैं। वस्तुतः पी जी सी आई एल ने सार्वजनिक सुनवाई में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है कि वे सिरैमिक इंसुलेटरों को तरजीह ही नहीं देंगे परंतु घरेलू उद्योग के लाभार्थ वे अपने निविदा दस्तावेजों में इसे शामिल करेंगे।
- मम. देश की मांग याचिकाकर्ताओं की क्षमता से अधिक है जिसकी वजह से घरेलू उद्योग के पास स्वयं देश की वर्तमान मांग को पूरा करने की क्षमता नहीं है, आगामी वर्षों में बनने वाली संभावित मांग का प्रश्न ही नहीं उठता।
- यय. ग्लास इंसुलेटरों में आम तौर पर सिरैमिक इंसुलेटरों की तुलना में खराबी का प्रदर्शन नहीं होता है। सिरैमिक इंसुलेटरों के लिए क्षति ग्रस्त इंसुलेटरों और उनके रख-रखाव के मुद्दों की अत्यधिक बारंबारता।
- रर. ग्लास इंसुलेटरों की तुलना में सिरैमिक इंसुलेटर बार-बार खराब होते हैं जिससे यह पता चलता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को गुणवत्ता में इस पर्याप्त अंतर के कारण ग्लास इंसुलेटरों के सामान्य मूल्य को कम करने के लिए समायोजन करने की जरूरत है।
- यय. कीमत प्रभाव का विश्लेषण करने के एक भाग के रूप में माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इंसुलेटरों के विभिन्न प्रकारों (अर्थात् ग्लास और सिरैमिक) के बीच कीमत और लागत अंतर को ध्यान में रखा जाता है।
- रर. लागत में वृद्धि घरेलू उद्योग की कीमत की तुलना में मामूली उच्च वृद्धि दर से हुई है, कीमत में संबद्ध देशों द्वारा आरोपित कीमत कटौती के बावजूद तुलनात्मक दर से वृद्धि हुई है।
- लल. पिछले कुछ वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमताओं में हुई वृद्धि की तुलना में मांग में वृद्धि काफी अधिक स्तर पर हुई है। अतः बाजार हिस्से में कमी आना लाजिमी था। यद्यपि, याचिकाकर्ताओं ने सौ प्रतिशत क्षमता पर उत्पादन किया तथापि, उनका बाजार हिस्सा कम रहा।
- वव. पाटनरोधी शुल्क का उपयोग चीन के उत्पादकों द्वारा प्राप्त आरोपित सब्सिडी (यदि कोई हो) के विरुद्ध घरेलू उद्योग के सुरक्षा तंत्र के रूप में नहीं किया जा सकता। चीन से हुए सब्सिडीशुदा आयातों के कारण हो रही क्षति के मामले में घरेलू उद्योग के लिए विशिष्ट व्यापार निवारक उपाय मौजूद हैं।
- शश. वर्तमान जांच परिणाम के कारणात्मक संबंध के विश्लेषण में केवल उपर्युक्त सूचीबद्ध 5 कारकों की जांच इस बात की वास्तविक जांच किए बिना औपचारिकता के रूप में की गई है कि क्या वास्तव में ऐसा कोई अन्य कारक है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है। निर्दिष्ट प्राधिकारी कृपया इस बात की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग के प्रचालनों और आंकड़ों की जांच करें कि क्या कारणात्मक संबंध का कोई उल्लंघन हुआ है।
- षष. याचिकाकर्ताओं ने स्वयं पाटित आयातों से इतर कारकों की वजह से उन्हें हुई क्षति के लिए विविध कारणेत्तर कारकों को जिम्मेवार ठहराया है। यद्यपि, कुछ वार्षिक रिपोर्टों में भी चीन से हुए आयातों के कारण हुई क्षति को स्वीकार किया गया है। तथापि, यह स्पष्ट है कि यह घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संभावित कारणों में से एक हो सकता है।
- सस. संगत आंकड़ों और रिकॉर्डों के अनुसार घरेलू उद्योग भारतीय उपभोक्ता उद्योग की मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है। अतः घरेलू बाजार की मांगों को पूरा करने में सक्षमता के उनके दावे को अस्वीकृत किया जाना चाहिए।
- हह. याचिकाकर्ताओं ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि उनके पास विनिमय योग्य क्षमताएं हैं। अतः सीमित क्षमताओं के कारण घरेलू उद्योग के सदस्य (बी एच डू एल को छोड़कर) अपेक्षित सीमा तक उच्चतर के वी इंसुलेटरों का उत्पादन करने में असमर्थ हैं। इस बात का सत्यापन किया जाना चाहिए कि क्या बी एच डू एल को छोड़कर घरेलू उद्योग के सदस्यों के पास पी जी सी आई एल द्वारा धारित 765 के.वी. और उससे अधिक निविदाओं में भागीदारी करने के लिए आवश्यक अनुभव/जानकारी है। यद्यपि, 420 के एन और उससे अधिक के इंसुलेटरों का उत्पादन करने की क्षमता है। तथापि, यह देश की मांग को पूरा करने में कहीं भी टिकती नहीं है।

- क्षक्ष. पाटनरोधी शुल्क के उदग्रहण से उच्चतर के एन मूल्य के इंसुलेटर बाजार में घरेलू उद्योग की भागीदारी में सुधार नहीं होगा क्योंकि वह निविदा की इन अपेक्षाओं के लिए अभी भी अर्ह नहीं होगा । इससे विद्युत क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना लाजिमी है ।
- त्रत्र. पी जी सी आई एल के अनुरोधों में रिकॉर्ड में उपलब्ध हाल के निविदा आंकड़ों से यह पता चलता है कि रक्षोपाय शुल्क की समाप्ति के बाद भी चीन के उत्पादकों की तुलना में भारतीय उत्पादक अभी भी अधिक ऑर्डर प्राप्त कर रहे हैं । अतः याचिकाकर्ताओं के दावे के अनुसार निविदाओं और आपूर्तियों में भारतीय उपस्थिति में ऐसी कोई गिरावट नहीं आयी है ।
- ज्ञज्ञ. भारत सरकार ने पूर्व में उस समय प्रतिकूल दृष्टिकोण अपनाया है । जब व्यापार निवारक उपायों को लगाए जाने से विद्युत क्षेत्र के स्थायित्व और वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ।
- ककक. याचिकाकर्ता निर्यात केन्द्रित कंपनियां हैं और क्षति, यदि कोई हो, याचिकाकर्ताओं के निर्यातों में आई गिरावट के कारण हुई है । याचिकाकर्ताओं ने स्वयं अपनी वार्षिक रिपोर्टों में पाटित आयातों से इतर कारकों की वजह से उन्हें हुई क्षति के लिए विभिन्न कारणोत्तर कारकों की जिम्मेवारी को स्वीकार किया है ।
- खखख. घरेलू उद्योग अपने लिखित अनुरोध में पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की पुष्टि करने में विफल रहा है ।
- गगग. इसके अलावा पावर ग्रिड ने घरेलू उद्योग को काफी अधिक ऑर्डर देने की बात स्वीकार की है ।
- घघघ. घरेलू उद्योग पाटन क्षति और कारणात्मक संबंध की पुष्टि करने में विफल रहा है ; इस प्रकार चीन में बेशी क्षमता उस समय महत्वहीन बन जाती है जब इन मापदंडों से इसका अनुमोदन नहीं किया गया है/इनकी पुष्टि नहीं की गई है ।
- ङ.ङ.ङ. घरेलू उद्योग को क्षति कड़ी घरेलू प्रतिस्पर्धा और आपूर्तिकर्ताओं की ओर से परेशानियों कारण होती है । पावरग्रिड ने यह अनुरोध किया है कि धातु फिटिंग के आपूर्तिकर्ताओं की संख्या सीमित है जो डिस्क इंसुलेटरों का एक प्रमुख घटक है । इसकी वजह से घरेलू उद्योग सहित भारतीय उत्पादकों द्वारा इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों की आपूर्ति घरेलू उद्योग को प्रदत्त प्रत्येक निविदा में प्रभावित होती है । पीजीसीआईएल ने सार्वजनिक सुनवाई में आगे यह स्वीकार किया था कि वर्ष 2013-14 में घरेलू आपूर्तिकर्ताओं को 270 करोड़ रु. और चीन की कंपनियों को 180 करोड़ रूपए की निविदाएं प्रदान की गई थीं ।
- चचच. भारतीय प्रयोक्ता उद्योग ने विगत में घरेलू उद्योग को निविदाएं प्रदान की हैं परंतु घरेलू उद्योग ने प्रयोक्ताओं की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए अपनी सुविधाओं का उन्नयन नहीं किया है । पावरग्रिड और एबीबी की मौजूदगी के कारण घरेलू उद्योग के नियमित ग्राहक हैं । पाटनरोधी जांच की शुरुआत और पाटन के कारण क्षति का दावा प्रयोक्ता उद्योग के विकल्पों को समाप्त करने के लिए घरेलू उद्योग का मात्र एक रास्ता है ।
- छछछ. घरेलू उद्योग द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे 400 केवी तक के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों के लिए घरेलू बोली द्वारा सभी जरूरतों की पूर्ति की जाती है और विदेशी उत्पादक इस बोली में भाग नहीं ले सकते । इस प्रकार घरेलू उद्योग उत्पाद, जिसका उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा किया जाता है, में उचित प्रतिस्पर्धा के लिए प्रस्तुत होता है । इसके अलावा, घरेलू उद्योग को अक्टूबर, 2012 से दिसंबर, 2013 तक रक्षोपाय शुल्क के संरक्षण के तहत उचित प्रतिस्पर्धी स्थितियां हासिल हैं । घरेलू उद्योग के लिए एक से अधिक वर्ष तक विचाराधीन उत्पाद के आयातों का समायोजन करने के लिए यह रक्षोपाय शुल्क मौजूद है जिसे घरेलू उद्योग ने इस चरण पर हासिल किया है परंतु अब वह क्षति का दावा कर रहा है । घरेलू उद्योग के ये दावे दुकानदारी चलाने और व्यापार निवारक उपायों का दुरुपयोग करने के अलावा कुछ नहीं है । यदि पाटनरोधी शुल्क लागू किया जाता है तो इससे दूसरी बार घरेलू उद्योग को संरक्षण मिलेगा । इससे स्थायी और मजबूत विद्युत ग्रिड रखने के भारत के लक्ष्य को ही नुकसान पहुंचेगा अपितु अंतिम उपभोक्ता पर शुल्क का भार भी पड़ेगा । इस मामले में लगाया गया पाटनरोधी शुल्क निर्यातकों के लिए उचित प्रक्रिया का उल्लंघन होगा, घरेलू उद्योग को अनुचित संरक्षण प्रदान करेगा और सार्वजनिक हित के प्रतिकूल होगा ।
- जजज. चीन के विभिन्न निर्यातकों द्वारा उद्धृत निविदा कीमतों पर घरेलू उद्योग के दावों का समर्थन उक्त निविदाओं के किसी साक्ष्य द्वारा नहीं किया गया है और कीमत में अंतर उत्पाद प्रकार के अनुसार हो सकता है तथा इसके अलावा, जहां तक निविदा का संबंध है, पावरग्रिड ने पिछले तीन-चार वर्षों से घरेलू उद्योग को पर्याप्त निविदा ऑर्डर प्रदान किए हैं । अतः घरेलू उद्योग का तर्क झूठा है ।
- झझझ. पाटनरोधी शुल्क से राष्ट्रीय ग्रिड को सुदृढ़ करने के भारत सरकार के लक्ष्य को धक्का लगेगा । पीजीसीआईएल चीन से प्राप्ति जारी रखेगी क्योंकि केवल चीन ही अच्छी गुणवत्ता की वस्तुओं और उच्च वोल्टेज की आपूर्ति कर सकता है क्योंकि भारतीय उत्पादकों के पास सीमित क्षमता है । पाटनरोधी शुल्क से घरेलू उद्योग को संरक्षण नहीं मिलेगा क्योंकि पीजीसीआईएल अभी भी विश्व बैंक और एशियन डेवलपमेंट बैंक जैसे आयात शुल्कों को छोड़कर कीमतों के आधार पर ऑर्डर देने के लिए बाध्य होगी ।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने से पूर्व घरेलू उद्योग के विचार

109. घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि :

क. समूची क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग सकारात्मक रही है ।

- ख. इस अवधि के दौरान संबद्ध देश से हुए आयातों में समग्र रूप में भारी वृद्धि प्रदर्शित हुई है। चीन से हुए आयातों की मात्रा भारत में हुए आयातों की समग्र मात्रा बन गई। चीन से पाटित आयातों में भारत में विचाराधीन उत्पाद की खपत और उसके उत्पादन की तुलना में वृद्धि हुई है।
- ग. भारत औसत उत्पाद कीमत (मूल सीमा-शुल्क को शामिल करने के बाद) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम रही है जिसके परिणामस्वरूप कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है। क्षति मार्जिन काफी अधिक है।
- घ. समूची क्षति अवधि के दौरान आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम रही है। आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर अत्यधिक न्यूनकारी प्रभाव पड़ा है। पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और बिक्री कीमत के बीच अंतर कम रहा है और घरेलू उद्योग लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में अपनी कीमत बढ़ाने में असमर्थ रहा है जिससे भारी घाटा हुआ है।
- ङ. वर्ष 2010-11 में घरेलू उद्योग की क्षमताओं में वृद्धि हुई। वर्ष 2010-11 के बाद घरेलू उद्योग के उत्पादन में गिरावट आई है। पूर्ववर्ती वर्ष के साथ तुलना करने पर जांच अवधि में इसमें भारी गिरावट आई है। घरेलू बिक्रियों में यही प्रवृत्ति देखी गई है। क्षमता उपयोग में वर्ष 2010-11 में वृद्धि हुई परंतु उसके बाद उसमें भारी गिरावट आई।
- च. क्षति अवधि में निर्यात बिक्री में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है।
- छ. जांच अवधि के दौरान अत्यधिक वृद्धि के साथ मालसूची में समूची क्षति अवधि के दौरान भारी वृद्धि प्रदर्शित हुई है।
- ज. वर्ष 2010-11 के बाद समूची क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को वर्ष 2011-12 से घाटा हो रहा है, जिसमें जांच अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि हुई है। लाभप्रदता और नकद लाभ में यही प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। पीबीआईटी तथा लगाई गई पूंजी पर आय में यही प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है जो जांच अवधि में नकारात्मक बन गए हैं।
- झ. समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है जबकि पाटित आयातों के बाजार हिस्से में क्षति अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है।
- ट. घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि के दौरान भारी संख्या में ऑर्डर गंवाए हैं।
- ठ. रोजगार के स्तर में वर्ष 2010-11 में वृद्धि हुई और उसके बाद गिरावट आई। क्षति अवधि में प्रदत्त मजदूरी में वृद्धि हुई है परंतु यह देश में मजदूरी में संभावित वृद्धि के अनुरूप है।
- द. उत्पादकता में उत्पादन के समान उतार-चढ़ाव रहा है।
- ध. यद्यपि, घरेलू उद्योग के निष्पादन पर डब्ल्यू एस आई को छोड़कर विचार किया जाता है, तथापि यह देखा जाएगा कि निष्पादन में भारी गिरावट आई है।
- ण. आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि, चीन के उत्पादकों के पास बेशी क्षमताओं और उनके निर्यात अभिमुखीकरण, कीमत में अत्यधिक कटौती तथा कीमत ह्रास, घरेलू उद्योग के पास बढ़ती हुई मालसूची, पाटित आयातों के बाजार हिस्से, पीजीसीआईएल द्वारा चीन के उत्पादकों को दिए गए ऑर्डरों, चीन में मांग में कमी और चीन के उत्पादकों को प्राप्त कीमत लाभों के कारण आगे और वास्तविक क्षति होने का खतरा है।
- त. जहां तक इस तर्क का संबंध है, कि घरेलू उत्पादक एक-दूसरे की कीमत में कटौती कर रहे हैं, घरेलू उत्पादकों के बीच कीमत कटौती से बिक्री मात्रा में गिरावट नहीं आएगी। इससे केवल विभिन्न घरेलू उत्पादकों के बीच बिक्री का पुनर्समायोजन होगा। इसके अलावा, चीन से हुई खरीद में वृद्धि और भारत से खरीद में आई गिरावट से स्पष्ट तौर पर इस बात की पुष्टि होती है कि चीन के उत्पादकों ने घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाई है।

प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग के विचार

110. प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अतिरिक्त अनुरोध किए हैं :—

- क. यद्यपि, इन वर्षों के दौरान चीन जन.गण. से सकल खरीद में वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू स्रोतों से खरीद में समग्र रूप में और कुल खरीद की तुलना में गिरावट आई है।
- ख. विचाराधीन उत्पाद मुख्यतः “ऑर्डर आधारित उद्योग” है अर्थात् उत्पादक मोटे तौर पर उपभोक्ताओं से प्राप्त पुष्टिकृत ऑर्डरों पर वस्तु का उत्पादन करते हैं। तथापि, इस बात को ध्यान में रखते हुए कि उत्पादन प्रक्रिया में फर्नेस प्रचालन शामिल होते हैं। इसलिए उत्पादकों के

पास कोई ऑर्डर न होने की स्थिति में फर्नेस को निष्क्रिय नहीं रखा जा सकता। ऐसी स्थितियों में उत्पादक वस्तु के उत्पादन की सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं जिसके लिए मांग की भावी आशा की जाती है।

- ग. चीन ने उत्पाद के लिए पर्याप्त क्षमताएं निर्मित कर ली हैं और वह धीरे-धीरे अत्यंत कम अवधि में निवल आयातक से निवल निर्यातक बन गया है।
- घ. चीन से ग्लास इंसुलेटरों की आयात कीमत में अभूतपूर्व और भारी गिरावट आई है। भारत के लिए निर्यात कीमत शेष विश्व के लिए निर्यात कीमत की तुलना में चुनिंदा रूप से और भेदभावपूर्ण ढंग से काफी कम है।
- ङ. निविदा खोलने के समय पी जी सी आई एल द्वारा घोषित कीमत बोलियों के अनुसार, जिनमें विभिन्न संभावित आपूर्तिकर्ता उपस्थित हुए थे और जिन्होंने प्रतिस्पर्धी बोलीदाताओं द्वारा प्रस्तुत कीमत बोलियों को नोट किया था, यह देखा जाएगा कि अलग-अलग चीन के उत्पादकों द्वारा उसी निविदा के लिए भारी अंतर के साथ कीमतें उद्धृत की जा रही हैं, जिससे इस बात का स्पष्ट पता चलता है कि इनसुलेटर की लागत और उसमें उद्धृत कीमतों के बीच कोई संबंध नहीं है।
- च. जहां तक सार्वजनिक हित का संबंध है, इंसुलेटरों की लागत पारेषण और उप केन्द्र की लागत का 4-5 प्रतिशत बनती है। परिणामतः विद्युत के अंतिम उपभोक्ता को कीमतों में किसी भारी वृद्धि का सामना नहीं करना पड़ेगा।
- छ. जहां तक रक्षोपाय शुल्क शामिल किए जाने के बाद पहुंच कीमत की गणना का संबंध है, इस बात की कोई जरूरत नहीं है कि रक्षोपाय शुल्क की राशि को क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु शामिल किया जाना चाहिए। वस्तुतः पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क का निर्धारण मूल सीमा-शुल्क पर विचार करने के बाद ही किया जाता है। रक्षोपाय शुल्क 31 दिसंबर, 2013 को समाप्त हो गया है और इसलिए यह मुद्दा अब प्रासंगिक नहीं रह गया है।
- ज. रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के बावजूद घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण क्षति जारी है। अब जबकि रक्षोपाय शुल्क समाप्त हो गया है, घरेलू उद्योग को हो रही क्षति में और अधिक वृद्धि होने की संभावना है।
- झ. निर्यातकों के पास अपनाए गए आयात आंकड़ों के विकल्प का सुझाव देने अथवा उसके बारे में सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर था। तथापि, किसी भी निर्यातक ने ऐसा कोई साक्ष्य अथवा सूचना प्रदान नहीं की है।
- ट. स्पष्ट कारणात्मक संबंध मौजूद है क्योंकि आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत तथा उसकी बिक्री की प्रति यूनिट लागत से कम है। बिक्री कीमत में वृद्धि बिक्री लागत में हुई वृद्धि की भरपाई करने के लिए पर्याप्त नहीं थी।
- ठ. चीन के आपूर्तिकर्ताओं द्वारा बढ़ती हुई खरीद से इस बात की स्वतः पुष्टि हो जाती है कि चीन के आपूर्तिकर्ताओं ने इन निविदाओं में घरेलू उद्योग को बाहर कर दिया है। इससे कीमत कटौती की स्पष्ट पुष्टि होती है।
- ड. कानून में संबंधित निपटान योग्य क्षमताओं को प्रदर्शित करने की कोई अपेक्षा नहीं की गई है। जिन क्षमताओं को क्षति के खतरे की पुष्टि हेतु भारत में निर्यात किए जाने की संभावना है।
- ढ. याचिकाकर्ताओं ने महानिदेशक (रक्षोपाय) के अंतिम जांच परिणामों के आधार पर चीन की मांग में गिरावट का दावा किया है। यदि यह मान भी लिया जाए कि विचाराधीन उत्पाद के लिए चीन की मांग बढ़ रही है, तो भी यह नोट करना प्रासंगिक है कि चीन से हो रहे निर्यातों में भारी वृद्धि हो रही है।
- ण. याचिकाकर्ताओं ने यह प्रदर्शित करने के लिए तदर्थ सब्सिडी का साक्ष्य प्रदान किया है कि संबद्ध देश में निर्यातक अनुचित लाभ प्राप्त कर रहे हैं, जिसके साथ-साथ अन्य कारकों से वास्तविक क्षति के खतरे की पुष्टि होती है।
- त. प्रतिवादी निर्यातक ने ऐसा कोई अन्य कारक प्रदर्शित नहीं किया है, जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति का प्रमुख कारण हो सकता है।
- थ. याचिकाकर्ताओं ने विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है, जो औसतन कुल उत्पादन का 10-15 प्रतिशत बनता है। अतः घरेलू उद्योग को "निर्यात केन्द्रित" नहीं माना जा सकता। घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति घरेलू प्रचालनों के कारण हुई है।
- द. भारत सरकार ने अंतरिम शुल्क लागू किया है जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि भारत सरकार इस उद्योग की सुरक्षा संगत और आवश्यक मानती है।
- ध. वर्ष 2013-14 में 42 प्रतिशत ऑर्डर चीन के आपूर्तिकर्ताओं को दिए गए थे।
- न. भारतीय उत्पादकों के हिस्से में वृद्धि और रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के बाद बी एच ई एल के पास अच्छे ऑर्डरों से कारणात्मक संबंध की पुष्टि होती है। इससे आगे इस बात की पुष्टि होती है कि घरेलू उद्योग की क्षमता अथवा अक्षमता मात्र एक बहाना है। केवल रक्षोपाय शुल्क लगाया गया था, घरेलू उद्योग से होने वाली खरीद में वृद्धि हुई थी। रक्षोपाय शुल्क समाप्त होने के बाद चीन से होने वाली खरीद में वृद्धि हुई है।

- प. उत्पादन में गिरावट अपनी क्षमता का उन्नयन करने के लिए घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण नहीं आई है, क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा एचवी इंसुलेटरों का उत्पादन किया जा रहा है।
- फ. डब्ल्यूएसआई घरेलू उद्योग का भाग है और इसलिए डब्ल्यू एस आई को छोड़कर घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करना अवैध होगा।
- ब. सर्वप्रथम कीमत कटौती क्षति अवधि के दौरान समान नहीं रही है। द्वितीयतः कीमत कटौती के समान स्तर के साथ भी घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आ सकती है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती में भारी वृद्धि हुई है।
- भ. जहां तक वार्षिक रिपोर्ट में दिए गए विवरणों का संबंध है, विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन को समग्र रूप में देखा जाना चाहिए।
- म. क्षमता उपयोग में कमी गंवाए गए ऑर्डरों के कारण आई है। याचिकाकर्ता ने पीजीसीआईएल से सूचना प्रदान की है जिससे हाल के वर्षों में चीन के उत्पादकों को दिए जा रहे ऑर्डरों में वृद्धि का पता चलता है। घरेलू उद्योग आपूर्ति करने में सक्षम है और उसने एच वी इंसुलेटरों की आपूर्ति की है।
- य. वर्ष 2010-11 में घरेलू उद्योग के निवेश पर आय में वृद्धि हुई और उसके बाद उसमें इतनी अधिक गिरावट आई कि घरेलू उद्योग को निवेश पर नकारात्मक आय का नुकसान उठाना पड़ा।
- र. विभिन्न कारकों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति की विधिवत पुष्टि हो जाती है। यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक मापदंड में गिरावट प्रदर्शित हो।
- ल. जहां उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई है वहीं घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई है।
- व. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि एच वी एल को मांग में वृद्धि होने की आशा थी, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि घरेलू उद्योग की बिक्री में उस स्थिति में सुधार होगा जब आयात की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम रही है।
- श. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि व्यापार प्रचालनों के लिए 10 प्रतिशत की घट-बढ़ सामान्य बात है, याचिकाकर्ताओं का अनुरोध है कि वर्ष 2010-11 और जांच अवधि में, जब मांग में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, उसकी बिक्री मात्रा में 23 प्रतिशत की गिरावट आई है। इसके अलावा, यद्यपि, निर्यातों में नगण्य वृद्धि प्रतीत हो सकती है, तथापि, बिक्री में 10 प्रतिशत की गिरावट घरेलू उद्योग के लिए वास्तव में काफी अधिक है और वह भी तब जब उत्पाद की मांग में भारी वृद्धि प्रदर्शित हुई है।
- ष. क्षमता के कम उपयोग का कारण संबद्ध देश से पाटन का प्रभाव रहा है। याचिकाकर्ताओं ने यह प्रदर्शित किया है कि चीन के उत्पादकों के लिए किस प्रकार ऑर्डर दिए गए हैं, जो पाटित कीमतों पर उत्पाद की बिक्री कर रहे हैं। देश में उत्पाद की मांग की तुलना केवल घरेलू उद्योग की क्षमता के साथ नहीं की जा सकती। भारतीय मांग की तुलना भारतीय क्षमता के साथ करने की जरूरत है।
- स. बिक्री लागत में वृद्धि की भरपाई करने के लिए बिक्री कीमत में हुई वृद्धि पर्याप्त नहीं थी। क्षति अवधि के दौरान प्रति यूनिट बिक्री लागत में लगातार वृद्धि हुई और वह जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से अधिक रही थी।
- ह. लगाए गए किसी पाटनरोधी शुल्क में मौजूदा रक्षोपाय शुल्क को ध्यान में रखा जाएगा ताकि दोहरा संरक्षण प्रदान न किया जा सके। मॉर्डन इंसुलेटर ने रक्षोपाय शुल्क के कारण उत्साहजनक परिस्थितियों का उल्लेख किया है जो अब समाप्त हो चुका है। जहां तक ए वी आई के विवरण का संबंध है, ए वी आई ने कहीं भी यह उल्लेख नहीं किया है कि उत्पाद के लिए बाजार निष्पक्ष है।
- क्ष. इस अवधि के दौरान हिंदुस्तान विद्युत की बिक्री में भारी गिरावट आई है। यदि कंपनी ने वर्ष 2012-13 में उत्पादन में गिरावट सूचित की है तो इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उसका स्तर पूर्ववर्ती स्तरों से वास्तव में कम है।
- त्र. एबीएल और बीएचईएल, दोनों द्वारा पॉलीमर इंसुलेटरों का भी उत्पादन किया जा रहा है। देश में उत्पाद की मांग से इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि घरेलू उद्योग को क्षति मांग में गिरावट अथवा उपभोक्ता अधिमान में परिवर्तन के कारण नहीं हुई है।
- ज्ञ. यह तथ्य कि पीजीसीआईएल ने तकनीकी मापदंडों पर पोर्सिलेन एवं ग्लास इंसुलेटर आपूर्तिकर्ता बोली में अर्हता प्राप्त की है, से इस बात की पुष्टि होती है कि दोनों तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय है। यह तथ्य कि पीजीसीआईएल द्वारा इस बात पर ध्यान दिए बिना निविदाओं के न्यूनतम मूल्य के आधार पर ऑर्डर दिए जा रहे हैं कि क्या ऐसा इंसुलेटर ग्लास इंसुलेटर है अथवा पोर्सिलेन इंसुलेटर, से वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता की पुष्टि होती है।
- कक. प्रचालन के विचार से संबंधित दावा निराधार है। जब पावरग्रिड ने तकनीकी बोली के मूल्यांकन अथवा बोलियों के वाणिज्यिक बोली मूल्यांकन में दोनों उत्पादों के बीच कोई अंतर और भेद नहीं किया है तथा यह भी कि पी जी सी आई एल द्वारा उत्पाद की खरीद बोलियों के तकनीकी और वाणिज्यिक मूल्यांकन पर की जा रही है, केवल वे ही मापदंड इस प्रयोजन के लिए संगत हैं और पीजीसीआईएल अब किसी अन्य मापदंड को संगत मापदंड के रूप में दलील नहीं दे सकती।
- खख. कम कीमतों के कारण “भारी मात्रा में ऑर्डर” विदेशी उत्पादकों को दिए जा रहे हैं। पीजीसीआईएल की सूचना से संबद्ध वस्तु के चीन के उत्पादकों को प्रदान की जा रही निविदाओं की संख्या का पता चलता है। ऑर्डरों को चीन के आपूर्तिकर्ताओं को उत्तरोत्तर प्रदान किए जाने की वास्तविकता के साथ निर्यातक का यह तर्क कि यह एक ऑर्डर आधारित उद्योग है, यह सिद्ध करता है कि प्रतिस्पर्धा घरेलू उद्योग के बीच नहीं थी।
- गग. पॉलीमर इंसुलेटर वाणिज्यिक और तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं क्योंकि घरेलू उद्योग की क्षमता का कम उपयोग इस वजह से नहीं हुआ है कि घरेलू उद्योग भारत में बढ़ती हुई मांग को पूरा करने में समर्थ नहीं है। ऐसा इसलिए हुआ है कि चीन के उत्पादकों द्वारा घरेलू उद्योग की कीमतों में उत्तरोत्तर कटौती की जा रही है और उन्होंने ऑर्डर हथिया लिए हैं।
- घघ. पीजीसीआईएल को प्रत्येक उत्पाद श्रेणी की जरूरत विनिर्दिष्ट करनी चाहिए ताकि घरेलू उद्योग पर्याप्त क्षमताओं की मौजूदगी की पुष्टि कर सके। वर्तमान कार्रवाई में किसी भी चरण पर पीजीसीआईएल ने इंसुलेटर के विभिन्न प्रकारों और क्षमताओं की अपनी जरूरत की मात्रा नहीं बताई है जिसका ऑर्डर घरेलू उद्योग ने पीजीसीएल को दिया है। अतः यह दावा निराधार है कि घरेलू उद्योग के पास पर्याप्त क्षमता अथवा प्रचालनात्मक अनुभव नहीं है और इस दावे की अभी पुष्टि की जानी है।
- ड.ड. ऐसी कोई घटना नहीं हुई है जिसमें पीजीसीआईएल घरेलू उद्योग के पास क्षमताओं अथवा प्रचालनात्मक अनुभव के अभाव के कारण आयात करने के लिए बाध्य हुई थी।

- चच. उत्पाद के जिन प्रकारों के लिए अपवर्जन का अनुरोध किया गया है, वह विचाराधीन उत्पाद का एक बड़ा भाग है। दूसरे शब्दों में पीजीसीआईएल उन उत्पादों के अपवर्जन की मांग कर रही हैं, जिनसे घरेलू उद्योग की रोजी-रोटी चलती है। घरेलू उद्योग को विगत में उन स्थितियों में भी पाटन के अनुचित व्यवहार से सुरक्षा प्रदान की गई है, जहां घरेलू उद्योग अल्पसंख्या में था और आयात भारी संख्या में हो रहे थे।
- छछ. पीजीसीआईएल ने डिस्क इंसुलेटर के बारे में निर्दिष्ट करने के लिए भार का अनुरोध किया है। तथापि, वर्तमान मामले में बड़ी संख्या में इंसुलेटर शामिल हैं और निर्दिष्ट प्राधिकारी उत्पादों की एक श्रेणी के संबंध में चुनिंदा ढंग से भाग को निर्दिष्ट नहीं कर सकते।
- जज. कई इंसुलेटरों का आयात विशिष्ट डिजाइन, भार के आधार पर किया जाता है जिनकी जानकारी प्राधिकारी को नहीं है।
- झझ. घरेलू उद्योग ने कंपनी पर प्रतिकूल प्रभावों के बारे में उस स्थिति में पीजीसीआईएल को सावधान करने में पर्याप्त सावधानी बरती है यदि कंपनी वर्तमान जांच के परिणाम की प्रतीक्षा किए बिना ऑर्डर देने की दिशा में आगे बढ़ती रहती है।
- टट. विगत में ऐसी कोई घटना नहीं हुई है जिसमें घरेलू उत्पादक पीजीसीआईएल की निविदाओं में तकनीकी कारणों से अयोग्य रहे हों।
- ठठ. सूचित अधिकांश डिकैपिंग सामान्य जोन के इंसुलेटरों (क्रीपेज दूरी 315 मिमी.) के लिए है जिन्हें काफी पहले लगाया गया था। समय के साथ-साथ इन क्षेत्रों के प्रदूषण के स्तर में वृद्धि हुई है जिनसे कुछ डिकैपिंग हुई है। इसकी वजह से पावरग्रिड ने अपना तकनीकी विनिर्देशन संशोधित (क्रीपेज अपेक्षा को बढ़ाकर 460 मिमी. करना) किया है। पावरग्रिड द्वारा हाल ही में चीन से आयातित ग्लास इंसुलेटर नए विनिर्देशन के अनुरूप है और इस प्रकार कोई डिकैपिंग सूचित नहीं किया गया है। घरेलू विनिर्माताओं द्वारा भी उच्च क्रीपेज इंसुलेटरों का विनिर्माण और उनकी आपूर्ति पावरग्रिड की परियोजनाओं (वर्धा-रायपुर, कूडगी-खोलापू) को की जा रही है।
- डड. घरेलू उद्योग द्वारा अत्यंत क्षतिकारी कीमत की पेशकश की जा रही है और वह तेजी से ऑर्डर गंवा रहा है। यदि ऐसी स्थिति जारी रहती है तो इससे घरेलू उद्योग का ह्रास होगा और पीजीसीआईएल अंततः चीन के विनिर्माताओं के चंगुल में फंस जाएगी।
- ढढ. धातु फिटिंग के आपूर्तिकर्ताओं के पास ऐसी काफी अधिक क्षमताएं हैं जिनकी घरेलू उद्योग को उत्पादन करने और पीजीसीआईएल को उत्पाद की आपूर्ति करने के लिए जरूरत है।
- णण. इस बात की पुष्टि करने कि ग्लास और पोर्सिलेन एक वस्तु है, का सबसे बड़ा कारक यह है कि उपभोक्ता दोनों प्रकारों के लिए समान कीमत का भुगतान करने का इच्छुक है। पावरग्रिड ने दोनों प्रकारों के बीच भेद नहीं किया है और उसने अलग-अलग कीमत के भुगतान पर सहमति व्यक्त नहीं की है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उस स्तर पर घरेलू उद्योग का संरक्षण किया है जहां घरेलू उद्योग को 22 प्रतिशत की आय छोड़ देने के बाद लाभ प्राप्त हो रहा होता है।
- तत. बीएचईएल ने वस्तुतः एबीबी को इंसुलेटरों के इन प्रकारों की आपूर्ति की है। जहां तक इंसुलेटरों के विखंडन का संबंध है, यह एबीबी की डिजाइन में दोष का प्रतिफल था।
- थथ. एबीआईएल ने एबीबी को ऐसी सामग्री की आपूर्ति की पेशकश की है। तथापि, एबीबी द्वारा प्रदत्त अत्यंत कम समय जो व्यवहारिक रूप से संभव नहीं था, के कारण एबीआई उसकी आपूर्ति नहीं कर सकी।
- दद. सभी वोल्टेज रेटिंग के इंसुलेटर घरेलू रूप से उपलब्ध हैं। उपभोक्ता चुनिंदा ढंग से केवल कुछ आपूर्तिकर्ताओं के पास जाकर उसकी मांग नहीं कर सकता। इसके अलावा, उपभोक्ता अपने नीतिगत निर्णयों के कारण कुछ उत्पादों के अपवर्जन की मांग नहीं कर सकता।
- धध. पाटनरोधी शुल्क अम.डा. में लगाया जाता है। अतः भारतीय रूप के अवमूल्यन का प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- नन. घरेलू उद्योग ने कीमत में कोई अनुचित वृद्धि नहीं की है और न ही हितबद्ध पक्षकार ने कीमत में अनुचित वृद्धि प्रदर्शित की है। पाटन सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच अंतर होता है। यह अभिनव विचारों और उनके कार्यान्वयन का प्रश्न नहीं है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

111. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों को नोट किया है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच पाटनरोधी नियमों के अनुसार और हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों पर विचार करते हुए की है।
112. नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी के लिए मात्रात्मक तथा कीमत, दोनों प्रकार की जांच द्वारा क्षति की जांच करना अपेक्षित है। क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव, एवं (ख) ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होती है। जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में काफी अधिक मात्रा में अन्यथा गिरावट आई है अथवा होने वाली इस वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा काफी अधिक स्तर तक बढ़ गई होती।
113. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 के पैरा (IV) में निम्नानुसार उल्लेख है :
- “संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।”
114. क्षति के सभी मापदंडों में गिरावट का प्रदर्शन होना आवश्यक नहीं है। हालांकि कुछ मापदंड गिरावट प्रदर्शित कर सकते हैं, तथापि, कुछ सुधार दर्शा सकते हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी को समस्त क्षति मापदंडों पर विचार करना चाहिए और उसके बाद यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

115. अनुरोधों में दिए गए तथ्यों और तर्कों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने क्षति मापदंडों की तथ्यपरक जांच की है ।
116. जहां तक डब्ल्यू एस इंडस्ट्रीज को छोड़कर क्षति विवरण पर आधारित तर्कों का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने डब्ल्यू एस आई को पात्र घरेलू उद्योग नहीं माना है । क्षति विश्लेषण डब्ल्यू एस इंडस्ट्रीज को छोड़कर किया गया है और केवल क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू मापदंडों पर विचार किया गया है ।
117. जहां तक कुछ याचिकाकर्ता कंपनियों की वार्षिक रिपोर्ट में दिए गए विवरणों से जुड़े तर्कों का संबंध है, प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समग्र रूप से घरेलू उद्योग के निष्पादन पर विचार कर निर्धारित की गई है ।
118. जहां तक मांग-आपूर्ति में अंतर के तर्क का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि यदि निर्यातक भारतीय बाजार में जरूरत को पूरा करने के लिए वस्तु की आपूर्ति करना चाहते थे, तो ऐसा सामान्य मूल्य के समतुल्य मूल्य पर जरूरतों के निर्यात द्वारा किया जा सकता था न कि पाटित मूल्य पर और बाजार पर कब्जा जमाने के लिए । इसके अलावा, हितबद्ध पक्षकारों ने यह प्रदर्शित नहीं किया है कि मांग-आपूर्ति में अंतर विद्यमान है ।
119. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि उत्पादन और क्षमता उपयोग में कमी घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण आई है क्योंकि वे हाई वोल्टेज का उत्पादन करने की अपनी सुविधाओं का उन्नयन करने में असमर्थ हैं, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने हाई वोल्टेज इंसुलेटरों की भी आपूर्ति की है । इस बात की पुष्टि नहीं की गई है कि उत्पादन और क्षमता उपयोग में कमी घरेलू उद्योग की संभावित अक्षमता के कारण आई है ।
120. यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती में वृद्धि हुई है । भले ही, कटौती का प्रतिशत समान है, तथापि इसका तात्पर्य यह है कि घरेलू उद्योग की कीमतों में भी आयात कीमतों के अनुरूप गिरावट आई है और इसका तात्पर्य यह नहीं है कि बिक्री लागत और बिक्री कीमत की प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं होगा ।
121. हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि बिक्री में गिरावट अस्थायी है, क्योंकि मांग में वृद्धि होने की संभावना है । यह नोट किया जाता है कि मांग में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग वर्ष 2011-12 से अपनी बिक्री को बढ़ाने में असमर्थ है । वस्तुतः घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई है ।
122. जहां तक कारणात्मक संबंध से जुड़े तर्क का संबंध है, निम्नलिखित प्रासंगिक है :
- बिक्री कीमत में वृद्धि लागत में वृद्धि के कारण हुई है । तथापि, बिक्री कीमत में वृद्धि होने के बावजूद पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती की जा रही है ।
 - लगाए गए किसी पाटनरोधी शुल्क में मौजूदा रक्षोपाय शुल्क का ध्यान रखा जाएगा ताकि दोहरा संरक्षण न दिया जा सके ।
 - जहां तक इस तर्क का संबंध है कि लाभ में गिरावट पालीमर इंसुलेटर के प्रति उपभोक्ता अधिमान में आए परिवर्तन के कारण आई है, यह नोट किया जाता है कि मांग की सकारात्मक प्रवृत्ति का समर्थन उपभोक्ता अधिमान में आए परिवर्तन के तर्क द्वारा नहीं किया गया है ।
 - जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, घरेलू उद्योग ने हाई वोल्टेज इंसुलेटरों की आपूर्ति की है ।
123. जहां तक पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के तर्क का संबंध है, प्राधिकारी प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं और यह नोट करते हैं कि इंसुलेटर उद्योग मुख्यतः ऑर्डर पर आधारित है और ऑर्डर आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रस्तावित सबसे कम कीमतों के आधार पर दिए जाते हैं । अतः पाटन का प्रभाव काफी अधिक बनता है । चीन के उत्पादकों द्वारा उत्तरोत्तर सबसे कम कीमतें उद्धृत की जा रही हैं और उनसे घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती हो रही है जिससे घरेलू उद्योग के इस तर्क की पुष्टि होती है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटन के कारण हुई है । पारस्परिक प्रतिस्पर्धा का प्रश्न तब उठता जब अधिकांश निविदाएं भारतीय उत्पादकों को प्रदान की गई होती । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग स्वयं पीजीसीआईएल द्वारा जारी निविदाओं में भागीदारी कर रहा है ।
124. जहां तक क्षति विश्लेषण में रक्षोपाय शुल्क के विचार का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि इस बात की कोई जरूरत नहीं है कि क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु रक्षोपाय शुल्क की मात्रा को जोड़ा जाना चाहिए ।

मांग का निर्धारण

125. संबद्ध वस्तु की मांग का निर्धारण घरेलू समान उत्पाद की घरेलू बिक्री को सभी देशों से हुए संबद्ध वस्तु के आयातों में जोड़कर किया गया है । वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने चीन के सीमा-शुल्क से प्राप्त आयात आंकड़ों पर भरोसा किया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में क्षति अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है :—

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
निर्धारित मांग	मी.ट.	1,18,840	1,56,964	1,37,321	1,44,636
संबद्ध देश आयात— चीन जन.गण.	मी.ट.	16,282	26,376	35,782	62,444
अन्य देश-आयात	मी.ट.	517	405	573	687
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	64,919	72,186	63,375	5,8801
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मी.ट.	37,122	57,997	37,591	22,703

126. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पाद की मांग में अत्यधिक वृद्धि प्रदर्शित हुई है। प्रतिवादी निर्यातक ने यह तर्क दिया है कि आयातों में वृद्धि अपेक्षित प्रौद्योगिकी के उन्नयन तथा हाई वोल्टेज इंसुलेटरों की जरूरत हेतु घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण हुई है। अतः प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातकों के प्रश्नावली के उत्तरों पर विचार करते हुए आयातों का विश्लेषण किया है। यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग ने इंसुलेटरों के उन प्रकारों का उत्पादन और बिक्री की है जिनका भारत में आयात किया गया है। चूंकि घरेलू उद्योग ने चीन से आयातित इंसुलेटरों के प्रकारों का उत्पादन और बिक्री की है, इसलिए इस बात की पुष्टि नहीं की जाती है कि आयात अपेक्षित प्रौद्योगिकी का उन्नयन करने और हाई वोल्टेज इंसुलेटरों की जरूरत हेतु घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण दिए गए हैं।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर उसका प्रभाव

आयात मात्रा तथा संबद्ध देश का हिस्सा

127. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में अथवा भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :

आयात की मात्रा	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
संबद्ध देश चीन जन.गण.	मी.ट.	16,282	26,376	35,782	62,444
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	162	220	384
अन्य देश	मी.ट.	517	405	573	687
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	78	111	133
कुल आयात	मी.ट.	16,799	26,781	36,356	63,131
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	159	216	376
भारतीय उत्पादन	मी.ट.	1,16,340	1,44,213	1,14,052	95,625
घरेलू उत्पादन की तुलना में संबद्ध देश से आयात	%	14.00%	18.29%	31.37%	65.30%
मांग	मी.ट.	1,18,840	1,56,964	1,37,321	1,44,636
	%				
खपत की तुलना में संबद्ध देश से आयात		13.70%	16.80%	26.06%	43.17%
	%				
कुल आयातों में संबद्ध देशों से आयात का हिस्सा		97%	98%	98%	99%

आयात आंकड़ों का स्रोत : चीन के लिए : चीन सीमा-शुल्क और अन्य देशों के लिए डीजीसीआईएंड एस।

128. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि :—

- क. चीन से हुए आयातों में समग्र रूप में भारी वृद्धि हुई है। जांच अवधि के दौरान आयातों में वृद्धि काफी अधिक है।
- ख. चीन से हुए आयात जांच अवधि में हुए कुल आयातों के 99 प्रतिशत बनते हैं।
- ग. उत्पादन की तुलना में चीन से हुए आयात वर्ष 2009-10 के दौरान 14.00 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि में 65.30 प्रतिशत हो गए हैं।
- घ. कुल मांग की तुलना में चीन से हुए आयात वर्ष 2009-10 के दौरान 13.70 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि में 43.17 प्रतिशत हो गए हैं।
- ङ. समूची क्षति अवधि के दौरान भारत में उत्पादन एवं खपत की तुलना में चीन जन.गण. से हुए आयातों में सतत रूप से वृद्धि हुई है।

129. अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि चीन जन.गण. से हुए आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन तथा खपत की तुलना में, दोनों प्रकार से वृद्धि हुई है।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

130. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, नियमावली के अनुबंध 11 (ii) में निम्नानुसार निर्धारित है :

“नियम 18 के उप नियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत कटौती की जा रही है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में अत्यधिक मात्रा में कमी करना है या ऐसी कीमत को रोकना है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।”

131. इस बात की जांच की गई है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा काफी स्तर तक गिरावट आई है अथवा होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा काफी अधिक सीमा तक बढ़ गई होती। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत हास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है।

कीमत कटौती

132. इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, प्राधिकारी ने आयातों की पहुंच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के साथ की है। इस संबंध में उत्पाद के पहुंच मूल्य और सभी रिबेटों और करों को छोड़कर घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत के बीच व्यापार के समान स्तर पर तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमत का निर्धारण कारखाना स्तर पर किया गया है। तुलना से यह पता चला कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश के मूल की संबद्ध वस्तु का भारतीय बाजार में आयात उस कीमत पर किया गया था जो घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम थी। अतः यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू कीमतों में कटौती हो रही थी और कटौती मार्जिन निम्नलिखित तालिका के अनुसार दर्शाया गया है :

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
सीआईएफ निर्यात कीमत	रु./किग्रा.	81.51	97.01	95.71	81.41
आयातों का पहुंच मूल्य	रु./किग्रा.	88.68	105.54	104.13	88.58
घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
कीमत कटौती	रु./किग्रा.	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
कीमत कटौती	रेंज	20-30	10-20	15-25	30-40

133. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि कीमत कटौती की रेंज असंगत होने की स्थिति में घरेलू उद्योग को हुए भारी घाटे का मिलान करना कठिन है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती में वृद्धि हुई है।

कम कीमत पर बिक्री

134. प्राधिकारी ने चीन जन.गण. से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा की गई कम कीमत पर बिक्री की भी जांच की है। इस प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत की तुलना आयातों की पहुंच कीमत के साथ की गई है। घरेलू उद्योग की भारित औसत क्षति रहित कीमत की आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत के साथ तुलना से निम्नानुसार पता चलता है :

विवरण	यूओएम	जांच अवधि
भारित औसत-क्षतिरहित कीमत	रु. /किग्रा.	***
पहुंच कीमत	रु. /किग्रा0	88.58
कम कीमत पर बिक्री	रु. /किग्रा0	***
कम कीमत पर बिक्री	%	***
कम कीमत पर बिक्री	% रेंज	55-65%

135. यह देखा जाता है कि चीन से संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षतिरहित कीमत से काफी कम थी।

कीमत ह्रास/न्यूनीकरण

136. इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू कीमतों में ह्रास अथवा न्यूनीकरण हो रहा है और क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में काफी अधिक सीमा तक ह्रास हुआ है अथवा होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा काफी अधिक मात्रा में बढ़ गई होती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान लागत और कीमत में परिवर्तनों पर विचार किया है। स्थिति निम्नलिखित तालिका के अनुसार दर्शायी जाती है :

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
बिक्री की लागत (घरेलू)	रु./मी.ट	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	121	128
बिक्री मूल्य (घरेलू)	रु./मी.ट	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	113	114

137. यह देखा जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लागत और बिक्री कीमत, दोनों में वृद्धि हुई है। तथापि, बिक्री कीमत में वृद्धि लागत में हुई वृद्धि की तुलना में 2010-11 को छोड़कर काफी कम है। इस प्रकार आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत का ह्रास हो रहा था और कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई थी जिसमें अन्यथा वृद्धि हो गई होती।

घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

138. नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति के विश्लेषण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। जहां तक ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक कारकों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारकों, पाटन मार्जिन की मात्रा; नकद प्रवाह, माल सूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंडों पर नीचे चर्चा की गई है :

उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग तथा बिक्री

139 उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता एवं क्षमता उपयोग के बारे में घरेलू उद्योग का निष्पादन निम्नानुसार था :-

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
क्षमता	मी.ट.	91,989	91,989	91,98	92,289
उत्पादन	मी.ट.	76,844	84,878	75,085	72,601
क्षमता उपयोग	%	84	92	82	79
घरेलू बिक्री	मी.ट.	64,919	72,186	63,375	58,801

140. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि में क्षमता में वृद्धि की। क्षति अवधि के दौरान देश में विचाराधीन उत्पाद की मांग में भारी वृद्धि हुई है।

141 घरेलू उद्योग के उत्पादन में 2010-11 में वृद्धि हुई। तथापि, पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में उत्पादन में भारी गिरावट आई और वर्ष 2011-12 तथा जांच अवधि में आगे और गिरावट आई। जांच अवधि में घरेलू उद्योग का उत्पादन वर्ष 2009-10 में हुए उत्पादन की तुलना में लगभग 6 प्रतिशत कम रहा था जबकि इसी अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग में 22 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

142 घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग उत्पादन के समान ही रहा है। क्षमता उपयोग में 2010-11 में वृद्धि हुई और उसके बाद 2011-12 और जांच अवधि में भारी गिरावट आई। जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग 2009-10 के क्षमता उपयोग की तुलना में 5 प्रतिशत कम रहा था।

143. कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि क्षमता उपयोग में कमी घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण आई है क्योंकि वह हाई वोल्टेज इंजुलेटरों के उत्पादन हेतु अपनी क्षमताएं उन्नत करने में असमर्थ था। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने इंजुलेटर के उन प्रकारों का उत्पादन और बिक्री की है जिन्हें जांच अवधि के दौरान भारत में आयात किया गया है।

144. घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की बिक्री में 2010-11 में वृद्धि हुई और उसके बाद गिरावट आई। वर्ष 2009-10 की तुलना में जांच अवधि में घरेलू बिक्री में 9 प्रतिशत और 2010-11 की तुलना में 19 प्रतिशत की गिरावट आई।

145. यह तर्क दिया गया है कि याचिकाकर्ताओं ने बिक्री में संभावित गिरावट प्रदर्शित नहीं की है। यह नोट किया जाता है कि आंकड़ों में बिक्री में वास्तविक गिरावट प्रदर्शित की गई है जिससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति की स्वतः पुष्टि होती है। प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण पाटनरोधी नियमों और प्राधिकारी की स्थापित परंपरा के अनुसार किया है।

146. यह तर्क दिया गया है कि बिक्री में गिरावट अस्थायी है क्योंकि मांग में सुधार होने की संभावना है। यह नोट किया जाता है कि मांग में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग 2010-11 से अपनी बिक्री को बढ़ाने में अक्षम है। वस्तुतः घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई है।

147. अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि देश में उत्पाद की मांग में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग के उत्पादन, घरेलू बिक्री और क्षमता उपयोग में भारी गिरावट आई है।

लाभ, लाभप्रदता, निवेश पर आय तथा नकद लाभ

148. घरेलू उद्योग की बिक्री लागत, बिक्री कीमत, लाभ/हानि, नकद लाभ और निवेश पर आय का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
लाभ/हानि	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	151	3	(89)
ब्याज पूर्व लाभ	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	135	55	1
नकद लाभ	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	134	39	(21)
सकल लाभ/हानि	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	168	3	(80)
पीबीआईटी	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	151	54	1
नकद लाभ	लाख रु.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	149	38	(19)
आरओसीई	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	131	50	1

149. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष में घरेलू उद्योग ने लाभ कमाया है। वर्ष 2010-11 में स्थिति में सुधार हुआ और घरेलू उद्योग ने उस वर्ष में लाभ कमाया। तथापि, उसके बाद घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी गिरावट आई और घरेलू उद्योग को जांच अवधि में वित्तीय घाटा हुआ।

150. क्षति अवधि के दौरान निवेश में आय की प्रवृत्ति लाभ जैसी प्रदर्शित हुई है। ब्याज एवं कर पूर्व लाभ (पीबीआईटी) में 2010-11 में वृद्धि हुई और उसके बाद गिरावट आई और यह जांच अवधि में नकारात्मक बन गया। घरेलू उद्योग हेतु निवेश पर आय में 2010-11 में सुधार हुआ और उसके बाद उसमें गिरावट आई।

151. नकद लाभ में भी लाभ के समान प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। नकद लाभ में 2010-11 में सुधार हुआ और उसके बाद उसमें गिरावट आई और जांच अवधि में इसमें भारी गिरावट आई।

बाजार हिस्सा

152. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभावों की जांच निम्नानुसार की गई है :

बाजार हिस्सा	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
मांग	मी.ट.	1,18,840	1,56,964	1,37,321	1,44,636
घरेलू उद्योग का हिस्सा	%	54.63%	45.99%	46.15%	40.65%
अन्य उत्पादों का हिस्सा	%	31.24%	36.95%	27.37%	15.70%
संबद्ध देशों का हिस्सा	%	13.70%	16.80%	26.06%	43.17%
अन्य आयातों का हिस्सा	%	0.43	0.26	0.42	0.48

153. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जाता है कि समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है और चीन के हिस्से में लगातार वृद्धि हुई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बाजार हिस्से में 14 प्रतिशत की गिरावट आई। सकारात्मक कीमत कटौती और चीन के बाजार हिस्से में हुई वृद्धि पर विचार करते हुए यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि चीन जन.गण. से हुए पाटित आयातों के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है।

रोजगार, उत्पादकता तथा मजदूरी

154. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता से संबंधित स्थिति निम्नानुसार है :

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
रोजगार	संख्या	7,412	7,943	7,927	7,724
प्रति दिवस उत्पादकता	प्रति दिवस	220	243	215	207
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	10	11	9	9
मजदूरी	लाख रु.	***	***	***	***

155. यह नोट किया जाता है कि वर्ष 2010-11 में घरेलू उद्योग के पास रोजगार में वृद्धि हुई और उसके बाद घरेलू उद्योग में रोजगार में गिरावट आई। क्षति अवधि में इसमें वृद्धि हुई है। उत्पादकता में 2010-11 में वृद्धि हुई और उसके बाद उत्पादन की प्रवृत्ति के अनुरूप गिरावट आई।

मालसूची

156. संबद्ध वस्तु की मालसूची से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित तालिका में दर्शाए गए हैं :

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच अवधि
औसत स्टॉक	मी.ट.	7,117	7,239	7,504	8,277

157. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की मालसूची में समूची क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मालसूची में लगभग 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

वृद्धि

विवरण	यूओएम	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
उत्पादन	वाई/वाई	-	10%	-12%	-3%
घरेलू बिक्री	वाई/वाई	-	11%	-12%	-7%
बिक्री की लागत	वाई/वाई	-	***	***	***
बिक्री की कीमत	वाई/वाई	-	***	***	***
लाभ/(हानि)	वाई/वाई	-	***	***	***
आरओआई	वाई/वाई	-	***	***	***

158. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2010-11 में उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता उपयोग, लाभ, निवेश पर आय, नकद लाभ के बारे में घरेलू उद्योग की वृद्धि सकारात्मक थी। तथापि, देश में उत्पाद की मांग में सकारात्मक वृद्धि के बावजूद इन मापदंडों में वृद्धि नकारात्मक बन गई है। कुल मिलाकर क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक रही है।

निवेश जुटाने की क्षमता

159. प्राधिकारी नोट करते हैं कि देश में उत्पाद की बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग ने क्षमता बढ़ाने के लिए निवेश किए हैं। तथापि, इन निवेशों के बावजूद घरेलू उद्योग के निष्पादन में भारी गिरावट आई है।

पाटन तथा पाटन मार्जिन का स्तर

160. यह नोट किया जाता है कि देश में संबद्ध देश से आयात पाटित कीमतों पर हो रहे हैं और यह कि पाटन मार्जिन काफी अधिक है।

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

161. संबद्ध देश से आयात कीमतों, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा और पाटित आयातों से इतर कारकों, जिनसे घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतें प्रभावित हो सकती हैं, आदि की जांच से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग

की बिक्री कीमत एवं क्षतिरहित कीमत से कम है जिसकी वजह से भारतीय बाजार में कीमत में अत्यधिक कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री हो रही है । इस प्रकार घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाला कारक संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य है ।

क्षति के बारे में निष्कर्ष

162 इस प्रकार यह देखा जाता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप में भारी वृद्धि हुई है । आयातों में भारत में उत्पाद की खपत और इसके उत्पादन की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है । इस प्रकार आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन तथा खपत की तुलना में वृद्धि हुई है । पाटित आयातों द्वारा बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती की जा रही है । पाटित आयातों का कीमत द्वास के रूप में अत्यधिक प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ा है । पाटित आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी अधिक मात्रा में वृद्धि हो गई होती । आयातों की वजह से घरेलू उद्योग लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में अपनी कीमत को बढ़ाने से वंचित हुआ है । घरेलू उद्योग द्वारा अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री की जा रही है । प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक है । जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि चीन से हुए पाटित आयातों का उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता उपयोग, मालसूची, बाजार हिस्से, लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आया के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । यद्यपि, क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग ने क्षमता में वृद्धि की है । तथापि, उसके उत्पादन, बिक्री मात्रा, क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से में भारी गिरावट आई है । घरेलू उद्योग के पास मालसूची में वृद्धि हुई है । इसके अलावा, कीमत में अत्यधिक कटौती और द्वास के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में इतनी अधिक गिरावट आई है कि घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा हुआ है । घरेलू उद्योग को हुआ वित्तीय घाटा इतना अधिक रहा था कि घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान नकद घाटा हुआ है और निवेश पर नकारात्मक आय प्राप्त हुई है । प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

वास्तविक क्षति का खतरा

163. आवेदकों ने दावा किया है कि वास्तविक क्षति के अलावा, वर्तमान मामले में आगे और वास्तविक क्षति होने का खतरा है ।

नियमावली के अनुबंध-11 में इस बारे में निम्नानुसार उपबंध है :

“वास्तविक क्षति के किसी खतरे का निर्धारण तथ्यों पर आधारित होगा न कि मात्र आरोप, अनुमान और परोक्ष संभावना पर। परिस्थितियों में ऐसे परिवर्तन जिससे ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिसमें पाटन की वजह से क्षति होगी, का स्पष्ट रूप से पूर्वानुमान लगाया जाना चाहिए और उसे आसन्नवर्ती होना चाहिए । वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के बारे में निर्धारण करने में निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ ऐसे कारकों पर विचार करेंगे अर्थात्

- (क) भारत में पाटित आयातों की अत्यधिक वृद्धि दर जिससे अत्यधिक संवर्धित आयात की संभावना का पता चलता हो;
- (ख) निर्यातक की मुक्त रूप से निपटान योग्य पर्याप्त अथवा आसन्नवर्ती क्षमता, उसमें अत्यधिक वृद्धि जिससे किसी अतिरिक्त निर्यात को समाहित करने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में पर्याप्त रूप से संवर्धित पाटित निर्यातों की संभावना का पता चलता हो;
- (ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं जिनका घरेलू कीमतों पर अत्यधिक द्वासकारी या न्यूनकारी प्रभाव पड़ेगा और इनसे और अधिक आयात करने की मांग में वृद्धि की संभावना होगी; और
- (घ) वस्तु की मालसूची की जांच की जा रही हो । ”

164. वास्तविक क्षति के बारे में प्राधिकारी के समक्ष किए गए अनुरोधों की जांच की गई है ।

आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि

165. आयातों की मात्रा में अपेक्षाकृत अल्पावधि में भारी वृद्धि हुई है । आयात मात्रा में वृद्धि की उच्च दर से यह पता चलता है कि आयातों में अत्यधिक वृद्धि आसन्नवर्ती है ।

निर्यात अभिमुखीकरण

166. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि अत्यधिक उत्पादन क्षमताओं के अलावा चीन जन.गण. के उत्पादक/निर्यातक काफी अधिक निर्यातोन्मुखी हैं । चीन जन.गण. के उत्पादकों के निर्यात अभिमुखीकरण से घरेलू उद्योग को आगे और वास्तविक क्षति होने के खतरे का संकेत मिलता है ।

कीमत में अत्यधिक कटौती और कीमत न्यूनीकरण

167. संबद्ध आयातों के कारण कीमत में हो रही कटौती काफी अधिक है । आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं जिनसे आगे और आयात होने की प्रबल संभावना है । पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत का न्यूनीकरण हो रहा है । क्षति अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग उसी सीमा तक अपनी घरेलू बिक्री कीमत को बढ़ाने में असमर्थ रहा है जिसके परिणामस्वरूप उसे घाटा हुआ है । इस प्रकार घरेलू और आयातित उत्पाद के बीच कीमत में भारी अंतर से यह पता चलता है कि आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं जिनसे घरेलू कीमतों पर अत्यधिक द्वासकारी अथवा न्यूनकारी प्रभाव पड़ने की संभावना है और इससे आगे और आयात करने के लिए मांग में बढ़ोत्तरी होने की संभावना है ।

घरेलू उद्योग के पास बढ़ती हुई मालसूची

168. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के पास मालसूची में भारी वृद्धि हुई है और इससे आगे और वास्तविक क्षति होने के खतरे की मौजूदगी का संकेत मिलता है ।

पाटित आयातों का बाजार हिस्सा

169. घरेलू बाजार में एक बड़ा हिस्सा संबद्ध देश के आयातों में पहले ही धारित कर लिया है और इसमें वृद्धि हो रही है । वर्ष 2009-10 और जांच अवधि के बीच चीन के बाजार में लगभग 200 प्रतिशत की वृद्धि से भी आगे और क्षति होने के खतरे का पता चलता है ।

पीजीसीआईएल द्वारा चीन की कंपनियों को दिए गए ऑर्डर

170. घरेलू उद्योग ने यह प्रदर्शित करने के लिए सूचना प्रदान की है कि पीजीसीआईएल ने चीन की कंपनियों को भारी मात्रा में ऑर्डर प्रदान किए हैं और चीन की कंपनियां पीजीसीआईएल द्वारा जारी की जा रही निविदाओं में बढ़-चढ़कर भाग ले रही हैं । घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना और वेबसाइट पर उपलब्ध सूचना के अनुसार पीजीसीआईएल द्वारा चीन की कंपनियों को दिए जा चुके ऑर्डर निम्नानुसार हैं :-

आपूर्तिकर्ता का नाम	आदेश का माह	मात्रा (सं.)	भारित (मी.ट.)
दिए जा चुके ऑर्डर			
शेनडॉंग रुइताई ग्लास इंसुलेटर कं. लि.	मई, 14 एवं जून, 14	15,36,848	17,069
सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कं. लि., चीन	मई, 14 एवं जून, 14	2,97,900	3,575
नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं. लि., चीन	मई, 14 एवं जून, 14	8,07,147	9,686
कुल		26,41,895	30,330

चीन में मांग में आई गिरावट

171. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चीन में वर्ष 2000 में आए ढांचागत विद्युत असंतुलनों की वजह से विद्युत उत्पादन तथा पारेषण उपकरण की अभूतपूर्व मांग उत्पन्न हुई है । चीन इंसुलेटरों का जरूरत के आधार पर शुद्ध आयातक था और वस्तुतः भारतीय उत्पादक चीन में इंसुलेटरों की आपूर्ति कर रहे थे । तथापि, इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों सहित विद्युत उत्पादन और पारेषण उपकरणों की असाधारण रूप से उच्च मांग को पूरा करने के लिए चीन में क्षमताओं में भारी वृद्धि की गई थी । इसकी वजह से इंसुलेटर उत्पादन की क्षमताओं में भारी वृद्धि की गई थी । चीन की विद्युत क्षमता वर्ष 1965 में 336.5 जीडब्ल्यू से 11 प्रतिशत के जीएजीआर पर बढ़कर 2009 में 874.1 जीडब्ल्यू हो गई । जून, 2010 के अंत तक कुल उत्पादन क्षमता 907.9 जीडब्ल्यू के स्तर पर पहुंच गई । आवेदकों ने आगे यह दावा किया है कि बीजिंग ओलंपिक के बाद चीन के भीतर नई विद्युत क्षमता वृद्धि की मांग में भारी गिरावट आई जिसके परिणामस्वरूप इंसुलेटरों सहित विद्युत उत्पादन तथा पारेषण उपकरणों की मांग में भारी गिरावट आई । इसकी वजह से चीन के उत्पादक अपनी व्यापक क्षमताओं के लिए दूसरे बाजारों को तलाश करने के लिए बाध्य हुए जो क्षमताएं उत्तरोत्तर निष्क्रिय पड़ी हुई थी । इस प्रकार, उत्पाद के लिए चीन की मांग में भारी गिरावट आई है जबकि चीन के उत्पादकों के पास व्यापक क्षमताएं बनी हुई हैं ।

चीन के उत्पादकों को प्राप्त कीमत लाभ

172. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चीन के आपूर्तिकर्ताओं को विभिन्न लाभ प्राप्त हैं :

- चीन के आपूर्तिकर्ताओं को चीन के उधारदाताओं से आसान वित्त उपलब्ध होता है ।
- उन्हें निर्यात सब्सिडी से लाभ प्राप्त होता है । इंसुलेटरों के लिए नकद रिबेट 17 प्रतिशत है जो इन उत्पादों पर वैट प्रभाव की तुलना में काफी अधिक है ।
- चीन की इस्पात नीति में इस्पात उद्योग को प्रत्यक्ष सब्सिडी देना अनिवार्य है ।
- कोक और कोयले के रूप में चीन में ईंधन की कीमत अंतर्राष्ट्रीय कीमतों की तुलना में काफी कम है ।

वास्तविक क्षति के खतरे के बारे में निष्कर्ष

173. रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना की जांच से घरेलू उद्योग को पाटन के कारण हुई क्षति का पता चलेगा । उपर्युक्त अभिज्ञात कारकों से आगे और क्षति होने के खतरे की मौजूदगी का स्पष्ट संकेत मिलता है ।

कारणात्मक संबंध

174. प्राधिकारी ने इस बात की जांच की है कि क्या पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । पाटन और घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के बीच कारणात्मक संबंधी की जांच निम्नानुसार की गई है :-

तीसरे देशों से आयात

175. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंड एस से संबद्ध वस्तु के आयात आंकड़ों की जांच की है। यह नोट किया जाता है कि तीसरे देशों से हुए आयात नगण्य हैं और इनसे घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति नहीं हो सकती है।

मांग में कमी

176. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में क्षति अवधि के दौरान भारी सुधार प्रदर्शित हुआ है। इसमें आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में वृद्धि हुई है। मांग में संभावित कमी को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता।

विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

177. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसा कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

178. यह तर्क दिया गया है कि पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। यह नोट किया जाता है कि इंसुलेटर उद्योग मुख्यतः ऑर्डर आधारित उद्योग हैं और ऑर्डर आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत सबसे कम कीमत पर प्रदान किए जाते हैं। यदि आयातों में क्षति अवधि के दौरान लगभग 284 प्रतिशत की वृद्धि हुई है तो ऐसा घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से इन मामलों में आयातों की पहुंच कीमत काफी कम रहने के कारण हुआ है। इससे स्पष्टतः यह पता चलता है कि आयात कीमतें घरेलू उद्योग की कीमतों से काफी कम रहेंगी और उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग में गिरावट घरेलू उत्पादकों के बीच पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण नहीं आई थी।

प्रौद्योगिकी विकास

179. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी विश्व भर के उत्पादकों द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी से तुलनीय है। भारतीय उत्पादकों और विदेशी उत्पादकों की उत्पादन प्रक्रिया में कोई खास अंतर नहीं है। वस्तुतः घरेलू उत्पादकों द्वारा कुछ समय से उत्पाद का विनिर्माण किया जा रहा है और उत्पादन प्रौद्योगिकी स्पष्ट रूप से सीमित की गई है। इसके अलावा, प्रयोक्ता उद्योग प्रौद्योगिकी की दृष्टि से निरपेक्ष है इसलिए प्रौद्योगिकी में कोई अंतर घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है।

खपत की पद्धति में परिवर्तन

180. घरेलू उद्योग द्वारा वस्तु के उस प्रकार का उत्पादन किया जा रहा है जिसका आयात भारत में किया गया है। खपत की पद्धति में संभावित परिवर्तन ऐसा कोई कारक नहीं है जिसे घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति हो सकती है।

181. यह तर्क दिया गया है कि निष्पादन में गिरावट पालीमर इंसुलेटर के प्रति उपभोक्ता की तरजीह में आए परिवर्तन के कारण आई है। यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई है जिससे यह पता चलता है कि उपभोक्ता का अधिमान संबद्ध इंसुलेटरों से बदलकर पालीमर इंसुलेटरों का नहीं हुआ है।

निर्यात निष्पादन

182. घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में संभावित अत्यधिक गिरावट के कारण नहीं हुई है। वस्तुतः घरेलू उद्योग द्वारा किए जाने वाले निर्यातों में खास गिरावट नहीं आई है। बहरहाल घरेलू उद्योग ने जहां संभव हुआ है, घरेलू निष्पादन पर विचार किया है।

अन्य उत्पादों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन

183. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बेचे जा रहे अन्य उत्पादों के निष्पादन से घरेलू उद्योग के निष्पादन के बारे में प्राधिकारी द्वारा किए गए आकलन पर प्रभाव नहीं पड़ा है। प्राधिकारी द्वारा विचारित सूचना केवल विचाराधीन उत्पाद के बारे में है।

घरेलू उद्योग की उत्पादकता

184. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता में उत्पादन के समान प्रवृत्ति रही है। उत्पादन में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति नहीं हुई है।

कारणात्मक संबंध को सिद्ध करने वाले कारक

185. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन के विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की स्थिति में वास्तविक गिरावट आई है। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की पुष्टि निम्नलिखित आधार पर होती है :

- (क) आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है । परिणामतः आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है ।
- (ख) कीमत में काफी अंतर होने के परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं ने अपनी जरूरतों के लिए उत्तरोत्तर चीन के आपूर्तिकर्ताओं की ओर रुख किया है । अतः कीमत कटौती से आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है ।
- (ग) देश में पाटित आयातों की मौजूदगी से घरेलू उद्योग लागत में वृद्धि के अनुपात में अपनी कीमतें बढ़ाने से वंचित हुआ है ।
- (घ) संबद्ध आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा उत्पाद की कम कीमत पर बिक्री की जा रही है ।
- (ङ.) लाभ, लगाई गई पूंजी पर आय और नकद लाभ में गिरावट पाटित आयातों की प्रत्यक्ष परिणति है ।
- (च) क्षति अवधि में पाटित आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है ।
- (छ) कीमत में अत्यधिक कटौती के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग में गिरावट आई है ।
- (ज) कीमत और मात्रा से संबंधित कई आर्थिक मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग की बिक्री नकारात्मक बन गई ।

क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष

186. क्षति एवं कारणात्मक संबंधी की उपर्युक्त जांच से प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि चीन से संबद्ध वस्तु के पाटन के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति हुई है । समूची क्षति अवधि के दौरान समग्र रूप में और भारत में उत्पादन एवं खपत की तुलना में चीन से पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है । घरेलू कीमतों में अत्यधिक कटौती हो रही है । पाटित आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । संबद्ध देश के लिए पाटन मार्जिन निर्धारित की गई है जिसे अत्यधिक माना गया है । संबद्ध देश से पाटित आयातों का उत्पादन, बिक्री, तथा क्षमता उपयोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है । घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भारी गिरावट आई है जबकि आयातों के हिस्से में अत्यधिक वृद्धि हुई है । लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में भारी गिरावट आई है । माल सूची में वृद्धि हुई है । प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है ।

187. प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के प्रत्येक प्रकार के लिए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत अलग-अलग निर्धारित की है । क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग की इस क्षति रहित कीमत की तुलना प्रत्येक प्रतिवादी निर्यातक हेतु संबद्ध आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है । क्षति माजिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :

क्षति मार्जिन

क्र.सं.	उत्पादक	निर्यातक	क्षति रहित कीमत	पहुंच कीमत	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन
			अम.डा. /किग्रा.	अम.डा. /किग्रा.	अम.डा. /किग्रा.	%	% रेंज
1	नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं. लि.	नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं. लि.	***	***	***	***	85-95
2	जिगोंग सेडिवर थुंगहैंग्ड इंसुलेटर कं. लि.	जिगोंग सेडिवर थुंगहैंग्ड इंसुलेटर कं. लि.	***	***	***	***	30-40
3	सेडिवर इंसलेटर्स (शंघाई) कं. लि.	सेडिवर इंसलेटर्स (शंघाई) कं. लि.	***	***	***	***	35-45
4	सेडिवर इंसलेटर्स (शंघाई) कं. लि.	सेडिवर एस ए	***	***	***	***	20-30
	भारित औसत (2+3+4)		***	***	***	***	30-40
5	डेलियान इंसलेटर ग्रुप कं. लि.	***	***	***	***	***	70-80
6	लीलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं0, लि.	लीलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं0, लि.	***	***	***	***	0-10
7	चेंगडू ग्लोबल स्पेशल-ग्लास मैन्युफैक्चरिंग कं. लि.	सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कं. लि.	***	***	***	***	110-120

188. यथा निर्धारित पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन का स्तर काफी अधिक माना जाता है ।

संबद्ध देश के अन्य उत्पादकों तथा निर्यातकों के लिए पहुंच मूल्य तथा क्षति मार्जिन

189. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रश्नावली का उत्तर चीन से विचाराधीन उत्पाद के केवल कुछ ही निर्यातकों द्वारा दायर किया गया है । निर्धारित प्रपत्र में और निर्धारित ढंग से संगत सूचना प्रदान करने में चीन के अन्य निर्यातकों ने प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है । चीन में अन्य उत्पादकों तथा निर्यातकों के संबंध में भारत के लिए पहुंच मूल्य का निर्धारण सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर किया गया है । इस प्रयोजनार्थ प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रदत्त सूचना स्वीकार की गई है । इस प्रकार निकालक गए क्षति मार्जिन का उल्लेख निम्नलिखित तालिका में किया गया है :-

विवरण	अम.डा./किग्रा.
एनआईपी	***
पहुंच मूल्य	***
क्षति मार्जिन	***
क्षति मार्जिन %	***
क्षति मार्जिन % रेंज	175-185

ड. प्रकटन विवरण के पश्चात हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

प्रकटन विवरण पर निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियां

190. निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन विवरण पर अपनी टिप्पणियों में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :

- क. जहां तक ग्लास और सिरमिक इंसुलेटर समान वस्तु होने का संबंध है, न तो प्रकटन विवरण में ऐसे अंतर्राष्ट्रीय मानक के किसी नाम का हवाला दिया गया है और न ही राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों का कोई उद्धरण दिया गया है और प्रकटन विवरण में ऐसा कोई निविदा दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराया गया है जिससे निर्दिष्ट प्राधिकारी के उपर्युक्त मद का समर्थन मिलता हो । इसके अलावा, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर भरोसा किए जाने के लिए प्रतियां उपलब्ध नहीं कराईं और हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु सार्वजनिक फाइल में निविदा दस्तावेज रखे । अतः प्रकटन विवरण को प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करते हुए जारी किया गया है ।
- ख. प्रतिवादी यह समझने में विफल रहा है कि क्या ग्लास इंसुलेटरों का भारत में उत्पादन होता है तो किस आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि पोर्सिलेन और ग्लास इंसुलेटर समान हैं । इसके अलावा, प्रतिवादी निर्दिष्ट प्राधिकारी के इस जांच परिणाम का खंडन करता है कि निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर से यह पता चलता है कि पोर्सिलेन और ग्लास इंसुलेटरों की उत्पादन प्रक्रिया समान है । यदि किसी जांच अधिकारी ने चीन जन.गण. में किसी विनिर्माण इकाई का सत्यापन दौरा किया होता तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह पाया होता कि ग्लास और पोर्सिलेन इंसुलेटरों के उत्पादन हेतु उत्पादन प्रक्रियाएं अलग-अलग हैं । समुचित मौके पर सत्यापन के बिना यह निष्कर्ष निकालना विवेकपूर्ण नहीं है कि ग्लास इंसुलेटरों और पोर्सिलेन इंसुलेटरों, दोनों के विनिर्माण हेतु उत्पादन प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी समान हैं ।
- ग. इलैक्ट्रिकल इंसुलेटरों के अलग उपयोग हैं और ये वाणिज्यिक अथवा तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय अथवा अदल-बदल कर प्रयोग किए जाने योग्य नहीं हैं । अतः इंसुलेटरों के सभी प्रकारों को एक ही विचाराधीन उत्पाद में समूहित नहीं किया जाना चाहिए ।
- घ. निर्दिष्ट प्राधिकारी का यह मत कि अलग-अलग उत्पाद प्रकार इंसुलेटिंग के समान सामान्य कार्य करते हैं, एक कंडक्टिंग बॉडी से दूसरी कंडक्टिंग बॉडी को अलग करता है । तथापि, ऐसी कोई समझ मूलभूत रूप से गलत है । समानता की दृष्टि से किसी वायुयान और कार में समान सामान्य कार्य होते हैं और वह है यातायात । उसके अंतिम कार्य के आधार पर क्या इन्हें दोनों को समान अंतिम उपयोग को पूरा करने वाला अथवा उपभोक्ता अधिमान की पूर्ति वाला माना जा सकता है ।
- ड. रिकॉर्ड में इन अनुरोधों के बावजूद कि भारतीय उत्पादकों की वैबसाइटों को सही सूचना दर्शाने वाला नहीं माना जाना चाहिए, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पैरा 12 में वैबसाइटों को भरोसेमंद साक्ष्य के रूप में पाया है ।
- च. कि जांच और टिप्पणियां देने हेतु सभी हितबद्ध पक्षकारों को चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़े प्रदान न किए जाने से प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन होता है । प्रतिवादी इस बात की जांच करने में समर्थ नहीं है कि क्या आयात मात्रा में शामिल उत्पाद निर्दिष्ट प्राधिकारी की परिभाषा के अनुसार उत्पाद क्षेत्र के भीतर आते हैं । अतः प्रतिवादी कोई सार्थक टिप्पणी देने में असमर्थ है ।
- छ. हितबद्ध पक्षकारों ने अपने पूर्ववर्ती अनुरोधों में घरेलू रूप से विनिर्मित उत्पादों और आयातित उत्पादों में अंतर प्रदर्शित किया है ।
- ज. चूंकि आवेदन का समर्थन करने वाले कई उत्पादक हैं, इसलिए उनके समर्थन पत्र जांच हेतु प्राधिकारी को प्रदान किए जाने चाहिए । निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह भी अनुरोध है कि वह इन समर्थन पत्रों को सार्वजनिक फाइल में रखें ।
- झ. अन्य भारतीय उत्पादकों के नामों और उत्पादन के बारे में निर्दिष्ट प्राधिकारी को लिखा गया आईईईएमए का पत्र हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध नहीं कराया गया है ।
- ट. निर्दिष्ट प्राधिकारी को विनिर्माण सुविधाएं बंद किए जाने के बारे में पावरग्रिड के कथनों को रिकॉर्ड में लेना चाहिए । प्राधिकारी को डब्ल्यू एस आई की वर्तमान विनिर्माण स्थिति तथा घरेलू उद्योग के आधार की जांच करनी चाहिए ।
- ठ. पोर्सिलेन और ग्लास इंसुलेटरों के लिए उत्पाद प्रौद्योगिकी और कच्ची सामग्री के बीच भारी अंतर है अतः ग्लास इंसुलेटरों के लिए सामान्य मूल्य की अलग गणना करना और उसकी तुलना निर्यात कीमत के साथ करना विवेकपूर्ण है । निर्दिष्ट प्राधिकारी का यह दायित्व है कि वह ग्लास इंसुलेटरों के लिए अलग सामान्य मूल्य की पुष्टि करे ताकि निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच "उचित तुलना" की जा सके ।

- ड. न तो आवेदकों ने और न ही निर्दिष्ट प्राधिकारी ने क्षति कारकों में संभावित गिरावट के बारे में प्रकटन विवरण में कोई विश्लेषण किया है ।
- च. यह स्पष्ट किया जाए कि आवेदन में प्रदत्त आंकड़ों और प्रकटन विवरण में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा भरोसा किए गए आंकड़ों में विसंगति क्यों आई है । यदि आवेदकों ने अपने आंकड़ों में संशोधन किया था तो उन्हें प्रतिवादी और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए था ।
- छ. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उत्पादन/विनिर्माण प्रक्रिया में विरोधाभासी अभिमत दिए हैं । समूची जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों का यह मत रहा है कि पोलिसिलेन और ग्लास इंसुलेटरों की उत्पादन प्रक्रिया अलग है ।
- ज. निर्दिष्ट प्राधिकारी को पाटनरोधी शुल्क लगाने का मूल्यांकन करते समय सार्वजनिक हित को भी ध्यान में रखना चाहिए । यह बात दोहराने योग्य है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तु की कीमतों में वृद्धि होगी जो उपभोक्ताओं के लिए अहितकर होगा और यह पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य नहीं है ।
- झ. पोलिसिलेन और ग्लास इंसुलेटरों से संबद्ध लागत और प्रचालन व्यय में भारी अंतर है । उदाहरणार्थ ग्लास इंसुलेटर दोषपूर्ण सामग्री के रूप में कम उपयोग योग्य होते हैं, व्यवहारिक रूप से ग्लास इंसुलेटरों के लिए डिक्पिंग की कोई घटना नहीं है ।
- ट. जहां तक पीसीएन कार्यप्रणाली के मुद्दे का संबंध है, निर्यातकों का अनुरोध है कि उन्हें माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई वास्तविक पीसीएन कार्य प्रणाली पर कोई आपत्ति नहीं है । तथापि, जांच के दौरान निर्यातकों ने वर्तमान कार्यप्रणाली अपनाने में अपनाई गई प्रक्रिया के बारे में आपत्ति उठाई है जो अभी भी अनसुलझी है ।
- ठ. जहां तक इंस्ट्रूमेंट ट्रांसफार्मरों के लिए 800 के.वी. हॉलो इंसुलेटर के अपवर्जन का संबंध है, यद्यपि, इस बात में कोई शंका नहीं है कि क्षमता विद्यमान है । तथापि, यह देखना आश्चर्यजनक है कि जांच के दौरान वे केवल एक ग्राहक को इसकी आपूर्ति करने में समर्थ रहे हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने वाणिज्यिक बिक्री की है अपितु यह केवल नमूना बिक्री है ।
- ड. जहां तक ग्लास और पोलिसिलेन इंसुलेटरों में लागत और कीमत अंतर के बारे में किए जाने वाले समायोजनों का संबंध है, घरेलू उद्योग द्वारा और पीजीसीआईएल द्वारा उपलब्ध कराए गए साक्ष्य में इस बात को स्पष्ट तौर पर स्वीकार किया गया है कि निविदाएं प्रदान करते समय कीमत ही वह चीज है जिसे ध्यान में रखा जाता है ।
- ढ. निर्दिष्ट प्राधिकारी कृपया यह निर्धारण करने के लिए फरवरी, 2014 में भरोसा की गई संगत सूचना उपलब्ध कराएं कि वास्तव में ये मापदंड उत्पाद तुलना की कार्यप्रणाली के लिए उचित हैं ।
- ण. जहां तक पीसीएन कार्यप्रणाली के बारे में अन्य हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों का संबंध है, इन्हें मांगा नहीं गया था ।
- त. फरवरी, 2014 में सभी हितबद्ध पक्षकारों से बड़ी मात्रा में आंकड़े मांगे गए थे । यदि ऐसे आंकड़े प्रदान करने के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को निर्देश देने के बाद विलंबित चरण पर प्रस्तावित मापदंडों का सत्यापन किया जाता है तो यह अनुरोध है कि इससे प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन होगा । यह निष्कर्ष निकालने के लिए जिस तकनीकी साहित्य और साक्ष्य पर भरोसा किया गया था, के प्रस्तावित मापदंड उचित हैं तो इन्हें हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए ।
- थ. प्रकटन विवरण में प्रदत्त विश्लेषण के बाद लगभग 2 वर्ष से अधिक समय बीत गया है । वस्तुतः यह विश्लेषण प्रारंभिक जांच परिणाम में ही किया गया था । जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद आपत्तियां किए जाने के बावजूद माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उपर्युक्त मापदंड हेतु विश्लेषण की अवधि को अद्यतन नहीं बनाया है । प्राधिकारी को इस बात की पुष्टि करनी चाहिए कि जांच अवधि के दौरान कोई आयात नहीं हुआ है और याचिकाकर्ता द्वारा प्रदत्त राहत जांच परिणाम के परिणाम तक सीमित नहीं है ।
- द. निर्यातकों ने माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी से बार-बार यह अनुरोध किया है कि वह कृपया यह प्रदर्शित करें कि उन्होंने यह बात कैसे सुनिश्चित की है कि चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़े भारतीय सीमा-शुल्क के आंकड़ों की तुलना में अधिक भरोसेमंद हैं ।
- ध. यदि संबद्ध देश के प्रयोजनार्थ डीजीसीआईएंडएस के आंकड़े भरोसेमंद नहीं हैं तो इन्हें अन्य असंबद्ध देशों के प्रयोजनाथ सुविधाजनक रूप से भरोसेमंद नहीं माना जा सकता । माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने ऊपर यह निर्धारित किया है कि अन्य देशों से आयात की मात्रा नगण्य है । तथापि, जिस प्रश्न पर विचार किए जाने की जरूरत है वह यह है कि इन मात्राओं को भरोसेमंद कैसे माना जा सकता है जब माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने संबद्ध देश के लिए आयात आंकड़ों के समान स्रोत की स्पष्ट तौर पर अनदेखी की है ।
- न. यदि निर्यातकों ने एमईटी दावे को वापस न लिया होता तो माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी पर यह दायित्व रहा होता कि वह इस बारे में सभी साक्ष्यों की पड़ताल करें और उन्हें स्वीकार करें । अतः माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निर्यातकों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार एमईटी के उनके दावे की वापसी के कारण प्रदान किया है न कि तृतीय पक्षकार की सूचना के कारण ।
- प. माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उपलब्ध कराई गई गोपनीय निर्यात कीमत की गणना की निर्यातक पुष्टि करते हैं और इस बारे में उन्हें आगे कोई टिप्पणी नहीं करनी है ।
- फ. निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे समूहवार पाटन मार्जिन उपलब्ध कराएं जैसा कि अन्य मामलों में किया जा रहा है ।
- ब. वर्तमान जांच परिणाम के कारणात्मक संबंध के विश्लेषण में इस बात की वास्तविक जांच किए बिना औपचारिकता के रूप में उपर्युक्त सूचीबद्ध 5 कारकों की जांच की गई है कि क्या वास्तव में ऐसा कोई अन्य कारक है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । कारणात्मक संबंध भंग होने का निर्धारण करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी कृपया घरेलू उद्योग के प्रचालनों और आंकड़ों की विस्तार से जांच करें ।
- भ. वर्ष 2009-10 के आधार वर्ष की तुलना में क्षति अवधि के दौरान आयात कीमत वास्तव में समान रही है और उसका घरेलू उद्योग की कीमत पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है । यह नोट किया जाए कि यद्यपि घरेलू उद्योग की कीमत बढ़ी है, तथापि, आयात कीमतों की प्रवृत्ति समान नहीं रही है जिससे दोनों कीमतों के बीच किसी कारणात्मक संबंध के पूर्ण अभाव की पुष्टि होती है ।
- म. निर्यातक भारतीय विद्युत परियोजनाओं के लिए आयोजित बोलियों में नियमित रूप से भाग लेते हैं जिसकी वजह से अधिकांश हाल की बोलियां भारतीय उत्पादकों को प्रदान की गई हैं । इन बोलियों का निर्धारण मुख्यतः लागत विश्लेषण पर किया जाता है । इस बात की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती है कि इन बोलियों में भाग लेने वाले चीन के उत्पादकों द्वारा भारतीय उत्पादकों की कीमत में कटौती की जा रही है और फिर भी ये बोलियां भारतीय उत्पादकों को प्रदान की जा रही हैं ।
- य. याचिकाकर्ता निर्यात केन्द्रित कंपनियां हैं और क्षति, यदि कोई हो, याचिकाकर्ताओं के निर्यातों में आई गिरावट के कारण हो सकती है ।
- र. चूंकि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मार्जिन के साथ सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की पाटन मार्जिन सूचीबद्ध संख्याओं का प्रकटन किया है, इसलिए दुर्भाग्यवश लागत निर्धारण, लगाई गई पूंजी पर आय के साथ-साथ क्षति रहित कीमत और पहुंच मूल्य के लिए किसी सूचीबद्ध आंकड़े का प्रकटन नहीं किया गया है ।
- ल. माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा प्रयुक्त उत्पाद तुलना की प्रौद्योगिकी अपुष्टिकृत रहती है और इसका चयन साक्ष्य पर समुचित ढंग से भरोसा किए बिना मनमाने ढंग से किया गया है ।
- व. ऊपर निर्धारित आयात आंकड़े गैर भरोसेमंद रहते हैं और ये अनदेखी के योग्य हैं ।

- श. माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को ऊपर प्रदान किए गए आयात आंकड़ों का पुनर्वर्गीकरण करना चाहिए और तदनुसार प्रत्येक श्रेणी और खंड के लिए क्षति विश्लेषण किया जाना चाहिए ।
- ष. याचिकाकर्ताओं को कोई क्षति नहीं हो रही है और दावा की गई कोई क्षति ऊपर दर्शाए गए अनुसार आयातों से इतर कारकों की वजह से हुई है ।
- स. माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को सार्वजनिक हित में उच्च के एन मूल्य के इंसुलेटरों को वर्तमान उत्पाद क्षेत्र से बाहर रखना चाहिए ।
- ह. माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को समूहवार मार्जिन के आधार पर शुल्क तालिका पुनः तैयार करनी चाहिए जैसा कि अन्य जांचों में अपनाई गई प्रक्रिया के आधार पर अनुरोध किया गया है ।
- क्ष. टावर और कन्डक्टर पैकेजों के लिए संविदा 8 ऑर्डरों में प्रदान की गई है, अब इन ऑर्डरों/संविदाओं के लिए इंसुलेटर पैकेज पर पाटनरोधी शुल्क के उद्ग्रहण से घरेलू उद्योग की परियोजना का कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा और इसके उद्ग्रहण से लागत में वृद्धि होगी जिसका अतिरिक्त बोझ आम जनता पर पड़ेगा । इसके अलावा, विश्व बैंक/एडीबी वित्त पोषित परियोजनाओं पर पाटनरोधी शुल्क से छूट प्रदान की जानी चाहिए और इसे प्रतिशत आधार पर उद्ग्रहीत किया जाना चाहिए ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

191. पूर्ववर्ती कई अनुरोधों को दोहराते हुए घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित अतिरिक्त अनुरोध किए हैं:

- क. जहां तक भारतीय उत्पादकों के पास पर्याप्त क्षमता न होने के तर्क का संबंध है, घरेलू उद्योग ने पीजीसीआईएल द्वारा निर्धारित योजनाओं के आधार पर अपनी क्षमताओं में वस्तुतः वृद्धि की है । तथापि, घरेलू उद्योग को योजनाएं देने के बाद पीजीसीआईएल ने चीन के उत्पादकों द्वारा प्रदत्त कम कीमतों के मद्देनजर आयात किए हैं । पीजीसीआईएल उद्योग को अपनी मध्यम तथा दीर्घावधिक जरूरतें प्रदान कर सकती है और उद्योग यह सुनिश्चित करने में आगे और कदम उठाने पर अधिक प्रसन्न होगा कि पीजीसीआईएल की मांग पूरी की जा रही है । पाटनरोधी शुल्क की जांच का उद्देश्य अनुचित व्यापार व्यवहार को रोकना है न कि आयातों को सीमित करना ।
- ख. जहां तक निविदाओं में भारतीय उत्पादकों की गैर-भागीदारी के तर्क का संबंध है, यह विवरण गलत है कि केवल दो उत्पादक बोलियों में भाग ले रहे हैं । घरेलू उद्योग के सभी घटकों द्वारा पीजीसीआईएल द्वारा जारी निविदाओं में भागीदारी की जा रही है । बीएचईएल के लिए इंगित क्षमता संबंधी बाधा काफी अधिक है क्योंकि पावरग्रिड ने 17 माह तक आपूर्तियां रोक दी थीं जिसके परिणामस्वरूप अल्प डिलीवरी के साथ अतिरिक्त जरूरत बन गई जिसे अन्य परियोजना की आपूर्तियों के साथ जोड़ना पड़ा ।
- ग. जहां तक एक ही पक्षकार द्वारा सभी ऑर्डर लिए जाने का संबंध है, आयातकों का यह मत प्रतीत होता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से विचाराधीन उत्पाद के आयात प्रतिबंधित हो जाएंगे । पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य अनुचित व्यापार व्यवहार को रोकना मात्र है । निर्यातक अभी भी विचाराधीन उत्पाद का निर्यात कर सकते हैं और वह भी उचित कीमत पर ।
- घ. पीजीसीआईएल द्वारा जारी निविदाओं में घरेलू उद्योग के सभी घटक भाग ले रहे हैं ।
- ड. जहां तक इंसुलेटरों के श्रेणीकरण का संबंध है, याचिकाकर्ताओं ने पीसीएन का प्रस्ताव किया है जिसे प्राधिकारी ने विस्तृत विश्लेषण के बाद स्वीकार किया था । पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण पीसीएन वार किया गया है । प्राधिकारी ने अलग-अलग वोल्टेज रेंज को एक उत्पाद नहीं माना है । वोल्टेज रेटिंग पीसीएन मापदंडों में से एक है ।
- च. जहां तक वास्तविक लागत प्रारंभिक जांच परिणाम में विचारित लागत से 1.5 गुना अधिक होने का संबंध है, यह अनुरोध किया जाता है कि इसे पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन में आगे और वृद्धि होगी ।
- छ. पीजीसीआईएल को चल रही जांचों की जानकारी थी और फिर भी उसने स्वयं को प्रदर्शित करना जारी रखा । पाटनरोधी शुल्क की जांच एक समयबद्ध जांच होने के कारण पीजीसीआईएल अपनी निविदाओं में कुछ और माह तक विलंब कर सकती थी । इसके बजाए पीजीसीआईएल ने निविदाओं में जल्दबाजी की और उन्हें चीन के उत्पादकों को प्रदान कर दिया ।
- ज. जहां तक क्षमता में अवरोध का संबंध है, यदि निर्यातक अंतर को भरना चाहते हैं तो वे उचित कीमत पर उत्पाद का निर्यात कर सकते हैं । घरेलू उद्योग इस समय घटते हुए क्षमता उपयोग और क्षमता उपयोग के कम स्तर का सामना कर रहा है । यह आशा नहीं की जा सकती कि घरेलू उद्योग अपने वित्तीय घाटे में इजाफा करेगा और क्षमताओं में वृद्धि जारी रखेगा ।
- झ. सीमा-शुल्क प्राधिकारियों ने बार-बार इस बात पर जोर देते हुए परिपत्र जारी किए कि सभी निर्यातकों और सीमा-शुल्क दलालों को सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अनुसार, सही और निर्धारित मानक इकाई गुणवत्ता कोडों (यूक्यूसी) के साथ पोतलदान बिलों में निर्यात वस्तु के पूर्ण और संगत विवरण की घोषणा करनी चाहिए । यह उल्लेख करना भी संगत है कि इन निर्यातकों ने प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं जिनमें निर्यातकों ने भार के आधार पर भारत को किए गए निर्यातों के बारे में स्पष्ट सूचना प्रदान की है । इस प्रकार निर्यातकों ने माप की इकाई के रूप में भार को लेते हुए प्रश्नावली के उत्तर दायर किए हैं और वे अब यह तर्क दे रहे हैं कि सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत माप की निर्धारित इकाई को उत्पाद की विशिष्टता के कारण तथ्यपरक प्रयोजन हेतु अपनाया नहीं गया है ।
- ट. यदि हितबद्ध पक्षकार यह मानते हैं कि उन्होंने अपवर्जित उत्पादों का निर्यात किया था तो यह बात इन हितबद्ध पक्षकारों पर निर्भर करती है कि वे संगत सूचना उपलब्ध कराएं और इस बात की पुष्टि करें कि इस बारे में घरेलू उद्योग का तर्क सही नहीं था ।
- ठ. प्राधिकारी को प्रदत्त विस्तृत सौदेवार चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़े तृतीय पक्षकार की सूचना है और याचिकाकर्ता उसका प्रकटन करने के लिए प्राधिकृत नहीं है ।
- ड. डीजीसीआईएंड एस में सूचित आंकड़ों का कुल मूल्य चीनी सीमा-शुल्क में सूचित कुल मूल्य के साथ काफी हद तक मेल खाता है । तथापि, यद्यपि, डीजीसीआईएंड एस में सूचित आयातों का मूल्य चीनी सीमा-शुल्क में सूचित मूल्य से काफी हद तक मेल खाता है, फिर भी डीजीसीआईएंडएस में निहित सूचना को इस वजह से आयात मात्रा के निर्धारण हेतु नहीं अपनाया जा सका कि डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में भार के रूप में उत्पाद की मात्रा की सही सूचना नहीं दी जाती है और कई सौदों में आयातों के भार का निर्धारण करना उचित नहीं होगा ।
- ढ. प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा दायर किए गए प्रश्नावली के उत्तरों से यह पता चलेगा कि वस्तु का बीजक माप की इकाई के रूप में भार का प्रयोग करके तैयार किया गया है । इसका अलावा, प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा सूचित आयात मात्रा चीनी सीमा-शुल्क में सूचित आयात मात्रा के साथ तुलनीय होगी ।

- ग. याचिकाकर्ताओं ने संगत अवधि के लिए चीन से भारत को हुए आपूर्तिकर्तावार निर्यातों की सूचना प्रदान की है और उसमें इस बात की पुनः पुष्टि की गई है कि अधिकांश निर्यात प्रतिवादी कंपनियों द्वारा किए गए हैं यद्यपि केवल प्रतिवादी कंपनियों के प्रश्नावली के उत्तरों पर आयात मात्रा के निर्धारण हेतु विचार किया जाता है। तथापि, उससे पुनः वही निष्कर्ष निकलेगा।
- त. जहां तक महानिदेशक (रक्षोपाय) के जांच परिणाम का संबंध है, यह अनुरोध किया जाता है कि प्रतिवादी निर्यातकों ने महानिदेशक (रक्षोपाय) द्वारा की गई तथाकथित गलती के अपने कोरे दावों की पुष्टि करने के लिए कोई साक्ष्य दायर नहीं किया है।
- थ. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अपने प्रारंभिक जांच परिणामों में इस बात की पुष्टि की थी कि आयातों की मात्रा और मूल्य के निर्धारण हेतु डीजीसीआईएंडएस तथा किसी अन्य भारतीय सीमा-शुल्क को स्वीकार नहीं किया जा सकता और उन्होंने चीनी सीमा-शुल्क की विश्वसनीयता का विस्तृत विश्लेषण करने के बाद पर्याप्त कारण दिए थे। यह आश्चर्यजनक है कि सीसीसीएमई द्वारा यह दावा किया जा रहा है कि चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़े गैर भरोसेमंद हैं और इसके अलावा, भारत में विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों के बारे में कोई सूचना प्रदान नहीं की है जिसे वह गोपनीय मानती है।
- द. जहां तक 800 के.वी. हॉलो इंसुलेटरों के अपवर्जन का संबंध है, एबीबी द्वारा मॉडर्न इंसुलेटर्स लि. से 800 के.वी. सर्किट ब्रेकर इंसुलेटर प्राप्त किए जा रहे हैं। बीएचईएल ने वस्तुतः एबीबी को इस प्रकार के इंसुलेटरों की आपूर्ति की है।
- ध. जहां तक एसी फिल्टर अनुप्रयोग हेतु 800 के.वी. एचबीडीसी इंसुलेटरों के अपवर्जन का संबंध है, मॉडर्न इंसुलेटर्स लि. ने जून 2014 में ए सी फिल्टर अनुप्रयोग हेतु 800 के.वी. एचबीडीसी सॉलिड कोर कैपेसिटर्स के लिए ऑर्डर प्राप्त किए थे और इनका पहले से विनिर्माण किया जा रहा है तथा एबीबी द्वारा प्रस्तुत डिजायनों के अनुसार आंशिक मात्रा भेजी जा चुकी है। वस्तुतः एबीआई ने एबीबी को ऐसी सामग्री की आपूर्ति करने की पेशकश की है। तथापि, एबीबी द्वारा दी गई अत्यंत कम समय सीमा जो व्यवहारिक रूप से संभव नहीं थी, के कारण एबीआई इसकी आपूर्ति नहीं कर सकी। वस्तुतः एबीआई ने समयावधि में विस्तार की मांग की परंतु एबीबी ने उसका उत्तर नहीं दिया।
- न. पाटनरोधी शुल्क सीआईएफ प्रतिशत के रूप में व्यक्त केवल मूल्यानुसार लगाया जाए।
- प. जहां तक क्षति रहित कीमत का संबंध है, इन वर्षों के दौरान खपत कारक में अंतर कच्ची समग्री के अकुशल उपयोग और उपयोगितावार निर्धारण से भिन्न है।

- i. लगाई गई पूंजी का निर्धारण स्थायी परिसंपत्तियों के वर्तमान मूल्य पर विचार करते हुए अथवा स्थायी परिसंपत्तियों के कम से कम सकल मूल्य को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।
- ii. प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह वास्तविक कच्ची सामग्री और उपयोगिता खपत पर विचार करें।
- iii. क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु वास्तविक उत्पादन की अनदेखी करना और उत्पादन का कोई अन्य आधार स्वीकार करना अनुचित होगा। प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उस कीमत के निर्धारण हेतु उत्पादन की वास्तविक लागत का निर्धारण करें न कि उत्पादन की किसी सैद्धांतिक रूप से कम लागत पर विचार करें जिस कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु आयात कीमत के साथ की जा सके।

प्राधिकारी द्वारा जांच

192. प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण के पश्चात की गई टिप्पणियां/किए गए अनुरोध मुख्यतः पूर्ववर्ती अनुरोधों की पुनरावृत्ति हैं जिनकी पूर्ववर्ती जांच परिणाम अथवा वर्तमान जांच परिणाम के प्रकटन विवरण अथवा संगत पैराग्राफों में उचित और पर्याप्त ढंग से जांच की गई है। प्राधिकारी आगे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों के बारे में निम्नानुसार विचार करते हैं।

- क. जहां तक ग्लास और पॉर्सिलेन इंसुलेटर को एक समान वस्तु मानने का संबंध है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस मुद्दे की जांच और उस पर विस्तृत विचार प्रारंभिक जांच परिणामों और वर्तमान अंतिम जांच परिणाम के संगत पैराग्राफों में किया गया है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि यह निष्कर्ष निकालने के लिए कि क्या दोनों उत्पाद समान वस्तुएं हैं, प्राधिकारी के लिए अधिकारियों द्वारा मौके पर सत्यापन आवश्यक नहीं है। रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना से इस बात की स्पष्ट पुष्टि होती है कि पावर ग्रिड जैसे प्रमुख उपभोक्ता ने ग्लास और पॉर्सिलेन की अदल-बदल कर—तकनीकी और वाणिज्यिक रूप में खरीद की है।
- ख. जहां तक इंसुलेटरों के विभिन्न प्रकारों में अंतर का संबंध है, इस मुद्दे की विस्तृत जांच की गई है। तथ्य मात्र यह है कि इंसुलेटर के अलग-अलग प्रकार संबंधित लागत में भिन्न होते हैं और कीमत से उत्पाद भिन्न नहीं हो जाता है। इसका तात्पर्य सिर्फ यह है कि अंतर पर क्षति मार्जिन और पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ उचित तुलना हेतु विचार किया जाएगा। प्राधिकारी ने उपर्युक्त पीसीएन कार्यप्रणाली के आधार पर पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण किया है।
- ग. जहां तक पीसीएन कार्यप्रणाली पर टिप्पणियों के लिए अवसर का संबंध है, यह दोहराया जाता है कि हितबद्ध पक्षकार प्रस्तावित पीसीएन कार्यप्रणाली पर अपनी टिप्पणियां देने के लिए स्वतंत्र थे। प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद भी किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने वैकल्पिक पीसीएन अथवा पीसीएन में संशोधन के बारे में कोई सुझाव नहीं दिया।
- घ. जहां तक याचिका और प्रारंभिक जांच परिणाम/प्रकटन विवरण के बीच आंकड़ों में अंतर का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणामों/प्रकटन विवरण में अपनाए गए आंकड़े प्राधिकारी द्वारा की गई जांच और जांच के दौरान सत्यापित सूचना पर आधारित हैं। हितबद्ध पक्षकारों के पास प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए जाने के बाद आंकड़ों पर टिप्पणियां करने के लिए कई अवसर थे।
- ड. जहां तक तीसरे देशों के लिए डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों को स्वीकार करने का संबंध है, यद्यपि डीजीसीआईएंड एस के आंकड़े चीन के लिए स्वीकार नहीं किए गए हैं, प्रारंभिक जांच परिणाम और वर्तमान जांच परिणाम में इस मुद्दे की विस्तृत जांच की गई है। रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना से यह पता चलता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयात व्यावहारिक रूप से चीन से हुए हैं। वस्तुतः किसी भी प्रतिवादी पक्षकार ने तीसरे देश से उत्पाद का कोई आयात नहीं दर्शाया है। किसी हितबद्ध पक्षकार ने यह दावा नहीं किया है कि घरेलू उद्योग को क्षति तीसरे देशों से हुए अपाटित आयातों के कारण हुई है।
- च. जहां तक ग्लास और पॉर्सिलेन इंसुलेटरों के भार में अंतर हेतु समायोजन का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं चूंकि पॉर्सिलेन और ग्लास इंसुलेटरों को समान वस्तु माना गया है, अतः प्राधिकारी समान वस्तुओं के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने में प्राधिकारी द्वारा

अपनाई गई पद्धति उसकी पूर्व की परिपाटी के अनुरूप है और ग्लास एवं पोर्सेलीन के भार के समायोजन का मुद्दा संगत नहीं है ।

- छ. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि सामान्य मूल्य (अथवा क्षति रहित कीमत) जहां तक ग्लास इंसुलेटरों के पाटन मार्जिन (अथवा क्षति मार्जिन) का संबंध है, ग्लास इंसुलेटरों के लिए नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमों में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु समान वस्तु पर विचार करें। अधिनियम की धारा 9क(1)ग में वस्तुतः यह प्रावधान है कि सामान्य मूल्य नियातक देश के घरेलू बाजार में समान वस्तु की कीमत है । अतः प्राधिकारी से वास्तव में समान वस्तु पर विचार कर सामान्य मूल्य पर गौर करने की अपेक्षा की जाती है ।
- ज. जहां तक वार्षिक रिपोर्ट में सूचित निष्पादन के बारे में दिए गए तर्कों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह क्षति अवधि के दौरान घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पादन के लिए घरेलू उद्योग के निष्पादन पर विचार करें । इसके विपरीत वार्षिक रिपोर्ट में सूचना एक विशेष कंपनी, एक विशेष वर्ष, घरेलू एवं वैश्विक बाजारों में कंपनी के समग्र निष्पादन से संबंधित होती है । इसके अलावा, जहां पाटन कानून में कच्ची सामग्री, विचाराधीन उत्पाद और अनुषंगी उत्पाद के बीच भेद किया जाता है, वहीं वार्षिक रिपोर्ट में कच्ची सामग्री और अनुषंगी उत्पादों में निष्पादन में विस्तार किया जा सकता है ।
- झ. सार्वजनिक फाइल के जरिए अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदत्त साक्ष्य/सूचना की पहुंच के बारे में अनुरोध किए गए हैं। राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय मानकों, भारतीय उत्पादन के संबंध में आईईईएमए के पत्र, अन्य भारतीय उत्पादकों के समर्थन पत्रों, याचिका में आंकड़ों में परिवर्तन, क्षति रहित कीमत आदि का प्रकटन न किए जाने के बारे में भी तर्क दिए गए हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि आईईईएमए के पत्र, समर्थन पत्र, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानक जैसे दस्तावेज वास्तव में घरेलू उद्योग द्वारा अपने अनुरोधों में उपलब्ध कराए गए थे जिनकी एक प्रति हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराई गई थी । यद्यपि, क्षति रहित कीमत एक समग्र आंकड़ा होता है और इसलिए इसे सभी हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया जा सकता, तथापि पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन की रेंजों का प्रकटन हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था । घरेलू उद्योग ने कोई परिवर्तित आंकड़ा दायर नहीं किया है । प्राधिकारी ने सत्यापन किया है और सत्यापित आंकड़े स्वीकार किए हैं जो घरेलू उद्योग द्वारा किए गए दावों के अनुसार नहीं हैं । जहां तक सार्वजनिक फाइल के रख-रखाव का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जो बात संगत है वह यह है कि क्या संगत दस्तावेज/सूचना हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराई गई है । वास्तव में कई हितबद्ध पक्षकारों ने जांच के दौरान कई बार विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दायर दस्तावेज/सूचना हासिल की थी ।
- ट. जहां तक चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों के प्रकटन का संबंध है, प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि नियमावली के नियम 7 में किसी हितबद्ध पक्षकार को गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने की अनुमति है । ऐसी कोई सूचना ऐसी सूचना प्रदाता पक्षकार के विशिष्ट प्राधिकार के बिना किसी दूसरे पक्षकार को प्रकट नहीं की जा सकती । तथापि, प्राधिकारी से उसकी गोपनीयता के बारे में संतुष्ट होने की अपेक्षा की जाती है। कोई पक्षकार निदिष्ट प्राधिकारी को इन कारणों का एक विवरण प्रस्तुत कर सकता है कि उसका सारांश क्यों संभव नहीं है । वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग ने चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों का अगोपनीय सारांश प्रदान किया है । बहरहाल प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान भारत में आयातों की समग्र मात्रा और मूल्य के निर्धारण हेतु चीनी सीमा-शुल्क के आंकड़ों को स्वीकार किया है । इसके अलावा, यह सूचना यूएन कॉमट्रेड आंकड़ों के जरिए प्राधिकारी को अलग से उपलब्ध हो सकती है। प्राधिकारी ने किसी भी हालत में पाटन मार्जिन अथवा क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु चीनी सीमा-शुल्क के सौदे वार आंकड़ों को नहीं स्वीकार किया है जिसके लिए परिकलित सामान्य मूल्य की नीति और सहयोगी निर्यातकों के उत्तर को स्वीकार किया गया है । प्रकटन विवरण में सहयोगी निर्यातकों के समक्ष गोपनीय कारखाना निर्यात कीमत का प्रकटन किया गया है ।
- ठ. जहां तक समूचे समूह के लिए संयुक्त शुल्क हेतु सेडीवर के तर्क का संबंध है, प्राधिकारी ने समूह हेतु भारत और पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन निर्धारित किया है और तदनुसार, शुल्क की उसी मात्रा की सिफारिश की गई है ।
- ड. जहां तक उन सभी आयातों, जिनके लिए ऑर्डर पूर्व में प्रदान किए गए थे और विश्व बैंक/एडीबी वित्तपोषित परियोजनाओं के लिए थे, पर पाटनरोधी शुल्क के भुगतान से छूट दिए जाने के बारे में पावरग्रिड के अनुरोधों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने और उसे वसूल करने से संबंधित निर्णय जांच और सिफारिश के दायरे से बाहर है । केन्द्र सरकार इस बारे में कोई उचित निर्णय ले सकती है ।

च. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे :

193. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तु के प्रयोग से विनिर्मित उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन के व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग के निष्पादन में ह्रास रुकेगा और उपभोक्ताओं के लिए संबद्ध वस्तु का व्यापक विकल्प उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहारों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके, जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

194. यह स्वीकार किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से संबद्ध वस्तु के प्रयोग से विनिर्मित उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है । घरेलू उद्योग ने अनुरोध किया है कि पारेषण और वितरण लागत में विचाराधीन उत्पाद का बमुश्किल 5 प्रतिशत हिस्सा बनता है और प्रस्तावित शुल्क लगाए जाने से शामिल समग्र पारेषण एवं वितरण लागत के संबंध में उपभोक्ताओं के लिए मामूली लागत प्रभाव पड़ता है । अतः भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी, खासकर तब जब पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के हेतु आवश्यक राशि सीमित रखी जाएगी ।

छ. सिफारिशें

195. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों, प्रदत्त सूचना और किए गए अनुरोधों तथा प्रकटन विवरण पर टिप्पणियों के रूप में किए गए अनुरोधों सहित हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध के जरिए अथवा उपर्युक्त जांच परिणाम में अन्यथा दर्ज किए गए रूप में पाधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और वर्तमान पाटन और क्षति की स्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि :

- (क) संबद्ध देश से भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है ।
 (ख) संबद्ध देश से संबद्ध आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है ।
 (ग) यह क्षति संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण हुई है ।

196. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत कर उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को प्रदान की गई थी । पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना प्रदान करने के लिए निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था । पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में प्रारंभिक जांच शुरू और संपन्न करने के बाद और सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति की पुष्टि करने के उपरांत प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन और क्षति को समाप्त करने के लिए शुल्क लगाना आवश्यक है । घरेलू उद्योग ने उसे हुई क्षति का समाधान करने के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया है । प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके । क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद के आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित घरेलू समान उत्पाद की क्षति रहित कीमत के साथ की गई है । प्राधिकारी यह मानते हैं कि प्रारंभिक जांच परिणामों में संस्तुत प्रपत्र में और ढंग से पाटनरोधी शुल्क उचित है और इसे वर्तमान जांच परिणाम के लिए भी अपनाया गया है ।

197. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके । तदनुसार, संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित सभी संबद्ध वस्तु पर निम्नांकित तालिका के कॉलम 8 में उल्लिखित राशि के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को लगाए जाने की सिफारिश की जाती है ।

क्र. सं.	शीर्ष/उप शीर्ष	वस्तु विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क की राशि	इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	854610 854620	इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स*	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं. लि.	नानजिंग इलैक्ट्रिक (ग्रुप) कं. लि.	1188	प्रति किग्रा.	अम.डा.
2	- यथोक्त -	- यथोक्त -	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	जिंगोंग सेडिवर थंगहेन्ड ग्लास इंसुलेटर कं. लि. अथवा सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि.	जिंगोंग सेडिवर थंगहेन्ड ग्लास इंसुलेटर कं. लि. अथवा सेडिवर इंसुलेटर्स (शंघाई) कं. लि. अथवा सेडिवर एस.ए. (फ्रांस)	687	प्रति किग्रा.	अम.डा.
3	- यथोक्त -	- यथोक्त -	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	डालियन इंसुलेटर ग्रुप कं. लि.	डालियन इंसुलेटर ग्रुप कं. लि.	1377	प्रति किग्रा.	अम.डा.
4	- यथोक्त -	- यथोक्त -	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	लीलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं. लि.	लीलिंग हुआक्सिन इंसुलेटर टेक्नोलॉजी कं. लि.	128	प्रति किग्रा.	अम.डा.
5	- यथोक्त -	- यथोक्त -	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	चेंगडू ग्लोबल स्पेशल ग्लास मैनु. कं. लि.	सिचुआन यीबिन ग्लोबल ग्रुप कं. लि.	1174	प्रति किग्रा.	अम.डा.
6	- यथोक्त -	- यथोक्त -	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	उपर्युक्त क्र.सं. 1 से 5 से इतर अन्य कोई संयोजन		2042	प्रति किग्रा.	अम.डा.
7	- यथोक्त -	- यथोक्त -	चीन जन.गण.	चीन जन.गण. से इतर अन्य कोई	कोई	कोई	2042	प्रति किग्रा.	अम.डा.
8	- यथोक्त -	- यथोक्त -	चीन जन.गण. से इतर अन्य कोई	चीन जन.गण.	कोई	कोई	2042	प्रति किग्रा.	अम.डा.

* विचाराधीन उत्पाद "ग्लास के इलैक्ट्रिकल इंसुलेटर्स अथवा पोर्सलेन/सिरामिक हैं, चाहे वे असेम्बल हो या असेम्बल न किए हुए हों, जिनमें निम्नलिखित शामिल नहीं हैं :

1. 1 केवी तक की वोल्टेज रेटिंग के टेलीफोन अथवा टेलीग्राफ इंसुलेटर्स,
 2. 1 केवी तक की वोल्टेज रेटिंग के इलैक्ट्रिकल या इलैक्ट्रॉनिक उपकरण/डिवाइस इंसुलेटर्स
 3. कंपोजिट इंसुलेटर्स
 4. कंडेन्सर बुशिंग और ट्रांसफार्मर
198. उपर्युक्त के अधीन प्राधिकारी 1 जुलाई, 2014 को अधिसूचना सं. 14/11/2013-डीजीएडी द्वारा प्रारंभिक जांच परिणामों और उपर्युक्त शुल्क तालिका में अनुशंसित शुल्क अंतिम पाटनरोधी शुल्क लागू किए जाने की तारीख से लागू होगा।
199. इस सिफारिश के कारण केन्द्र सरकार के आदेश के खिलाफ कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार, सीमा-शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

जे. के. दादू, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(DEPARTMENT OF COMMERCE)

(Directorate General of Anti Dumping and Allied Duties)

NOTIFICATION

New Delhi the 4th March, 2015

Final Findings

Sub: Anti-dumping investigation concerning imports of Electrical Insulators originating in or exported from China PR—Final Findings

F. No. 14/11/2013-DGAD.—Having regard to Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD rules).

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed.
 - a. The Designated Authority (hereinafter referred to as the “Authority”), under the above Rules, received a written application from Aditya Birla Nuvo Ltd. (‘Aditya Birla’), Bharat Heavy Electrical Limited (‘BHEL’), Insulators and Electrical Company (‘IEC’), Modern Insulators Limited (‘Modern’) and WS Industries (India) Ltd. (‘WSI’) (hereinafter referred to as the “applicants”) as domestic industry of the subject goods, alleging dumping of Electrical Insulators (hereinafter also referred to subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as the “subject country”) and resultant injury to DI.
 - b. Preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the applicants. The applicants filed an updated petition, which was considered by the Authority for initiation of investigations. The application was, therefore, considered as properly documented.
 - c. The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants to justify initiation of the investigation, decided to initiate the investigation against imports of the subject goods from the subject country.
 - d. The Authority notified the Embassy of the People’s Republic of China in India about the receipt of application before proceeding to initiate the investigation in accordance with Sub-Rule 5(5) of the AD Rules.
 - e. The Authority issued a public notice dated September 5th, 2013 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods from the subject country.
 - f. The Authority forwarded a copy of the public notice to all known exporters (whose details were made available by the Applicants) and industry associations and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the AD Rules.
 - g. The Authority also forwarded a copy of the public notice to all the known importers of the subject goods in India and advised them to make their views in writing within forty days from the date of the letter.
 - h. The Authority provided a copy of the non-confidential version of application to the known exporters and the Embassy of the People’s Republic of China in India in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules. A copy of the Application was also provided to other interested parties, wherever requested.
 - i. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in the subject country in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

Hunan Liling Huaxin Porcelain Insulator & Electric Apparatus Co. Ltd. Pukou Industrial Park, Liling, Hunan, China PR	Dalian Insulator Co. Ltd. 88, East Liaohe Road, DD Port, Dalian-116600, China PR
---	---

NGK Insulators Tangshan Co. Ltd. Tangshan New & High Technology Development Zone 3, Huoju Road, 188, Hebei-063020, China PR	Xian XD High Voltage Porcelain Insulator Company Limited Daqing Road, Xian, Shaanxi-710077 China PR
NGK Ceramics Suzhou Co. Ltd. & NGK Technocera Suzhou New District Jaingsu-215129, China PR	NGK Insulators Suzhou Co. Ltd. 401, Jianlin Road, Suzhou New District, Jiangsu-215151, China PR
China Electro-Ceramic Imp. & Exp. 3/F, Unit 05 No. 333 Hongwu Rd. Nanjing-210002 China PR	MWB (Shanghai) Co. Ltd. (Trench China) No. 3658, Jiancheng Road, Economic & Technological Developing Zone, Minhang/Shanghai, China PR
Trench High Voltage Products Ltd., Shenyang (THVS) No. 2 Zhengliang Er Rd., Jing Shen Xi San Str., Daoyi Economic Development Zone-110135 Shenyang, China PR	Hunan Liling Guolian Porcelain Insulator 13/F, Tianxin Houting Building, 48 Caie Road- 410005, Changsha, Hunan, China PR
Nanjing Electric Group Co., LTD 63 Taixin Road, Nanjing City, Jiangsu Province, China-210038	Seves Sediver Insulator (Beijing) Co., Ltd. 7th Floor No. 2 Building, China Central Place, 79 Jianguo Road, Chaoyang District, Beijing 100025—China
Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Company Ltd. 162 Hutou St., Gongjing District Zigong-643020 China	Yibin Global Group Co.Ltd. Glass Industrial Park, YibinWullangye Group, Sichuan-644007, China

- j. In response to the initiation notification, the following exporters/producers from China have responded:
- Nanjing Electric (Group) Co. Ltd
 - Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd.
 - Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.
 - Dalian Insulator Group Co. Ltd.
 - Liling Huaxin Insulator Technology Co. Ltd
 - Liling Huacheng Insulators Co. Ltd.
 - Sichuan Yibin Global Group Co. Ltd.
 - Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co. Ltd.
 - Sediver S.A. (France)
- k. Further China Chamber of Commerce for Import & Export of Machinery & Electronic Products (“CCCME”) has also filed submissions on initiation notification.
- l. Questionnaires were sent to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

M/s. Crompton Greaves Ltd., A-3, MIDC, Ambad, BNasik-422 01 Maharashtra	M/s. Areva T&D India Limited, No. 142, Vandallur-Walajhabad Road, Salamangalam (Village) Padappai (Post), Sriperumpudur (Taluk) District. Kanchipuram-60-1 301 Tamil Nadu
M/s. ABB Limited, PPHV-CktBrakers, Vadodara THS-LTD (Live Tank Breaker) Maneja Works, Vadodara 390013, Gujarat	M/s.Siemens Ltd., Breaker Division E-76, Waluj, MIDC Aurangabad-431 136 Maharashtra
Power Grid Corporation of India Limited, Saudamini, Plot No. 2, Sector-29, Gurgaon-122 001	M/s. Adani Power Ltd., Shikhar, 9th Floor, Near Mithakhali Six Roads, Navrangpura, Ahmedabad-380009 (Gujarat), India

M/s. Tata Projects Ltd., “Mithona Towers-1”, 1-7-80 to 87, Opp. Wesley Co-ed Jr. College, Prenderghast Road, Secunderabad- 500 003 (Andhra Pradesh), India	M/s. Kalpataru Power Transmission Ltd., 101, Part-III, GIDC Estate, Sector-28, Gandhinagar- 382 028 (Gujarat), India
M/s. KEC International Ltd. DLF Infinity Towers, 7th Floor, Tower “B”, DLF City, Phase II, Gurgaon-122 002 (Haryana), India	M/s. Reliance Infrastructure Ltd., Dhirubhai Ambani Knowledge City, Wing-6, Ground Floor, D-Block, Thane, Maharashtra, India

- m. None of the importers/users of the subject goods have responded in the form of questionnaire responses or provided comments to the initiation of the investigation.
- n. Copy of initiation notification was also sent to following Indian producers/Association of the product under consideration.

Indian Electrical and Electronics Manufacturers Association Rishyamook Building, First Floor 85A, Panchkuian Road, New Delhi-110 001	R R Industries C-4, Industrial Estate N.H. 91, G.T. Road, Khurja-203 131
Allied Ceramics Pvt. Ltd. 91, Lenin Sarani, Kolkata-700 013	Taruna Dechome Pvt. Ltd., F-51, Bichhwal Industrial Area, Phase-II, Bikaner-334 006
Bhatinda Ceramics Pvt. Ltd., Vill. Jodhpur Romana Dabwali Road Bathinda, Punjab-151 001	Bikaner Ceramics Pvt. Ltd., Rani Bazar, Industrial Area, Bikaner-334 001
Bikaner Porcelain Pvt. Ltd. F-179/180, Bichwal Indl. Area, Bikaner-334 006	CJI Porcelain (P) Ltd., M-17, Dohil House, 4th Floor, M Block, Main Market, Greater Kailash-II, New Delhi-110 048
Deccan Enterprises Pvt. Ltd. B-58, 59 & 60 APIE, Balanagar, Hyderabad-500 037	Goldstone Teleservices Ltd., Amarchand Sharma Complex, S. D. Road, Secunderabad-500 037
Mayur Electro Ceramics Pvt. Ltd., P.O. Pratapgarh Rairangpur, Dist. Mayurbhanj, Mayurbhanj-757050	Saravana Global Energy Ltd., Virudhachalam Road, P. N. Kuppam, Kurinjipadi Post, Cuddalore Dist.-607 302
Pressgel Insulations Pvt. Ltd., D-52, Sardar Ind. Estate, Ajwa Road, Road No. 5, Vadodara-390 019	Shreeji Power & Insulators Pvt. Ltd., Survey No. 321, Nani Chirai Dist., Bhachau, Gujarat
Ravikiran Ceramics Pvt. Ltd., Station Road , Kanari-387 325	A. K. India Ceramics (P) Ltd., N. H. 15, 15 K.M. Stone, Jaipur Road, Village Raisai, Bikaner

- o. In response, the following have filed their letters supporting the petition
- Indian Electrical and Electronics Manufacturers Association
 - Shreeji Power & Insulators Pvt. Ltd.,
 - Bikaner Ceramics Pvt Ltd.,
 - A.K. India Ceramics Pvt Ltd.,
 - Bikaner Porcelain Pvt Ltd.,
 - Allied Ceramics Pvt. Ltd.,
 - TarunaDechome Pvt. Ltd.,
 - Prime Insulators,
 - Saravana Global Energy Ltd.,
 - Jaipuria Brothers,
 - General Power Co. Pvt Ltd.,
 - Hindustan Chemicals,
 - Rastriya Electrical and Engineering Corpn.

- p. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties. The public file was inspected by a number of interested parties a number of times. Interested parties requested copies of the documents from the public file, which were also provided to these interested parties. Submissions made by all interested parties have been taken into account in present findings.
- q. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.
- r. Further information was sought from the applicant and other interested parties to the extent deemed necessary. Verification of domestic industry was conducted to the extent considered necessary for the purpose of present investigation.
- s. The Non-injurious Price (hereinafter referred to as 'NIP') based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) has been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry. As glass insulators are not produced in India, NIP of porcelain insulator has been considered. Further, separate NIP for different product types has been determined.
- t. Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2012 to 31st March 2013 (12 months) (hereinafter referred to as the 'period of investigation' or the 'POI'). The examination of trends, in the context of injury analysis covered the period from 2009-10, 2010-11, 2011-12 and the POI.
- u. The Authority issued preliminary finding on 1st July, 2014 recommending imposition of provisional anti-dumping duty, a copy of which was forwarded to all interested parties including Embassies of the subject country in India. All interested parties were asked to file their comments on preliminary findings. The provisional anti-dumping duty was imposed on imports of electrical insulators of glass or ceramics/porcelain, whether assembled or unassembled originating in, or exported from the People's Republic of China vide Custom Notification 40/2014-Cus (ADD), dated. 16-09-2014.
- v. The Authority held an Oral Hearing on 17th October, 2014 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance with Rule 6(6). The following parties who attended the oral hearing were advised to file written submissions of the information presented orally. The interested parties were allowed to present rebuttal arguments/rejoinders on the views/information presented by other interested parties. The Designated Authority has considered submissions received from various interested parties appropriately
 - a. Domestic industry
 - b. China Chamber of Commerce for Import & Export of Machinery & Electronic Products (CCCME) and M/s. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd.
 - c. Sichuan Yibin Global Group Co. Ltd. and Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co. Ltd.
 - d. M/s. Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd, M/s. Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd and M/s. Sediver S.A.
 - e. Power Grid Corporation Limited
 - f. ABB India Limited
- w. Arguments raised and information provided by various interested parties during the course of the investigation, to the extent the same are supported with evidence and considered relevant to the present investigation, have been appropriately considered by the Authority.
- x. In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts were disclosed by the Authority to the known interested parties and comments received on the same, to the extent considered relevant by the Authority, has been considered in this final finding.
- y. Exchange rate for conversion of US\$ to Rs. is considered for the POI as Rs.54.65 as per customs data.
- z. *** in this final findings represents information furnished by the interested parties on confidential basis, and so considered by the Authority under the Rules.
- aa. The last day of issuance for final findings was extended upto 4th March, 2015 by the Central Government.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

2. The product under consideration in the present investigation is Electrical insulators of Glass, or Ceramics/Porcelain, whether assembled or unassembled, excluding (a) telephone or telegraph insulators of voltage rating up to 1 KV, (b) electrical or electronic appliances/device insulators of voltage rating up to 1 KV, and (c) composite insulators (hereinafter referred to as "Electrical Insulators" or the "product under consideration").

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties before issuance of preliminary findings

3. The interested parties raised following issues with regard to the product under consideration.
 - a. Information about size, type, range, models of the subject goods produced by DI is not available in Section II of the petition. Information available on websites of DI is not reliable as it can be changed by DI at any time, as there is no control and monitoring mechanism over the same. Websites of DI are unreliable as it is fairly common for companies to exaggerate about their capabilities on their websites.
 - b. Product list in Paragraph 5 of Section II is provided without any supporting evidence that the DI actually produces these products. The Authority is obligated to consider the adequacy and accuracy of the evidence submitted by the DI as per Rule 5(3)(b) of the Anti-dumping Rules.
 - c. The applicant should provide line-by-line export statistics classifying the data up to 8 digit level of the subject product to analyse imports of goods covered under the investigation so that the Authority and the interested parties have a clear and proper understanding of the subject product.
 - d. The petitioner has provided summary of exports statistics from Chinese customs for HS codes 854610 and 854620 on page 67 of the petition, the latter including HS codes 854620 1000, 854620 9001 and 854620 9090 that include electrical insulators for both transmission and distribution and every kind of glass or porcelain insulators and it is extremely difficult to analyse export statistics that are provided in a summarized form.
 - e. The data for excluded products is incomplete, as it not even up to the POI. Therefore, such incomplete data cannot be relied upon. UN Comtrade data shows that glass insulators are being re-exported from India, while it is an admitted fact that the Domestic Industry does not manufacture the same. It is prayed that the imports from China and the market size of India should be determined only after making adjustment for re-export of such imported goods.
 - f. M/s. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd. (producer and exporter in China) and CCCME claim that electrical insulators are not homogeneous, as all insulators have different end-use, physical characteristics such as size, capacity, etc., and differ widely for every type of insulator. Insulators find use in:
 - i. Power transmission and distribution lines
 - ii. Power sub-transmission lines
 - iii. Circuit breakers
 - iv. Disconnectors
 - v. Power sub-stations
 - vi. Instruments & Transformers
 - vii. Railways
 - g. An objective examination of dumping, injury and causal link, which is mandatory under domestic law as well as WTO AD Agreement requires an apple to apple comparison rather than a comparison of one basket of products with another basket of products. It is argued that bundling electrical insulators of all capacities together as a single PUC is improper and incorrect in view of the significant differences in capacity and other features of the subject product.
 - h. To buttress their arguments, the interested parties rely on practices in other countries such as EU and USA, where, in anti-dumping investigations specifically concerning electrical insulators, the PUC was based on physical, technical and chemical characteristics of the product, their main use, and application, degree of substitutability and consumer perception. For example, in the US anti-dumping investigation No. 731-TA-1023 concerning Electrical Insulators, the product scope was restricted to 'High and Extra-high Voltage Ceramic Station Post Insulators'. Reliance is also placed on WTO Panel Report in DS 54/55/59/64 in Indonesia-Certain Measures Affecting the Automobile Industry wherein, the WTO Panel refused to bundle all passenger cars in one basket holding that though the passenger cars might share basic physical characteristics and end-use, they are highly differentiated products, which may vary greatly in terms of size, weight, engine power, technology and features.
 - i. Bundling all electrical insulators in one umbrella is improper as it is impossible for interested parties to make submissions on the standing of the domestic industry, like article determination, determination of dumping margin by taking weighted average of normal value and export price, address injury claims, etc. Even the domestic industry describes different electrical insulators as distinct in its brochures and on its websites. The exporter and interested parties have also provided a detailed write-up on different electrical insulators.
 - j. Electrical insulators are not homogeneous, as all insulators have different end-use, physical characteristics such as size, capacity, etc., and differ widely for every type of insulator. They are not technically or commercially substitutable to each other.
 - k. Electrical insulators of capacity 765 KV and insulators for HVDC lines be excluded from the purview of the investigation as only a few constituents of the domestic industry produce the above-mentioned electrical insulators. M/s. Modern Insulators and M/s. IEC have not adduced any reliable evidence to substantiate their ability regarding production of above-mentioned electrical insulators.

- l. The Authority has had a consistent good practice of defining products separately in a single investigation based on factors such as kinds of products, end-uses, physical and chemical characteristics, consumer perception, etc. and the same practice be followed in the present case, too. Reliance is placed on below mentioned investigations where different goods in PUC were completely distinct and were not technically or commercially interchangeable. These instances are:
 - i. Anti-dumping investigation concerning imports of 'Certain Phosphorous based chemical compounds originating in or exported from China PR & European Union
 - ii. Anti-dumping investigation concerning imports of 'Rubber Chemicals' viz. MBT, CBS, TDQ, PVI and TMT from China and PX-13 from China and Korea RP
 - iii. Anti-dumping investigation concerning imports of catalysts from Denmark
- m. In these investigations, the scope of the PUC was segregated in different products and a separate examination of dumping, injury and causal link between import of the products and injury to domestic industry was carried out.
- n. M/s. Trench High Voltage Products Ltd. ("THVS"), Shenyang, China is a producer of bushing and M/s. MWB (Shanghai) Co. Ltd., Shanghai, China ("MWB") is a producer of SF6 insulated voltage transformer for gas-insulated switchgears from China PR. THVS and MWB were listed as known producers/exporters of the subject goods in the petition. Both companies received the letters dated 9th September, 2013 from the Authority regarding the subject investigation.
- o. On receipt of letters from the Authority, both companies closely reviewed their products exported to India during the POI and came to the following conclusions:
 - i. THVS did not export any electrical insulators to India but exported only bushings to India during the POI. THVS has provided its product list that was exported to India during the POI.
 - ii. MWB did not export any electrical insulators to India but exported only voltage transformers to India during the POI. MWB has provided its product list that was exported to India during the POI.
- p. THVS and MWB have collectively sought clarification regarding the scope of product under consideration and for specific exclusion of their products from scope of product under consideration by their submission dated 15th January 2014.
- q. Electrical insulators are components used for manufacturing bushings, which fact is also acknowledged in the petition filed by the domestic industry. On the other hand voltage transformers are completely different from electrical insulators. Besides, insulators used in the voltage transformers are hollow composite insulators, which have already been excluded from the product under consideration by the Designated Authority.
- r. Detailed differences between the subject product, bushings and SF6 Voltage Transformers have been provided by THVS and MWB. It is clear from the discussion that electrical insulators are used as an essential component for manufacturing bushings and voltage transformers, and it would not be possible to manufacture bushings and voltage transformers without them.
- s. In light of the significant differences in usage, end-customers, inputs, production process, etc., it is clear that bushings and voltage transformers are different from electrical insulators and not technically and commercially substitutable. THVS and MWB anticipate that customs authorities may impose anti-dumping duty to their above-mentioned products when exported to India. Therefore, they have requested the Authority to specifically exclude bushings and voltage transformers from the scope of the product under consideration.
- t. Further, parties have argued that the Authority may issue corrigendum to clarify or amend the PUC. Earlier instances where corrigendum were issued to clarify PUC scope include
 - i. Anti-dumping investigation concerning imports of Phosphoric Acid from China PR
 - ii. Anti-dumping investigation concerning imports of Certain Grade Alloy and Non-Alloy Steel Billets, Bars and Rounds from Russia, China PR and Ukraine
 - iii. Anti-dumping review investigation concerning imports of Oxo Alcohols from Poland, South Korea, Indonesia, Saudi Arabia, Russia, Iran, USA and European Union
 - iv. Mid-term review anti-dumping investigation concerning imports of certain types/grades of alloy and non-alloy steel billets, bars and rounds from Russia and China PR.
- u. Goldstone Infratech Limited claimed that Polymer/Composite Insulators have similar functions and uses to Glass and Porcelain Insulators and hence, are being utilized interchangeably by customers in the market. The Domestic manufacturers of Composite/Polymer Insulators are also suffering due to imports of such from China. Therefore, ADD should be imposed on all Electrical Insulators from China, be it porcelain or glass or Composite/ Polymer.
- v. Ceramic and glass insulators are not like articles due to differences in raw material, production process, time taken to produce the insulator, cost of raw materials (for Glass insulators is around 600 RMB/Ton, whereas Porcelain Insulators cost around 910-1160 RMB/Ton), weight, performance, tonnage, life, Customs classification, etc.

- w. Ceramic and Glass insulators are not “Like Article” within the meaning of definition in Article 2.6 of WTO Anti Dumping Agreement for the following reasons:
- (i) The raw materials used are different
 - (ii) The production process is different for Porcelain insulators and Glass insulators.
 Porcelain insulators:- Porcelain insulators are produced through shaping-drying-glazing-sintering process. Raw material heated for 14 days at 850 degree C. It takes around 45 days in the manufacturing process.
 Glass insulators: Raw materials are melted at 1450 degree C. undergoes fusion mould pressing toughening and high pressure air cooling. No curing process. Can be produced in 1 day.
 Difference becomes crystal clear on physically watching the two distinct production processes.
 - (iii) Cost comparison and technical characteristics comparison shows differences
 - (iv) Customs classification Glass: HS Code 854610; Ceramic: HS Code 854620
 - (v) Glass insulators are not manufactured in India
 - (vi) Therefore, products are not technically and commercially substitutable.
- x. The relevance for exclusion of certain products is found in the case of AD investigation of Cold Rolled Flat Steel Products of Stainless Steel from China, Japan, Korea, EU, South Africa, Taiwan, Thailand and USA where following broad principles were adopted
- i. Where the production process pleaded by interested parties results in a different product where the distinctiveness can be established with clarity and precision
 - ii. Whether the DI is manufacturing/supplying such distinctive items at all during the POI
 - iii. Whether grades manufactured by DI for POI are equivalent to grades considered for exclusion.
 - iv. By adopting these principles to present case, it is evident that glass and ceramic insulators are not like articles
- y. Judicial Pronouncements on exclusion of grades not produced by DI
- (i) Birla Periclase v DA (2000 116 ELT 336 Tribunal):
“Fused Magnesia not interchangeable with sintered Magnesia therefore not like product”
 - (ii) Indian Refractory Makers Association v DA (2000 119 ELT 319 (Tribunal)):
“If dumped import does not or is not capable of causing injury to DI, imposition of ADD is not warranted”
 - (iii) Oxo-Alcohol Industries Association v DA (2001 130 ELT 58 Tribunal Delhi):
“Normal Hexanol not produced or manufactured by DI. So its import cannot cause injury to DI”
 - (iv) Magnet Users Association v DA (2003 157 ELT 150 Tribunal Delhi):
“There is no justification for including grades of ring magnets which are not produced in India for the purpose of imposition of ADD”
 - (v) Videocon Narmada Glass v DA (2003 151 ELT 80 Tribunal Delhi):
“We cannot hold that imported Strontium Carbonate in granular form is in commercial competition with domestically produced strontium carbonate in powder form...therefore clear that imported article is not capable of causing injury to DI”
- z. The Authority by its letter dated 11th February 2014 requested all interested parties to submit supplementary information by 21st February 2014. Such supplementary information requirement was arrived at after discussions with the Domestic Industry. M/s. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd. expressed their objection to the Authority’s request and submitted their data by the due date under protest reserving their right to challenge the same. M/s. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd. protested on the following grounds:
- i. Provision of data as per new format in such a short span of 10 days is an exercise in haste and puts an onerous burden on the interested parties;
 - ii. The Domestic Industry has now conceded that due to the different product types involved, it is not appropriate to determine dumping margin and injury margin on the basis of weighted averages. The Domestic Industry should have ideally followed this procedure at the time of filing their petition;
 - iii. Initiation of the investigation based on the Domestic Industry’s data itself is questionable as the Authority has now found that data as inappropriate and has requested all interested parties to submit data afresh. Initiation based on such inappropriate evidence falls short of the adequacy and accuracy requirements under the WTO Anti-dumping Agreement;
 - iv. The Authority has not provided Domestic Industry’s amended petition, which would have already been filed with the Authority based on the Authority’s aforementioned request for data. M/s. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd. is not able to provide its data without perusal of the amended petition, as it requires the amended petition to analyse for like product and directly substitutable product.

- v. The Authority should have formulated a PCN system to identify products as per various characteristics, since this investigation includes a number of different types of products. Till this stage, the Authority has not done that.
- vi. The Authority's request to provide data afresh is akin to preparing fresh questionnaire responses for which 40 days' time should have been granted, as it requires refilling and revising all appendices of the questionnaire.
- vii. Introducing new and onerous procedural requirements at this stage of the investigation is a violation of principles of natural justice and denies procedural due process to M/s. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd.
- viii. In the alternative, the Authority may terminate this investigation and initiate a fresh investigation after identifying the correct product scope in an appropriate and adequate manner.
- aa. In reply to the letter dated 11 February 2014, M/s. Zigong Sediver Toughened Co Ltd, M/s. Sewdiver (Shanghai) Co Ltd and Sediver S A (France) stated as follows
 - i. Exporters have filed complete data regarding product type as part of sales and cost data. Further detailed breakdown of the basic product code has also been provided as the initiation notification or the communication of the Designated Authority has not mentioned any specific PCN.
 - ii. Unless the information like transaction wise entries of the import data, Normal value, cost, dumping margin, injury margin and causal link based on requested parameters is not provided by the domestic industry, it is inequitable that the opposing parties are being made to undertake such a cumbersome exercise
- bb. The Petitioners are not producing Insulator $\geq 420\text{kN}$ even though the demand for such goods exists in the Indian market. The Petitioners are also not known to have the capability to produce Insulator $\geq 420\text{kN}$. They generally supplied insulators in the range of 70 kN to 300 kN. Due to non-availability of Insulator $\geq 420\text{kN}$, users have to import the same.
- cc. As the Domestic Industry has not the ability to supply Insulator $\geq 420\text{kN}$ in domestic market, where is the injury suffered regarding Insulator $\geq 420\text{kN}$ claimed by Domestic Industry?
- dd. Prices differ greatly depending on the exact specification of insulators. Each insulator is ordered for a very specific function and one insulator cannot be replaced by another that is not exactly alike in all respects such as rated E&M failing load.
- ee. As the kind of designed product, that whether a machine is imported or domestically purchased the most important consideration for purchase is "technical ability". Thus buyers like Power Grid Corporation will provide their required technical specifications to the company that can manufacture insulators as per the technical specification is given the order. The quality, the ability of a manufacturer to honor delivery schedules and its ability to even manufacture the specific insulators required are critical deciding factors that play a major role in the purchasing decisions.
- ff. Insulator $\geq 420\text{kN}$ is not 'like product' when we compare it with the product under consideration as it has many differences. One cannot really say that an Insulator $\geq 420\text{kN}$ is similar to an insulator with rated E&M failing load of 210KN. Insulator $\geq 420\text{kN}$ should therefore be excluded from the scope of investigation.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties post issuance of preliminary findings

- 4. The interested parties have raised following additional issues with regard to the product under consideration after issuance of preliminary findings
 - a. There are Grave errors in concluding that all insulator comprise of single product, glass and porcelain as like article and clubbing of all kinds of insulator.
 - b. There are contradicting statements regarding the following
 - i. No indication as to what national and international standards have been used to conclude glass and porcelain as like article
 - ii. If glass insulators are not produced in India then how production process has been analyzed. No reference to any literature or source used.
 - iii. Different conclusions regarding production technology, end user requirements
 - c. Reliance on website should be disregarded and actual evidence on production should be taken
 - d. Lumping of all insulators is incorrect. Referred US case on insulators
 - e. Insulators are not homogeneous
 - f. If cost and price are different and not within the same range, appropriate adjustments needs to be done while comparing
 - g. DA to demonstrate independent application of mind while determining PCN. No opportunity was provided to interested parties to comment on PCN.
 - h. Statement that none of the parties provided comments on PCN is false.
 - i. Merely because the data was filed cannot be concluded that exporters have no objection to PCN

- j. If there are price and cost differences between both the products which are substantial and not within the same range, the Designated Authority should consider doing an appropriate adjustment of prices while comparing the same
- k. Based on experience of producing both kind of insulators, Exporters submit that there is a substantial difference in cost and operational expenses associated with porcelain and glass insulators.
- l. Glass insulators are less vulnerable to being used as defective material since any small damage to the insulators will lead to the insulator glass shell shattering automatically. Defective insulators are highly unlikely to be used in any installation
- m. Practically no incidence of decapping for glass insulators. Porcelain insulators have a number of decappings required on a regular basis This not only increases maintenance costs significantly but also interrupts the functioning of the power supply infrastructure
- n. In graphite Electrodes, the authority has allowed for an adjustment on quality even though the raw materials, production process and physical characteristics of the product under consideration were the same. It is a common practice in EU as well. An adjustment is only accepted if it is demonstrated that the differences affect the price charged to customers or the use of the product
- o. It is cheaper for the users to deploy glass insulators as compared to ceramic insulators due to the difference in operational and maintenance cost
- p. In the present case, the difference arises as a result of lower operational and maintenance costs. For the purposes of injury margin and dumping margin for glass insulators, the Normal Value and NIP should be reduced to the extent of this difference between the two insulator types while making the comparison.
- q. The methodology used to arrive at the PCN is deficient and in violation of its quasi judicial status. The language used in the Finding does not appear as if the Designated Authority, at the time of accepting these parameters from the domestic industry, has conducted any analysis or assessment of its own before deciding to employ these parameters. Requested to demonstrate independent application of mind.
- r. The domestic industry suggested three parameters for the comparison methodology which were promptly accepted by the Authority without any actual examination as to whether these parameters are acceptable. Authority is an investigating authority and being a quasi judicial body to discharge the duties by taking the views of the interested parties and consequently examine the evidence provided in support of the parties' claims
- s. Nowhere in the content of the above letter or any other communication of the Hon'ble Designated Authority, has it asked the interested parties for their views regarding comparison methodology. This denial of an opportunity to comment is not only violative of the principles of natural justice; it is also contrary to the past practice
- t. Objections of the Exporters Ignored by the Designated Authority. Further Exporters had no choice but to file the information in order to remain cooperative in the investigation. However, merely based on the fact that such data was filed, the Hon'ble Designated Authority cannot conclude that the interested parties had no opposition to the parameters selected and methodology employed in selecting the parameters.
- u. There is no supporting evidence that the domestic industry actually produces the products listed in the petition and complete details such as size (height, width, weight etc), type (low voltage, high voltage, extra high voltage etc), range (voltage range, application range), models, etc. The burden is on the petitioners to provide complete information supported by the evidence outlining the product scope that each constituent of the domestic industry is capable of manufacturing. The information in website is neither complete nor authentic.
- v. Lumping Electrical Insulators of all capacities in one single product is incorrect in view of significant difference in capacities and other features. Referred US case on insulators
- w. Lumping porcelain/ceramic and glass into one PUC would lead to incorrect conclusion
- x. Insulators are not homogeneous product. Different insulators serve different end-use requirements. They are not technically or commercially substitutable to each other. The authority may seek information from BHEL, which is a public sector. It will show that there is difference in machinery, technologies, production process etc. Infact BHEL manufacturers hollow and disc insulators in different premises.
- y. Difference in production process of glass and ceramic insulators. While production process of porcelain takes 45 days, glass insulators can be manufactures in just one day. Request the authority to visit the factory of the exporters to determine difference in production process.
- z. PGCIL during hearing stated that they treat glass and porcelain insulators as two distinct products and prefer glass over porcelain. Only to provide opportunity to the domestic producers, they float tenders with an option to supply porcelain insulators.
- aa. As Indian manufacturers have limited manufacturing capacity and operational experience and imposition of anti-dumping duty may lead to capacity limitations, insulators for 765KV AC, 800KV HVDC and above voltage class and electromagnetic strength of 420 KN and above may be excluded
- bb. Treating of glass and porcelain as like article would not be appropriate and should be treated separately
- cc. The cost of raw materials for Glass insulators is around 600 RMB/Ton, whereas Porcelain Insulators cost around 910-1160 RMB/Ton.
- dd. Cost and price of glass insulator is much lower than porcelain and hence imputing normal value of porcelain to glass has inflated dumping margin
- ee. Cases such as Birla Periclase V DA (Anti Dumping) [2000 (116) ELT 336 Tribunal]; Indian Refractory Makers Association V DA [2000 (119) ELT 319]; Oxo Alcohol Industries Association V DA [2001 (130) ELT 58 (Tri.-Del)] ; Magnet Users Association V DA [2003 (157) ELT 150 (Tri. Del)]; Videocon Narmada Glass V DA [2003 (151) ELT 80 (Tri. Del)] have been quoted where the CESTAT had given judgments based on exclusion of certain products from the scope of investigations as they were not manufactured by the DI. Hence, Glass Insulators are not Like Articles to Porcelain Insulators.
- ff. 800KV hollow insulator for instrument transformers, but encountered breakage of insulator and the insulators were found not usable. Since Sep 2013, have been working for developing the correct design but have not been successful. Therefore have no option but to source from China.

- gg. For recent requirement of high strength post insulator for use with AC filter capacitor in 800KV HVDC project, Indian suppliers have regretted their ability to quote. We have no option to quote from outside India or from China.
- hh. ABB import small quantities for the reason (1) to obtain certain voltage grade of insulator that are not available domestically (2) to minimize risk resulting in limited sourcing option as it is our policy of having multiple sources.
- ii. Imports are of solid core type and disc type but not of hollow type of insulators. Therefore no anti-dumping duty on hollow type of insulators.
- jj. Information regarding size, type, model and range of the product under consideration is absent in the petition. The petitioners have made reference to the website, but the website only provides general description of the goods and information as to size, models, type of subject goods is not available.
- kk. HS code 854620 includes various products apart from product under consideration therefore it is essential that line by line export statistic to be analyzed. Summary of export statistics would be misleading. Requested the authority to provide line by line export statistics. 87% of the imports during period of investigation is of glass insulators which is not produced in India.
- ll. Inconsistency in data as the petitioner has relied on China customs for import statistics and for excluded products they have relied upon DGCI & S. The fact that this data was relied on in safeguard findings is no justification and more so the data used there was not of POI.
- mm. Powergrid has some major construction projects at hand currently, whose completion at the earliest is required to fulfill the transmission infrastructure requirement of the country. For these, Powergrid gives out multiple contracts. Requirement of insulators in the future is expected to be another 50 lacs approximately, major quantity being for 765 KV transmission system.
- nn. Indian producers do not have the necessary capacity to meet the high requirements of Powergrid. Also, the participation by Indian producers, in the bidding conducted by Powergrid for the handing over of insulator procurement tender contracts, is limited.
- oo. During the bidding of approx. 40 Lacs insulators, conducted in July this year, only two Indian producers, namely Aditya Nuvo and BHEL participated. Out of these two also, BHEL, have been facing capacity constraints and of their admission, have not been able to deliver order placed on them. Part of the order placed on BHEL had to be procured from other places. This makes Aditya Nuvo as the only competitive bidder, and it has subsequently been given all orders after the imposition of the ADD. The total value of the orders is more than Rs. 120 Crores with additional financial implications to the tune of Rs. 50 Crores, on account of the ADD.
- pp. A single-party bagging all orders not only signifies a lack of competition but is also extremely risk-oriented. If this only supplier stops operations due to technical faults or any other reason, all the ongoing transmission infrastructure projects will come to a grinding halt. The risk is immense without any fallback option.
- qq. The domestic manufacturers who have filed the current Petition for imposition of ADD have not participated in any bidding off-late. Thus, an imposition at the behest of this Petition will only benefit one or two parties. The larger losses will be suffered by the public who will have to bear the burden of additional tariff.
- rr. Clubbing of insulators ranging from 1 KN to 420 KN to arrive at the unit rate (per MT) irrespective of the voltage class for assessing injury margin to Indian producers adopted in the Preliminary Investigation is not a technically correct methodology. The figure given in the preliminary findings are not reflective of the actual position so far as the insulators for higher rating are considered, Also, actual cost is up to 1.5 times the cost considered in the preliminary findings. A more appropriate methodology would be categorizing higher and lower voltage insulators and separate determination and subsequent to this, a comparative analysis. As the insulators of higher mechanical strength and higher voltage level which require higher standards of testing, quality and performance would be much more costlier even if the unit price is calculated on per metric ton basis.
- ss. In case of those contracts which have been awarded prior to the levy of ADD, the deliveries of whom will occur post the imposition of the ADD, the ADD will not act as a protective measure for the DI, instead, it will only result in higher costs of imports to Powergrid and subsequently will affect the public who will be affected due to the enhanced tariffs. In view of this, Powergrid should be exempted from this ADD by issue of an exemption certificate by the Designated Officer.
- tt. While developing methods for protection and development of the DI the following should be stressed upon:
 - i. Capacity limitations of the DI to cater to the demand of insulators of a particular type (voltage).
 - ii. Separate categorization of insulators while determining the quantum of ADD.
 - iii. Appropriate value of Injury Margin.
- uu. Further the DI should take up capacity addition and more domestic producers should participate in the bidding conducted by Powergrid instead of the situation of one supplier bagging all contracts.
- vv. Even if the different types of insulators are found to be under one broad category of products, the comparison methodology should take into consideration the technical and commercial differences as well as the cost differences into consideration and make appropriate adjustments to make them comparable for the purposes of like article test.

- ww. The Petitioners' claims that they are capable of producing and selling all types of the goods in consideration is not supported by any strong evidence establishing the same. The DI Petitioner thus, should be instructed to provide a non-confidential version of the relevant evidence to establish the veracity of this claim.
- xx. The domestic industry is clearly not capable of catering to the demand of the Indian consumer industry.
- yy. Due to limited capacities, the domestic industry members (except BHEL) are unable to produce higher KV insulators to the extent required, with voltage of 765 KV and above i.e. electromechanical strength of 420 KN and above. even though there is a capability to produce insulators of 420 KN and above, it is nowhere near sufficient to meet the demand of the country.
- zz. Contrary to the claims of the DI regarding that that Glass Insulators and Ceramic Insulators are like products, both users that appeared for the hearing clearly stated that ceramic and glass insulators are completely different. In fact, PGCIL, which is the largest user in India, clarified that it would prefer to purchase glass insulators since they have lower operational and maintenance costs. However, in order to benefit the domestic industry the users also include ceramic insulators in their tender requirements.
- aaa. There is a substantial difference in cost and operational expenses associated with porcelain and glass insulators. For instance, glass insulators are less vulnerable to being used as defective material since any small damage to the insulators will lead to the insulator glass shell shattering automatically. This implies that defective insulators are highly unlikely to be used in any installation. Further, glass insulators have an advantage over porcelain insulators since there is practically no incidence of decapping for glass insulators. Comparatively, porcelain insulators have a number of decappings required on a regular basis. This not only increases maintenance costs significantly but also interrupts the functioning of the power supply infrastructure. Further, it is cheaper for the users to deploy glass insulators as compared to ceramic insulators due to the difference in operational and maintenance cost.
- bbb. The HS Code classification may not require a segregation of the product scope, but combined with a difference in consumer perception and operational costs, the difference in HS classification should be sufficient to indicate that a necessary adjustment must be made while comparing the ceramic and glass insulators for dumping and injury.
- ccc. The Petitioners have contended that composite insulators ought to be excluded. The Exporters in the present case have provided all the relevant information at the time of filing the Questionnaires as well as for the PCN related sales and cost when instructed by the Hon'ble Designated Authority. Therefore, the Exporters have in no way refused access to or not provided any information, nor have they impeded the investigation by withholding information.
- ddd. Petitioners' contention is based on various factors such as raw materials, cost of production, selling price etc; however, even glass and ceramic insulators have different raw materials and production processes, selling price etc but the Petitioners have conveniently found that they are comparable, while composite insulators are not.
- eee. It is incorrect and misrepresentative of the Petitioners to claim that no appropriate product coding information was provided by the Exporters. The Exporters, filed Appendices 1, 2, 8, 8A and 8B with complete information on product types, product codes and characteristics. Additionally, the Exporters also filed a detailed sheet explaining the various product codes as per the internal coding system of the Exporters.
- fff. The Petitioner has contended that the exporters have resisted in providing relevant information. The Exporters in the present case have provided all the relevant information at the time of filing the Questionnaires as well as for the PCN related sales and cost. The Exporters have raised objections only on the *process and procedure* followed in the present investigation which continues to suffer from severe lacunae.
- ggg. Almost 87% imports are of glass insulator which is not even being manufactured by the DI. The DI is trying to seek protection against imports of a product which it itself does not produce.
- hhh. Glass insulators being imported by the interested parties are completely different from porcelain insulators in terms of various parameters such as, raw materials required, production process and time etc. Power Grid and ABB Ltd. the domestic users of the imports have also affirmed the fact that the two are different, however, in order to give support to the DI, both the users placed glass and porcelain insulators in the same tender. The two major domestic users have further clarified that the imported glass insulator is of superior quality than the domestically produced good and the DI have not upgraded their manufacturing facilities to become capable of manufacturing glass insulator.
- iii. Out of the DI, only one producer, BHEL, manufactures 765 KV HVAC and 800 KV HVDC electrical insulators and electrical insulators of mechanical strength of 420 kN and above. But BHEL does not have adequate capacity to meet the entire demand of the Indian market. BHEL participates in the bidding concerning the insulators with specifications given above whereas the rest of the DI does not participate in the tender biddings due to the fact that the concerned goods are not produced by the remaining DI (besides BHEL). As such, the DI is claiming injury for the imports of a product not even produced by it, except BHEL who is already awarded a tender and is at the stage of supplying the same to Power Grid. Thus, if BHEL is not aggrieved from the dumping and is being able to supply the subject goods, the remaining DI cannot claim injury on the same.
- jjj. In case where (i) electrical insulators are of different types (ii) electrical insulator are manufactured by different raw material and different production process; it is an admitted fact that comparison and examination of various count cannot be carried out in objective manner. Strongly objects to clubbing of various kinds of insulators.

- kkk. Glass insulators not being produced by the DI and insulators up to 400 kV which are exclusively being acquired by the DI by the users should be excluded from the PUC in the current investigation.
- lll. Polymer insulators are different from porcelain insulators as claimed by the DI. This observation of the DI has been based on certain parameters. However, the DI has disregarded the same parameters while comparing glass and electrical insulators. The two are different as per international standards, testing and performance etc.
- mmm. If investigation continues then (i) glass insulators (ii) electrical insulators upto 400Kv (iii) higher voltage electrical insulator such as 765 KV HVAC, 800 KV HVDC and above (iv) electrical insulator of high electromechanical strength from 420KN and above should be excluded.
- nnn. As regards treating of all kinds of insulators as one article, The DA is not bound to follow the US/EU investigations cited by the DI. The products and facts of the cited investigations are completely different; they are of no persuasive value in the current investigation. And also, the DI has included all types of electrical insulators creating a skewed picture.

Views of the Domestic Industry before Issuance of preliminary findings

5. The domestic industry has made the following submissions with regard to the issue of the product under consideration.
 - a. An insulator can be either of porcelain/ceramic or of glass. Porcelain Insulators are produced using clay, silica, alumina, feldspar and metal parts, while glass insulators are produced using silica and metal parts. Both constitute one article, considering the characteristics of these two types, manufacturing process, functions, uses and prices. In fact, the product is a technology neutral product. Power Grid Corporation has floated tenders for procurement of insulators which can be of Glass or Porcelain. The Corporation has placed no distinction between glass and porcelain insulators and has placed orders solely on the basis of price difference. The Corporation has not made any technical distinction between the two products. Further, the product is sometimes invoiced by the suppliers without reference to glass or porcelain. The commercial invoice available in respect of manufacturers of glass insulators does not refer to glass. Import data of the product under consideration also at several instances does not refer to glass.
 - b. Both porcelain/ceramic and glass insulators have the following characteristics:
 - i. The national/international standards for dimensions/testing are the same.
 - ii. The dimensions are the same.
 - iii. The cap and ball pin material are the same.
 - iv. Major steps in manufacturing like shaping of the products, vitrification (raw insulators are to be passes through heat fusion to make into a glassy substance) and assembly are the same.
 - v. The cement used for assembly is the same.
 - vi. The assembly process is the same.
 - vii. The curing process is the same.
 - viii. All type/acceptance/routine tests are the same except those that characterize the raw materials used.
 - ix. Packing type is the same.
 - x. Electrical/Mechanical/Thermal stress requirements are the same.
 - xi. Performance requirements are the same.
 - c. The major steps involved in the manufacturing process of glass/porcelain are raw material mixing, slurry preparation (in ceramic/porcelain) and melting (in case of glass), molding, shaping, drying, metal assembly and testing. The production process in respect of glass insulator is similar to the production process in respect of porcelain insulator. However, the technology involved is to some extent different in view of difference in raw material.
 - d. There is no known difference in subject goods exported from China and that produced by the petitioner companies. Porcelain/ceramic insulators produced by the domestic industry and imported from China are like articles and comparable in terms of essential product characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. Consumers can use and are using the two interchangeably. The two are technically and commercially substitutable.
 - e. As regards claims of exclusions of 765 KV and HVDC insulators, the fact that a particular product type is not produced by one of the constituents of the domestic industry is entirely immaterial under the rules. The industry is entitled to protection so long as the product has been produced and supplied by a constituent of domestic industry. Constituents of domestic industry have sufficient swappable capacity and can cater country's demand right upto 1200 KV As regards exclusion of 420KN, such insulators have been supplied by all major players of the domestic industry.
 - f. The petitioners have considered line by line import data for 854620 and excluded all those entries which are not product under consideration. The petitioners have not adopted summary statistics without eliminating non-product under consideration.
 - g. The petitioner has specified 6 digit classification for the product for the reason that petitioner has requested anti dumping duty on product under consideration which falls under 6 digit. A number of countries have not distinguished products differently based on voltage rating in their HS Codes systems. Thus, difference in voltage

rating in Indian customs classification does not mean that product types with different 8 digit HS Code are different products.

- h. With respect to TVHS and MWB being listed as exporters despite exporting condenser bushings and voltage transformers respectively and BHEL being the only domestic producer that manufactures them, condenser bushings and transformers are beyond the scope of the present petition and investigations.
- i. With respect to insulators used in voltage transformers being hollow composite insulators, it is accepted that composite insulators are beyond the scope of the product under consideration.
- j. With respect to the Authority issuing a corrigendum, the scope of the product under consideration can be clarified in the findings.
- k. Composite insulators constitute a distinctly different article for the reasons mentioned below:
 - (i) Composite insulators fall under a different category from Glass/ Porcelain insulators as per IEC (International Electrotechnical Commission) and are subject to separate IEC standards.
 - (ii) The raw materials, composition, manufacturing process, cost of production per kg, selling price for composite insulators is significantly different.
 - (iii) Polymer/Composite insulator technology is relatively young and these insulators have certain limitations, as regards uses. Polymer/composite insulators have not been developed so far for substation post insulator applications requiring higher bending strength. In some countries, Polymer/composite insulators are not usually preferred at voltages of 230KV and above or for high mechanical strength applications.
 - (iv) Consumers such as Power Grid Corporation have floated tenders wherein they have sought procurement of glass and porcelain insulators interchangeably, but separate tenders for composite insulator.
 - (v) Consumers such as Rajasthan State Electricity Board have floated a tender which include glass, porcelain and composite insulators. The bidders for composite insulators quoted for the entire quantities and their bid price was the lowest. However, the electricity board ordered composite insulators only for 10% of its total tender quantities. 90% of the order was placed on ceramic insulator suppliers.
 - (vi) Generally, composite insulator price per insulator is much lower (as much as 30-40%) than porcelain insulator prices. By contrast, glass insulator suppliers must offer a comparable price per insulator as compared to porcelain insulators if the supplier wishes to get the order.
 - (vii) Despite being significantly cheaper as compared to porcelain insulators, there are significant unutilized capacities of composite insulators with the Indian producers due to user preference for ceramic and glass insulators. Hence, composite insulators are commercially not substitutable with glass/porcelain insulators.
- l. Though different types of glass and porcelain insulators constitute a single product, the petitioners have already proposed segregation of the product under consideration into different types for the purpose of fair comparison. The exporters are required to provide separate information for different product types in their questionnaire responses.
- m. In Cold Rolled Flat Steel Products of Stainless Steel from China, Japan, Korea, EU, South Africa, Taiwan, Thailand and USA, relied on by the responding party, there was absence of identical article offered by the domestic industry. In the present case, specifications of the product supplied by the domestic industry are identical and the consumers have refused to pay any differential price for either of the product.
- n. The cases referred by the opposing interested party in fact support the contention of the domestic industry that if the product is used interchangeably and is in commercial competition with each other, then it constitutes one article and the Designated Authority is justified in including the two as one article.

Views of the Domestic Industry post Issuance of preliminary findings

6. The domestic industry has made the following additional submissions with regard to the issue of the product under consideration after issuance of preliminary findings.
 - a. All types of electrical insulators have same basic physical characteristics and the same uses and are sold via similar or identical sales channels. Therefore all kinds of insulators are considered to be the same product.
 - b. All major domestic players have sufficient swappable capacity and can cater country's demand right upto 1200 kV. Indian producers have already supplied significant volumes of 765 KV (more than 4 million) insulators in Indian market. All major players are fully equipped to service entire demand in the country
 - c. With regard to product classified in different HS Codes, the investigating authorities globally have considered scope of product under consideration to include products which fall under a large number of different HS classifications.
 - d. Perusal to the questionnaire responses filed by the above responding exporters it is found that these exporters have not identified the product type exported by them. Considering the product type exported by the responding exporters, petitioners proposed that identification and segregation of following properties would be sufficient to ensure fair comparison for the purpose of dumping margin and injury margin.

- e. As regards adjustments due to cost and price difference in glass and porcelain insulator, the petitioners have no objection to the same. Infact it is the argument of the petitioners that even when glass and ceramic insulators constitute one article, there are admitted differences in the weight of glass and ceramic insulators. The Chinese producers and their association themselves conceded that the weight difference between glass and ceramic insulator is at the least 27% and could be as high as 45%.
- f. As regards glass insulators are less vulnerable to being used as defective material, Power Grid is required to test 100% of the insulators being consumed by them by performing Meggar test. This test would readily identify a defective insulator whether of glass or porcelain.
- g. As regards decapping of porcelain insulators, The consumers of glass insulators have not identified this feature as a perceptible significant difference between the two products.
- h. As regards reference to graphite electrode case, The interested parties have rightly referred the said case where the authority considered that even though imported and domestic product are like article, the imported product could not be directly compared on per kg basis with the domestic product in view of the fact that the consumption of the imported product was higher as compared to domestic product.
- i. The consumers of the product have not established any such difference in operational and maintenance cost of glass insulator as compared to ceramic insulator. In any case, such difference in operational and maintenance cost are entirely immaterial to the Designated Authority for the reason that the Designated Authority is considering dumping margin determination at ex-factory levels of the exporters and injury margin determination at port/ex-factory level.
- j. As regards PCN methodology, none of the interested parties have established how the proposed PCN system is inappropriate. Nor, any interested party has suggested an alternate PCN system. The approach adopted by the interested parties should therefore be construed as an attempt to impede the investigations and should directly invite Rule 6(8). the verification was first conducted at the premises of the one of the petitioner companies, the sole objective of which was to have an understanding of the product and deciding on comparison methodology.
- k. The production process employed for production of two types of insulators is similar, with only some differences in technology. It is important to mention in this regard that production process employed by any two producers at micro level would always be different.
- l. The tenders floated by PGCIL clearly give an option to them to procure porcelain or glass insulators interchangeably depending on the relative price of the two products. As per the terms and conditions of the tender, if the value of porcelain insulator tender is lower, PGCIL will procure porcelain insulator; and, if the value of glass insulator tender is lower, PGCIL would procure glass insulators. Thus, it is established beyond doubt that PGCIL procures glass and porcelain insulators interchangeably for the same application.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

7. The product under consideration in the present investigation is electrical insulators of glass or porcelain/ceramic, whether assembled or unassembled. However, (a) telephone or telegraph insulators of voltage rating up to 1 KV, (b) electrical or electronic appliances/device insulators of voltage rating up to 1 KV, and (c) composite insulators are excluded from the scope of present investigation.
8. The petitioners have claimed that porcelain/ceramic insulators (classified under Customs Tariff sub-heading 8546.20) and glass insulators (classified under sub-heading 8546.10) are to be considered one article for the purpose of the present investigation. They have made this claim on the basis of the essential characteristics, functions and uses, pricing, distribution and marketing, and technical and commercial interchangeability of glass insulators and porcelain/ceramic insulators.
9. Rule 2(d) relating to the definition of "like article" specifies that "like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation, or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under investigation.
10. From the above definition of the term "like article", it is clear that the like article has to be identical or alike in all respects to the article under investigation. The scope of the term like article shall include those articles having closely resembling characteristics to those under investigation in the absence of articles identical or alike in all respects. Therefore, the usage of the words "in the absence of" is of critical significance for the interpretation of the term like article under the statute. There is no dispute that the words "in the absence of" have to be understood in the context of domestic industry alone whether there exists a "domestic industry" producing the "like article" or not. In other words, if there is no domestic industry producing identical article, the law permits the authorities to cover, in the scope of the term, even those articles which have closely resembling characteristics.
11. As regards inclusion of glass insulators within the scope of the product under consideration and treatment of glass and porcelain insulators as one article, as stated in the preliminary findings, the Authority has considered a number of parameters. It is reiterated that electrical insulators made of glass are not produced in India.

The domestic industry contended that electrical insulators made of both glass and porcelain falls in the category of ceramic insulators. The Authority notes that the mere fact that electrical insulators of glass are not produced in India does not imply that the same cannot be included within the scope of the product under consideration. The Authority is required to consider whether the domestic industry is offering like article to the imported product. The Authority therefore considered whether electrical insulators of porcelain produced by the domestic industry constitute like article to the imported electrical insulators of glass. The Authority therefore examined whether electrical insulators of both glass and porcelain constitute like article.

12. (a) It is noted that various national and international standards and tender documents of other countries, for example Sri Lanka–Bidding Document for NEPTDP–Employer’s Requirements Technical Specification for Transmission Lines–Insulators & Fittings, Peru–Guaranteed Characteristics for Interconexion Electrica ISA Peru S.A, Mexico–Comision Federal de Electricidad Reference Standard NRF-018-CFE–Porcelain or Tempered Glass Suspension Insulators, Saudi Electricity Company–Transmission Materials Standard Specification, Power Grid Company of Bangladesh Ltd.–Bidding Document for Transmission Line relating to glass and porcelain insulators; do not show any difference in the product specifications specified in respect of Glass and Porcelain Insulators. Tender documents of purchasers of the product have been provided by the domestic industry, which shows that the consumers do not differentiate in glass and porcelain insulators. The technical parameters for glass and porcelain insulators specified by the consumers are the same. The Authority examined the production process involved for production of porcelain and glass insulators and found that while some production processes are different, some processes are similar. Common processes between the two products include shape forming process, verification process, assembly process, curing process, testing process and packing methodology. It is however noted that there is difference in a number of raw materials and some part of the production technology. Production of glass insulator primarily involves molding molten silica into shape and thereafter fixing metal parts. In case of porcelain insulators, the clay is molded into the desired shape either pressing a clay mixture into the required shape or by shaping it using tools into the required shape. Metal parts are fixed thereafter. However, despite these differences, the eventual product is identical in terms of product properties. The Authority finds that the consumers consider the product as a technology neutral product. Domestic industry provided evidence showing that Power Grid Corporation floated tenders for procurement of insulators which could be of glass or porcelain with no distinction between the two and price being the sole criteria for placement of orders. The information on record shows that Glass and Porcelain Insulators perform the same function. The consumers have not disputed the fact that the Glass and porcelain Insulators are interchangeably used. It is also noted that there is no difference in the prices of the two insulators. In fact, Power Grid Corporation has placed orders with the sole criteria of prices and has not made any distinction between glass and porcelain insulators. The Authority thus notes that the two products perform the same function and are used interchangeably. Power Grid is one of the largest consumers of glass and porcelain insulators and has not disputed the claim of the domestic industry that porcelain and glass insulators are technically and commercially substitutable and the two have been interchangeably consumed by the company.
- (b) From the table below, it is noted that the imports of Glass insulator has increased significantly during POI as compared to the base year, however, the import of Porcelain insulator has decreased during the POI as compared to the base year. This indicates substitutability between glass and porcelain insulators. The Authority determines that glass and porcelain insulators constitute like article and duty will be recommended on insulator as a whole.

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2010-11	POI
Glass insulator					
Volume	MT	6,738	12,782	20,063	55,028
Porcelain insulator					
Volume	MT	9,544	13,594	15,718	7,416

13. As regards lumping electrical insulators of different types as one product, the issue was examined in detail in the preliminary findings. The authority has once again considered the submissions of the interested parties and notes as follows:—
 - a. Different types of Electrical Insulators are comparable in term of essential product characteristics including physical, production technology, manufacturing process, plant&equipment, functions & usage, etc.
 - b. Different product types serve the same general function of insulating conducting body from other conducting body.
 - c. While different insulators have different specific end applications, it is noted that all Electrical Insulators essentially perform the same function. Different categories/types are intended to meet different end-user requirements. The design and shape of the insulators differs as per the end -use requirements. For example disk insulator is used in transmission and distribution line whereas hollow and solid core are used in substation. However the operations and machinery necessary for manufacturing are essentially the same for all kinds of insulators.
 - d. Producers often make no distinction between Electrical Insulators, classified in different categories, with regard to production, distribution or accounting. Both domestic industry and Chinese producers have, for all their different categories/types of Electrical Insulators, a similar manufacturing process. Further, same distribution channels are used for all categories/types of Electrical Insulators.
 - e. The questionnaire prescribed by the Authority requires the exporters to provide information separately for each type of the product. It is however noted that while disputing the claim of the domestic industry in the petition to proceed with weighted average of various types of insulators, none of the exporters provided separate information for different types of insulators in their initial questionnaire responses, even though the prescribed questionnaire requires the exporters to provide a number of information separately for each type of the product. However, this information has been subsequently provided by the responding exporters, on being requested by the Authority.
14. As regards the argument that the information on product type, size, range, models, etc. is not available in the petition, the Authority notes that the petitioner provided details of various types of the product under consideration produced by them. Further, the petitioners have referred to their websites. It would not be appropriate to conclude that the information placed on websites of these companies in this regard is not sufficient for the purpose for which the Authority has sought this information in the application proforma. The interested parties have also contended that the information on various product types produced by the domestic industry were not made available in the petition. The Authority notes that quality and quantity of evidence improves as an investigation progresses.
15. As regards the contention that the petitioners should provide transaction by transaction details of exports as per China customs in order to facilitate proper understanding of the product, the Authority further examined the issue and notes that the detailed transaction by transaction details of exports as per China customs in any case contains description as given in customs tariff. Moreover, the questionnaire responses filed by the responding exporters show that only a few types of the product have been exported during the POI.
16. As regards the contention that the customs data adopted by the petitioners include every kind of glass or porcelain insulators, the Authority confirms the preliminary findings in this regard and notes that the petitioners have segregated imports of the product not forming part of the investigations on the basis of imports information obtained from Indian customs data. As regards the contention that the data for excluded product is not complete, the Authority has adopted the data for the POI in the present determination. It is also noted that the volume of imports of excluded category of the product is insignificant considering the total volume of imports during the POI.
17. The Authority considers that the similarities of all categories/types of Electrical Insulators, as far as their technical and physical characteristics as well as their application and end use are concerned, outweigh, for the purposes of these proceedings, any differences and therefore constitutes like article. However, for the purpose of dumping margin, price undercutting and injury margin analysis and in view of the submissions made by the interested parties, the Authority directed the domestic industry to provide separate information for different types of insulators. Domestic industry submitted that if the data is segregated considering the type of insulators, the mechanical strength and the polarity, it would be sufficient to differentiate and distinguish different types of insulators for the purpose of fair comparison. The domestic industry suggested categorization of the product under consideration into different types by considering following parameters
 - a. Type of insulator—The insulator can be disc, hollow, long rod, solid core, pin, and LT insulator.
 - b. Mechanical strength—The mechanical strength in the insulator can be of anywhere between 4 kN to 420 kN. Insulators above 420 kN have not been consumed in India so far. Further, for mechanical strength, insulators can be grouped as follows –

Disc insulators	a. Upto 90 kN b. 120 kN–160 kN c. 210 kN d. 320 kN–420 kN
Hollow insulators	a. Upto 5 kNm b. 5.1–10 kNm c. 10.1–20 kNm d. 20.1 kNm–30 kNm e. 30.1 kNm–50 kNm f. 50.1 kNm and above
Long rods	a. Upto 90 kN b. 120 kN–160 kN c. 210 kN d. 320 kN–420 kN
Solid core	a. Upto 4 kN b. 6 kN c. 8 kN d. 10 kN e. 12.5 kN f. 15 kN and above
Pin and low tension insulators	All mechanical strength

c. Polarity –The insulators can be used in AC or DC current.

Thus the Authority for the purpose of present investigation has used the PCNs bearing the type of insulators, the mechanical strength and the polarity.

18. The Authority requested the responding exporters to provide supplementary information and made available a copy of the submissions made by the domestic industry to other interested parties. While providing the said information, even though some of the interested parties pointed out to short time period given to them to provide supplementary information, the Authority notes that none of the interested parties raised any objection with regard to product segregation proposed by the domestic industry or have proposed any alternative for product segregation. The Authority thus notes that the interested parties in a way accepted the categorization proposed by the domestic industry and provided relevant information.
19. As regards the argument of interested parties that the Authority has called such information after filing of questionnaire response, such information should have been called at the stage of initiation itself, the time allowed to provide such information was too short, the amended petition filed by the domestic industry should be made available to all interested parties and the investigation should be terminated as the exercise was not undertaken at the stage of initiation, the Authority notes that the prescribed questionnaire requires the exporters to provide the said information separately for each product type and thus, the exporters were obliged to provide such information while filing questionnaire response. In fact, the prescribed questionnaire provides liberty to the interested parties to provide separate information for each type of the product, as deemed appropriate by such party filing questionnaire response. Further, the interested parties could seek additional time to provide the requested extra time, which could have been considered by the Authority appropriately. None of the responding exporters however sought additional time for providing the desired information and in fact all the responding exporters provided the desired information within the time given by the Authority. It is clarified that the domestic industry has not filed any amended petition. The domestic industry suggested product categorizations vide their letter dated 8th Feb., 2014, a copy of which has been made available to the interested parties. The Authority further notes that quality and quantity of evidence improves as an investigation progresses. The Authority has duly taken note of the argument of the interested parties that weighted average analysis of different types of insulators is not appropriate and has accordingly sought relevant information from the interested parties.
20. As regards the argument of evaluation and analysis of correctness of PCN proposed by domestic industry before accepting it by the Authority, it is clarified that the Officers of DGAD have conducted on site verification of the domestic industry which included product verification as well. The Authority after satisfying itself as to the correctness has accepted the PCN proposed by the domestic industry.
21. As regards the product scope considered by EU and USA, the Authority notes that the scope of the product under consideration adopted by the Authority need not be the same as the scope of the product under consideration considered by other authorities globally.

22. As regards the argument raised by opposing interested parties that different types of product are dislikes articles and investigations have to be conducted separately by considering different product. It is noted that in the instant case, the Authority has considered various types of electrical insulators as like article and therefore entire investigation must be conducted for electrical insulators as whole.
23. As regards M/s. Goldstone Infratech Limited request for inclusion of product Glass Fiber Silicone Rubber Insulators, being manufactured by them in the current investigation on the ground that their product is like or similar to Ceramic/Porcelains Insulators, the Authority holds that it would not be proper to extend the scope of the product under consideration to include this product type. While M/s. Goldstone Infratech Limited has contended that composite insulators and Glass/Porcelain Insulators are like articles, the Domestic Industry itself has submitted that these insulators are not like articles to the product under consideration. The Domestic Industry has further submitted that composite Insulators are quite different from Porcelain or Glass Insulators and constitute distinctly different article on the basis of various parameters such as raw material composition, manufacturing process, cost of production, selling price. The two are not technically and commercially substitutable. Composite Insulators have not been substituted with Glass/Porcelain Insulators and vice versa. The two have significant difference in price. The Authority also notes that the product under consideration in the present investigation is "Glass/Porcelain Insulators" from China PR and there is no justification to expand the scope of the product under consideration. It would therefore be inappropriate to extend the scope of present investigations to include composite Insulators.
24. Glass and Porcelain insulators are classified under customs heading 8546 under Chapter 85 of the Customs Tariff Act.
25. Request for exclusion: interested parties have argued on exclusion of certain type of Electrical Insulators which are further examined in details and the Authority notes as follows
 - a. As regards the argument on exclusion of 765KV insulator and HVDC on the grounds that all constituents of the domestic industry does not produce the same, the Authority notes exclusion of this insulator is not justified. It is not necessary under the law that each and every constituent of the domestic industry should produce all the types of product under consideration. Further, the domestic industry has provided copies of commercial invoices showing sale of this insulator by constituent of the domestic industry.
 - b. As regards request for exclusion of 'Disc Insulator for DC Transmission Line with Rated E&M Failing Load \geq 420kN', the Authority holds that evidence on record show that the constituents of domestic industry has produced and sold 420kN disc insulators and therefore it would not be appropriate to exclude this product type from the product scope.
 - c. As regards request for exclusion of condenser bushings and transformers, the Authority notes that condenser bushings and transformers are not within the scope of product under consideration. The domestic industry has also stated that the scope of product under consideration did not include bushings and transformers. However, the Authority hereby clarifies that the scope of the product under consideration and measures excludes condenser bushings and transformers. Since the Authority has not included bushings within the scope of the product under consideration, the argument of the interested parties in this regard have not been examined in detail.
26. As regards request for restricting the product scope to 6 digit level the Authority further examined the issue in detail and it is noted that the product under consideration in the present investigation is Electrical insulators of Glass, or Ceramics/Porcelain, whether assembled or unassembled, excluding (a) telephone or telegraph insulators of voltage rating up to 1 KV, (b) electrical or electronic appliances/device insulators of voltage rating up to 1 KV, and (c) composite insulators. The product under consideration does not have one dedicated six or eight digit customs classification. The purpose of customs classification is to identify the article liable for anti dumping duty. The Designated Authority is required to give description of the product which is sufficient for customs purposes. It is therefore necessary to specify the customs classification at six digit level. The purpose of specifying the customs classification is correct identification of the product under consideration at the time of imports and therefore if the product under consideration falls under a number of different customs classifications, the same are required to be specified. It is however clarified that any import reported under the HS code shall not be subjected to anti dumping duty merely because the HS code has been specified in the scope of the product under consideration and under anti dumping duty table. It is clarified that anti dumping duty being recommended is on the product description and not on HS classification. Any imports of a product not within the scope of the product under consideration should not be subjected to anti dumping duty merely because the HS code has been specified under duty table.
27. As regards the contention that the Authority should issue a corrigendum on the scope of the product under consideration, the Authority notes that there is no necessity for the same. The Authority has neither expanded nor

restricted the scope of the product under consideration. The mere fact that the Authority has now categorized the product into different types, the same does not imply a need for corrigendum.

28. As regards reference to the decision of the Authority in the matter of cold rolled flat steel products of stainless steel, the Authority notes that the broad principles listed in that case have been applied in the present case as well. It has not been pointed out by any interested party that there is some product type, like article of which is not offered by the domestic industry. The Authority notes that the properties of insulators whether made of glass or porcelain are similar, as is clearly established by the bids issued by Power Grid Corporation.
29. As regards decision of the CESTAT in the matters of Birla Periclase, Indian Refractory Manufacturers Association, Oxo Alcohols Industries Association, Magnet Users Association and Videocon Narmada Glass, the Authority notes that in the present case, the domestic industry has offered a product having characteristics closely resembling those of the product under consideration. In fact, Power Grid Corpn has considered that insulators made of glass and porcelain will have identical specifications.
30. On the basis of information on record and considering the submissions made by the interested parties, the Authority holds that there is no known difference in the subject goods produced by the Indian industry and those imported from the subject country. The two are comparable in terms of physical and technical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing, and tariff classifications of the goods. The two are technically and commercially substitutable. Consumers use the two interchangeably. Evidence provided by the domestic industry shows that the consumers are placing orders after specifying technical parameters of the product under consideration, where the supplies could be made either by the domestic industry or by the Chinese suppliers, so long as the product supplied meets the technical specifications. Thus, the suppliers sell the product conforming to the specifications laid down by the buyers. The questionnaire responses filed by the responding exporters show that they have supplied to same set of customers to whom the domestic industry has sold the product.
31. The Authority concludes that the product manufactured by the Applicants constitute like article to the subject goods being imported into India from the subject country.
32. As regards adjustments due cost and price difference in glass and porcelain insulators, it is also noted that customer are procuring glass and porcelain Insulator on the basis of prices. In view of the non availability of any reliable and verifiable data of glass insulators, the Authority has considered the Normal Value of Porcelain and Glass Insulator of the same level.
33. As regards operational and maintenance defects of porcelain insulators as compared to glass insulators including decapping, it is noted that PGCIL and other consumers are procuring both types of insulators interchangeably and procure solely on the basis of prices. The procurement procedure of electrical insulator by PGCIL requires both technical bid evaluation and commercial bid evaluation. The aspect of operational and maintenance cost which essentially is a component of commercial bid evaluation. Further only after meeting the prescribed technical standards, a company can take part in commercial bid.
34. As regards 800KV hollow insulator for instrument transformers, AC filter capacitor in 800KV HVDC project the domestic industry is capable of producing theses kind of insulators and has supplied to the consumer. One or two instances of non supply cannot lead to exclusion of the product type.
35. As regards the argument of PGCIL regarding the capacity constraints of the domestic industry, it is noted that if the exporters wanted to supply the goods to meet the requirement in Indian market that could be done by exporting the requirements at a price equivalent to normal value but not at a dumped value and to capture the market.
36. As regards reference to production process of glass insulators, it is noted that the producers and exporters have filed their questionnaire responses and the production process forms part of the same. The production process of glass insulators have been taken as per the responding exporter's questionnaire response and submissions of the domestic industry.
37. As regards exclusion of orders which are already placed by PGCIL and delivery of which are pending, it is noted that PGCIL was aware of the initiation of the investigation and still PGCIL rushed with issuance of tenders. Therefore PGCIL cannot claim ignorance at this stage and seek exclusion of the tenders issued. Further such approach is not consistent with the practice adopted by the designated authority.

Conclusion on product scope

38. In view of the foregoing, the scope of product under consideration for the purpose of present investigation and proposed measures is electrical insulators of glass or porcelain/ceramic, whether assembled or unassembled. However, (a) telephone or telegraph insulators of voltage rating up to 1 KV, (b) electrical or electronic appliances/device insulators of voltage rating up to 1 KV, and (c) composite insulators are excluded from the scope of present investigation. Further, it is clarified that bushings and voltage transformers are beyond the scope of the product under consideration and proposed measures.

C. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

39. Rule 2 (b) of the AD rules defines domestic industry as under:

“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”

40. The application was filed by Aditya Birla Nuvo Ltd. (‘Aditya Birla’), Bharat Heavy Electrical Limited (‘BHEL’), Insulators and Electrical Company (‘IEC’), Modern Insulators Limited (‘Modern’) and WS Industries (India) Ltd. (‘WSI’) (hereinafter referred to as the “applicants”) as domestic industry of the subject goods. Post initiation, the applicant has been supported by Indian Electrical and Electronics Manufacturers Association, Shreeji Power & Insulators Pvt. Ltd., Bikaner Ceramics Pvt Ltd, A.K. India Ceramics Pvt Ltd, Bikaner Porcelain Pvt Ltd., Allied Ceramics Pvt. Ltd., TarunaDechome Pvt. Ltd., Prime Insulators, Saravana Global Energy Ltd., Jaipuria Brothers, General Power co Pvt Ltd., Hindustan Chemicals, Rastriya Electrical and Engineering Corpn (hereinafter referred to as the ‘supporters’). Further, there are a number of other producers, apart from the applicants and supporters.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties before Issuance of preliminary findings

41. The interested parties have raised following issues with regard to the domestic industry.
- The domestic industry have not provided complete picture of the domestic industry as a whole. It is argued that market intelligence, based on which domestic industry has submitted information in the petition, is a highly arbitrary and a subjective criterion that falls short of the threshold of “positive evidence”, as required under the WTO AD Agreement.
 - The applicants do not constitute domestic industry under Rule 2(b) of the AD Rules and the WTO Agreement, as there are several other producers of the subject products in India having substantial production that do not find any mention in the petition. The interested parties place reliance on the Appellate Body Report of the WTO in DS 397–European Communities–Definitive Anti-dumping measures on certain iron or steel fasteners from China PR, wherein the meaning of the phrase ‘domestic industry as a whole’ was clarified. The Appellate Body held that:

“413. a major proportion of the total domestic production should be determined so as to ensure that the domestic industry defined on this basis is capable of providing ample data that ensure an accurate injury analysis.

419. ... a proper interpretation of the term “a major proportion” under Article 4.1 requires that the domestic industry defined on this basis encompass producers whose collective output represents a relatively high proportion that substantially reflects the total domestic production. This ensures that the injury determination is based on wide-ranging information regarding domestic producers and is not distorted or skewed...”

- Almost all producers of the subject products are members of the association IEEMA, which provides a list of all manufacturers on its website. A mere perusal of the list available on the website of IEEMA shows that there are many more producers of the subject product than the list provided in the petition indicates. Certain names of domestic producers that are missing include
 - Power & Control Transformers India Pvt. Ltd.
 - Raychem RPG Pvt. Ltd.
- The following are other prominent manufacturers of the subject products:
 - Rashtriya Electrical & Engineering Corporation
 - Pranya Associates
 - Hindustan Chemicals
 - General Power Company Pvt. Ltd.
 - Satraj Ceramics
 - Prime Insulators Pvt. Ltd.
 - Jaipuria Brothers Electricals Pvt. Ltd.

- e. The above-mentioned producers have substantial production capacity, comparable to each of the applicants. For example, M/s. Bikaner Ceramics Pvt. Ltd. has a production capacity of 9000 MT of electrical insulators, but this fact has not been disclosed by the petitioners.
- f. The domestic industry's standing should be examined in light of the above information and only then the Authority may determine whether to continue with the investigation.
- g. M/s. WSI be excluded from the purview of "domestic industry" as they have imported the subject product during the POI. WSI was also excluded in previous investigation concerning the subject product. In the alternative, it is argued that if WSI is not excluded, their data related to one of their units under an SEZ in Vishakhapatnam must be excluded from the purview of the investigation. Reliance is placed on the final findings issued by the DG Safeguards dated 27th September 2012 where WSI's SEZ unit was excluded.
- h. Furthermore, it is argued that M/s. Saravana Global Energy Ltd. and Sheerji Power & Insulators Pvt. Ltd. do not support the petition as averred by the petitioners, as their authorization letters indicating their support are not provided in the petition.
- i. The phrase major proportion means to include all producers in an organized sector and almost all in an unorganized sector.
- j. Review of price bids of PGCIL would show that domestic producers are undercutting the prices of each other and that cannot be attributed to imports. In such case how Authority can conduct meaningful investigation without the data of other producers. This cannot be brushed out by stating that other producers are selling at prices less than petitioners. Then they should have been the first to provide injury information.
- k. Any interpretation that the word "a major proportion" means there can be more than one major proportion is illogical and requested the Designated Authority to direct all the producers to provide financial information.
- l. Non confidential summary of the imports made by WSI has not been provided in the petition.
- m. WSI should provide data regarding unfinished imports and value additions done in India and sales of these products in India and abroad.
- n. The domestic producers that does not provide information has no standing in anti-dumping investigation.
- o. M/s. WSI Industries (India) Limited, which is forming part of DI is an importer of the subject product as established from previous investigation on the same product initiated on 9th April 2012. A similar finding is made in the initiation notice of the present investigation as well, but the Authority has erred in considering WSI as eligible Domestic Industry in the present investigation in violation of Rule 2(b) of the Anti-dumping Rules.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties post issuance of preliminary findings

42. The interested parties have raised following additional issues with regard to the domestic industry after issuance of preliminary findings:—
 - a. The domestic industry scope should exclude WS Industries since it is acting like an importer for low grade products.
 - b. Petitioner has not disclosed all the names of the other producers which otherwise are appearing on IEEMA website of which the petitioners are members. This is done to establish wrongly and in deceitful manner the standing. (provided names which are not included). Further requested to provide support letters of the companies mentioned in the preliminary findings.
 - c. Petitioners do not hold major proportion to constitute domestic industry.
 - d. WSI should not be included as constituent of domestic industry. WSI should provide data regarding unfinished imports and value additions done in India and sales of these products in India and abroad.
 - e. Arguments regarding standing not analyzed and not properly recorded:—
 - i. Applicants do not hold major proportion
 - ii. WSI could not be considered as eligible domestic industry
 - iii. No legal basis of accepting the assurance by WSI that it will not imports
 - iv. WSI SEZ data should be excluded
 - v. Major proportion means all producers in organized sector and almost all in unorganized sector
 - vi. Support letters to be placed in public file
 - f. Clear admission by WSI that imports made by them are not for testing but for trading.
 - g. Processing by WSI on imported product in limited to testing, repacking and fitting. No actual manufacturing or significant value addition.
 - h. WSI supporting the petition do not make it eligible DI.
 - i. As regards behavior of WSI, none of the other producers are substituting their entire product range with imports unlike WSI for low end products.
 - j. WSI is taking advantage of dumped imports and not defending itself from dumping.
 - k. DA is previous initiated found WSI ineligible and how the statement by DA that focus of the company continues to be production holds good.
 - l. Merely being injured does not justify inclusion of importing entity into the ambit of domestic industry.
 - m. Substantial imports by WSI in POI and no indication that imports will not resume.
 - n. WSI should be excluded from DI for the reasons stated by the Respondent in its Written Submissions and also because the DI has accepted that economic parameters will not be affected if WSI is removed from the DI.

Views of the Domestic Industry before Issuance of preliminary findings

43. The domestic industry has made the following submissions with regard to the issue of the domestic industry.
- The production of the applicants constitutes a major proportion of total Indian production and so the petition should be considered as having been made on behalf of domestic industry.
 - The collective production of the other Indian producers not part of the application is quite low. As there is no published information with regard to their production, the applicants have relied on the letter of IEEMA.
 - There are no imports of the product under consideration from China during the investigation period by any applicant, except WSI. WSI imported unfinished product from China PR and processed it further to sell in the Indian market.
 - Discretion rests with the Authority to include WSI within the scope of domestic industry. While there was some amount of uncertainty with respect to this issue at the time of initiation of previous investigations for the same product, both the Calcutta and Madras High Courts have since passed final orders clearly holding that the Designated Authority has sufficient discretion under Rule 2(b).
Further, WSI should be considered eligible domestic industry for the following reasons:
 - WSI was importing low-end, unfinished articles of the product under consideration in view of very low price for Chinese product and restricted its production to high-end product types.
 - WSI has not acted as a mere trader but has undertaken significant process on the imported product, including 100% testing of all articles, repacking as per customer-approved drawings and, in some cases, assembly of metal fittings onto the articles.
 - The behavior of WSI is not different as compared to other major Indian producers. The trends of various economic factors of all domestic producers, including WSI, are similar. Therefore, it cannot be said that WSI is benefitting out of dumping from the subject country.
 - WSI's thrust continues to be on own production and not on imports. WSI production continues to be quite significant. Majority of the sale by WSI continues to be from production.
 - The proposed anti dumping duty shall apply on exports made by the supplier concerned. WSI has not sought exclusion for this supplier. Once anti dumping duty is imposed, any imports made by WSI will also will subject to such anti-dumping duties.
 - WSI has already stopped importing the product from China .
 - The imported product has been sold at a materially higher price in the market, after being further processed by WSI. The resale price of WSI products would not have caused injury to Indian producers.
 - None of the other companies should be considered ineligible within the meaning of Rule 2(b).
 - Whether or not WSI is considered an eligible domestic industry constituent, the production of the applicants constitutes majority of Indian production.
 - Information relating to the imports made by WSI is not publically available. It constitutes business sensitive data, disclosure of which could be detrimental to the company.

Views of the Domestic Industry post Issuance of preliminary findings

44. The domestic industry has made the following additional submissions with regard to the issue of the domestic industry after issuance of preliminary findings.
- WSI is required to be treated as eligible domestic industry in view of declining pattern of imports which ceased during investigation period itself, and no future plans to import the material and considering that the company had mainly imported those product types which were not being produced by the company in large quantities as they were lower end of the product under consideration range while company predominantly focuses on the higher end of the product under consideration range.
 - Not all the members of IEEMA are producers of the product under consideration. Further, the petition did not ignore the output of these producers for the purpose of standing. The petition has taken into account their collective output in the volume of total Indian production.
 - None of the previous investigations established that the claims of the petitioners with regard to standing were not credible
 - There is no justification for exclusion of an SEZ unit of WSI. The decision of the Designated Authority in the matter of Solar Cells where the issue was elaborately dealt is relied upon.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

45. The application has been filed by Aditya Birla, BHEL, IEC, Modern and WSI as the domestic industry of the product under consideration. Further, post initiation, the applicant has been supported by Indian [Electrical](#) and Electronics Manufacturers Association, Shreeji Power & Insulators Pvt. Ltd., Bikaner Ceramics Pvt Ltd, A.K. India Ceramics Pvt Ltd, Bikaner Porcelain Pvt Ltd., Allied Ceramics Pvt. Ltd., Taruna Dechome Pvt. Ltd., Prime Insulators, Saravana Global Energy Ltd., Jaipuria Brothers, General Power co Pvt Ltd., Hindustan Chemicals, Rastriya Electrical and Engineering Corpn (hereinafter referred to as the 's-upporters'). Further, there are a number of other producers, apart from the applicants and supporters.

46. The Authority considers that none of the applicants needs to be excluded from the scope of domestic industry since none of them, barring WS Industries, have imported the subject goods from the subject country during the period of investigation, nor are they related to any exporter or importer of the subject goods. It is noted that WS Industries has imported the product under consideration from China PR.
47. As regards WSI, the Authority has examined carefully all the arguments post issuance of preliminary findings and disclosure statement. The Authority notes that at the time of submitting the petition WSI has claimed that the imports made by them during POI were 15.47% of its production and their focus was to do its own production. However, it is noted from the records available, that the production of the subject goods by WSI during POI was 6398 MT (including production of the SEZ unit). It is also noted that the imports of the subject goods made by WSI from China PR during POI was 1733 MT. Therefore, the imports of the subject goods made by WSI from China PR works out to about 27% as against 15.47% claimed by WSI at the time of submitting the application for initiation of AD investigation. WSI claim of 15.47% on which the preliminary findings was based is found to be incorrect at the final finding stage. It is also noted that WSI has sold the imported subject goods after assembling in the domestic market. Since the imports of the subject goods by WSI from China PR during POI are significant and almost all the imported subject goods were sold in the domestic market, the Authority holds that it would not be appropriate to consider WSI as a constituent of the domestic industry.
48. Rule 2(b) of the Anti-dumping Rules provides discretion to the Authority to either include or exclude a domestic producer on reasonable and equitable grounds in certain situations. In view of the above and facts of the case, the Authority considers it appropriate to treat all petitioning companies except WS Industries (India) Ltd. as eligible domestic industry.
49. Chamber of Commerce for Import & Export of Machinery & Electronic Products (“CCCME”) has argued before the issuance of preliminary findings that there are nine other Indian producers of product under consideration which are not identified by the petitioners. The interested parties have relied on the website of IEEMA for the names of other Indian producers. The Authority sought information on Indian producers and their production figures from the Department of Heavy Industries, Ministry of Heavy Industries and Public Enterprises. The department in return provided IEEMA information for names and production of other Indian producers. Therefore, it is found appropriate to rely on the information by IEEMA. IEEMA further provided details of companies mentioned by the opposing interested parties, except Satraj Chemicals, alongwith their production, sales, etc. to examine the standing of the domestic industry. IEEMA has submitted its reply to the contention of interested parties with regard to production by these other producers and has contended that production of these producers are very low. Regarding Power & Control Transformers India Pvt. Ltd. and Raychem RPG Pvt. Ltd, IEEMA has clarified that they are not producer of Electrical Insulators
50. The Authority notes as per the information provided by IEEMA that there are a number of small producers of the product under consideration in India. However, the collective production of these producers is quite low. The production of the applicants accounts for more than 50% of Indian production and production of the applicants constitutes a major proportion of the total domestic production of the like article in India.
51. As regards disclosure of volumes of imports made by WSI, it is reiterated that such information is provided on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties.
52. It has been argued that SEZ unit of WSI should not be treated as eligible domestic industry. In this regard the Authority has excluded WSI from the purview of domestic industry.
53. In view of the above and after due examination, the Authority holds that the applicants except WSI satisfy the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the AD Rules. Accordingly, the applicant except WSI satisfy the requirement of standing under the Rules. Further, applicant except WSI constitute domestic industry within the meaning of Rule 2(b).

OTHER ISSUES

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties before Issuance of preliminary findings

54. The interested parties have raised following issues:
 - a. Normal value constructed on Canada as surrogate country is wrong as Canada being a developed country is not at the same level of development as China. Moreover, the constructed normal value is wrong, as the UN Comtrade website shows export price of USD 2670 per MT for the subject product, while the constructed normal value in the petition puts the export price from Canada at 3643 per MT at page 158 of the petition. There is gross exaggeration in constructed normal value, which cannot be accepted by the Authority. Further, constructed normal value is based on some purchase orders, invoices, which cannot be relied upon by the Authority as it fails the adequacy and accuracy test [Reliance is placed on WTO Panel Report in DS 60 Guatemala—Anti-dumping Investigation Regarding Portland Cement from Mexico].
 - b. The data for excluded products is incomplete, as it not even up to the POI. Therefore, such incomplete data cannot be relied upon. UN Comtrade data shows that glass insulators are being re-exported from India, while it is an admitted fact that the Domestic Industry does not manufacture the same. It is prayed that the imports from

China and the market size of India should be determined only after making adjustment for re-export of such imported goods.

- c. The petition provides no support as to how it arrived on export price and net landed price after adjusting certain values such as 3% towards Commission; 0.5% towards Port expenses; 1% towards Inland Freight; 0.5% Bank Charges; USD 50 per ton towards freight and 5%/MT towards Insurance. These values are arbitrarily applied with no evidence. Such values cannot be relied upon and the Authority may direct the Petitioners to provide the basis as per which such values were used.
- d. The conversion factor of 1.27 is unscientific and arbitrarily applied by the Petitioners to distort the export price of glass insulators, leading to deflation in FOB price (on pages 161 and 162 of the petition). After applying such a conversion factor, the export price of glass insulators has been drastically lowered from USD 1319 to USD 1039. Price undercutting shot up to 20-40% in 2011-12 and 30-50% in the POI from 0-20% in 2011-12 and 20-40% in POI as a result of application of the conversion factor.
- e. The petitioners have equated importers with users on Section I of the petition in Question 9 on page 15. The names mentioned therein are not actual users. The users of the subject product are state government corporations/companies that are engaged in the installing power transmission lines and establish power stations.
- f. Inconsistency in data as the petitioner has relied on China customs for import statistics and for excluded products they have relied upon DGCI&S. The fact that this data was relied on in safeguard findings is no justification and more so the data used there was not of POI.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties post issuance of preliminary findings

55. The interested parties have raised following additional issues after issuance of preliminary findings.

- a. With regard to the finding that “quality and quantity of evidence improves as an investigation progresses”, it is submitted that the level of information which is requested from the exporters has to be of the same nature with a uniform standard being applied to all parties. Further, the information should be first available from the Petitioner so that the Authority can make an accurate and conclusive determination on the product scope and PCN as well as the impact on dumping and injury .
- b. Authority has not provided the transaction-wise data sourced from Chinese customs, whereby the Exporters are prevented from commenting on the authenticity and reliability of the same.
- c. For the other countries no comparable analysis has been conducted for import volumes. Reliable import data from other countries must necessarily be obtained and analyzed in light of the import share and causal link analyses.
- d. Authority has not allowed for the possibility that a proper import analysis of imports from other countries may reveal that there are other countries with a large share in imports at low prices.
- e. On what basis is the accuracy of the import data determined especially for the product under consideration or conducted in view of the shortcomings in the China customs data as it provides only HS code and not description.
- f. There should be one common source of import data be relied upon and more so within the facts of this case, where the critical unit of measurement distinct in both sources of data i.e., DGCI&S data versus the China customs data.
- g. In light if incorrect classification and the utterly unreliable nature of the import data, the Exporters reserves their right to make comprehensive averments on this issue once the complete and adequate data is made available.
- h. Non confidential summary of the imports made by WSI has not been provided in the petition. Further the Authority has erred in including WSI as a part of domestic industry. The fact that WSI is an importer was established in previous investigation initiated on 9th April 2012.
- i. The petition is restricted to 6 digit level. Like article may not include various products falling under chapter subheadings. If analysis is done upto 8 digit level, it will be clear that petitioners do not even produces majority of the subject product.
- j. UNComtrade website shows India exporting glass insulators. As these are not made in India, imports from China PR and market size of India should be determined only after adjusting the re-exports. In preliminary findings, the authority has relied upon line by line export statistics. However, no such evidence of line by line export statistics is available in public domain and summary custom data is not reliable.
- k. Information about users is missing. The petitioner has equated importers with the users and it is a deliberate design to keep out the users from making representation.
- l. Data related to SEZ unit of WSI must be excluded.
- m. Preliminary findings do not indicate if domestic industry requires provisional duties.

- n. Not provided transaction wise Chinese custom data.
- o. For other countries no comparable analysis has been conducted
- p. China customs do not provide product description and on other hand DA states that product description is used for calculation and not HS Code
- q. One common source of imports data should be relied upon
- r. When summary data of Ministry of Finance and Ministry of Commerce contains so many discrepancies, it is not understood as to how summary data of China customs became sacrosanct
- s. No justification or method provided for arriving at the Conversion factor of 1.27. Such an arbitrary figure leads to drastic reduction in landed value and inflating price undercutting. Designated Authority must continue to disregard the aforementioned conversion factor as has been done in preliminary findings.
- t. Selective usage of data by the Petitioners is baseless and without any substantiation. No actual transaction wise data other than a summary has been provided for the Chinese customs data even though the investigation has been ongoing for almost a year. Chinese Customs data appears to have been relied upon by the Petitioners solely for the purpose of inflating import volumes and lowering import price.
- u. The unit in which the data is reported cannot render the reliability of the data suspect. In other words, merely because the unit in which the data is reported is inconvenient to the Petitioners, it does not imply that the data itself is unreliable. The dumping margin and injury margin comparisons made in the Provisional Findings appear to have been made on the basis of pieces and not weight. Therefore, it is entirely possible for conversion of pieces to weight on a prescribed formula basis, taking into consideration the type of insulator in questions
- v. Petitioners have merely made a statement claiming that project imports have not been covered under Indian database of imports. However, there appears to be no evidence provided to substantiate this claim.
- w. It is not possible to actually verify whether all the products reported under the headings of China Customs data are electrical insulators since no product description is available.
- x. The evidence of imports from other countries remains incomplete and inaccurate. This is particularly relevant in light of the import share and causal link analyses that the Hon'ble Designated Authority is obligated to consider. Reliable import data from other countries must necessarily be obtained and analysed in order to avoid an incomplete and lopsided import and injury analysis. Designated Authority may request the Chinese government (or its presence in India) to confirm whether the Chinese Customs Data is accurate and contains other products outside the product under consideration scope.
- y. There appears to be no source or evidence provided in support of the data relied upon by the Petitioners on Chinese manufacturers.
- z. The Chinese Customs Data relied upon by the Petitioners remains unreliable and unverified. Until and unless the veracity of this data is checked, the Exporters are unable to comment on the analysis based on unreliable data.
- aa. There appears to be no evidence or numerical analysis presented to support the claim of the Petitioners regarding tenders. Instead, the Petitioners have attempted to use average import prices and volumes to prove this. bid prices claimed in a tender will never feature in actual import data since only one bid is awarded with the tender contract whereas all the other bids are rejected. Therefore, if various suppliers apply to a tender, no matter how low or high their prices, only the winning tender will actually feature in the import data since the other producers did not receive that order in the first place. Therefore, it is not appropriate for the Petitioners to substantiate this claim on tenders with general import data which shows average prices.
- bb. The Chinese Customs Data relied upon by the Petitioners remains unreliable and unverified.
- cc. The DI's justification for using China Customs import data is flawed and should be investigated. The entire Petition relies on DGCI&S data except for the import data; this seems manipulation on the part of the DI. Further, the role of Avalon Consulting and Fidusia Managements Consultants in this investigation is not clarified. The DI has relied on import statistics provided by them, this would have been considered had the agencies been renowned ones, but in this case it is not so, as such, information from such random sources should be disregarded in the present investigation.

Views of the Domestic Industry before Issuance of preliminary findings

- 56. The domestic industry has made the following submissions on other issues.
 - a. Import data has been procured for the purpose of analysis from the following sources:
 - i. Information on imports from China has been procured from China Customs.
 - ii. For imports from other countries, DGCI&S published data has been adopted.
 - iii. For excluded products, DGCI&S transaction wise data has been adopted.

b. DGCI&S data for imports from China has not been adopted for the following reasons:

- i. The available options for determining volume and value of imports are (i) Indian customs statistics, (ii) Chinese customs statistics, (iii) Consumer-wise imports statistics. Imports of the product under consideration are in two categories—(i) project imports under chapter 98 and (ii) other than projects category under chapter 85, heading 8546.
- ii. All imports of the product under consideration are made against orders. Some of these insulators are made as per specific design & drawing of the consumers. Therefore, these products do not have any standard weight. Further, the Chinese producers have produced and supplied goods against specific requirements of the customers in India, the goods have been exported from China for eventual consumption in India. The goods would not have been exported from China to India for eventual consumption in third countries. Further, the transaction wise statistics relating to exports from India clearly establishes that exports from India are not of glass insulators. The mere fact that the UNComtrade data shows exports under the customs classification does not mean that glass insulators have been exported from India.
- iii. Information provided by secondary sources is insufficient for the reason that the same does not contain imports reported at various Customs Ports such as Mundra port. Significant volume of the product under consideration has been reported at Mundra port.
- iv. As the investigation is in respect of imports from China, there is no reason why Government of China statistics should be considered unreliable.
- v. The Authority has accepted exporting country trade data in a large number of investigations in the past.
- vi. In the safeguard investigation on the same product, the Director General (Safeguards) accepted China customs data. Further, the final findings notified by the Director General (Safeguards) were accepted by the Board on Safeguards and Ministry of Finance.
- vii. As regards contentions of insufficient information, the petitioners have provided the product range and specifications of the product under consideration being produced by each of the constituents of the domestic industry at Annexure 2.3 of the petition.

Views of the Domestic Industry post Issuance of preliminary findings

57. The domestic industry has made the following additional submissions after issuance of preliminary findings

- a. As regards deficiencies in questionnaire response after 9 months, The gaps pointed out are in the nature of vital defects in the questionnaire responses and shows that the exporter has cautiously decided not to provide relevant information. Thus, the Designated Authority is not under any obligation to point out these defects in the questionnaire responses.
- b. As regards disclosure of transaction wise China customs data, it is a third party information and the petitioners are not authorized to disclose the same.
- c. As regards proper import analysis of imports from other countries, What the law requires is whether the volume and price of imports from third countries is so significant as to be one of the causes of injury to the domestic industry. Sediver has not given any instance of import from some country where the volume was significant enough to cause injury to the domestic industry
- d. As regards accuracy of China customs, petitioners have provided supplier wise exports from China to India for the relevant period and the same further establishes that majority of the exports have been made by the responding companies only
- e. while entirety of the product under consideration gets classified under the HS Code 854610 and 854620, it includes negligible volumes of excluded category of insulators
- f. The petitioners have provided the product range and specifications of the product under consideration being produced by each of the constituents of the domestic industry at Annexure 2.3 of the petition filed with the Authority
- g. The petitioners have considered line by line import data for 854620 and excluded all those entries which are not product
- h. GOI permits imports by specifying any unit of measurements, the China customs data does not. This clearly establishes that the difficulty is because of practice allowed by the Indian customs

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

58. As regards the argument of insufficient information provided by the domestic industry in the application filed by them, the Authority confirms the preliminary findings in this regard and note that the application contained all information relevant for the purpose of initiation of investigation. The Authority, only after satisfaction that

application contained sufficient evidence to justify initiation of the investigation decided to initiate the present investigation. Further, subsequent to initiation, information has been sought from the applicant to the extent deemed necessary and the same has been provided by the applicant for the purpose of the present findings. The Authority notes that quality and quantity of evidence improves as an investigation progresses.

59. It is clarified that the dumping margin and injury margin have been determined for the responding exporters on the basis of their data and therefore as far as the question of dumping margin, injury margin and quantum of anti dumping duty to be recommended is considered, the same is on the basis of the information and evidence provided by the responding exporters. The Authority has adopted China customs data only for the purpose of injury analysis.
60. For the purpose of injury analysis, the Authority is required to consider the trends in volume and price of imports. The Authority notes that the responding exporters have not provided information for the present injury period to determine volume and price of imports and therefore injury analysis in any case cannot be carried out using the information provided by the responding exporters from China.
61. The Authority after examining various arguments of all the interested parties including domestic industry during the investigation considers that adoption of China customs data for the purpose of determination of injury to the domestic industry is appropriate in the present case (in any case, the authority has adopted the information filed by the responding exporters with regard to dumping margin and injury margin). The prescribed unit of measurement under Customs Tariff Act is weight. It is noted that the Ministry of Finance in fact has been writing to the customs port authorities that the prescribed unit of measurement should be adopted for clearing the goods. However, the imports in DGCI&S or Cybex data have however been reported in a large number of other unit of measurement viz., Kgs, LOT, MT, NOS, Pcs, SET etc. in view of the fact that the importers have continued to ignore the prescribed unit of measurement and have been adopting different unit of measurements. By contrast, the export data in China customs reports imports in terms of weight only. It is thus evident that the Chinese exporters are reporting their exports to China customs on the basis of weight. However, these Chinese exporters are raising commercial invoices on the Indian importers where unit of measurement is being used is not weight. Resultantly, the importers are clearing the goods using a large number of different units of measurements. Given the nature of product, it would be difficult to precisely determine volume of imports from Indian customs data when the unit of measurements in these import transactions is not weight. Even though the product is eventually consumed in numbers, assessment of volume and price of imports on the basis of numbers would be highly misleading in view of significant difference in the costs and prices of different types of the product, when measured in terms of numbers. The Authority has therefore considered weight of the product as the unit of measurement for the purpose of injury analysis, which is also the prescribed unit under the Customs Tariff Act. It is also noted that in those cases where insulators are made to order as per the customer's requirements, there is no standard weight and, if the imports have not been reported on weight basis, the weight of those consignment cannot be accurately determined. In case of China customs, it is noted that the prescribed unit of measurement in China customs is also weight and the exports from China have been reported in China customs on weight basis only. The authority also examined the questionnaire responses of the responding Chinese exporters and found that the cumulative volume of exports made by the responding exporters further establishes the China customs data is not inappropriate. The domestic industry has provided Chinese exporters wise data over the injury period (volume and price) and comparison of this information with the actual responses filed by the responding exporters further establishes that the information provided by the domestic industry on the basis of China customs data is appropriate. The authority has further compared the information provided by the petitioners with the UNCOMTRADE data available to the authority and found that the total volume and value of imports claimed by the petitioners on the basis of China customs data corroborates with the data available to the authority from UNCOMTRADE. It is also noted that the Director General (Safeguards) in the safeguard investigations relating to this product had also adopted China customs data. Further, since the investigations concerns imports from China, it would not be inappropriate to consider China customs data. In view of the foregoing, the Authority holds that it would be appropriate to adopt China customs for analyzing volume and value of imports.
62. Further, since the investigations concerns China as the subject country, it would not be inappropriate to adopt China customs data. It is also noted that the product is largely produced against specific orders and therefore the goods invoiced for exports to India were therefore meant for consumption in India.
63. The interested parties contended that the Indian customs data shows exports under the category of glass insulators. However, since glass insulators are not produced in India, this implied re-export of goods imported in India. The petitioners provided transaction wise export data as per Indian customs (based on IBIS), analysis of which shows that the product description in these exports does not show that these exports were of glass insulators.

64. As regards imports from other countries, the Authority has examined the imports data of the subject goods from DGCI&S for the purpose of evaluating injury to the domestic industry. It is noted that imports from third countries are negligible and could not have caused claimed injury to the domestic industry. Further none of the interested parties have provided any evidence to show that imports from third countries are causing injury. Thus the adoption of different data sources for import analysis of appropriate indices have been used based on purpose and rational and not arbitrarily.
65. As regards excluded items, the issue was examined in the preliminary findings. The authority has once again considered the submissions of the interested parties and notes as follows
 - a. None of the responding exporters have exported any of the excluded items.
 - b. The domestic industry contended that imports of excluded items are quite low in volume.
 - a. Since China customs does not specify the full product description and contains only the description mentioned in the relevant HS code, detailed China customs data could not be used for identification of excluded item.
 - b. The DGCI&S data contains detailed description of the imported product and it is possible to identify imports of excluded items in DGCI&S data.
 - c. The responding parties have not provided any adequate or sufficient information on exports of excluded products from China to India.
66. In view of the above, the Authority considers that it would be appropriate to adopt DGCI&S data to determine volume and value of excluded items.
67. After examining the material placed by different interested parties, it is concluded that it would be appropriate to consider data from China Customs to determine volume and value of imports from China and DGCI&S data to determine volume and value of imports of excluded products. It is also noted that the Director General (Safeguards) had also adopted the same methodology in determination of volume and value of the imports of the product under consideration.
68. As regards consideration of Canada as appropriate market economy third country, the Authority has for the purpose of the present findings has not adopted Canada as an appropriate market economy third country for determining normal value in China.
69. As regards determination of net ex-factory export price in the petition, Authority notes that the petition is based on best available information. In any case, the Authority has now adopted questionnaire responses filed by the responding exporters for determination of export price.
70. As regards adoption of conversion factor in the petition for determination of normal value of glass insulators, the Authority holds that in view of the fact that porcelain and glass insulators have been held as like article, the normal value has been constructed as per the consistent practice of the Authority for a non market economy.
71. As regards the argument that the petitioners have equated importers with users, the Authority notes that the petitioners contended that majority of the imports from China are by Power Grid Corpn., which is both an importer and consumer. In any case, the Authority has issued a notification, published in the Gazette of India, extraordinary. The consumers of the product in India are deemed to be aware of the present proceedings.
72. As regards adoption of different source of information for determination of volume and price of imports, the Authority notes that the petitioners have provided best available information in this regard. None of the interested parties have been able to provide or point out to any other source of information which could be adopted for the purpose.

DUMPING MARGIN

NORMAL VALUE

73. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) *the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (ii) *when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the*

sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either—

- (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties

74. The following submissions are made by interested parties in respect of normal value, export price and dumping margin.

- a. At no point over the nine month period since the filing of the Exporters' MET questionnaires has the Designated Authority raised any questions or deficiencies with regard to the above MET issues identified in the Preliminary Finding. This is in clear violation of the principles of natural justice.
- b. Sediver should be granted MET
- c. Designated Authority can ratify the domestic industry's delay in providing relevant evidence and information necessary for the investigation with the explanation that the quality and quantity of evidence improves as the investigation progresses. However, the Exporters on the other hand are treated differently and not given any opportunity or prior notice with regard to any perceived deficiencies in their data, if any
- d. The dumping margin comparison and calculations used in the Finding have not been made available to the exporters. Despite several request, the Exporters are yet to receive any response in this behalf till date.
- e. Domestic industry does not manufacture glass insulators and majority of imports during period of investigation is of glass insulators. Despite these facts the Designated Authority has constructed normal value based on optimum norms of the domestic industry when glass insulators are not even produces in India. Preliminary findings with regard to normal value, dumping margin and injury margin are completely off the mark and incorrect.
- f. It is not disclosed that whether basic value in China Customs is CIF or FOB. No evidence given for net export price adjustments in the petition. These are based on assumptions. Exporters are clueless on the adjustments that Designated Authority considered while arriving at the export price in preliminary findings
- g. Despite arguments by both DI and respondents, DA has not determined separate normal value for glass and porcelain
- h. In nine months, the DA has not raised any deficiency with regard to MET. DA did not provide any opportunity to the exporters to defend their MET claim.
- i. With respect to the cost and operational differences, for the purposes of injury margin and dumping margin for glass insulators, the Normal Value and NIP should be reduced to the extent of this difference between the two insulator types when making the comparison. This is particularly relevant since the Indian producers do not make or sell glass insulators. Request Designated Authority to conduct detailed analysis of the relevant information since PGCIL is fully cooperative in the present investigation
- j. The Petitioners have contended that some companies should not be granted MET status based on a number of facts, listed by the Petitioner. The Petitioners have submitted that the MET claim of the Exporters should not be allowed to be clarified at this stage of the investigation. However, the Petitioners itself have admitted that the Hon'ble Designated Authority may seek clarifications with regard to the data filed. It is not for the Petitioners to determine whether or not the Hon'ble Designated Authority has a right to seek clarification and supplementary information. Further, having completely cooperated in the investigation, the Exporters have a right to provide information.
- k. For the purposes of determining dumping and injury, it must be ensured that a fair comparison is conducted taking into consideration all related costs and price parameters, as well as adjustments for physical differences. Any comparison done without due adjustments made between varying product categories is bound to lead to an unreliable analysis of dumping and injury.
- l. The dumping margin and injury margin comparisons made in the Provisional Findings appear to have been made on the basis of pieces and not weight. Therefore, it is entirely possible for conversion of pieces to weight on a prescribed formula basis, taking into consideration the type of insulator in questions. In light of

the above, the reason that the data is reported in pieces is not sufficient to disregard Indian import data in favour of Chinese customs data.

- m. In conjunction with the fact that ceramic insulators tend to break down much more frequently as compared to glass insulators, it is evident that the Hon'ble Designated Authority needs to make an adjustment to lower the normal value of glass insulators in order to account for this substantial difference in quality.
- n. The Petitioners have asked for an adjustment in the Export price of the product to adjust for the weight difference between glass and ceramic insulators. This appears to be merely a desperate and self serving attempt to maximize the margins of dumping and injury.
- o. As part of conducting a price effect analysis, the Designated Authority ought to have ensured that the price and cost differences between the various kinds of insulators (namely glass and ceramic) ought to be taken into consideration.
- p. Although cost has grown at a slightly higher rate than price of the DI, the price has grown at a comparable rate as well, despite alleged undercutting by the subject countries.
- q. With regard to the Petitioners' claims on Chinese Insulator Manufacturers, the Exporters submit that there appears to be no source or evidence provided in support of the data relied upon in this issue.
- r. Mere expansion of capacities in China is not a reason to levy duties on Chinese imports. There is a need to establish dumping, injury and causal link in order to justify a levy of anti-dumping duties. In this behalf, the increase in Chinese capacities has no correlation with the present investigation
- s. With respect to the inventories piled up on Aditya Nuvo, the Respondent contends that either the electrical insulators produced by them is so sub standard that their sale has been not possible for the past three years or else that Aditya Nuvo continued to manufacture the products despite already existent inventories and without any orders. As such, such bad decisions of Aditya Nuvo cannot be blamed on the imports from the subject country.
- t. The DI's contention that China was earlier a net importer of the subject product is irrelevant. The Chinese exporters are dealing in different product segments—glass insulators, which are not dumped or causing any injury to the DI.
- u. The DI has argued that the import price has fallen from the subject country however, the data provided by the DI itself does not support its argument, and shows that China prices to India is consistently higher than rest of the world.
- v. Designated Authority cannot construct normal value of glass insulators based on domestic industry optimum consumption norms because domestic industry does not produce glass insulators. Domestic industry's argument on weight difference is not supported by any technical literature and is unscientific.
- w. As regards market economy status, Zigong Sediver and Sediver Insulator, the Designated Authority may take appropriate view in this regard.

Views of the Domestic Industry before Issuance of preliminary findings

75. The domestic industry has made the following submissions with regard to normal value, export price and dumping margin.
 - a. China should be considered a non-market economy, in line with the position taken by the Authority in previous cases, and by investigating authorities in other countries. Chinese producers' cost and price cannot be relied upon for determination of normal value.
 - b. Market economy status cannot be granted unless following conditions are fulfilled.
 - i. Market economy status cannot be given in a situation where one of the major shareholders is a State owned/controlled entity.
 - ii. Market economy status cannot be given unless the responding Chinese exporters establish that the prices of major inputs substantially reflect market values.
 - iii. Market economy status cannot be given unless the responding exporter establish that their books are audited in line with international accounting standards.
 - iv. Market economy status cannot be granted even if one of the parameters is not satisfied.
 - v. The onus/obligations to establish market economy status is onto responding Chinese exporters and not onto the Designated Authority.
 - vi. Market economy status cannot be granted unless the responding company and its group as a whole make the claim.
 - vii. In a situation where the current shareholders have not set up their production facilities themselves but have acquired the same from some other party, market economy status cannot be granted unless process of transformation has been completely established through documentary evidence.
 - c. The major inputs required for the production of the product are metal parts and fuel in the form of natural gas, LPG or liquid fuels such as kerosene oil, furnace oil, etc. Steel prices in China do not substantially reflect market values. Chinese steel companies benefit heavily from government subsidies. As regards fuel, its prices do not reflect market values in China.

- d. Besides subsidies for specific industry-related raw materials, all industrial state-owned enterprises (SOEs) received energy subsidies. Distortions caused by the intervention of the government have led to overcapacity.
- e. The applicants have determined normal value of Porcelain/Ceramic Insulator based on constructed cost of production of the subject goods.
- f. The applicants determined separate normal value for Porcelain/Ceramic and Glass insulators .
- g. The applicants determined normal value for Glass insulators in three different ways:
 - i. Prices prevailing in the market economy third country (Canada).
 - ii. Best cost estimates derived by the applicants for cost of glass insulators.
 - iii. Based on normal value of porcelain insulators, duly adjusted for the weight difference.
- h. Applicants determined weighted average import price on the basis of import data. The export prices have been adjusted for Commission, Port Expenses, Inland Freight and Bank Charges.
- i. The web research done by the domestic industry shows that all related companies of Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. and Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. involved in production of product under consideration have not responded to the present investigation.
- j. The exporter has provided no evidence to establish that prices of inputs procured substantially reflected market value.
- k. The gaps in the questionnaire response filed by Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. and Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. are in the nature of vital defects in the questionnaire responses and the exporter has cautiously decided not to provide relevant information. Thus, the Designated Authority is not under obligation to point out these defects in the questionnaire responses. The opportunities for clarification or rectifying deficiencies cannot be used to file complete questionnaire response.
- l. Shanghai Seves Glass Co. Ltd. makes glass cells and Zigong Safam Cast Iron Co. Ltd. makes caps for insulators for Zigong Sediver and Sediver Shanghai. The basic production process involved in glass insulator is in making glass cells. In fact, once glass cells has been made, the only production process left out is fixing of metal parts, which is a screw driver technology. The basic production technology, plant and equipment, manufacturing process, investment is in making glass cells. The costs upto the stage of glass cells constitutes majority of the cost of production of a glass insulator. Such manufacturing activities are undertaken by Shanghai Seves Glass Co. Ltd. Thus, the basic manufacturing activities are undertaken by a company who is not before the Authority. In the absence of questionnaire response from these companies who are making glass cells and caps for glass insulators, it would not be possible for the Authority to undertake verification of production and cost of production involved in producing and selling glass insulators. The questionnaire response is thus grossly incomplete and inadequate for normal value determination. The petitioner submits that this fact alone sufficient to reject the entire response as far as determination of normal value is concerned.

Views of the Domestic Industry post Issuance of preliminary findings

76. The domestic industry has made the following additional submissions with regard to normal value, export price and dumping margin after issuance of preliminary findings.
 - a. As regards MET Claim, response from all companies involved in production and sale of the product under consideration not on record even after preliminary findings. The exporter has provided no evidence to establish that prices of inputs substantially reflected market value
 - b. As regards opportunity to the exporters to rectify deficiency same as domestic industry, it is the domestic industry who has suffered because of this additional time taken by the Designated Authority. It is not the exporters who have suffered in the process. In fact, the exporters who have been hugely benefitted by the delay in interim findings, as is clearly established by following tenders which were opened by Power Grid after initiation of investigation and where orders have been placed ignoring preliminary findings.
 - c. As regards disclosure of dumping margin comparison and calculation, normal value has been constructed on the basis of the cost information of the domestic industry. Information relation to cost of domestic industry is highly business sensitive and cannot be disclosed.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

77. The Authority sent questionnaires to the known exporters/producers from the subject country, advising them to provide information in the form and manner prescribed. The following parties have filed exporter questionnaire responses:
 - i. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd.,
 - ii. Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd.,
 - iii. Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.,
 - iv. Dalian Insulator Group Co. Ltd.,
 - v. LilingHuaxin Insulator Technology Co. Ltd.,
 - vi. LilingHuacheng Insulators Co. Ltd.,

- vii. Sichuan Yibin Global Group Co. Ltd.,
- viii. Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co. Ltd.,
- ix. Sediver S.A. (France)

78. In addition to exporter questionnaire responses, the following companies from the subject country have filed market economy questionnaire responses:

- i. Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd.,
- ii. Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.,

Examination of Market economy claims

79. The Authority notes that in the past three years, China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by other WTO Members. Therefore, in terms of para 8 (2) of the annexure 1 of AD rules, China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the above presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the above Rules.

80. As per Paragraph 8, Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provides information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub-paragraph (3) in Paragraph 8 and prove to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China PR are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-

- a. The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- b. The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- c. Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- d. The exchange rate conversions are carried out at the market rate.

81. The Authority notes that Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. and Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd from China PR have responded to the questionnaire pertaining to market economy status and to the exporters' questionnaire, consequent upon the initiation notice issued by the Authority and rebutted the non-market economy presumption. The questionnaire responses and the market economy responses of the responding producers and exporters were examined for determination of normal value of the responding producers/ exporter of the subject goods.

82. The Authority has examined the submissions of the cooperating exporter, Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. based on its responses to the market economy questionnaire and also with regard to various appendices of the exporter's questionnaire. After examining the responses, the Authority finds that Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd., was established in 1993 under Chinese laws. It is a Joint-Venture limited liability company. 98% of the Company shares is owned by Seves S.p.A and 2% of the Company share is owned by Zigong Chuan Sheng Electrica Porcelain Insulator Co. The Company's majority shareholder Seves S.p.A. controls/owns number of companies in China that produce/export the subject merchandise. However these producers of the product concerned from China PR have not responded to the present investigation. , although it is claimed that these companies did not exported insulators to India during Period of Investigation.

83. Since MET criteria must be requested and fulfilled for all companies within the same group, it has not been established that the MET claim is complete. Further PPC Wuxi Insulator Co. Ltd. a company of Seves Group manufactures porcelain insulators and has not responded to the present investigation. Normal value determination of the Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. on the basis of its domestic sales of glass insulators would not be adequate as the related party PPC Wuxi Insulator Co. Ltd. who is a producer of porcelain insulators in China would also have porcelain domestic sales and that cannot be ignored. In any case, market economy treatment claim cannot be considered as complete unless all companies involved in production and sale of the product under consideration are before the Authority through questionnaire response. The company has also admitted that it is procuring inputs from related companies but these are not before the Authority as they have not filed response. However, it is noted that this company has not substantiated their inputs provided by related parties are at market price.

84. Further with reference to major inputs required for the production of the product i.e., metal and fuel, the exporter has not provided any evidence to establish that the prices of these inputs substantially reflect market values.
85. It is also noted that there are other producers of glass and porcelain insulators in China, who have filed questionnaire response and have not claimed market economy treatment.
86. It is also noted that Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. has also responded to market economy questionnaire response. Sediver Insulator (Shanghai) Co. Ltd. ("Company") was established in 2007 under Chinese laws. It is a 100% foreign-owned limited liability company. It has been claimed that the Company has no structure changes in the past three years. It is registered at 162 338 Minle Road, Spark Zone, Shanghai, China-201319. The Company is 100% owned by Seves S.p.A. Seves S.p.A. has related companies in China which are related to the sales of the subject merchandise. The company has also admitted that it is procuring inputs from related companies and has not substantiated their inputs provided by related parties are at market price. In view of the position explained market economy status for present findings cannot be given to Sediver Insulators (Shanghai) Co. as Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. and Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. are owned by Seves S.p.A and thus are related companies.
87. Further, Vide letter dated 11th February, 2015 Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. and Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. has withdrawn their claim of market economy treatment.
88. Therefore in view of the facts placed on record by the domestic industry and withdrawal of market economy treatment claim by the exporter and producer from China PR, the Authority has not granted market economy treatment to the company and has adopted the constructed normal value for determination of normal value in terms of Para-7 to Annexure-1 to the Rules.
89. Sediver SA France has exported to India the product under consideration produced by Sediver Insulators (Shanghai) Co. and has filed Exporter's questionnaire response.

Liling Huaxin Insulator Technology Co. Ltd. and Liling Huacheng Insulators Co. Ltd.

90. This questionnaire is replied by Liling Huaxin Insulator Technology Co. Ltd. ("Liling Huaxin", or "the company") and its subsidiary company Liling Huacheng Insulators Co. Ltd. ("Liling Huacheng"). Liling Huaxin is an exporting producer of the subject merchandise which involves into the activities of production, domestic sales and export sales to both India and other third countries. Its subsidiary company Liling Huacheng is a producer of the subject merchandise and only makes domestic sales. The company and its affiliated Liling Huacheng have not applied for the Market Economy Treatment ("MET") in this investigation. The two companies have filed one consolidated questionnaire response. The company has claimed that, there aren't any other related companies engaged in production and sale of the subject goods both in China and other countries. Further they have claimed that the company has not given any such incentives by the government in any form to the product concerned. Huacheng doesn't have the product brochure and share the same product code with Huaxin the Company has claimed that the negotiation and sales process in the home market and export to India are generally the same. The company doesn't issue such price lists for sales in both markets. The sales are negotiated on a transaction basis.

Sichuan Yibin Global Group Company and Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co. Ltd.

91. This questionnaire is replied by Sichuan Yibin Global Group Co. Ltd. ("Yibin Global", or "the company") and its subsidiary company Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co. Ltd. ("Chengdu Global"). Yibin Global is an exporter of the subject goods which involves into the activities of domestic and export sales to both India and other third countries. Its subsidiary company Chengdu Global is a producer of the subject goods. All the products manufactured by Chengdu Global are first sold to Yibin Global, and further resold to all markets by Yibin Global. The company and its affiliated Chengdu Global have not applied for the Market Economy Treatment ("MET") in this investigation. The two companies have filed one consolidated questionnaire response. Tianwo Trading Co. Ltd. as a paper company, involved into the sale of subject goods between Chengdu Global and Yibin Global. No actual sales and production activities are conducted and it is only for accounting purpose. The company has claimed that as far as it knows, there aren't any other related companies engaged in production and sale of the subject goods both in China and other countries. Further it claimed that they are not given incentives by the government in any form to the product concerned and no other subsidiaries or other related companies in all countries are involved with production, sales, or supply of raw materials of the product concerned. The company has claimed that the negotiation and sales process in the home market and export to India are generally the same. The company doesn't issue such price lists for sales in both markets. The sales are negotiated on a transaction basis.

Dalian Insulator Group Co. Ltd.

92. The Company was established with the name Dalian Insulator Co. Ltd. on July 16th, 2003 as a limited liability company with registered capital RMB *** and obtained the business license on November 15th of the same year. On February 19th, 2009, the name of the Company was changed into Dalian Insulator Group Co. Ltd.

On August 13th, 2009, the audited net assets of the Company were converted into *** shares and the Company was changed into a company limited by shares. On August 5th, 2011, the Company was listed for trading at the SME board of Shenzhen Stock Exchange. In addition to the above, the Business Scope and other registration particulars of the Company do not change. The exported product of the Company is under the policy of value added tax return on exports stipulated by Chinese government. The VAT return rate for the subject goods is 17%. The company has claimed that there are no financial or contractual links and joint ventures with any other company concerning Research and Development, production, sales, licensing, technical and patent agreements for the product concerned. The company has claimed that they sell directly to the Indian and domestic customers. Dalian Insulator and their clients contact with each other for general information at the beginning of selling the goods, and keep negotiating on prices, quantity, delivery date and payment condition until agreement is reached. After execution of the contract, both parties perform their responsibilities according to the contract. Further they have claimed that they have no price lists for sales in the home market and exports to India. Sale price is determined by negotiation of both parties taking into consideration of our production cost, SA&G and reasonable profit, which shall follow the market supply and demand. The producer/exporter has not claimed market economy treatment.

Nanjing Electric (Group) Co. Ltd.

93. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd. ("producer/exporter") was established in December 1997 as a limited liability company under Chinese Company Law, and registered at No. 63, TAIXIN Road, Nanjing, 210038, Jiangsu, China. Since 2004, Nanjing Electric (Group) Co. Ltd. is 100% controlled by Baiyun Electric Group. The two current shareholders of Nanjing Electric (Group) Co. Ltd. are Baiyun Electric Group Co. Ltd. and its subsidiary Guangzhou Baiyun Electric Investment Co. Ltd. Nanjing Electric (Group) Co. Ltd. is the only producer of electrical insulators within Baiyun Group. The producer/exporter only produces Toughened Glass Insulators and a limited quantity of Composite Insulators and High Voltage Porcelain Insulators. During the period of investigation, the producer/exporter only exported "Toughened Glass Insulators of Cap and Pin Type" to India. The producer/exporter makes direct sales to end-users in Indian market through bidding process. The producer/exporter has only one subsidiary that is still in its initial process, and does not have any business activity. The subsidiary is not involved in manufacture of the product under investigation. The producer/exporter has not claimed market economy treatment.

Methodology for determination of normal value

94. In view of the above, the Authority has determined normal value having regard to para-7 of Annexure-I for the purpose of present investigation. The normal value for the subject products imported from China PR into India has been constructed considering optimum consumption norms of the domestic industry for major raw materials, international prices for quartz, cost of other raw materials as per domestic industry prices, conversion cost, interest, SGA etc. at the levels allowed for the domestic industry. 5% of cost of sales excluding interest has been allowed towards reasonable profit.
95. For the purpose of the present investigation, the Authority has not determined separate normal value for glass insulators, even though the petitioners have contended that the normal value of glass insulators shall be significantly higher than the normal value for porcelain insulators, when determined in terms of weight. The petitioners have contended that normal value for glass insulators should be considered at higher level at least to the extent of the weight difference between the glass and porcelain insulators. To determine normal value of Glass Insulators, the Authority requires input consumption and conversion cost data of Glass Insulator. Since Domestic Industry is not producing Glass Insulator, these data could not be provided by Domestic Industry. M/s. Sediver has provided cost data of glass insulator but could not be adopted as MET is not granted to them. It is also noted that customer are procuring glass and porcelain Insulator on the basis of prices. In view of the non availability of any reliable and verifiable data of glass insulators, the Authority has considered the Normal Value of Porcelain and Glass Insulator of the same level although Domestic Industry has contended that Normal Value of glass insulators shall be significantly higher than the normal value for porcelain insulators, when determined in terms of weight. The constructed normal value determined for China PR is shown in the dumping margin table below under the heading Dumping Margin.

2 EXPORT PRICE

Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd.

96. Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. has reported export of subject goods to India during the POI. The goods have been sold directly to customers in India. The company has exported only toughened glass insulators in India during the investigation period. Further, the company has exported AC and DC insulators of mechanical strength 70 KN, 120 KN, 160 KN, 210 KN and 420 KN, during the investigation period. The sales to Indian customers are on CIF basis. The exporter has claimed adjustments towards overseas expenses, overseas insurance and credit cost to arrive at ex factory export price. The Authority has determined the weighted average export price of the above exporter as US\$ *** per MT.

Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.

97. Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. has reported export of subject goods to India during the POI. The goods have been sold to direct customers in India. The company has exported only glass disc insulators in India during the investigation period. Further, the company has exported AC insulators of mechanical strength 120 KN, 160 KN and 210 KN during the investigation period. The sales to Indian customers are in CIF term. The exporter has claimed adjustments towards inland freight, overseas freight, overseas insurance and credit cost to arrive at exfactory export price. The Authority has determined the weighted average export price of the above exporter as US\$*** per MT.

Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. (producer) through Sediver S.A. (France) (Exporter)

98. Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. through Sediver S.A. (France) (Exporter) has reported export of subject goods to India during the POI. The goods have been sold through Sediver S A to direct customers in India. The company has exported only glass disc insulators in India during the investigation period. Further, the company has exported AC insulators of mechanical strength 120 KN, 160 KN and 210 KN during the investigation period. The sales to Indian customers are in CIF term. The exporter has claimed adjustments towards inland freight including insurance, clearance and handling charges; international freight, international insurance, commission and bank charges to arrive at ex-factory export price. The Authority has determined the weighted average export price of the above exporter as US\$*** per MT.

Liling Huaxin Insulator Technology Co., Ltd and Liling Huacheng Insulators Co. Ltd.

99. Liling Huaxin Insulator Technology Co. Ltd. has reported export of subject goods to India during the POI. The goods have been sold directly to customers in India. The company has exported only hollow porcelain insulators in India during the investigation period. Further, the company has exported AC insulators of mechanical strength 5.1-10 KN, 10.1-20 KN, 20.1-30 KN, 30.1-50 KN and 50.1 KN during the investigation period. The sales to Indian customers are on CIF basis. The exporter has claimed adjustments towards internal transportation, port auxiliary fees, overseas transportation and insurance and credit cost to arrive at ex-factory export price. The Authority has determined the weighted average export price of the above exporter as US\$*** per MT.

Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co., Ltd and Sichuan Yibin Global Group Co., Ltd.

100. Sichuan Yibin Global Group Co. Ltd. has reported export of subject goods to India during the POI. The goods have been sold to direct customers in India. The company has exported only glass disc insulators in India during the investigation period. Further, the company has exported AC insulators with mechanical strength 120 KN, 160 KN and 210 KN during the investigation period.. The sales to Indian customers are in CIF term. The exporter has claimed adjustments towards inland freight and port charges, ocean freight and ocean insurance to arrive at ex-factory export price. The Authority has determined the weighted average export price of the above exporter as US\$*** per MT.

Dalian Insulator Group Co. Ltd.

101. Dalian Insulator Group Co. Ltd. has reported export of subject goods to India during the POI. The company has exported only disc and solid core insulators in India during the investigation period. Further, the company has exported AC and DC insulators of mechanical strength 120-160 KN, 210 KN and 320-420 KN during the investigation period. The sales to Indian customers are in CIF and CFR term. The exporter has claimed adjustments towards ocean freight, insurance, handling, fumigation inspection, CHA, custom clearance and bank charges to arrive at ex-factory export price. The Authority has determined the weighted average export price of the above exporter as US\$*** per MT.

Nanjing Electric (Group) Co. Ltd.

102. Nanjing Electric (Group) Co Ltd. has reported export of subject goods to India during the POI. The goods have been sold to direct customers in India. The company has exported only glass disc insulators in India during the investigation period. Further, the company has exported AC insulators of mechanical strength 120 KN, 160 KN and 210 KN during the investigation period. The sales to Indian customers are in CIF term. The exporter has claimed adjustments towards inland transportation, handling and loading charges, ocean freight, insurance, credit cost, bank charges and export packing to arrive at ex-factory export price. The Authority has determined the weighted average export price of the above exporter as US\$*** per MT.

3 DUMPING MARGIN

103. The exportprice to India (net of all the adjustments claimed by the exporter and accepted by the Authority) have been compared with the normal value to determine dumping margin. Separate normal value and export price has been determined for each type of insulator exported to India. The Authority in the disclosure statement had disclosed the adjustments on the export price of every cooperating exporter. None of the interested parties including domestic industry has raised any contention on the proposed export price adjustments which have

therefore been adopted in these findings. The dumping margin during the POI for all exporters/producers from subject country has been determined as provided in the table below.

S.No	Producer	Exporter	Normal Value	Net Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin	Dumping Margin
			US\$/MT	US\$/MT	US\$/MT	%	% Range
1	Nanjing Electric (Group) Co Ltd	Nanjing Electric (Group) Co Ltd	***	***	***	***	105-115
2	Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd.	Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd.	***	***	***	***	40-50
3	Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.	Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.	***	***	***	***	40-50
4	Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.	Sediver SA.	***	***	***	***	25-35
	Weighted Average (2+3+4)		***	***	***	***	40-50
5	Dalian Insulator Group Co. Ltd.	Dalian Insulator Group Co. Ltd.	***	***	***	***	80-90
6	LilingHuaxin Insulator Technology Co., Ltd	LilingHuaxin Insulator Technology Co., Ltd	***	***	***	***	10-20
7	Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co. Ltd.	Sichuan Yibin Global Group Co., Ltd.	***	***	***	***	110-120

Export Price and Dumping Margin for other producers and exporters from subject country

104. The Authority notes that response to questionnaire has been filed only by some of the exporters of the product under consideration from China. Other exporters from China have not cooperated with the Authority in providing relevant information in the form and manner prescribed. The Normal Value and export price to India in respect of other producers and exporters in China has been determined on the basis of best information available. Information provided by the responding exporters has been adopted for the purpose. The dumping margin so worked out is mentioned in the table below.

Particulars	US\$/MT
Normal Value	***
Net Export Price	***
Dumping Margin	***
Dumping Margin %	***
Dumping Margin % Range	200-210

105. It is seen that the dumping margins are quite significant and more than the limits prescribed under the Rules in respect of exports made by all the Chinese producers-exporters of the product under consideration.
106. As regards disclosure of dumping margin comparison and calculations, it is noted that normal value for determination of dumping margin has been determined considering cost of domestic industry, which is confidential information of domestic industry and hence cannot be disclosed. Disclosure of dumping margin would disclose the normal value as exporters are aware of their export price. However, range of dumping margin has been provided.

D. INJURY**Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties before issuance of preliminary findings**

107. The interested parties have raised following issues.

- a. Review of price bids of PGCIL would show that domestic producers are undercutting the prices of each other and that cannot be attributed to imports.
- b. Article 3.4 of the WTO AD Agreement mandates that domestic industry is required to show actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments, or utilization incapacity. The domestic industry has not only failed to show actual decline is certain factors but has also not shown potential decline in any of the factors.
- c. Production of domestic industry has only marginally declined in POI. This decline is due to inability of the domestic industry to upgrade its facilities to produce high voltage rating Electrical Insulators. This demand is met by imports.
- d. Excluding WSI, domestic industry profitability has declined in period of investigation which is a temporary fall. Including WSI shows decline in profits which means only WSI has suffered losses.
- e. The domestic industry has claimed significant deterioration in profits when the range of price undercutting in consistent (20-40%).
- f. Domestic industry's injury claim is based on a temporary decline in production and profitability in the POI, while in their annual reports they have quoted the contrary. M/s. Modern Industries has reported profit in its Annual Report dated 2012-13, and M/s. Aditya Birla Nuvo Limited has further reported in their Annual Report 2012-13 that capacity utilization and productivity of domestic manufacturers will improve due to imposition of safeguard duty.
- g. Capacity utilization has shown a constant favorable trend in injury period, and dipped only marginally in the POI by 9%. The actual reason is that the domestic industry has not been able to upgrade its facilities to manufacture higher voltage rating electrical insulators, which are in high demand by Indian users.
- h. Domestic industry has reported ROI in same range (0-20%). Since capacity utilization has declined and ROI is positive, it shows profit margins have increased. Further sales price increased, whereas cost declined, which lead to increase in profit margin.
- i. The domestic industry is performing well in terms of productivity. Number of employees was at 102 indexed points in POI. Productivity per employee has remained very high. Sales have been high throughout injury period, only showing a marginal decline of 10% which cannot be attributed to imports.
- j. The domestic industry is able to sell its goods at a very high price in POI. Decrease in sales volume is due to trend in power sector as reported in annual report of ABI. Annual report of Hindustan Vidyut states that demand of product is likely to improve. Therefore decline in sales is temporary. Fluctuation within 10% is common in business operations.
- k. Domestic industry would be able to meet only 89% of the demand. But due to its inefficiency domestic industry is only able to meet 52% of the demand and that cannot be attributed to imports.
- l. There is no causal link between injury and dumping. Following are relevant
 - i. Despite increase in selling price, profitability has declined.
 - ii. ABI conceded level playing field and Modern stated encouraging circumstances due to imposition of safeguard duty.
 - iii. Hindustan Vidyut also reported increase in sales due to increase in investments by NTPC and PGCIL.
 - iv. Decline in profits is due to change in consumer preference to polymer insulator as stated by Hindustan Vidyut.
 - v. As this industry is an order-based industry, all domestic producers indulge in lowering their prices to win tenders and orders and not due to imports. Inter se competition in the market is the cause of injury, as it is an order based industry and number of bulk buyers are only few.
 - vi. Under-utilization and inability of the domestic industry to upgrade their production facilities to produce high voltage insulators are factors that are intrinsic to domestic industry alone.
- m. Public interest: domestic industry does not stand to gain anything with imposition of anti dumping duty when price undercutting is a result of inter se competition and not imports. ADD will drive prices upwards to the detriment of consumers.

Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties post issuance of preliminary findings

108. The interested parties have raised following additional issues after issuance of preliminary findings

- a. While the Authority has indicated that Safeguard Duties have been considered in the injury analysis, it has not been demonstrated how the landed price calculation has incorporated safeguard duties

- b. Why the domestic industry continues to suffer injuries despite such high duties being in place. If 35% duties are not sufficient to remedy any injury being suffered by the domestic industry, then any anti-dumping duty may not be able to rectify the alleged injury as well.
- c. Prior to conducting a volume effect analysis, the Designated Authority ought to revisit the import data whereby the Exporters deserve an opportunity to comment upon the same
- d. While glass and ceramic may be two sub categories of the product under consideration, there is a cost and price differences between the two which requires a price adjustment to be done between both the products inter se. Any price effect analysis without an effective price adjustment would only lead to an inaccurate conclusion on injury
- e. While the domestic industry's price has increased, the import prices have not followed the same trend and remained same thus establishing a complete lack of any link of causality between the two prices.
- f. The Exporters regularly participate in the bids conducted for the Indian power projects whereby a large share of recent bids has been awarded to Indian producers. These bids are decided predominantly on a cost analysis. It appears highly unlikely that Chinese producers participating in these bids are undercutting the Indian producers and yet the bids are being awarded to the Indian producers. Price effect analysis should be conducted on the basis of bids since price offered can be compared only on a bid-to-bid basis.
- g. Although cost has grown at a slightly higher rate than price of the domestic industry, the price has grown at a comparable rate as well, despite alleged undercutting by the subject countries.
- h. Designated Authority is required to provide tenable evidence to establish that the respective disposable capacities are likely to be directed towards exports to India in order to establish threat of injury.
- i. There is no substantiation of the claim that there is drop in Chinese demand in terms of data or market reports. The demand in China is expected to keep increasing at a healthy rate over the next 4-5 years.
- j. Anti-dumping duties cannot be used as a shield to protect the domestic industry against alleged subsidies (if any) enjoyed by the Chinese producers. There is a specific trade remedial measure available to the domestic industry.
- k. The causal link analysis of the present finding merely examines the five factors listed above as formality without any actual investigation as to whether there are truly any other factors that may have caused injury to the domestic industry.
- l. Petitioners are export-centric entities and the injury if any is attributable, to the decline in Exports of the Petitioners.
- m. None of the domestic industry members (except BHEL) produce higher KV insulators, with voltage of 765 KV and above i.e. electromechanical strength of 420 KN and above. Further, the domestic industry members apart from BHEL do not have the necessary experience/know-how to participate in tenders for 765 KV and above. Even though there is a capability in one domestic industry member to produce insulators of 420 KN and above, it is nowhere near sufficient to meet the demand of the country.
- n. The Government of India has previously taken an adverse stand when the power sector's stability and growth have been affected by the levy of trade remedial measures (Solar Cells). Requested that the Authority should exclude higher KN value insulators from the present product scope in public interest.
- o. Imposition of anti-dumping duty will affect the interest of Govt of India, Public Sector (PGCIL, SBBs) and also the ultimate consumer, industrial and household.
- p. Domestic industry has not established potential decline anywhere in the petition.
- q. In preliminary findings, the Designated Authority has considered bids awarded by PGCIL in 2014 leaving a gap of 2013 after the end of period of investigation. The reason being that during 2013, all bids were awarded to BHEL only which is now operating at 100% utilization
- r. Production of domestic industry has only marginally declined in POI. This decline is due to inability of the domestic industry to upgrade its facilities to produce high voltage rating Electrical Insulators. This demand is met by imports.
- s. Excluding WSI, domestic industry profitability has declined in period of investigation which is a temporary fall. Including WSI shows decline in profits which means only WSI has suffered losses.
- t. Difficult to reconcile huge losses to domestic industry when the range of price undercutting is consistent (20-40%).

- u. Modern insulators have recorded profits in annual report while ABI reported that capacity utilization and productivity will improve with imposition of safeguard duty.
- v. Reduction in capacity utilization is due to inefficiency of domestic industry as they are unable to upgrade their facilities to produce high voltage Electrical Insulators as demand of such insulators are increasing and capacity utilization of low voltage rating Electrical Insulators would obviously fall.
- w. Domestic industry has reported ROI in same range (0-20%). Since production utilization has declined and ROI is positive it shows profit margins have increased. Further sales price increased cost decreased which lead to increase in profit margin.
- x. Domestic industry is performing well in productivity. Marginal decline is not adverse. The trend of employees and productivity has generally remained positive for most of the injury period.
- y. Sales have shown consistent increase. Decrease in sales in due to trend in power sector as reported in annual report of ABI. Annual report of Hindustan Vidyut states that demand of product is likely to improve. Therefore decline in sales is temporary. Fluctuation within 10% is common in the business operations.
- z. Domestic industry would be able to meet only 89% of the demand. But due to under utilization of demand due to its inefficiency domestic industry is only able to meet 52% of the demand and that cannot be attributed to imports.
- aa. Despite increase in selling price profitability has declined.
- bb. ABI conceded level playing field and Modern stated encouraging circumstances due to imposition of safeguard duty.
- cc. Hindustan Vidyut also reported increase in sales due to increase in investments by NTPC and PGCIL.
- dd. Decline in profits is due to change in consumer preference to polymer insulator as stated by Hindustan Vidyut.
- ee. PGCIL awards contracts to the domestic industry only to support the domestic industry but recognizes that glass insulators are better. PGCIL made it clear awarding same tender does not mean that glass and porcelain are like article. PGCIL clarified that glass insulators are much superior than porcelain insulators due to operational and technical reasons.
- ff. Inter se competition in the market as it is an order based industry and number of bulk buyers are only few
- gg. Under utilization of capacity as domestic industry is not able to meet the increasing demand in India. Therefore consumers are shifting to polymer insulator manufacturers.
- hh. Public interest: domestic industry does not stand to gain anything with imposition of ADD when price undercutting is a result of inter se competition and not imports. ADD will drive prices upwards to the detriment of consumers. To impose anti-dumping duty on an essential product which is required to set up electricity grids in India, will retard the development of the Indian grid and would be against the long term interest of the Indian industry.
- ii. Anti-dumping duty should be imposed in such a manner that healthy competition level is maintained while providing reasonable protection of the Indian manufacturers.
- jj. As the exact weight of the insulators may only be known after actual manufacturing, imposition of anti-dumping duty on absolute basis US\$/MT may lead to complexities. Anti-dumping duty may be imposed on percentage terms. However, if the anti-dumping duty be imposed in absolute terms, then normative weight of each type of disc insulators be indicated in the notification for facilitating calculation of duty incidence at the time of bid evaluation.
- kk. Anti-dumping duty may be made effective only on such contracts which are awarded after the said duty comes into effect and not retrospectively in view of additions on procurement cost of PGCIL, it will result in enhanced transmission tariff and additional cost burden on general public at large.
- ll. The projects funded by World Bank/ADB which are exempted from custom duties also be exempted from anti-dumping duty.
- mm. Powergrid has been placing development orders for insulators to the Indian firms. However, the firms are not meeting the regular qualifications requirement pertaining to technical experience in order to qualify for consideration of awards. Technical requirements have recently being relaxed for indigenous bidders.
- nn. Participation of foreign firms in tenders is also serving to enhance competitiveness in the bidding process as domestic manufacturers too are in a position to offer competitive prices (example of Champa- Kurulshetra transmission line where BHEL won the tender).
- oo. There is continuous gap between demand and capacity. Capacity utilization of the domestic industry is satisfactory except in 2012-13. Powergrid requirement is mainly for 765 KV/800KV transmission lines where Indian manufacturers have limited capacity.

- pp. For metal fittings there are limited suppliers. Due to this the supply of electrical insulator as per contract delivery schedule has been affected in almost all the cases. Even contracts awarded to BHEL got affected due to capacity limitation and non availability of metal fittings. Same is the case with other manufacturers. Imposition of anti-dumping duty on extra high voltage insulator may lead to capacity constraint in India.
- qq. Non Injurious Price if determined by adopting GFA will highly be inflated and not based on real situation.
- rr. Designated Authority should adopt ROCE earned by the industry when there was no allegation of dumping as reasonable profit margin and not 22% ROCE. 22% ROCE gives undue advantage and protection to domestic industry. 41% profit margin on equity in no terms can be considered as reasonable. EU practice clearly establishes that profit margin to be considered while arriving at reasonable return should be based on analysis of profits when there was no dumping and uniform application of 22% profit margin is based on some hypothetical consideration is illogical and cannot be reasonable.
- ss. India was net exporter till 2006. Substantial new capacity and production came on stream overseas which made it harder for Indian manufacturers to maintain large volume of exports.
- tt. Depreciation of Indian rupee has made imports from China costlier as compared to earlier period. Recent offers from Chinese manufacturers for hollow and solid core insulators show higher landed price as compared to the offers by Indian manufacturers. Therefore dumping from china is no longer a threat and anti-dumping duty should not be levied.
- uu. Since imposition of anti-dumping duty, the Indian manufacturers have been demanding price increase for the last two years in range of 10-20% for all type of insulators. Overall electric industry, consumers and also global market to which exports are made by ABB is also not growing.
- vv. Over last 5 year period Chinese yuan has appreciated against US\$ and exports have become less remunerative for them. Still, Chinese manufactures managed to sustain their business. Innovative initiative by the Indian manufactures on their day to day business will help them to survive and make their operations viable and sustainable.
- ww. No analysis of potential decline.
- xx. Inaccuracies with regard to data related to demand, capacity, production, capacity utilization, domestic sales and market share in application and preliminary findings
- yy. Submissions of interested parties on demand supply gap ignored.
- zz. DA is trying to influence the decision of PGCIL with regard to sourcing of electrical insulator from China by way of levying anti-dumping duty. DA has created non level playing field.
- aaa. Designated Authority failed to appreciate the aspect of inter se competition.
- bbb. Buyers are opting for polymer insulator instead of ceramic insulator.
- ccc. Annual report of three companies shows existence of level playing field.
- ddd. Designated Authority has not examined the issue of whether such provisional duty is required to prevent injury during the course of investigation. Violation of Art 7. Already 10 months have elapsed.
- eee. ADD will result in an unduly high burden on the Indian users. DI would not gain much as price undercutting is due to inter se competition and not dumped imports.
- fff. The methodology as to how landed price calculation has incorporated safeguard duties.
- ggg. If 35% of duty is not sufficient then ADD may not be able to rectify the alleged injury.
- hhh. Any price effect analysis without appropriate adjustment to glass insulator would be inaccurate
- iii. Imports price has not changed but domestic industry prices have increased. Lack of causality.
- jjj. Even though cost has increased slightly higher than price of domestic industry, price has grown at a comparable rate of cost increase.
- kkk. Mere existence of disposable capacity does not establish threat. No evidence that such capacities are likely to get diverted.
- lll. No evidence on drop in Chinese demand. It is mere assumption of domestic industry
- mmm. ADD cannot be used as shield. Claim that there is a threat of injury because Chinese producers are subsidized is merely a colorable attempt to attain countervailing effect from ADD.
- nnn. Causal link parameters are not exhaustive but indicative. Examination of five factors is mere formality without investigating the presence of other factors
- ooo. Petitioner are export centric, any injury is due to decline in exports. Reference to Annual reports of ABI, Modern, WSI
- ppp. The fact that all the DI producers produce on the basis of anticipated orders as opposed to actual orders implies that even if one of the domestic producers wins the tender bid, the remaining domestic producers' goods will go unutilized. Therefore, this pile up of inventory is not a result of any alleged dumping.
- qqq. The Petitioners have contended that over the last few years, a large majority of PGCIL tenders have been awarded to Chinese suppliers as a result of which they have suffered material injury. The data relied upon for this by the Petitioner is from 2007 to 2011-12 in their submissions, rather than the period of investigation which is 2012-13. The perusal of data from the POI indicates that the Indian suppliers have gained a steadily

- increasing share of orders from PGCIL. Therefore, the claims made by the Petitioners are misrepresentative and outdated.
- rrr. Mere expansion of capacities in China is not a reason to levy duties on Chinese imports. There is a need to establish dumping, injury and causal link in order to justify a levy of anti-dumping duties.
- sss. Further, given that there were duties in force for the last year, the Hon'ble Designated Authority must enquire as to why the domestic industry continues to suffer injuries despite such high duties being in place. If 35% duties are not sufficient to remedy any injury being suffered by the domestic industry, then any anti-dumping duty may not be able to rectify the alleged injury as well.
- ttt. the Indian suppliers have gained a steadily increasing share of orders from PGCIL.
- uuu. bid prices claimed in a tender will never feature in actual import data since only one bid is awarded with the tender contract whereas all the other bids are rejected. Therefore, if various suppliers apply to a tender, no matter how low or high their prices, only the winning tender will actually feature in the import data since the other producers did not receive that order in the first place. Therefore, it is not appropriate for the Petitioners to substantiate this claim on tenders with general import data which shows average prices.
- vvv. The safeguard finding was issued at a time when a large majority of tenders were being awarded to Chinese producers rather than Indian producers. Therefore, it might be considered appropriate that the Hon'ble Director General (Safeguards) found that the domestic industry was not competitive and incapable of competing with the Chinese producers. However, as per the recent tender data placed on record in PGCIL's submissions, it is evident that the Indian producers have been receiving more orders than even the Chinese producers, even after the expiry of Safeguard duties.
- www. Petitioners' capacity is lower than the demand in the country. Further, the Petitioners are infamous for being unable to deliver on orders even when they win tender bids, particularly, for higher kN value insulators. In fact, PGCIL categorically stated at the public hearing that they would not even prefer ceramic insulators but to benefit the domestic industry they include the same in their tender documents.
- xxx. demand of the country is higher than the capacity of the Petitioners, whereby the domestic industry does not have the capacity to meet the present demand of the country itself, let alone the potential demand in forthcoming years.
- yyy. glass insulators usually do not exhibit breakdowns as compared to ceramic insulators. much higher frequency of damaged insulators and maintenance issues for ceramic insulators.
- zzz. ceramic insulators tend to break down much more frequently as compared to glass insulators, it is evident that the Designated Authority needs to make an adjustment to lower the normal value of glass insulators in order to account for this substantial difference in quality.
- aaaa. as part of conducting a price effect analysis, the Hon'ble Designated Authority ought to have ensured that the price and cost differences between the various kinds of insulators (namely glass and ceramic) ought to be taken into consideration.
- bbbb. cost has grown at a slightly higher rate than price of the domestic industry, the price has grown at a comparable rate as well, despite alleged undercutting by the subject countries.
- cccc. over the last few years, the increase in demand has been substantial, far outstripping the increase in capacities of the domestic industry. Therefore, there was bound to be a reduction in market share. Even if the Petitioners produced at hundred percent capacity, they would have a lower market share.
- dddd. anti-dumping duties cannot be used as a shield to protect the domestic industry against alleged subsidies (if any) enjoyed by the Chinese producers. There is a specific trade remedial measure available to the domestic industry in case the injury is being suffered due to subsidized imports from China.
- eeee. The causal link analysis of the present finding merely examines the five factors listed above as formality without any actual investigation as to whether there are truly any other factors that may have caused injury to the domestic industry Designated Authority may kindly examine the domestic industry's operations and data in detail to determine whether there is a breach in causal link.
- ffff. Petitioners themselves have acknowledged multifarious non-attribution factors responsible for injury caused to them other than dumped imports. While some annual reports also acknowledge the injury caused by Chinese imports, it is clear that this is but one of possible causes of injury to the domestic industry.
- gggg. The domestic industry is clearly not capable of catering to the demand of the Indian consumer industry as per relevant statistics and records. As such, their claim of being able to cater to the domestic markets demands should be rejected.
- hhhh. The Petitioners themselves admit that they have swappable capacities. Therefore, due to limited capacities, the domestic industry members (except BHEL) are unable to produce higher KV insulators to the extent required. It should be verified that whether the DI members apart from BHEL have the necessary experience/know-how to participate in tenders for 765 KV and above as held by PGCIL. Even though there is a capability to produce insulators of 420 KN and above, it is nowhere near sufficient to meet the demand of the country.
- iiii. With the levy of ADD, the DI's participation in the higher KN Value insulator market would not improve since it would still not qualify for these tender requirements. This is bound to impact the power sector adversely.

- jjjj. Recent tender data placed on record in PGCIL's submissions, that the Indian producers have been receiving more orders than even the Chinese producers, even after the expiry of Safeguard duties. Therefore, there is no such deterioration of Indian presence in tenders and suppliers as claimed by the Petitioners.
- kkkk. The government of India has previously taken an adverse stand when the power sector's stability and growth have been affected by the levy of trade remedial measures.
- llll. The Petitioners are export-centric entities and the injury if any is attributable, to the decline in Exports of the Petitioners. The Petitioners themselves have acknowledged multifarious non-attribution factors responsible for injury caused to them other than dumped imports in their annual reports.
- mmmm. The DI has failed to establish dumping, injury, and causal link in their written submissions.
- nnnn. Also, Power Grid has accepted placing significant orders with the DI.
- oooo. The DI has failed to establish dumping, injury and causal link; as such, excessive capacities in China become immaterial when these parameters have already been disproved/not established.
- pppp. The injury to the DI occurs from stiff domestic competition and difficulties from the suppliers. Power Grid has submitted that there is only a limited no. of suppliers for metal fittings which is an important component of the disc insulators. Due to this, supply of electrical insulators by Indian producers including the DI is affected in every tender awarded to the DI. PGCIL in Public hearing further submitted that in 2013-14, tenders to an extent of Rs. 270 Crores were awarded to the domestic suppliers and Rs. 180 Crores to Chinese Companies.
- qqqq. The Indian user industry has awarded tenders to the DI in the past but the DI has not upgraded their facilities to meet the increasing demand of the users. With the presence of Power Grid and ABB, the DI had regular clients. The initiation for anti-dumping and claim of injury due to dumping is merely a way of the DI to remove user industry's options.
- rrrr. For electrical insulators up to 400 kV, which are being produced by the DI, all the requirements are acquired by domestic bidding and foreign producers cannot participate in this bidding. Thus, the DI is exposed to fair competition in the product which is produced by the DI.
- ssss. The DI, further, enjoys fair competitive conditions enjoying protection under safeguard duty from October 2012 to December 2013. The existence of this safeguard duty for more than a year was for the DI to adjust to the imports of the PUC, the DI has achieved this stage but is now claiming injury. These claims of the DI are nothing but forum shopping and abuse of trade remedial measures. If the ADD is imposed it'll be protection to the DI for a second time. It will only harm India's goal of having a stable and strong electricity grid, also the burden of the duties would ultimately fall on the ultimate consumer. ADD imposed in this case would be a violation of due process to exporters, unfair protection to the DI and against public interests.
- tttt. The DI's claims on tender prices quoted by various Chinese exporters has not been supported by any proof of the said tender/s, also, the price difference could have been in accordance to the product type. Also, with regard to tender, Power Grid has placed a significant order tenders with the DI for the last 3-4 years. Thus, the DI's contention is false.
- uuuu. Anti-dumping duty will harm Indian Govt goal of strengthening the national grid. PGCIL will continue to source from China as only China can supply superior quality goods and high voltage as Indian producers have limited capacity.
- vvvv. Anti-dumping duty will not protect DI as PGCIL will still be forced to place orders based on prices excluding import duties such as World Bank and Asian Development Bank.

Views of the Domestic Industry before Issuance of preliminary findings

109. The domestic industry has submitted that:
- a. Demand for the product under consideration has remained positive throughout the injury period.
 - b. Subject country imports have shown significant increase over the period in absolute terms. Chinese imports constitute almost the entire volume of imports into India. Chinese dumped imports have increased in relation to consumption and production of the product under consideration in India.
 - c. Weighted average import prices (after including basic customs duties) have been significantly below the selling prices of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting. There is a significant injury margin.
 - d. The landed price of imports is significantly below the cost of production of the domestic industry throughout the injury period. Imports have had significant suppressing effect on the prices of the domestic industry in the market. The gap between the cost of sales and the selling price of the domestic industry is shrinking throughout the injury period due to presence of dumped imports and the domestic industry is unable to increase its prices in proportion to increase in cost, thereby suffering huge losses.
 - e. The domestic industry enhanced capacities in the year 2010-11. The production of the domestic industry has declined since 2010-11. It has declined significantly in the POI when compared with the previous year. Domestic sales have seen a similar trend. Capacity utilization increased in 2010-11, but has declined significantly thereafter.
 - f. Export sales have not changed much over the injury period.

- g. Inventories have shown massive increase throughout the injury period with a significant increase during period of investigation.
- h. The profits of the domestic industry have declined throughout the injury period since 2010-11. The domestic industry has been suffering losses since 2011-12, which have intensified considerably in the POI. Profitability and cash profits have shown the same trend. PBIT and ROI have shown a similar trend, becoming negative in the POI.
- i. Market share of the domestic industry has declined throughout the injury period whereas the market share of the dumped imports has significantly increased throughout the injury period.
- j. Domestic industry has lost substantial orders during the injury period.
- k. The employment level increased in 2010-11 and declined thereafter. Wages paid have increased over the injury period but this is in line with the expected increase of wages in the country.
- l. Productivity has moved in the same direction as production.
- m. Even if the performance of the domestic industry is considered excluding WSI, it would be seen that performance has significantly deteriorated.
- n. There is a threat of further material injury due to significant increase in volume of imports, surplus capacities with Chinese producers and their export orientation, significant price undercutting and price suppression, increasing inventories with the domestic industry, market share of dumped imports, orders placed by PGCIL on Chinese producers, decreased demand in China and price advantages enjoyed by Chinese producers.
- o. Regarding the argument that domestic producers are undercutting the prices of each other, price undercutting amongst domestic producers would not have led to decline in sales volumes. It would have only led to re-alignment of sales between different domestic producers. Further, the increase in procurement from China and the decline in procurement from India clearly establish that the Chinese producers have caused injury to the domestic industry.

Views of the Domestic Industry post Issuance of preliminary findings

110. The domestic industry has made the following additional submissions after issuance of preliminary findings.
- a. While the gross procurement from China PR has increased over the years, procurement from domestic sources has come down in both absolute terms and in relation to total procurement.
 - b. The product under consideration is largely an “order based industry”, i.e., the producers largely produce the goods against firm orders received from the consumers. However, given that the production process involves furnace operations, in case the producers do not have any order in hand, the furnace cannot be kept idle. In such situations, the producers tend to utilise the facilities for production of goods for which they anticipate demand in future.
 - c. China has built significant capacities for the product and has gradually turned from net importer to net exporter in a very short time period.
 - d. There has been unprecedented and dramatic fall in the import price of glass insulators from China. the export price to India is selectively and discriminatorily much lower as compared to the export price to the rest of the world.
 - e. As per the price bids declared by PGCIL at the time of opening of the tender wherein various prospective suppliers were present and were able to note the price bids offered by the competitive bidders, it would be seen that different Chinese producers are quoting prices with huge variations for the same tender clearing showing that there is no nexus between the cost of insulator and the prices quoted therein.
 - f. As regards public interest, the cost of insulators forms 4-5% of transmission and sub-station costs. Consequently, the end consumer of electricity will not face any significant increase in prices.
 - g. As regards landed price calculation after incorporating safeguard duties, There is no requirement that quantum of safeguard duty should be added to determine injury margin. In fact, anti dumping duties and safeguard duties are being determined only after considering basic customs duty safeguard duty has expired on 31st day of December, 2013, and therefore the issue is in any case no longer relevant.
 - h. Despite imposition of safeguard duty, the domestic industry continued to suffer injury due to dumped imports. Now that the safeguard duty has ceased, injury to the domestic industry is likely to get intensified.
 - i. The exporters had ample opportunity to suggest alternative to the import data adopted or to provide information on the same. However, none of the exporters have provided any such evidence or information.
 - j. There is a clear causal link since the landed price of imports is lower than both the selling price of the domestic industry and its per unit cost of sales. The increase in selling price was not sufficient to compensate the increase in cost of sales.
 - k. the increasing procurements by the Chinese suppliers itself establishes that the Chinese suppliers had outbid the domestic industry in these tenders. This clearly establishes price undercutting.
 - l. There is no requirement under the law to demonstrate respective disposable capacities are likely to be directed towards exports to India in order to establish threat of injury.

- m. Petitioners have claimed decline in Chinese demand on the basis of final findings by Director General (Safeguards). Even if it is considered that Chinese demand for the product under consideration is rising, what is relevant to note is that exports from China are increasing leaps and bounds.
- n. The petitioners have provided evidence of ad-hoc subsidies to demonstrate that the exporters in the subject country are getting undue advantage which coupled with other factors establishes threat of material injury.
- o. The responding exporter has not demonstrated any other factor which may be the prime reason for injury to the domestic industry.
- p. Petitioners have exported the product under consideration, which on an average constitute 10-15% of total production. Therefore, the domestic industry cannot be termed as "export centric. the claimed injury to the domestic industry is on account of domestic operations
- q. the Govt. of India has imposed interim duties, which establishes that the Govt. of India considers protection to this industry as relevant and necessary.
- r. in the year 2013-14, 42% of the orders were placed on Chinese suppliers.
- s. Increase in share of Indian producers and good orders with BHEL post imposition of safeguard duty establish the causal link. This further establishes that ability or inability of the domestic industry is only an excuse. Only safeguard duty was imposed, procurement from domestic industry increased. Once safeguard duty expired, procurement from China increased.
- t. A decline in production is not due to inability of the domestic industry to upgrade its facility as the domestic industry is producing HV insulators.
- u. WSI forms part of the domestic industry and therefore it would be illegal to examine injury to the domestic industry by excluding WSI.
- v. First of all, price undercutting is not the same over the entire period. Secondly, even with the same level of price undercutting, the profitability of domestic industry may decline. Price undercutting has increased substantially in the POI when compared with the base year.
- w. As regards statements in Annual report, the performance of the domestic industry with respect to the product under consideration must be seen as a whole.
- x. Reduction in capacity utilization is due to lost orders. The petitioner has provided information from PGCIL showing orders being placed on Chinese producers in increasing numbers in the recent years. The domestic industry is capable of supplying and has supplied HV insulators.
- y. return on investment of the domestic industry increased in 2010-11 and thereafter declined significantly to such an extent that the domestic industry suffered negative return on investment
- z. Injury to the domestic industry is well established by consideration of various factors. It is not necessary that each and every parameter shows deterioration.
- aa. Whereas demand for the product increased, sales of the domestic industry declined.
- bb. As regards the argument that HVL anticipated increase in demand, the same does not mean that the sales of the domestic industry will improve when landed price of import is materially below the selling price of the domestic industry.
- cc. As regards contention that 10% fluctuation is common for business operations, petitioners submit that its sales volumes have declined by 23% between 2010-11 and period of investigation, when demand has increased by 30%. Further, while it might appear insignificant to the exporters, 10% decline in sales is indeed quite significant for the domestic industry, that too when the demand for the product has shown significant increase.
- dd. The reason for underutilization of capacity is the effect of dumping from the subject country. The petitioners have shown how orders have been lost to Chinese producers who are selling the product at dumped prices. The demand for the product in the country cannot be compared with the capacity of domestic industry alone. Indian demand needs to be compared with Indian capacity.
- ee. The increase in selling price was not sufficient to compensate the increase in cost of sales. The cost of sales per unit increased steadily over the injury period and was higher than the selling price of the domestic industry in the period of investigation.
- ff. Any anti-dumping duty imposed will take into account the existing safeguard duty so as not to award double protection. Modern Insulator stated encouraging circumstances because of safeguard duty which has already expired. As regards ABI statement, ABI has nowhere stated that market for the product is fair.
- gg. the sales of Hindustan Vidyut declined significantly over the period. If the company reported increase in production in 2012-13, it is evident that the level of the same is materially below the earlier levels.
- hh. Both ABI and BHEL are producing polymer insulators also. Demand for the product in the country clearly establishes that the domestic industry has not suffered because of decline in demand or changes in consumer preference.
- ii. The fact that PGCIL has qualified the porcelain and glass insulators suppliers bids on technical parameters establishes that the two are technically substitutable. The fact that PGCIL is placing orders on the basis of lowest value of the tenders regardless of whether such insulator is a glass insulator or a porcelain insulator establishes commercial substitutability.
- jj. As regards operational consideration, the claim is without basis. When Power Grid has not differentiated and distinguished between the two products either in technical bid evaluation or in commercial bid evaluation of the

- bids and further since procurement of the product by PGCIL is on the basis of technical and commercial evaluation of the bids, only those parameters are relevant for the purpose and PGCIL cannot now plead any other parameter as a relevant parameter.
- kk. The 'bulk orders' are going to foreign producers due to low prices. Information from PGCIL has shown the number of tenders being awarded to Chinese producers of the subject goods. The argument of the exporter that it is an order based industry, coupled with the fact that the orders were increasingly placed on Chinese suppliers establishes that the competition was not inter-se domestic industry.
 - ll. Polymer insulators are not commercially and technically substitutable with the product Under utilization of capacity by domestic industry is not because domestic industry is not able to meet the increasing demand in India. The same is because Chinese producers increasingly undercut the domestic industry and took away the orders.
 - mm. PGCIL should specify the requirements for each of the product category so that the domestic industry could establish existence of sufficient capacities. At no stage of the present proceedings, PGCIL has quantified their requirements of different types of insulator and the capacities which have been offered by the Indian industry to PGCIL. Thus, the claim that domestic industry does not have sufficient capacity or operational experience is without any basis and is not yet established.
 - nn. there have been no such instances where PGCIL was forced to import because of absence of capacities and operational experience with the domestic industry.
 - oo. The product types for which exclusion have been requested constitute majority of the product under consideration. In other words, the PGCIL is seeking exclusion of those products which are the bread and butter of the domestic industry. Indian industry has been protected from unfair practice of dumping in the past even in those situations, where the Indian industry was in minority and imports are the majority.
 - pp. PGCIL has requested the weight to specify in respect of disc insulator. However, a large number of insulators are involved in the present case and Designated Authority cannot selectively specify weight in respect of one category of products.
 - qq. Lot of insulators are imported on the basis of specific design, weights for which are unknown to the authority.
 - rr. the domestic industry took sufficient care in cautioning PGCIL on the adverse effects on the company if the company goes ahead with placing of the order without waiting for outcome of the present investigation.
 - ss. there have been no instance in the past wherein the domestic producers were disqualified on technical reasons in the PGCIL tenders.
 - tt. most of the de-capping reported are for normal zone insulators (creepage distance 315 mm), which were installed way back. Over a period of time the pollution levels of these areas has increased resulting in few de-capping. On account of this POWERGRID has revised their technical specification (increased the creepage requirement to 460 mm). The glass insulators imported from China by POWERGRID in the recent past is in line with new specification and thus no de-capping reported. Domestic manufacturers are also manufacturing higher creepage insulators and supplying to POWERGRID projects Wardha-Raipur, Kudgi-Kholapu.
 - uu. The domestic industry is offering highly injurious price and is steeply losing orders. Should this situation continue, it would lead to decline of domestic industry and PGCIL would eventually be under the clutches of Chinese manufacturers.
 - vv. The suppliers of metal fittings are holding capacities significantly higher what the domestic industry requires to produce and supply the product to PGCIL.
 - ww. The biggest factor establishing that the glass and procelainare one article is the fact that the consumer is willing to pay THE SAME price for the two types. Power Grid has not differentiated between the two types and has not agreed to pay differential prices.
 - xx. the Designated Authority has protected the domestic industry at a level where the domestic industry would not be earning profits, leave aside 22% return.
 - yy. BHEL has infact supplied these kind of insulators to ABB. As regards the breakage of insulators, it was the fault in the design of the ABB.
 - zz. ABI has offered to supply such material to ABB. however due to very short lead time given by ABB which was practically not possible, the ABI could not supply the same.
 - aaa. All the voltage rating insulators are available domestically. The consumer cannot selectively go to certain suppliers only and ask for the same. Further the consumer cannot seek exclusion of certain products due to their policy decisions.
 - bbb. The anti-dumping duty is imposed in US\$. Therefore depreciation of India Rupee will not have its effects
 - ccc. The domestic industry has not made any unreasonable price increases, nor has the interested party demonstrated any unreasonable price increases.
 - ddd. Dumping is difference between normal value and export price. It is not a question of innovative ideas and their implementation.

Examination by the Authority

111. The Authority has taken note of submissions made by the interested parties. The Authority has examined the injury to the domestic industry in accordance with the Anti-dumping Rules and considering the submissions made by the interested parties.
112. Rules require the Authority to examine injury by examining both volume and price effect. A determination of injury involves an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic industry. With regard to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.
113. As regards the consequent impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of Anti-dumping Rules states as under:

“The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”
114. All parameters of injury need not show deterioration. While some parameter may show deterioration, some may show improvement. The Designated Authority must consider all injury parameters and thereafter conclude whether the domestic industry has suffered injury.
115. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments in the submissions.
116. As regards the arguments based on injury statement excluding WS Industries, it is noted that the Authority has not considered WSI as eligible domestic industry. The injury analysis has been conducted excluding WS Industries and for the purpose of injury analysis only domestic parameters has been considered.
117. As regards the arguments concerning statements in annual report of some of the petitioner companies, the Authority reiterates that the injury to the domestic industry has been determined by considering the performance of the domestic industry as a whole.
118. As regards the argument of demand supply gap, it is noted that if the exporters wanted to supply the goods to meet the requirement in Indian market that could be done by exporting the requirements at a price equivalent to normal value but not at a dumped value and to capture the market.
119. As regards the argument that reduction in production and capacity utilization is due to inefficiency of domestic industry as they are unable to upgrade their facilities to produce high voltage, the Authority has analyzed all the evidence and arguments filed by the interested parties including domestic industry and notes that the domestic industry has supplied high voltage insulators also. It is not established that reduction in production and capacity utilization is due to possible inefficiency of the domestic industry.
120. It is noted that the price undercutting increased during the period of investigation. In any case even if undercutting percentage is the same, it implies that the domestic industry prices have also declined in line with import prices and does not imply that the trend of cost of sales and selling price would not undergo any change.
121. It has been argued by the interested parties that the decline in sales is temporary as demand is likely to improve. It is noted that domestic industry is unable to improve its sales since 2011-12 despite increase in demand. In fact, sales of the domestic industry declined.
122. As regards the argument on causal link, the issue is dealt in preliminary findings. The Authority notes as follows in this regard:
 - i. Increase in selling price is due to increase in cost. However, despite increase in selling price, dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry.
 - ii. Any anti-dumping duty imposed will take into account the existing safeguard duty so as not to award double protection.
 - iii. As regards the argument that decline in profits is due to change in consumer preference to polymer insulator, it is noted that positive trend of demand does not corroborate with the argument of change in consumer preference.
 - iv. As stated above, that the domestic industry has supplied high voltage insulators.
123. As regards the argument of inter se competition, the Authority confirms the preliminary findings and notes that the insulator industry is largely order based and the orders are placed on the basis of lowest price offered by the suppliers. Therefore, the effect of dumping is more significant. Chinese producers are being increasingly quoting lower prices and are significantly undercutting the domestic industry prices, which substantiate the argument of

domestic industry that injury to the domestic industry is due to dumping. The question of inter se competition would have arisen, when the tenders were majorly awarded to Indian producers. The authority also notes that the Domestic Industry has been engaging itself in participating in the tenders floated by PGCIL.

124. As regards consideration of safeguard duties in the injury analysis, it is noted that there is no requirement that quantum of safeguard duty should be added to determine injury margin.

Assessment of Demand

125. The demand of subject goods has been determined by adding domestic sales of domestic like product with imports of subject goods from all countries. For the purpose of present injury analysis, the Authority has relied on the import data procured from China customs. The Authority notes that demand of subject goods increased significantly over the injury period as can be shown in the table below.

Particulars	Units	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Assessed Demand	MT	1,18,840	1,56,964	1,37,321	1,44,636
Subject Country imports- China PR	MT	16,282	26,376	35,782	62,444
Other Countries-Imports	MT	517	405	573	687
Sales of Domestic Industry	MT	64,919	72,186	63,375	5,8801
Sale of Other Indian Producers	MT	37,122	57,997	37,591	22,703

126. It is seen from the above table that the demand for the product has shown a significant increase during POI as compared to the base year. It has been contended by the responding exporter that the increase in imports is due to inefficiency of the domestic industry to upgrade to the required technology and the requirement of high voltage insulators. The Authority therefore analyzed the imports by considering the questionnaire responses of the responding exporters. It is seen that the domestic industry has produced and sold those types of insulators which have been imported in India. Since the domestic industry has produced and sold the types of insulators imported from China, it is not established that the imports have been made due to inefficiency of the domestic industry to upgrade to the required technology and the requirement of high voltage insulators.

Volume Effect of Dumped Imports and Impact on Domestic Industry

Import Volumes and Share of Subject Country

127. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The volume of imports of the subject good from the subject country have been analyzed as under:

Volume of Imports	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI(April 2012-March 2013)
Subject Country China PR	MT	16,282	26,376	35,782	62,444
Subject Country-Trend		100	162	220	384
Other Countries	MT	517	405	573	687
<i>Trend</i>		100	78	111	133
Total Imports	MT	16,799	26,781	36,356	63,131
<i>Trend</i>		100	159	216	376
Indian Production	MT	1,16,340	1,44,213	1,14,052	95,625
Imports from subject country in relation to domestic production	%	14.00%	18.29%	31.37%	65.30%
Demand	MT	1,18,840	1,56,964	1,37,321	1,44,636
Imports from subject country in relation to consumption	%	13.70%	16.80%	26.06%	43.17%
Share of imports from subject country in total imports	%	97%	98%	98%	99%

Source of import data: For China: China Customs and for other countries DGCI&S.

128. It is noted from the above table that:
- Imports from China have increased significantly in absolute terms. The increase in imports during POI is quite significant.
 - Imports from China constitute 99% of total imports during POI.
 - Imports from China PR in relation to production have increased from 14.00% during 2009-10 to 65.30% in the POI.
 - Imports from China PR in relation to total demand have increased from 13.70% in 2009-10 to 43.17% in POI.
 - Imports from China in have increased in relation to production & consumption in India consistently throughout the injury period.
129. It is thus concluded that imports from China PR have increased both in absolute and in relation to production and consumption in India.

Price Effect of the Dumped Imports on the Domestic Industry

130. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:

"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."

131. It has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports of the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, Price Underselling, price suppression and price depression, if any.

Price Undercutting

132. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry. In this regard, a comparison has been made between the landed value of the product and the average selling price of the domestic industry net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex-factory level. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in the subject country were imported into the Indian market at prices which were lower than the selling prices of the domestic industry. It is thus noted that imports of subject goods were undercutting the domestic prices and margin of undercutting is shown as per the table below:

Volume of Imports	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
CIF import price	Rs/MT	81,507	97,006	95,710	81,415
Landed value of imports	Rs/MT	88,682	105,544	104,135	88,581
Selling price of the domestic industry	Rs/MT	***	***	***	***
Price undercutting	Rs/MT	***	***	***	***
Price undercutting	%	***	***	***	***
Price undercutting range	% Range	20-30	10-20	15-25	30-40

133. It has been argued by some of the interested parties that it is difficult to reconcile huge losses to domestic industry when the range of price undercutting is inconsistent. The Authority notes that price undercutting increased during period of investigation as compared to the base year.

Price Underselling

134. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from China PR. For this purpose, the NIP determined for the domestic industry has been compared with the landed price of imports. Comparison of weighted average NIP of the domestic industry with weighted average landed price of imports shows as follows:

Particulars	UOM	POI
Weighted average-non injurious price	Rs/MT	***
Landed Price	Rs/MT	88.58
Price Underselling	Rs/MT	***
Price Underselling	%	***
Price Underselling	% Range	55-65%

135. It is seen that the landed price of the subject goods from China were significantly lower than the NIP determined for the domestic industry.

Price Suppression/Depression

136. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. The position is shown as per the Table below:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Cost of sales (Domestic)	Rs/MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>105</i>	<i>121</i>	<i>128</i>
Sales Value (Domestic)	Rs/MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>108</i>	<i>113</i>	<i>114</i>

137. It is seen that both costs as well as selling price of the domestic industry increased over the injury period. However, the increase in the selling price is far lower than the increase in cost except in 2010-11. The imports were thus suppressing the prices of the domestic industry in the market and preventing the price increases that would have otherwise occurred.

Economic parameters of the domestic industry

138. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

Production, Capacity, Capacity Utilization and Sales

139. The performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity & capacity utilization was as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Capacity	MT	91,989	91,989	91,989	92,289
Production	MT	76,844	84,878	75,085	72,601
Capacity Utilization	%	84	92	82	79
Domestic Sales	MT	64,919	72,186	63,375	58,801

140. It is seen from the above table that the domestic industry enhanced capacities in the POI. The demand for the product under consideration in the Country has increased significantly over the injury period.
141. Production of the domestic industry increased in 2010-11. However, the production declined significantly thereafter in 2011-12 and further in the POI. Production of the domestic industry in investigation period was lower than production in 2009-10 by about 6%, whereas demand for the product under consideration increased by 22% over the period.

142. Capacity utilization of the domestic industry has followed the same trend as that of production. Capacity utilization increased in 2010-11 and thereafter declined significantly in 2011-12 and investigation period. Capacity utilisation during the POI was lower than capacity utilisation in 2009-10 by 5%.
143. It has been argued by some of the interested party that reduction in capacity utilization is due to inefficiency of domestic industry as they are unable to upgrade their facilities to produce high voltage insulators. It is noted that domestic industry has produced and sold those kinds of insulators which have been imported in India during the POI.
144. Sales of domestic industry in the domestic market increased in 2010-11 and declined thereafter. The domestic sales in POI declined by 9% as compared to 2009-10 and by 19% as compared to 2010-11.
145. It has been argued that the petitioners have not demonstrated potential decline in sales. It is noted that the data shows actual decline in sales, which itself establishes injury to the domestic industry. The Authority has conducted injury analysis as per the AD Rules and its established practice.
146. It has been argued that the decline in sales is temporary as demand is likely to improve. It is noted that domestic industry is unable to improve its sales since 2010-11 despite increase in demand. In fact, sales of the domestic industry declined.
147. It is thus concluded that production, domestic sales and capacity utilization of the domestic industry deteriorated significantly despite increase in demand for the product in the Country.

Profits, profitability, return on investment and cash profits

148. The cost of sales, selling price, profit/loss, cash profits and return on investment of the domestic industry has been analysed as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Profit/loss	Rs/MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>151</i>	<i>3</i>	<i>(89)</i>
Profit before interest	Rs/MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>135</i>	<i>55</i>	<i>1</i>
Cash profit	Rs/MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>134</i>	<i>39</i>	<i>(21)</i>
Gross profit/loss	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>168</i>	<i>3</i>	<i>(80)</i>
Gross profit before interest	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>151</i>	<i>54</i>	<i>1</i>
Gross cash profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>149</i>	<i>38</i>	<i>(19)</i>
ROCE	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>131</i>	<i>50</i>	<i>1</i>

149. The Authority notes that the domestic industry has earned profit in the base year. The situation improved in 2010-11 and the domestic industry earned profits in that year. However, the profitability of the domestic industry deteriorated significantly thereafter and the domestic industry suffered financial losses in the POI.
150. Return on investment over the injury period has shown the same trend as that of profits. Profit before interest and taxes (PBIT) increased in 2010-11 and declined thereafter, becoming negative in the POI. The return on investment (ROI) for the domestic industry improved in 2010-11 and declined thereafter.
151. Cash profits have also shown the same trend as that of profits. Cash profits improved in 2010-11 and declined thereafter with a significant deterioration in the investigation period.

Market Share

152. The effects of the dumped imports on the market share of the domestic industry have been examined as below:

Market Share	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Demand	MT	1,18,840	1,56,964	1,37,321	1,44,636
Share of Domestic Industry	%	54.63%	45.99%	46.15%	40.65%
Share of other producers	%	31.24%	36.95%	27.37%	15.70%
Share of Subject Country	%	13.70%	16.80%	26.06%	43.17%
Share of Other Imports	%	0.43	0.26	0.42	0.48

153. It is seen from the above table that the market share of the domestic industry has declined throughout the injury period and that of China has increased consistently. The market share of the domestic industry declined by 14% during POI as compared to the base year. Considering the positive price undercutting and increase in market share of China, it is concluded that the market share of the domestic industry has declined as a direct result of dumped imports from China PR.

Employment, Productivity and Wages

154. The position with regard to employment, wages and productivity is as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Employment	No	7,412	7,943	7,927	7,724
Productivity per day	Per Day	220	243	215	207
Productivity per employee	MT	10	11	9	9
Wages	Rs lacs	***	***	***	***

155. It is noted that employment with the domestic industry increased in 2010-11. Employment with the domestic industry declined thereafter. Wages paid have increased over the period of injury. Productivity increased in 2010-11 and declined thereafter, in line with the trend of production.

Inventories

156. The data relating to inventory of the subject goods are shown in the following table:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Average Stock	MT	7,117	7,239	7,504	8,277

157. It is seen that inventories with the domestic industry have increased throughout the injury period. The inventory has increased by around 16% during POI as compared to the base year.

Growth

Particulars	UOM	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
Production	Y/Y	-	10%	-12%	-3%
Domestic Sales	Y/Y	-	11%	-12%	-7%
Cost of Sales	Y/Y	-	***	***	***
Selling Price	Y/Y	-	***	***	***
Profit/(Loss)	Y/Y	-	***	***	***
ROI	Y/Y	-	***	***	***

158. The Authority notes that growth of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity utilization, profits, return on investment, cash profits was positive in 2010-11. The growth in these parameters however became negative thereafter, despite positive growth in demand for the product in the Country. On the whole, the growth of the domestic industry has been negative over the injury period.

Ability to raise capital investments

159. The Authority notes that given rising demand of the product in the country, the domestic industry has made investments in enhancing capacity. However, despite these investments, the performance of the domestic industry has deteriorated considerably.

Level of dumping & dumping margin

160. It is noted that subject country imports are entering the country at dumped prices and that the margin of dumping is significant.

Factors Affecting Domestic Prices

161. The examination of the import prices from the subject country, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market, etc shows that the landed value of imported material from the subject countries is below the selling price and the non-injurious price of the domestic industry, causing significant price undercutting as well as price under selling in the Indian market. Thus, the factor affecting the domestic prices is landed value of subject goods from subject country.

Conclusion on injury

162. It is thus seen that there has been a significant increase in the volume of dumped imports from subject country in absolute terms. The imports have increased significantly in relation to consumption and production of the product in India. Imports have thus increased both in absolute terms and in relation to production and consumption in

India. The dumped imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market. Dumped imports have had significant adverse price effect in terms of price suppression. Effect of dumped imports has been to prevent price increase which otherwise would have occurred, to a significant degree. Imports have prevented the domestic industry from raising its prices in proportion to cost increases. The domestic industry is suffering significant price underselling. The dumping margin determined by the Authority is quite significant. With regard to consequent impact of dumped imports on the domestic industry, it is noted that dumped imports from China have adversely impacted the performance of the domestic industry in respect of production, domestic sales, capacity utilization, inventories, market share, profits, cash profits and return on investment. Whereas the demand for the product under consideration has increased over the injury period and the domestic industry has enhanced capacities, its production, sales volumes, capacity utilisation and market share declined significantly. Inventories with the domestic industry increased. Further, as a result of significant price undercutting and suppression, profitability of the domestic industry deteriorated so significantly that the domestic industry was suffering significant financial losses. Further, the domestic industry suffered cash losses and negative return on investment during the POI. The Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury.

Threat of Material Injury

163. The applicants have claimed that, in addition to material injury, there is the threat of further material injury in the present case.

Annexure II to the Rules provides as under in this regard.

“A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances which would create a situation in which the dumping would cause injury must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the Designated Authority shall consider, inter-alia, such factors as

- (a) a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;*
- (b) sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;*
- (c) whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and,*
- (d) Inventories of the article being investigated.”*

164. Submissions made before the Authority with regard to threat of material injury have been examined.

Significant Increase in Volume of Imports

165. The volume of imports has increased significantly in a relatively short period. The high rate of increase in the volume of imports indicates that significant increase in imports is imminent.

Export Orientation

166. The domestic industry contended that in addition to significant production capacities, the producers/exporters from China PR have high export orientation. The export orientation of the producers in China PR indicates a threat of further material injury to the domestic industry.

Significant Price Undercutting and Price Suppression

167. The price undercutting by the subject imports is significant. The imports are entering at such prices that there is strong likelihood of further importation. Dumped imports are causing price suppression of domestic industry prices. Despite an increase in the cost of sales over the injury period, the domestic industry has been unable to increase its domestic selling price to the same extent, resulting in losses. Thus, significant price difference between the domestic and imported product shows that the imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports.

Increasing Inventories with Domestic Industry

168. Inventories with the domestic industry have increased significantly over the injury period and indicate the existence of a threat of further material injury.

Market Share of Dumped Imports

169. A significant share in the domestic market is already held by subject country imports and the same is increasing. Increase in Chinese market share by about 200% between 2009-10 and POI clearly also shows threat of increased injury.

Orders placed by PGCIL on Chinese Companies

170. The domestic industry has provided information to show that PGCIL has placed huge orders on Chinese companies and Chinese companies are aggressively participating in tenders being floated by PGCIL. As per the information provided by the domestic industry and information available in the website of PGCIL, the orders that have already been placed by PGCIL on the Chinese companies are as follows:-

Name of supplier	Order month	Volume (Nos)	Weight (MT)
Orders already placed			
Shandong Ruitai Glass Insulator Co. Ltd.,	May'14 & June'14	15,36,848	17,069
SiChuanYiBin Global Group Co. Ltd., China	May'14 & June'14	2,97,900	3,575
Nanjing Electric (Group) Co. Ltd, China	May'14 & June'14	8,07,147	9,686
Total		26,41,895	30,330

Decline in demand in China

171. The domestic industry claimed that the structural power imbalances that China experienced in 2000 led to an unprecedented demand for power generation and transmission equipment. China was a net importer of insulators, and, in fact, Indian producers were supplying insulators in China. However, significant capacities were added in China to meet their extraordinarily high demand for power generation and transmission equipment, including electrical insulators. This led to substantial additions to the capacities for insulator production. China's power capacity increased from 236.5 GW in 1965 to 874.1 GW in 2009 at a CAGR of 11%. By the end of June 2010, total generation capacity reached 907.9 GW. The applicants have further claimed that after the Beijing Olympics, the demand for fresh power capacity addition within China declined considerably, resulting in substantial decline in demand for power generation and transmission equipments, including insulators. This has forced the Chinese producers to look for other markets for their large capacities, which are increasingly becoming idle. Thus, Chinese demand for the product has considerably declined, while producers in China continue to hold large capacities.

Price Advantages Enjoyed by Chinese Producers

172. The domestic industry has claimed that the Chinese suppliers enjoying various advantages:—
- Chinese suppliers enjoy easy financing from Chinese lenders.
 - They benefit from export subsidies. The cash rebate for insulators is 17%, which is much higher than the VAT impact on these products.
 - The steel policy of China mandates direct subsidization of the steel industry.
 - Fuel price in China in the form of coal and coke are much lower than international prices.
 - The Chinese Government has been granting vast subsidies to Chinese manufacturers, in the form of cheap capital and underpriced raw materials and power, and this has led to overcapacity.

Conclusion on Threat of Material Injury

173. Examination of information on record shows the dumping would cause injury to the domestic industry. The factors identified above clearly show existence of a threat of further injury.

Causal Link

174. The Authority has examined whether other factors listed under the Anti-dumping Rules could have contributed to injury to the domestic industry. The examination of causal link between dumping and material injury to the domestic industry has been done as follows:

Imports from third countries

175. The Authority has examined the imports data of the subject goods from DGCI&S. It is noted that imports from third countries are negligible and could not have caused claimed injury to the domestic industry.

Contraction in demand

176. The Authority notes that the demand for the subject goods has shown significant improvement during the injury period. It has increased in the POI from the base year and the previous year. Possible contraction in demand could not have caused injury to the domestic industry.

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

177. The Authority notes that there is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.

178. It has been argued that inter-se competition has caused claimed injury to the domestic industry. It is noted that the insulator industry is largely order based industry and the orders are placed on the basis of lowest price offered by the suppliers. If imports have increased by about 284% over the injury period, the same is clearly because the landed prices of imports in these cases were below the selling price of the domestic industry. This clearly shows that the import prices were below the domestic industry prices and deterioration in production, sales, capacity utilisation were not due to inter-se competition between the domestic producers.

Developments in technology

179. The Authority notes that the technology adopted by the domestic industry is comparable with that adopted by producers all over the world. There is no significant difference in the manufacturing process of Indian producers and foreign producers. In fact, domestic producers have been manufacturing the product for quite some time, and the technology for production is fairly established. Further, the user industry is technology neutral, so any difference in the technology is not the reason for injury to the domestic industry.

Changes in pattern of consumption

180. The domestic industry is producing the type of goods that have been imported into India. Possible changes in pattern of consumption are not a factor that could have caused claimed injury to the domestic industry.
181. It has been argued that the decline in performance is due to change in consumer preference to polymer insulator. It is noted that demand for the product under consideration has increased over the injury period, which shows that the consumer preference has not changed from subject insulators to polymer insulators.

Export performance

182. Claimed injury to the domestic industry is not on account of possible significant deterioration in export performance of the domestic industry. In fact, exports by the domestic industry have not materially declined. In any case, the domestic industry has considered domestic performance wherever possible.

Performance of the domestic industry with respect to other products

183. The Authority notes that the performance of other products being produced and sold by the domestic industry has not affected the assessment made by the Authority of the domestic industry's performance. The information considered by the Authority is with respect to the product under consideration only.

Productivity of the domestic industry

184. The Authority notes that the productivity of the domestic industry has followed the same trend as production. Deterioration in productivity has not caused injury to the domestic industry.

Factors establishing causal link

185. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated due to dumped imports from subject country. Causal link between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds.
- Imports are undercutting the prices of the domestic industry. The volume of imports has increased significantly.
 - The consumers have increasingly switched their requirements to Chinese suppliers as a result of significant price difference. Thus, the price undercutting has led to significant increase in market share of imports and decline in market share of the domestic industry.
 - The presence of dumped imports in the country is preventing the domestic industry from increasing its prices in proportion to the rise in costs.
 - The subject imports are underselling the product sold by the domestic industry.
 - Deterioration in profits, return on capital employed and cash profits is a direct consequence of dumped imports.
 - The market share of dumped imports increased over the injury period, with a consequent decline in the market share of the domestic industry.
 - As a result of significant price undercutting, production, sales and capacity utilisation of the domestic industry has deteriorated.
 - The growth of the domestic industry became negative in terms of a number of price and volume related economic parameters.

Conclusion on Injury and Causation

186. From the above examination of injury and causal link, the Authority concludes that the domestic industry has suffered injury as a result of dumping of the subject goods from China. There has been a significant increase in the volume of dumped imports from China in absolute terms throughout the injury period and in relation to production and consumption in India. The dumped imports are significantly undercutting the domestic prices.

The dumped imports have had significant adverse effect on the prices of the domestic industry in the market. The dumping margin for the subject country has been determined and is considered significant. Dumped imports from subject country have adversely impacted production, sales and capacity utilization. Market share of the domestic industry has significantly declined whereas that of subject imports has significantly increased. Performance of the domestic industry has significantly deteriorated in respect of profits, cash profits and return on investments. Inventories have increased. The Authority concludes that the domestic industry has suffered injury as a result of dumped imports from the subject country.

187. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry separately for each type of the product under consideration. This non-injurious price of the domestic industry for each type has been compared with the landed values of the subject imports of corresponding type for each of the responding exporters to determine injury margin. The injury margin so determined for each type has been considered for determination of weighted average injury margin. The injury margins have been determined as follows:

Injury Margin

S. No.	Producer	Exporter	NIP	Landed Price	Injury Margin	Injury Margin	Injury Margin
			US\$/MT	US\$/MT	US\$/MT	%	% Range
1	Nanjing Electric (Group) Co. Ltd.	Nanjing Electric (Group) Co. Ltd.	***	***	***	***	85-95
2	Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd.	Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd.	***	***	***	***	30-40
3	Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.	Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.	***	***	***	***	35-45
4	Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.	Sediver SA.	***	***	***	***	20-30
	Weighted Average (2+3+4)		***	***	***	***	30-40
5	Dalian Insulator Group Co. Ltd.	Dalian Insulator Group Co. Ltd.	***	***	***	***	70-80
6	LilingHuaxin Insulator Technology Co. Ltd.	Liling Huaxin Insulator Technology Co. Ltd.	***	***	***	***	0-10
7	Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co. Ltd.	Sichuan Yibin Global Group Co. Ltd.	***	***	***	***	110-120

188. The level of dumping margins and injury margins as determined are considered significant.

Landed Value and Injury Margin for other producers and exporters from subject country

189. The Authority notes that response to questionnaire has been filed only by some of the exporters of the product under consideration from China. Other exporters from China have not cooperated with the Authority in providing relevant information in the form and manner prescribed. The landed value to India in respect of other producers and exporters in China has been determined on the basis of best information available. Information provided by the responding exporters has been adopted for the purpose. The injury margin so worked out is mentioned in the table below.

Particulars	US\$/MT
NIP	***
Landed Value	***
Injury Margin	***
Injury Margin %	***
Injury Margin % Range	175-185

E. Post disclosure submissions of the interested parties**Comments by Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties on disclosure statement.**

190. The Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties have made the following submissions in their comments to disclosure.

- a. Regarding glass and ceramic insulator being like article, Neither names of such international standards have been referred in the disclosure statement, nor any extracts from the national and international standards and the tender documents have been provided in the disclosure statement that supports the above view taken by the Designated Authority. Further, the Designated Authority did not even provide copies of the relied upon national and international standards, and tender documents in the public file for examination by the interested parties. Therefore, the disclosure statement has been issued in violation of the principles of natural justice.
- b. Respondent fails to understand that if glass insulators are not produced in India, then on what basis the Designated Authority has concluded that porcelain and glass insulators are like. Further, Respondent disputes the Designated Authority's finding that the exporter's questionnaire responses show that the production process for porcelain and glass insulators is same, if an investigating officer had conducted a verification visit at a manufacturing unit in China PR, the Designated Authority would have found that the production processes are different to produce glass and porcelain insulators. without a proper on-site verification, it is not prudent to conclude that production processes and technology to manufacture both glass insulators and porcelain insulators are the same.
- c. Electrical insulators have distinct uses and are not substitutable or interchangeable either commercially or technically. Therefore, all kinds of insulators should not be bundled-up as a single product under consideration.
- d. Designated Authority' observation that "[d]ifferent product types serve the same general function of insulating one conducting body from other conducting body. However, such an understanding is fundamentally flawed. By way of an analogy, an airplane and a car have the same general function, which is transportation. Now, based on their end function, can these two be treated as meeting the same end application and user preference?
- e. Despite submissions on record that websites of Indian producers should not be considered as evidence showing correct information, the Designated Authority in paragraph 12 has found websites as reliable evidence.
- f. That non-provision of Chinese customs data to all interested parties for examination and comments leads to violation of the principles of natural justice. Respondent is not able to examine if the products included in the import volume fall within the product scope as defined by the Designated Authority. Respondent is, therefore, unable to provide any meaningful comments.
- g. Interested parties have demonstrated in its previous submissions differences in the domestically manufactured products and imported products.
- h. Since there are several producers supporting the application, their letters of support should be provided to Respondent for examination. The Designated Authority is also requested to place these letters of support in the public file.
- i. IEEMA's communication to the Designated Authority on names and production of other Indian producers not provided to the interested parties.
- j. The Designated Authority should record the statements made by Power Grid regarding *closing their manufacturing facilities. The Authority should examine WSI's current manufacturing status and the standing of the domestic industry.*
- k. There are significant differences between the production technology and raw materials for porcelain and glass insulators. Therefore, it is prudent to separately calculate normal value for glass insulators, and compare that with the export price. The Designated Authority is under the obligation to establish separate normal value for glass insulators so as to have a "fair comparison" between export price and normal value.
- l. Neither applicants nor designated authority has undertaken in the disclosure statement any analysis on the potential decline of injury factors.
- m. Clarify why there is a discrepancy in the figures provided in the application and the figures relied upon by the Designated Authority in the disclosure statement. If Applicants had revised their data, the same should have been provided to Respondent and other interested parties.
- n. Designated authority has made *Contrary observations on production/manufacturing process.* interested parties have maintained throughout the investigation that production processes for porcelain and glass insulators are different.
- o. Designated Authority must also keep in mind public interest while evaluating imposition of anti-dumping duty. It is worth reiterating that imposition of anti-dumping duties will drive the prices of subject goods upwards to the detriment of the consumers, which is not the purpose of anti-dumping duties.
- p. There is a substantial difference in cost and operational expenses associated with porcelain and glass insulators. For instance, glass insulators are less vulnerable to being used as defective material, practically no incidence of decapping for glass insulators.
- q. As regards the issue of the PCN methodology, the Exporters submit that they have no objections to the actual PCN methodology adopted by the Hon'ble Designated Authority. However, over the course of the investigation, the

Exporters have consistently raised an objection with regard to the procedure followed in adopting the present methodology which continue to remain un-addressed.

- r. With regard to the exclusion of 800KV hollow insulator for instrument transformers is concerned while there is no doubt that there is capability, it is surprising to find that during the course of the investigation they have been able to supply the same to only one customer. , it cannot be said to have made commercial sales but only sample sales.
- s. With regard to the adjustments to be carried out as regards the cost and price difference in glass and porcelain insulators is concerned, it has been clearly admitted by the Domestic Industry as well as evidence made available by PGCIL that it is the prices which are taken into consideration while awarding the tenders.
- t. Designated Authority may kindly make available the relevant information that was relied upon in February 2014 to come to the determination that indeed these parameters are appropriate for a product comparison methodology.
- u. As regards the comments of the other interested parties with regard to the PCN methodology is concerned, the same was not invited.
- v. A large volume of data was called for from all interested parties in February, 2014. If a verification of the proposed parameters was conducted at a later stage *after* instructing all interested parties to provide such data, it is submitted that this would be tantamount to a violation of the principles of natural justice. The technical literature and evidence that was relied upon to come to the conclusion that the proposed parameters are appropriate should be made available to the interested parties.
- w. Nearly two years have passed since the period of analysis provided in the Disclosure Statement. In fact, the same analysis was conducted in the Preliminary Findings as well. Despite objections being raised on the issue after the Findings were issued, the Hon'ble Designated Authority has not updated the period of analysis for the above parameter. Authority should have confirmed that there have been no imports during the course of the investigation and the comfort provided by the Petitioner is not limited to the outcome of the Finding.
- x. The Exporters have repeatedly requested the Hon'ble Designated Authority to kindly demonstrate how it has ascertained that the Chinese Customs data is more reliable than the Indian customs data.
- y. That if DGCI&S data is not reliable for the purposes of the subject country, then it cannot be conveniently considered reliable for the purposes of other non-subject countries either. The Hon'ble Designated Authority has held above that imports from other countries are negligible in volumes. However, the question that begs consideration is how can those volumes be deemed reliable when the Hon'ble Designated Authority has explicitly disregarded the same source of import data for the subject country.
- z. If the Exporters had not withdrawn the MET claim, the Hon'ble Designated Authority would be duty-bound to inquire about and accept all evidences in this behalf. Therefore, the Hon'ble Designated Authority has granted the Market Economy Treatment to the Exporters on account of their withdrawal of the MET claim and not on account of third party information.
- aa. Confidential Export Price calculation of the Exporters made available by the Hon'ble Designated Authority, the Exporters confirm the same and have no further comments in this behalf.
- bb. Designated Authority is requested to provide a group wide dumping margin as it has been doing in other cases.
- cc. The causal link analysis of the present finding merely examines the five factors listed above as formality without any actual investigation as to whether there are truly any other factors that may have caused injury to the domestic industry. Designated Authority may kindly examine the domestic industry's operations and data in detail to determine whether there is a breach in causal link.
- dd. Import price has actually remained the same over the injury period as compared to the base year of 2009-10 and has not had any negative impact on the price of the domestic industry. It may be noted that while the domestic industry's price has increased, the import prices have not followed the same trend thus establishing a complete lack of any link of causality between the two prices.
- ee. The Exporters regularly participate in the bids conducted for the Indian power projects whereby a large share of recent bids has been awarded to Indian producers. These bids are decided predominantly on a cost analysis. It appears highly unlikely that Chinese producers participating in these bids are undercutting the Indian producers and yet the bids are being awarded to the Indian producers.
- ff. Petitioners are export-centric entities and the injury if any is attributable, to the decline in Exports of the Petitioners
- gg. Since the Hon'ble Designated Authority has disclosed the dumping margin indexed numbers of the normal value and the export along with the margins, unfortunately there is no indexed data for the costing, return on capital employed as well as non injurious price and the landed value disclosed.
- hh. The product comparison methodology used by the Hon'ble Designated Authority remains unsubstantiated and has been selected arbitrarily without appropriate reliance placed on evidence.
- ii. The Import data as established above remains unreliable and is liable to be disregarded.
- jj. The Hon'ble Designated Authority should reclassify the import data as is provided above and accordingly the injury analysis should be done for each category and segmentation.
- kk. The Petitioners are not suffering any injury, and any claimed injury is self attributable to factors other than imports as demonstrated above.
- ll. The Hon'ble Designated Authority should exclude higher KN value insulators from the present product scope in public interest.

- mm. The Hon'ble Designated Authority should re-work the duty table based on group wide margin as has been requested based on the practice followed in other investigations.
- nn. Contract for tower and Conductor packages have been awarded in 8 orders, the levy of ADD now on insulator package for these orders/contracts will not serve any purpose to protect the domestic industry and its levy will result in higher cost leading to additional burden on general public. Further ADD should be exempted on World Bank/ ADB funded projects and be levied on percentage basis.

Submissions by Domestic Industry

191. While repeating a number of earlier submissions, the domestic industry has made the following additional submissions.
 - a. As regards the argument of Indian producers not having adequate capacity, the domestic industry in fact enhanced its capacities based on plans laid down by PGCIL. However, after giving plans to the domestic industry, PGCIL resorted to imports in view of lower prices offered by the Chinese producers. PGCIL can give its medium to long term requirements to the industry and industry would be too happy to take further steps in ensuring that the demand of PGCIL are met. The purpose of anti-dumping duty investigation is to prevent unfair trade practice and not to restrict imports.
 - b. As regards the argument of non participation of Indian producers in tenders, the statement that only two producers are participating in the bids is incorrect. All the constituents of the domestic industry have been participating in the tenders floated by the PGCIL. The capacity constraints indicated for BHEL were superficial, as Power Grid deferred supplies by 17 months and consequently had indicated additional requirement with shorter delivery, which got bunched with the supplies of another project.
 - c. As regards a single-party bagging all orders, the importers seem to be of the view that imposition of anti-dumping duty would ban imports of product under consideration. The purpose of anti-dumping duty is only to prevent unfair trade practice. The exporters can still export the product under consideration but at fair prices.
 - d. All the constituents of the domestic industry have been participating in the tenders floated by the PGCIL.
 - e. As regards categorization of insulators, the petitioners have proposed PCN which was accepted by the Authority after conducting detailed analysis. The dumping margin and injury margin determination has been done PCN wise. The authority has not considered different voltage ratings as one product. Voltage ratings is one of the PCN parameters.
 - f. As regards actual cost is up to 1.5 times the cost considered in the preliminary findings, it is submitted that this will further increase the dumping margin and injury margin.
 - g. PGCIL was aware of the on going investigations and yet continued to expose itself. The anti-dumping duty investigation being a time bound investigation; PGCIL could have delayed its tenders by few more months. Instead PGCIL rushed with tenders and awarded the same to Chinese producers.
 - h. As regards capacity constraint, if the exporters wish to bridge the gap, they can export the product at fair prices. The domestic industry is at present facing declining capacity utilization and low level of capacity utilizations. It cannot be expected that the domestic industry would increase its financial losses and keep adding the capacities.
 - i. The Customs Authorities have time and again issued circulars emphasizing that all the Exporters/Customs Brokers that they should declare complete & relevant description of the export goods in the shipping bills with the correct and prescribed Standard Unit Quantity Codes (UQC) as per the Customs Tariff Act, 1975. It is also relevant to point out that these exporters have filed questionnaire responses wherein the exporters have clearly given information with regard to exports to India on the basis of weights. Thus, the exporters have filed questionnaire responses by adopting weight as the unit of measurement and are now contending that the prescribed unit of measurement under the Customs Tariff Act has not been followed for objective purpose due to uniqueness of product.
 - j. If the interested parties consider that they had exported the excluded products, it was for these interested parties to provide the relevant information and establish that the contention of the domestic industry in this regard was not correct.
 - k. The detailed transaction wise China Customs data which is provided to the Authority is third party information and the petitioners are not authorized to disclose the same.
 - l. The total value of imports reported in DGCI&S corroborates to a significant extent with the total value reported in China customs. However, even when the value of imports reported in DGCI&S corroborates to a significant extent to the values reported in China customs, the information contained in DGCI&S could not be adopted for assessment of import volumes for the reason that the DGCI&S data does not accurately report the volume of the product in terms of weight and it would not be appropriate to assess the weight of the imports in several transactions.
 - m. The questionnaire responses filed by the responding exporters would show that the goods have been invoiced by using weight as the unit of measurement. Further, the volume of imports reported by the responding exporters would be comparable to the volume of imports as reported in China Customs.
 - n. Petitioners have provided supplier wise exports from China to India for the relevant period and the same further establishes that majority of the exports have been made by the responding companies. even if questionnaire

responses of the responding companies alone are considered for determination of volume of imports, the same will again lead to same conclusion.

- o. As regards the findings of Director General (Safeguards), it is submitted that the responding exporters have not filed any evidence to establish their bare claims of so called mistake by Director General (Safeguards).
- p. Designated authority had, in its preliminary findings, established that DGCI&S and any other Indian customs cannot be adopted for determination of volume and value of imports and had given sufficient reasoning after detailed analysis of reliability of China Customs. it is surprising that CCCME is claiming that China Customs data is unreliable and further not providing any information regarding the exports of product under consideration into India, which they would be privy of.
- q. As regards exclusion of 800KV Hollow insulators:- ABB is sourcing 800 KV circuit breaker insulators from Modern Insulators Limited. BHEL has infact supplied these kind of insulators to ABB.
- r. As regards exclusion of 800KV HVDC insulators for AC filter application:- Modern Insulators Limited had received order for 800KV HVDC Solid Core capacitors for AC filter application in June 2014 and the same has been already manufactured and partial quantity dispatched, as per designs submitted by ABB. Infact ABI has offered to supply such material to ABB. However due to very short lead time given by ABB which was practically not possible, the ABI could not supply the same. Infact ABI sought extension of lead time but the ABB did not respond to that.
- s. Anti dumping duty may be imposed only as ad valorem, expressed as % of CIF price.
- t. As regards Non Injurious Price difference in consumption factors over the years is different from inefficient utilization of raw materials & utilities determination.
 - i. Capital employed should be determined considering present value of fixed assets, or at the least gross value of fixed assets.
 - ii. The authority is required to consider actual raw material and utilities consumption.
 - iii. It would be inappropriate to ignore actual production and adopt any other production basis for determination of non-injurious price. The authority is required to determine actual cost of production and not a notional lower cost of production in order to determine a price which can be compared with the import price in order to assess injury margin.

Examination of Authority

192. The Authority notes that post-disclosure comments/submission made by the interested parties are mostly reiterations of earlier submissions, which were already examined suitably and adequately addressed in the preliminary findings, or disclosure statement or relevant paras of the present finding. The authority further considers as follows with regard to issues raised by the interested parties.
 - a. As regards consideration of glass and porcelain insulators as one like article, the authority holds that the issue has been examined and addressed in detail in the preliminary findings and the present final findings at the relevant paragraphs. The authority considers that on the spot verification by the officers is not necessary for the authority to conclude whether the two constitute one like article. The information on record clearly establishes that the major consumers such as Powergrid have procured glass and porcelain interchangeably - both technically and commercially.
 - b. As regards difference in different types of insulators, the issue has been examined in detail. The mere fact that different types of insulators differ in associated costs and prices do not render them different products. It merely implies that the difference shall be considered for fair comparison for the purpose of dumping margin and injury margin. The authority has determined dumping margin and injury margin on the basis of PCN methodology described above.
 - c. As regards opportunity for comments on PCN methodology, it is reiterated that the interested parties were free to offer their comments on the proposed PCN methodology. Even after issuance of preliminary findings, no interested party made any suggestions with regard to alternate PCN or modifications to PCN.
 - d. As regards difference in the figures between petition and preliminary findings/disclosure statement, the authority notes that the figures adopted by the authority at Preliminary Findings/disclosure statement are on the basis of investigation conducted by the authority and information verified during the course of the investigations. The interested parties had several opportunities to comment on the figures posit issuance of preliminary findings.
 - e. As regards adoption of DGCI&S data for third countries, even when the DGCI&S data has not been adopted for China, the issue has been examined in detail in the preliminary findings and present findings. Information on record shows that imports of the product under consideration are practically from China. In fact, none of the responding parties showed any imports of the product from third countries. It is not a claim of any interested party that the injury to the domestic industry was because of undumped imports from third countries.
 - f. As regards adjustment for difference in weight of glass and porcelain insulators, the authority notes that

- since porcelain insulators and glass insulators are held as like article, the methodology adopted by the Authority in evaluating the normal value of the like article is consistent with its earlier practice and the issue of weight adjustments of glass and porcelain is not relevant.
- g. As regards the argument that the normal value (or NIP) is not for glass insulators as far as dumping margin (or injury margin) of glass insulators is concerned, the authority notes that the rules require the authority to consider the like article for determination of normal value. Section 9A(1)c of the Act in fact provides that the normal value is the price of the like article in the domestic market of the exporting country. Thus, the authority is in fact required to consider normal value by considering like article.
 - h. As regards the arguments about performance reported in annual report, the authority notes that the authority is required to consider performance of the domestic industry for the product under consideration in the domestic market over the injury period. By contrast, the information in the annual report pertains to a particular company, for a particular year, for overall performance of the company in the domestic & global markets. Further, whereas the dumping law distinguishes between raw material, product under consideration and downstream products, the annual report may even extend to performances in raw materials and downstream products.
 - i. Submissions have been made with regard to access to the evidence/ information provided by other interested parties through public file. Submissions have also been made contending non disclosure of national or international standards, letter from IEEMA with regard to Indian production, support letters from other Indian producers, changes in the data in the petition, NIP, etc. The authority notes that documents such as IEEMA letter, support letters, national or international standards were in fact made available by the domestic industry in their submissions, a copy of which was made available to the interested parties. While NIP is an absolute figure and therefore cannot be disclosed to all interested parties, dumping margin and injury margin ranges were disclosed to interested parties. The domestic industry has not filed any changed data. The authority has conducted verification and has adopted verified data, which is not the same as the claims made by the domestic industry. As regards maintenance of public file, the authority notes that what is relevant is whether the relevant document/information has been made available to the interested parties. In fact, a number of interested parties accessed a number of times documents/information filed by opposing interested parties during the course of the investigations.
 - j. As regards request for disclosure of China customs data, the Authority further notes that the Rule 7 of the Rules permit an interested party to provide information on confidential basis. No such information can be disclosed to any other party without specific authorisation of the party providing such information. The Authority is however required to be satisfied as regards its confidentiality. Such as party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarisation is not possible. In the instant case, the domestic industry has provided non confidential summary of the China customs data. In any case, the Authority has adopted China customs data for the purpose of determination of aggregated volume and value of imports in India over the injury period. Further the information is separately accessible to the Authority through UN COMTRADE data. The Authority has in any case has not adopted transaction by transaction data of China customs for the determination of dumping margin and injury margin for which constructed Normal value approach and response of cooperative exporters has been adopted. The confidential Ex factory export price has been disclosed to the cooperating exporters in the disclosure statement.
 - k. As regards contention of Sediver for a combination duty for the entire group, the Authority has determined weighted average dumping margin and injury margin for the group and accordingly the same quantum of duty has been recommended.
 - l. As regards submissions of Powergrid for exemption from payment of ADD on all those imports for which orders were awarded earlier and for world bank/ADB funded projects, the Authority notes that the decision with regard to imposition and collection of AD duty are beyond the ambit of the investigation and recommendation. The Central Govt. may make an appropriate decision in this regard.

F. Indian industry's interest & other issues

193. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.
194. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these product. The domestic industry submitted that product under consideration constitutes hardly 5% of the transmission & distribution cost and imposition of duty shall have insignificant cost implications for the consumers in terms of the overall transmission and distribution costs involved. Therefore, fair competition in the

Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

G. Recommendations

195. Having regard to the issues raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties including those made as comments to the disclosure statement or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current dumping and injury, the Authority concludes that:
- The product under consideration has been exported to India from the subject country below normal value.
 - The domestic industry has suffered injury on account of subject imports from subject country.
 - The injury has been caused by the dumped imports of subject goods from the subject country.
196. The Authority notes that the investigation was initiated and it was notified to all interested parties. Adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and the causal link there of in terms of the Anti-dumping Rules and having established a positive dumping margin as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of anti-dumping duty is necessary to offset dumping causing injury. Domestic industry has requested for imposition of Anti-dumping duty to address injury being suffered. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definite anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury margin, the landed value of imports of product under consideration has been compared with the non-injurious price of the domestic like product produced by domestic industry determined for the period of investigation. The Authority considers that the anti-dumping duty in the form and manner recommended in the preliminary findings is appropriate and has adopted the same for the present findings as well.
197. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive anti-dumping duty equal to the amount indicated in column 8 of the table below is recommended to be imposed on all subject goods originating in or exported from the subject country.

S. No.	Heading/ Sub heading	Description of goods	Country of origin	Country of export	Producer	Exporter	Amount of duty	Unit	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	854610 854620	Electrical Insulators*	China PR	China PR	Nanjing Electric (Group) Co Ltd	Nanjing Electric (Group) Co Ltd	1,188	PerMT	US\$
2	- do -	- do -	China PR	China PR	Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. Or Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd.	Zigong Sediver Toughened Glass Insulator Co. Ltd. Or Sediver Insulators (Shanghai) Co. Ltd. or Sediver S.A. (France)	687	PerMT	US\$
3	- do -	- do -	China PR	China PR	Dalian Insulator Group Co. Ltd.	Dalian Insulator Group Co. Ltd.	1,377	Per MT	US\$
4	- do -	- do -	China PR	China PR	Liling Huaxin Insulator Technology Co., Ltd	LilingHuaxin Insulator Technology Co. Ltd.	128	Per MT	US\$
5	- do -	- do -	China PR	China PR	Chengdu Global Special-Glass Manufacturing Co. Ltd.	Sichuan Yibin Global Group Co.. Ltd.	1,174	Per MT	US\$
6	- do -	- do -	China PR	China PR	Any combination other than Sl. No. 1 to 5 above		2,042	Per MT	US\$
7	- do -	- do -	China PR	Any other than China PR	Any	Any	2,042	Per MT	US\$
8	- do -	- do -	Any other than China PR	China PR	Any	Any	2,042	Per MT	US\$

- * product under consideration is “Electrical insulators of Glass, or Ceramics/Porcelain, whether assembled or unassembled, excluding the following:
1. Telephone or telegraph insulators of voltage rating up to 1 KV,
 2. Electrical or electronic appliances/device insulators of voltage rating up to 1 KV,
 3. Composite insulators
 4. Condenser bushings and transformer
198. Subject to above, the Authority confirms the preliminary findings vide Notification No. 14/11/2013 DGAD dated 1st July, 2014 and the duty recommended in the Duty Table above would be applicable from the date of imposition of the provisional antidumping duty.
199. An appeal against the order of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs Excise and Service Tax Appellate tribunal, in accordance with the relevant provisions of the Act.

J. K. DADOO, Designated Authority